प्रिंटर —रा रा चिंतामण सखाराम देवळे, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंटस् ऑफ इंडिया सोसायटीज् बिल्डिंग, सँढर्स्ट रोड, गिरगाव–मुंबई

प्रकाशक —शिष्यक्षेम अमर बालचंद्र, बीकानेर मारवाड मोहल्ला, रायची

॥ श्री ॥

॥ अथ प्रस्तावना ॥

धर्म्म सुरतरू जैन धर्म्मी महाजन महाजन वंश मुक्तावली जो मैंने सग्रह करी हे इसमें वृहत् खरतर भट्टारक गछके श्रीपूज्यजी महाराज बीकानेर विराजितके दपतरका मुख्य आश्रय तद्वत् श्रीबीकानेर वडे उपाश्रयके ज्ञान भडारका आश्रय महोपाध्याय श्रीदेवचंद्रजी उ। श्री आसकरणजी पं। प्र। श्रीमोतीचद्रजी उ। श्रीलक्ष्मणजी तथा हमारे परमगुरु सम्यग् दर्शन ज्ञानव्रत दाता पडितशिरोमणि साधूजी महाराज इत्यादिकोंके श्रीमुखसे श्रवण करा जो जो प्राचीन इतिहास उपलब्ध हुआ वह मैंने लिखा है यदि मेरी अल्पज्ञताके कारण लिखनेमै भूल रही हो तो सज्जन जन क्षमा प्रद् होगें किसी भी महाशयका चित्त दुखानेके लिये उल्लेख नहीं किंतु सत्य लिखना धर्म्म है चंद्रमै शीतलता सूर्यमै उष्णता समुद्रमै क्षारता इत्यादि अनेकानेक गुणवाले पदार्थोंमै अंशासैं किंचित् अपगुण भासमान हे लेकिन् वह चंद्र आदि पदार्थोंके अपगुणभी प्राणी जनोंके लिये हितावह ही है यदि किसीकों न हो तो क्या यथा चद्र किरण राशि विरही जनोंको अप्रिय हे तथापि सार्व्वजनक अप्रिय नहीं सूर्यके प्रकाशमै उल्लूककों नही दीखता तो सूर्यका प्रकाश सार्व्वजनक अप्रिय नहीं ऐसा कोई कार्य नहीं जिसमै दूषण खलजन नहीं देते यथा त्यागवैराग्य सर्व्वजन सम्मत है तो उसमैं भी एकसमाजके त्यागी दुसरी समाजके त्यागी मैं अनेक दूषण निकालते है यदि एकात ध्यान करने कोई स्थित हो तो अन्य समाजके जन उसकों खुदगरजी कहते है यदि ज्ञानकी उन्नदशा प्रासकर अन्य जनोंकों सदुपदेश दे खुदगरजी पना त्यागता हे तो अन्य समाजके मनुष्य कहते हैं परोपदेश देनेंमै ही तत्पर है आपका उद्धार क्या करा यदि विरक्तता धारकर भिक्षावृत्ति करता है तो अन्यसमाजके जन कहते है पुरुषार्थहीनहोकर परायेकी आशा त्यागी नहीं यदि परासा है तो विरक्तता कहा यदि वनोवासी हो नग्नपनै नदीका जलपान वृक्षोंसैं गिरे फल पुष्पसै निर्वाह करता हे तो अन्य समाजके जन कहते है यह जीव अदत्त सचित्तजल सचित्तफलादि खाते है इस लिये ये साधु नहीं इस प्रकार जन्मसै ब्रह्मचर्यधारी रहता है तो अन्यसमाजके जन कहते हैं यदि ऐसै सर्व्व मनुष्य समाज हो जाय तो संसारका नाशही हो जाय और राज्य धर्म्म वर्त्तमान समयका गृहस्थ पन श्रेष्ठ मानते हैं

इत्यादि कारणोकों विचारते है तो गुण मैभी अपगुण निकालनेवाले जगतमै विद्य-मान है इस लिये बुद्धिमानोंनै बुद्धयानुसार सत्मार्ग हितावह जो हो उसमै यथा शक्ति प्रवर्त्तना, लोकतो चढेकों भी हसते है ओर प्याटलकों भी हसते है सर्व्वजन्की एक सम्मति हुई न होगी इति

यतः तथापिक्रियतेग्रंथशांति यद्यपि दुर्जना, नहि दस्युभयाल्लोको दैन्यवानिह वर्त्तते १ [अर्थ] ये श्लोक वैद्यजीवनमै लिखा है तो भी ग्रंथ करता हूं यद्यपि दुर्जन जन हैं यथा चौरोके भयसै ससारके लोक क्या दीन दलिद्री वणवे ठगै, कदापि नहीं, यतः खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति ॥ आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति २ [अर्थ] ये श्लोक चाणक्य ब्राह्मणनै साहानशाहचंद्रगुप्तको कथन करा है, दुष्ट मनुष्य सरसवप्रमाणभी परछिद्र देखते हैं अपणा दुर्गुण बिल. प्रमाणकों देखता हुआ भी नहीं देखता २,

इसलिये बुद्धिमत्ता वह कहाती है यदि किसीनै उपदेश देते दुगुर्णोकों त्यागना वतलाया तो वणे जहांतक अपना वा अपने समाजको सुधारनेका प्रयत्न करै यदि दुर्गुण नहीं त्यागा जावे पूर्वकर्म्मयोगसै तो फेर उपदेश दाता ऊपर द्वेषभाव धारण करना बुद्धिमत्ताका कार्य नहीं कलियुगमैं सत्यवक्ता पना किसी पुण्यवत दीर्घदृष्टि न्यायवंतकोंही अछा लगता है, वाकी तो जैसै सच वोले वालकनैं अपणी वैधव्य माताकों कहा हे माता, पिता तो मरगया, तैनै ये सुक्ष्म २ का जल क्यों सारा है वस तत्काल माता क्रोधातुर हो मारने दोडी तव भागते हुये सचवोलेंनै कहा सत्य कह, मामारे, यदि मनको रुचता असत्य गुण भी किसीका वर्णन करो तो बडे लोक प्रशन्न होते हैं क्योंकी आज संसारमैं खुसामदी ताजा रुजगार हो रहा है लेकिन् चर्प्पट पंजरीमै स्वामी शंकरनै कहा है यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्धं नाचरणीय २ इस प्रकार जैनधर्म्मके शक्रस्तवके अनंतर प्रणिधान दंडकमै भी लिखा हे लोग विरुद्धच्चाओ, अर्थात् जो कार्य शुद्ध हैं यदि लोक विरुद्ध है तो नहीं आचरण करना पुनः ऐसा भी हे शत्ये नास्ति भयंक्वचित्

जैनधर्मपर आक्षेप करनेवालोंकों निरुत्तरकर्त्ता खरतर गच्छके श्वेताम्बराचार्य उपाध्याय समय २ पर विजयकर्त्ता होते रहै, विक्रमशीले शताब्दीमै श्री जिनचंद्र-सूरि बादसाह जहांगीरके सन्मुख मसूरपठाणकों धर्म बादमै जयकरा, जिनआज्ञाके लोपक निन्हवोंका पराजय करा, खरतर गच्छपर आक्षेप करनेवाला धर्मसागरजी तपागच्छीको, पाटणनगरगुजरातमै ८४ गणके उपाध्याय वाचकादि मुनिमंडल समक्ष, शास्त्रार्थ करने बुलाया लेकिन् असत्यवादी होनेक कारण आये नहीं, केइ दिन सभा

रही, आखिर उहां आये हुये सर्व गच्छके गीतार्थोंनें धर्म सागरजीको मृषावादी सज्ज ८४ गणसे निकाला खरतरगच्छकों जिनाज्ञा पालक विजयपत्र लिखा जिसका तांबा पत्रवाडी पार्श्वनाथजीके मंदिरके ज्ञान भंडारमें रखा, नकल सामाचारी शतकमें उपाध्याय समयसुंदरजीनें लिखी है, उससमय भव्यजीव श्री संघमें हर्षका पारावार छागया, ग्रंथ रचनेवाले आप धर्म सागरजी अपने लिखे लेखको सत्य नहीं कर सके तो उस ग्रंथको माननेवाले खरतरगच्छका पराजय करना लिखते हैं विजयसागरमें यह लेख स्वमताभिमानसूचक सर्वथा असत्य है, यदि सत्य होता तो विक्रम संवत उगणीश शय चोहत्तर पचहत्तर, छिहत्तर पर्यंत खरतर गच्छके मणिसागर सुमति-सागर मुंबईमें शास्त्रार्थ करने कितने छापे द्वारासूचना देते रहे लेकिन् एक भी सन्मुख परपक्षी नहीं हो सके, बस मालुम हुआ आपके विजय सागरके लेखकी मत्यना वृथाकुसंपकी वृद्धि करणी, बुद्धिमनानहीं है,

पूना नगरमें श्रीजिन भक्तिसूरि- जीने पेसवाराव शिवाजीके सन्मुख वेदांतमति-योंसें चर्चाकर जैनधर्मका विजयडंका बजाया, सादडीगाममें तपगच्छ वालोंने खरतर गच्छकों जिनाज्ञा विरुद्ध कथन करा, तब शास्त्रार्थम तपोको निरुत्तर करा. श्रीसंघ भव्य जीवप्रमुदित हुए निर्मल जलको गदुलाकरनेवाला महिष और शूकर ग्रीष्मसे तपायमान गडलाकरता हैं लेकिन् जल अपने शीतल गुणको नहीं छोडता है, योधपुरमें राठोडराजा मानसिंघजीके सन्मुख सभामें कास्मीरी पंडितोंनें जैनधर्म का उपहास्य करके कहा जैनसनातनवाले तरुसें अलग किये अनंतर दो घटिकाके नवनीतमें समुर्छिम पंचेंद्रीजीवोंकी उत्पत्ति तद्वर्ण कहते हैं, येसर्व मृषावाक्य अप्रमाण है, तब माहाराजानें जैनयति महाविद्वान् शंभु (शिवचंद्र) जीकों शास्त्रार्थके लिये पालीसे आमंत्रन करा तब इसवाक्यके प्रत्युत्तरमें शिवचंद्रजीनें एकगऊ मंगवाकर उसकी पूंछकों इधर उधरकर देखने लगे तब माहाराजा आश्चर्यमें आकर पूछा हे गुरु पूंछ मे क्या देखते हो शिवचंद्रजीनें उत्तर दिया हे नरेंद्र प्रश्नकर्त्ता पंडितोंके मंतव्यानुसार गऊकीपूंछमे तेतीस कोटिदेवता रहते हैं इसलिये इतनी देर देखा लेकिन् एकदो भी देखनेमें आया नहीं ३३ कोटि तो दूर रहे ये वचन सुण राजादिक हसपडे वे पंडित लज्जितहो शिवचंद्रजीकी कान्यंतव स्तुति करी नृपनें वादिगज सिंह पद दिया इसप्रकार विक्रमशताब्दीउगणीसमें खरतर गछ मंडलाचार्य बालचंद्रसूरिनें नाशकमें महाराष्ट्र तेतीस पंडितोंकों जैनधर्म नास्तिक नहीं आस्तिकोंमे अग्रेश्वरी है सिद्ध कर दिया पंडितोंनें विजय पत्र लिख दिया इसप्रकार उगणीसमें पंडित रायचंद्रजी यतिनें दक्षणीपंडितोंकों शब्दशास्त्र और स्याद्वादन्यायकी शेलीसें अन्य न्यायको सूर्य सन्मुख तेजहीन तारकवत कर-

दर्शाया शिष्य नहीं मिलनेके कारण काल दोषसें यति गुरुओंकी वृद्धि तथा कालदोषसें अवशेषोमें विद्याकी न्यूनता हो रही हे

हम धारतेथे वर्त्तमानमें साधुनाम धरानेवाले कुछ उन्नती करेंगे लेकिन् ये तो परस्पर द्वेषापनिसें ग्रसित होते हुये अन्यदर्शनियोंकों सर्वज्ञधर्मकी प्राप्तिकराने किंचित्‌भी उद्यम नहीं करते अमूल्य समय परस्परके रागद्वेषमें व्यतीत करते हे, यदि शास्त्रार्थ परस्परही करना होतो, शमभावमें निसल्यपने करना चाहिये, वेसा नहीं करते, केवल परस्परमें, कुसंपकी वृद्धि करना यथार्थ नहीं, पकडापक्ष कोई नहीं त्यागता, उनोंने तो उसको सत्यही मान रखा हे, कषायोंकी चोकडी क्षय करनाही, परम पदका सोपान हे

ओर जो साधुओंके नामधारी, भाषाकी कहाणिया गीत गानेवाले हे वे तो व्याकरण काव्य कोश न्यायादिकके अणपढ अन्य दर्शनियोंसे किस प्रकार शास्त्रार्थ कर सक्के है, वे तो यति आचार्योके प्रतिबोधे हुये, जैन समाजकों अपने कुयुक्तियोंद्वारा, अपना मंतव्य मनाते, जन्मव्यतीत करते हैं, उन अन पठितों कीये प्रशंसा, डाक्टर हार्मन जे कोवी भी, सम्यकृतया कर गया के, संस्कृत प्राकृत अन्य २ जैन ग्रंथ बहुतोंके पढनेकी आवश्यक्ता हे, इत्यादि, इनोंकी अण-पठितताको देखकर कह गया था, इत्यादि एक वार्त्ता अद्भुत इस समाजमें देखी, कोई दुसरे धर्म्मवाला इनका ठाठ देखने इन समाजके मनुष्यसंग उन मताध्यक्षके समीप चला जावेतो बेठे हुये, हजार पांचसो गृहस्थ, कहने लगते हैं, संसारसे पार पाना हे तो, श्रद्धा धारलो, इहा धनवान हो जाओगे, तब वह मताध्यक्ष अधिपति कहता हे, कुछ जाण पना हे, तब सर्व्व गृहस्थ कहते हैं, कुछ पूछना हो तो पूछलो, ऐसे अतर्यामी सर्वज्ञ, फेर नहीं मिलेंगे, शंका मनकी निकाल लो, तब जो इन समाजका स्वरूप जानता हे, वह तो, कह देता हे, मुझे कुछ भी नहीं पूछना हे, ओर जो इन समाजके स्वरूपका, अजाण हो, कोई इनकों जबाब नहीं आवे ऐसी वार्त्ता पूछ बेठता हे, वस उसी समय, उस एक मनुष्यके पीछे वे हजार मनुष्य, कोलाहल मचाते हे, उसकी बात सुणने नहीं देते ओर बने जहातक उसकी आजीविका भंग करते प्राण क्षतक पहुंचा देते हैं, ओर जो इनोंकों मालूम होती हे के अमुक विद्वान हमारी कथन करी वार्त्ताकों जैन सूत्रोंसे, वा, हमारी कुयुक्तियोंकों, न्याय युक्तिसे खंडन कर्त्ता हे, तब अपने समाजके लोकोंकों प्रथम हीसें शिक्षा देने लगते हैं, अमुक मनुष्य कुगुरु लिया हे, अपना द्वेषी हे, इससें वार्त्ता करनेसेही, पाप लगता हे, ऐसा सुणते ही, धर्णाक्षमा तहत्त, दीनबंधु, कृपासिंधु, पृथ्वीनाथकों, धणीखमा, वसवे हियाशून्य, ज्ञानचक्षुरहित,

लर्कीरके फकीर, बाबा वाक्यं प्रमाणं, उसही डगर चलते हैं, इतना विचार नहीं, बर २ भीख मंगेको हम पृथ्वीनाथ क्या समझके कहते हैं और जो दुराचार्य कुकर्म्मी परधनवंचक इन समाजसैं बन आना चाहे उनोके लिये यह सहज मार्ग है, बस वह इनके चरण छूऐ, और इन वेषधारियोंकी, असत्य स्तुति करे, जाकर हाजरी भरे, असत्य निंदा दुसरे धर्म्म वालेकी करे, वह इनोंको अत्यंत वल्लभ होता है, उसके लिये, अपने समाजियोंसें कहते हैं, अमुक भायो, बाई, सत्यवक्ता, आछो है, तब मुख्य कहता है, विशेष आछो है बस वह इस समाजमें, ए, मे, पास हुआ, समझा जाता है, कुपात्रका दान, धर्मसें निषेध करा है, तथापि, उदार दिलसें देते हैं, ऐसे २ मत भी आर्यावर्त्तमें कालके महात्म्यसें, प्रचलित है,

जब तक जैनधर्मवाले संप्रति राजावत् जैनविद्वान पंडितोंको नानादेश भाषा शिखाकर सर्वज्ञधर्म्म सायन्स प्रत्यक्ष प्रमाणसें हितावहकी पुस्तकें छपाकर सर्व्व देशी जनो को उपदेश नहीं करांयगें तावत् उदयकाल आवेगा नहीं दिनोंदिन जैनधर्म्मी जनोंकी संख्यान्यून इसी कारण हो रही है, जिन २ मतोंमें स्थान २ गृहस्थ लोक उपदेश करते फिरते हैं, उन २ मतोंकी दिनोदिन वृद्धि हो रही है, जैसे आर्य समाज, ईसाई इत्यादिकोंकी, देखते २ वृद्धि हो गई, जैन ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाणसें, इसभव, परभव दोनोंमे लाभ दायक धर्म्म उसकी दिनोदिन हानी क्यों होती है, इसका क्यो नहीं विचार करते है, ईसाई धर्म्मके गुरु, मुख्य पोपपादरी, पादरी, मुसलमान मतके पीरजादे पारसियोंके गुरु, शिव, वैष्णव, मतके, ब्राह्मन, गोकुल गुसाईं आर्या, इत्यादि सर्व्व श्री धन रखनेवाले है, उन उपदेशकोंके वचन, मुख्यतया शिरोधार्य करते है, जैनधर्म तीन फिरके श्वेतांबरी की और धन रखनेवाला, पूरा पंडित सत्योपदेश हितकारीभी कहता हो तो, प्रथम तो सुनतेही नहीं यदि सुने तो, श्रद्धा प्रतीति नहीं करते, त्यागी जीवनका, ऊपरसें इनोंको दीखना चाहिये बस उसअपठकी वार्त्ता पर भी श्रद्धा करते है, जैन सूत्रोंमें, त्यागमार्ग, साधुजनके लिये अत्यंतही कठिन दर्शाया है, वे सर्व देशोंमें पहुंचही नहीं सक्ते. कहांई जाते हैं तो, स्थानमें रहे व्याख्यान करते हैं, उहां स्वाफिरकेके विना, अन्य दर्शनी आता नहीं, तब जैन संख्या कैसें वृद्धि पावे, महम्मद साहबका मत, और स्वामी शंकरका मत तो, बलात्कारपनें, वृद्धि पाया था, ऐसा करना, विद्वानोंको मतव्य नहीं, इस समय जैसें ईसाई, आर्या, खुल्ले वरम्यान व्याख्यान करते है. वैसा जैनधर्म्म वालोंनें सर्व्वत्र करना, कराना चाहिये, यदि श्रद्धा सर्व्वज्ञ वाक्य पर हो जावे, अभक्षादिक नहीं त्यागसके तथापि श्रेय है, यथा_नेम प्रभुके

उपदेशसै कृष्ण नारायण महावीर प्रभुके उपदेशसैं राजा श्रेणक, इस प्रकार होनेसै, उनोंके शंतान क्रमसै व्रतधारी वन जायंगें, स्त्री, धन, रखने वाले सम्यक्त धारियोंनें, तथा सम्यक्त युक्त द्वादशवत धारियोंनैं, अनेक जीवोंकों, जैन धर्म्मी वनाया है, स्त्री धनके त्यार्गा हो, उपदेश करते है उनोंकों तो धन्यवाद है, लेकिन् स्त्री धन रखकरभी जो मिथ्यात्वीको सम्यक्त्व धारी बनावै उसकों अनंत धन्यवाद है।

इस ग्रंथमैं जैन खरतर गछाचार्य श्रीजिनदत्तसूरि. माणि धारी श्रीजिनचद्रं सूरि। तथा श्रीजिन कुशलसूरिः जी आदिकोनै जो निज आत्मबलसै उपदेश देकर मत्रशक्तिद्वारा राजन् वंशियों ऊपर उपगार करके जैनधर्म्मी महाजनवशकी वृद्धि करी तदनतर विक्रम शताब्दी पनरेके उतरते जगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिन माणिक्यसुरिःके पट्टधर श्रीजिनचंद्रसूरि गुरुदेव वीर प्रभूके जन्मराशीपर आया हुआ भस्मराशी गृहके उतरनेके समय अवतारी प्रगटे जिनोंके ज्ञान और क्रियाकी प्रशसा अनेक शंतजन तथा कर्म्मचद वछावतसै श्रवण कर अकब्बर बादसा खास निज लेखणीसै फुरमाण वीनती पत्र लाहोर नगर देश पजावसै अपनें निज उमरावोंको गुरुकों आमंत्रन करने भेजे उस समय आचार्यके ८४ शिष्योंमैसै, मुख्यशिष्य, सकलचद्र उपाध्यायके शिष्य, समयसुंदरजी, विहारमैं, सगथे, उनोंनै गुरुगुण, छंद, अष्टक भाषाबद्ध रचा है, यथा,

संतनकी मुख वाणि सुणी जिनचद्र मुर्नीद महतजती, तपजप्प करे गुरु गुज्जरमैं प्रतिवोधत है भविकूं सुमती, तब ही चितचाहन चूंप भई समय सुंदरके गुरु गछपती, भेजे पतसाह अजब्बकी छाप बोलाये गुरु गजराज गती, १ गुज्जरतैं गुरु राजचले विचमैं चोमास जालोर रहे, मेदनी तटमंत्र मंडाण कियो गुरु नागोर आदर मांनल है, मारवाड रिणी गुरु वंदनकों तरसे सरसे विच बेगव है, हरख्यो संग लाहोर आये गुरु पतसाह अकब्बर पांवग हे २, ऐजी साह अकब्बर बब्बरके गुरु सूरत देखतही हरखे, हम योगी यति सिद्धसाध व्रती सबही पट् दर्शनके निरखे टोपी वस अमावस चंद्र उदय अज तीन वताय कला परखे तप जप्प दया धर्म्म धारणकों जग कोई नहीं इनके सरखे, ३ गुरु अमृत वाणसुणी सुलतान ऐसा पतसाह हुकम्म किया, सब आलम मांहि अमारि पलाय वोलाय गुरु फुरमाण दिया जगजीव दया धर्म्म दाक्षणतै जिन शासन वीच शोभाग्य लिया, समय सुंदर कहे गुणवंत गुरु दृग देखत हरखत मध्य हिया, ४, हे जी श्रीजी गुरु धर्म्म ध्यान मिले सुलतान सलेम अरज्ज करी गुरुजीव दया नित प्रेमधरे चित्त अंतर प्रीति प्रतीति धरी,- कर्म्मचंद्वुलाय दियो फरमान छोडाय संभायतकी मछरी,

-समय सुंदरके सब लोकनमैं नितखरतर गच्छकी क्षातिखरी, ५, हेजी श्रीजिन् द्त्त चरित्र सुणी पतसाह भये गुरुराजि येरे, चामर छत्र मुरा तब मेट गिगडद घूं घू बाजियेरे, उमराव सबे कर जोड खडे पमणे अपने मुखहा जियेरे, समय सुंदर तूही जगत्र गुरु पतसाह अकब्बर गाजियेरे, ६ हेजी ज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सद्गुरु रीझियेजी हूमायूको नदन एम अखे मानसिंघ पटो धरकीजियेजी, पतसाह हजूर थप्यो सिहसूरि मंडाण मत्री श्वर वींझीयेजी, जिनचंद पट्टे जिनसिंहसूरि. चदसूरज ज्यू प्रतपी जियेजी, ७, हेजी रीहडवंश विभूषण हस खरतर गच्छ समुद्रशशी, प्रतप्यो जिन माणिक्यसूरिके पट्ट प्रभाकर ज्यूं प्रणमु उल्हसी, मनशुद्ध अकब्बर मानत हे जगजाणत हे परतीति इसी, जिनचद् मुनींद चिरं प्रतपो समय सुदर देत आशीष इसी ८ इति श्रीदादा श्रीजिनचंद्रसूरि: अष्टकम् ॥

उस अकब्बर पतसाहके श्रीजिनचंद्रसूरि खरतर गच्छा चार्यके प्रथम समागमका चित्र उस समय चित्रकारने लिखा वह बीकानेरके श्रीजी साहब के समीप विद्यमान है, इन खरतराचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिको युग प्रधान जगद्गुरु पद बादसाहने दिया

खरतर गछाचार्य, श्रीजिनेश्वर सूरिने अणहिल पत्तनमै चैत्यवासियोंसै, जय प्राप्त करा, तब राजा दुर्लभने खग विरुद दिया और राजा परमजिन धर्म्मी हुआ, गुरुसे शास्त्र अध्ययन करा, यह वृतात गुजरातीमे छपा गुर्जर भूपावली ग्रथ, ब्राह्मणोके रचे मैं भी लिखा है चैत्यवासियोंके १७ गोत्र श्रावक, खरतरकी शुद्ध क्रिया ज्ञानको देख सुविहित पक्षमंतव्य करा, श्रीपति (लखा) गोत्र गुरुने प्रतिबोध दे श्रावक किया इनोके चंद्र सूरि उनोके अभय देवसूरि इनोके श्रीजिनवल्लभसूरि: चामुंडा [सच्चाय] देवीकों उपदेशसै वसवर्त्तीकर ५२ गोत्र श्रावक बणाये, इनोके दादा श्रीजिनदत्त सूरि: इनोंने आत्मलब्धिसैं, महात्म्य प्रगटकर, अनेक क्षत्री राजा ओका कष्ट मिटा, राजन्यवंश, माहेश्वरवंश, ब्राह्मनादि उत्तमज्ञातीवालोंको, सम्यक्त युक्त श्रावक बणाये, इनोके मणिधारी श्रीजिनचंद्रसूरि: दुसरे दादाजीने भी अनेक राजन्यवंशियोंको प्रति बोधकर श्रावक बणाये, इनोंके पचमपट्टधर दादा श्रीजिन कुशलसूरि: तीसरे दादा प्रगटे इनोंने ५० सहस्रराजन्यवंशियोंके ऊपर उपगारकर श्रावक गोत्र किया,

इस प्रकार खरतर बृहद्गच्छके युग प्रधानाचार्य गुरुदेव जैनमहाजनोंका जीवित विद्यमान समय अनेक उपकारकर धन और जनसै जिनधर्म्मकी वृद्धिकरी,

देवलोक गमन करनेके अनंतर भी जो भव्यजीव भक्ति भावसे गुरुदेवका पूजन स्मरण ध्यान करते है उनोंके शंकटमे सहायता, भाग्यानुसार द्रव्यप्राप्ति पुत्रप्राप्ति आदि, अनेक मन वंछितकार्य पूर्ण करते है, इस कलियुगमे हाजरा हजूर देव है

प्रश्न, देव गुरुके अर्पणकी वस्तु भक्ष नहीं तो दादा गुरु देवकी चढाई हुइ सेष सीरणी लोक केसे भक्ष समझते है [उत्तर] हेमहोदय देव वीतरागतो मुक्त शिव हो गये उनके तो मंदिर स्थापनामे गत भोग वस्तु अलीन है, और दादा श्रीजिन दत्त सूरि: प्रथम देवलोक इकल विमानमे चार पल्यकी आयुधारी महर्द्धिक देव है, खरतर सघकों श्रीसीमधर स्वामीसे पूछनिश्चयकर तीर्थकरोक्त दो गाथा वडगछ नायक देवभद्रसूरि देवता होनेके अनतर समर्प्पण करी वह गाथा गणधर पटवृत्तिमे तथा गुर्व्वावलीमे लिखी हुई है, पुनः दादा श्रीजिन कुशल सूरि विक्रमशताब्दी तेरेमे सिंधुदेश देरा उरमें फाल्गुण कृष्ण अमावश्याको देवलोक हुये फाल्गुणपूर्णमासीकों सर्व्वत्र खरतर सघको प्रत्यक्षपने दर्शन देकर कहा वडे दादा सहावपरमगुरुसोधर्म्मदेवलोकमे प्राप्त हे मेरा आयु दीक्षा लेनेके प्रथमही भुवनपतिनिकायका बंध पडगया था इसलिये असुर कुमार देवपने उत्पन्न हुआ हुं इसलिये तुम सर्व्व सघ धर्म्म ध्यानमें तत्पर रहो ऐसा कथनकर अतर्ध्यान भये इससमय वडे दादासहावकी भक्ति कर्त्ताके मनोरथ श्री जिन कुशलसूरि गुरुदेव पूर्णकरते है इसप्रकार चारों दादासहाव स्वर्गवासी देव है, उनोके निमित्त करी शेषसीरणी लीन है, उसमेसे, जो दादासाहवके सन्मुख चढाई जाती है, वह सीरणी कोई चढानेवाला नहीं खाता है, किंतु स्वस्थानमे रही सीरणीका भाग खानेमे दोष किंचित भी नहीं यथा, एक श्रावक साधुगुरुकों मोदकादिनिवध्य भक्षवस्तुका पात्र भरा लेकर प्रतिलाभने खडा होता है, भावभी उसका ऐसा है, गुरु साधूजीको संपूर्ण प्रतिलाभदूं, उसमेसें, साधूजी किंचित्‌मात्र लेते है, अवशेष पात्रमे रहा मोदकादि क्या संपूर्ण गुरुद्रव्य हो जायगा, कदापि नहीं, सर्व्व श्रावकजन अवशेष पात्रस्थित वस्तुकों खाते है, पुनः जहांगुरु महाराज उपाश्रयादिमे व्याख्यान करते है उहां श्रावक, प्रभावनाके लिये, मोदकादि गुरुके पट्टपर प्रथम आरोपणकर, अवशेषवाटते हैं, तो क्या वह प्रभावना गुरुद्रव्य हो जायगी, कदापि नहीं, इसप्रकार, दादा गुरुदेवको चढाये अनतर, शेषसीरणी, लीन है

प्रश्न, गौतमगणधरादिक महान्पूर्व्वाचार्योंका इतना क्यों नहीं बहुमान स्थापना करके करते दादा श्री जिनदत्तसूरि: श्रीजिनकुशलसूरि. का बहुमान क्यों करते हो [उत्तर] हे महोदय गौतमादि गणधरोंकी यत्र स्थापना है, और करी भी

जाती है, पूजन स्मरण भी करते हैं, लेकिन्, श्रीसंघकों सहायकर्त्ता, भक्तजनोंका वंछितपूरक दादा गुरु देवभी महान् आचार्योंकी तरे पुजास्मरणके योग्यहै, यथा सर्व तीर्थंकर एक सदृस देवाधिदेव है, उनोंमैंभी वीरजिनंद्रका व्याख्यान कल्प-सूत्रके पर्युषणोंमें सविस्तर पनें, स्वप्न उतारणा, जन्म महोत्सव, दशोटन इत्यादिविशेषपनें, सूत्रकार भद्रबाहुस्वामी, तैसें टीकाकार प्रकरणानुसार विशेषपनें रचनाकरी, वैसेंही व्याख्यानकर्ता व्याख्यानकर श्रीसंघको श्रवण कराते है. अन्य-तीर्थंकरोंका, तद्वतविस्तार क्यों नहीं करते, तव तो प्रत्युत्तरमें यही कहना होगाके. शासननायक आसन्न उपगारी होगये, इसलिये विशेषतासें करा जाता है, इस ही प्रकार जिन २ राजन्य वंशियोंको मिथ्यात्वका त्याग कराकर अमूल्य सम्यक्त्व रत्न दिया उन राजन्य वंशियोंकी शंतान उनोंके गुणोंसें आभारी हो उनगुरुदेवकी स्थान २ प्रति स्थापनाकर पूजा स्मरण ध्यान करते हैं,- इसकों विचार सक्ते हैं बुद्धिमान, यथा तपगच्छमें महान् पूर्वाचार्य अनेक ग्रंथोंके रचयिता, ज्ञानक्रिया-वंत अनेक होगये, उनोकी स्थापना करके अद्यावधि किसी भी तपगच्छके साधु वा श्रावकोंनें पूजन स्मरण नहीं करा था, लेकिन् पंजाब देशमें जोढूंढिये साधु पनेंमें स्थितहो प्रधान परावर्त्तन होनेंसे सात सहस्र ओसवाल [भावडो] कों, जो की खरतगच्छ गच्छके थे उन्हो जिन प्रतिमाकी पूजा त्याग दीथी उनोंकों पुजेरे बणाये, पीछे आप संवेगीसाधुवने और जैन तत्वादर्शादि केइ ८।९ ग्रंथ भाषामें रच छपवाकर, प्रसिद्ध कर, जैन संघपर उपगार करा, उनोंके देवलोका नंतर, उनोंके शिष्य शंतानी, स्थान २ अब आत्मारामजी [आनंद विजयसूरि] जीकी मूर्त्तियां, स्थापनकर, पुज वाते हैं, गौतमादि पूर्वाचार्योंकी स्थापना पूजा, क्यों नहीं कराई, प्रश्न कर्त्ता महाशयजी, आत्मारामजीकी मूर्त्तियां स्थापनेवालोंसे, ये प्रश्न नहीं पूछा होगा, तभी तो खरतर गणवालोंसे ऐसा प्रश्न छाप कर प्रसिद्ध करा है, सामान्य उपगार कर्त्ताकी मूर्त्ति स्थापकर पूजा करानी, क्योंके एक जिन प्रतिमाके पूजा प्रकरणके सर्व संबंधकों वर्जके, अन्य जैन धर्मकी कृतिको वे २२ समुदाय वाले भी स्वीकार करते थे, और पूर्वोक्त श्री जिन दत्त-सूरि प्रमुख गुरुदेवोंनें तो मदिरामांसमें प्रवृत्ति कारक, अहिसा क्या वस्तु है, इस प्रकारके मिथ्यात्व निष्ठ राजन्य वंशियोंकों परमार्हत बणाये, इसलिये दादा साह-बका उपगार असक्ष गुणविशेष, जिनोंकी पूजा स्मरण करना उचितही है, और दिव्य शक्तिसें मनोगत इष्ट प्रवृत्ति, आपदाकी निवृत्ति करणी, ये प्रत्यक्ष उपगार को भक्त जन कैसें, विस्मरणकर शक्ते हैं, वृथा आक्षेप करणा, समदृष्टियोंके उचित नहीं, सुज्ञेषु किंबहुना

[प्रश्न] देवलोकमे प्राप्त भये सम्यक्त्वीका चोथा गुणस्थानक है, और सम्यक्त्व युक्त व्रतधारीका पंचम गुण स्थानक होता हे, प्रमाद मे वर्त्तमान साधुका छठा गुणस्थानक, अप्रमादीका सप्तम गुणस्थानक होता हे, इसलिये श्रावक और साधु चतुर्थ गुणस्थान प्राप्त देवताका वंदन पूजनस्मरण केसें कर सक्ता हे, [उत्तर] हे महोदय जैसै वर्त्तमान जिन वंदन पूजनयोग्य होते है, तद्वत् भावी जिन भी वंदन पूजन योग्य होते है, जब प्रथम तीर्थंकर, ऋषभदेवजी, इस अवसर्प्पिणी कालमै, इस भरत क्षेत्रमे हुये उस समय उनोंनै भरतचक्रीके पूछनेसै आप तुल्य आगे २३ तीर्थंकरोंका होना फरमाया, कवल आयु, देहमान, वर्णादिकका भेद कथन करा, तद् नतर भरतचक्री कैलाश [अष्टापद] पहाड ऊपर सिंह निषद्या प्रासाद बनाकर चोवीस तीर्थं करोंकी प्रतिमा विराजमान करी, यह कथन आवश्यक सूत्रकी निर्युक्तीमे श्रुत केवली भगवान भद्रबाहूस्वामी कृतमे है, इस प्रकार भगवान् ऋषभ तथा ऋषभ पुत्र ९९ मुक्ति कैलाश ऊपर गमना नतर निर्व्वाण स्थानपर स्तूप कराया, यह कथन जंबूद्वीप पन्नत्ती सूत्र मे हे, इस प्रकार ऋषभ देवजीके चतुर्विध संघ प्रतिक्रमण षडावश्यक मै दूसरा आवश्यक चउवीस त्थव [चतुर्विंशति सस्तव] करते थे वह लोगस्सके पाठ मै सर्व्व श्रावक प्राय जानते है, वह वंदन पार्श्वनाथ स्वामीतक करा, उस मे आगामी भावी जिन जो द्रव्य निक्षेप मै थे, उनोका वंदन करणा प्रगटपने सिद्ध है, इस कथनानुसार, सीमंधर स्वामी तीर्थं करने, जिन दत्तसूरिकों, एक भवावतारी, मोक्षे गमन, फरमाया हैं, इस लिये वंदन पूजन स्मरणके योग्य निश्चय दादासाहब हे, १ दूसरा प्रमाण ऐसा है, नंदी सूत्र मै, २२ मी गाथा मै जिनके लिखे हुये सूत्र अर्द्ध भरत मे प्रचलित हे, तंवंदेखधलायरिए उन खंधिला चार्यकों वंदन कर्त्ताहू इस प्रकार २७ पट्टधारी आचार्य देव ऋद्धिगणि पर्यंतकों, उनके शिष्य सूत्र लेखक देवसेन आगमोंकी नूंद लिखते वंदना करी हे, प्रभव स्वामीसै लेकर पंचम कालमै जितनें जैनाचार्य शुद्धज्ञान क्रिया भगवतकी आज्ञाके आराधक हुये, होते हैं, होयगें, वेसर्व देव लोक मैं देवता हुये है क्योंकि जंबूस्वामीके अनंतर मुक्तितो गये नहीं, नंदी सूत्र मे २५ आचार्योंका वंदन लिखा ओर पढनेवाले करते है, सर्व जैन धर्म्मी नवकार मंत्रका स्मरण करते हे, उस मे तीनों कालके, आचार्य, उपाध्याय, सर्व्व साधुओंकों, वंदन करते है, वे सर्व्व पंचम आरे मै हुये, होयगें, होते है, वे सर्व्व देवगति धारककों वंदन हुआ वा नहीं, इस लिये ये शंका वृथा है, दादासाहबकी स्थापना गुरु पदकी है, नतु देव पदकी -

• जो सूत्र वा न्यायसैं युक्तिप्रमाण नहीं मंतव्य करे उनोंके लिये सरकारी दिवानी

फोजदारीका कायदा क्या कर सकता, अपने पिताकों पिता भावसै न माननीय करे, तो उसका, प्रतीकार कायदेमै क्या है, लोकीक मै वह प्रशंसा पात्र नहीं कृतघ्नीयोंका, शिरोमणि कहाता है,

उन गुरुदेवके संतान जती साधुओ नै जिनधर्म्मपर महान् आपनिया अत्याचारियोंने डाली, उसकों स्वशक्त्यानुसार निवर्त्तनकर लाखो जैन शास्त्र भंडार जिनमंदिर, जिनमूर्त्तियों, जैनतीर्थोको यथास्थित रखलिया, सब की आपदा भी, निवर्त्तनकरी, ऐसे जैनधर्म्मके आदि रक्षक धर्म्मोपदेशक, व्रत प्रत्याख्यान करने, करानेवाले, सामायक प्रतिक्रमण पोषध श्रावकोकों करानेवाले, सूत्र प्रकरणादिके व्याख्यानकर्त्ता, मंत्र, यंत्र, चूर्ण, अजनादि सिद्ध प्रभावक, कविप्रभावक, जोतिषादि निमित्त प्रभावक, लिखत पठत जीवाजीवादिनवतत्वके अध्यापक, इत्यादि अनेक गुणोसे सघके उपकारकर्त्ता, यती वर्गके उपकारोंसे लायकवंद कदापि दूर नहीं होंगे,

लेकिन् वर्त्तमानमें भारतग्रंथमे लिखा दृष्टांतकी सफलता दृष्टिगोचर हो रही है, जब पांडवोंको वनवास हुआ, तब राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणकों संगले वनदेखने निकले आगे देखा तो एकगऊ अपणी जन्मित वत्साका स्तनपान करती है, ब्राह्मणसे पूछा, हे भूदेव ये उलटी गति क्यों, हो रही है, ब्राह्मननै कहा, हे राजन्, ये कलियुग भावी स्वरूप दर्शाता है, कलियुगमै, मातापिता पुत्रोंका द्रव्य भक्षण करेंगे, उसका ये दृष्टांत कलियुग दर्शा रहा है, आगे जाकर देखातो, चंपक वृक्षके कंटक धूल पत्थर लोकजन डालते है, ओर उसके निकटवर्त्ती बबूलका कंटक वृक्ष उसकी पूजा प्रदक्षिणा वंदन नमन स्तुति पुष्पमाल धूपोत्क्षेपन आदि कर रहे है, धर्मराजनै ब्राह्मनसै पूछा ये असमंजस स्वरूप क्यों हो रहा है, ब्राह्मननै कहा, कलियुग भावी स्वरूप दर्शाता है, आगे निर्विवेकी कलियुगी मनुष्य, गुणवत जनसे द्वेष रखेंगे, दुःखदेंगे, ओर निर्गुणी, विचाररहित, मिथ्या वासितोंकी सेवा, पूर्वोक्त विधि बहुमान करेंगे २, आगे चलकर देखा तो, तीन पुष्करणिया, समश्रेणी है, प्रथम पुष्करणीका जल उछलता है, वह दूरवर्ती, पुष्करणी में जाकर गिरता है, शमीपस्थपुष्करणीमै एक बिंदु मात्र भी नहीं गिरता, तब धर्मराजने पूछा ब्राह्मण कहता है कलियुगमें, जो निज होयगे, उनोको द्रव्यादिनहीं देंगे, अन्यजनकों विशेष देनेमै प्रीति श्रीमत जन रक्खेंगे ३ इत्यादि कलियुगमै प्रवर्तनाके आगामी दृष्टांत सार्द्धगतमित कहे है, वह तो कलियुगी स्वरूप अवश्य प्रभाव दिखाने लगा है

वाजें जैन गृहस्थ यती जनोंकों उपदेश देने लगते है, आपकों द्रव्यसै क्या करणा हे, लेकिन् जिनोंसें शरीरकी ममता छूटे नहीं, उनोंकों तो द्रव्यकी अवश्य वाछा रहेगी, यदि इनोंसै त्यागी पना पूर्णतया निभसके तब तो जो जाणकार होता हे वह यती तो अवश्य द्रव्यका त्यागी हो जाता है, कहनेकी आवश्यक्ता नहीं, लेकिन् विचार करना चाहिये यदि यती गुरुजनोंकों श्रावक जननगद् द्रव्य नहीं भेट करते तो, यतिगुरु कैसै द्रव्य रखते, असाढमै पछे बडी पर्युषणोंमै व्याख्यान पूर्ण होनेपर, तपस्याके पारणे, औसरमै, विवाहमै, इत्यादि अनेक स्थानपर, द्रव्यदानके लिये पात्र सम्यक्त्वी व्रतधर मानकर भेट करना मुरुकरा, वह ही अद्या वधि प्रचलित है, इस आश्यासैं यति, श्रावक जनोंके लिये धर्म्म उपदेश करने उपाश्रयमै, तथा गृह ऊपर पर्यंत भी जाते है, यदि आश्यात्याग दे तो, निस्पृहस्य तृणं जगत् ऐसा स्वरूप वणजावे, लेकिन् यह भी स्मरणमै रहे, श्रावक जो जैन धर्म्म सनातनकों मतव्य करनेवाले है उनोंके केई धर्म्म कार्य मंदिर उपाश्रयके, द्रव्यधारी यति गुरु विना, नहीं निकलेगें, जिन २ क्षेत्रोंमें, जैन गृहस्थोंकों, यति पंडितोंका सहवास रहा, वे तो जिन धर्म्म पर स्थित रहे, और जिनोंकों, यति पडितोंका, सहवास, नहीं रहा, वे अमूल्य चिंतामणि रत्नसमान, जिन धर्म्मकों, अज्ञानपणे, त्याग कर, मिथ्यात्वियोंकी संगतसैं, मिथ्यात्ववासित हो गये, काशीस्थसन्यासी, महान्यायवेत्ता, रामा श्रमाचार्यजीनै, ब्राह्मन, सन्यासियोंकी, शभामै, मुक्तकंठसै, भाषण करा था, की, जैनधर्म्मका, स्याद्वादन्याय दुर्ग, ऐसा अभेद्य, और दृढ है, इसकों, कोई नहीं खंडन कर शक्ता, और जिन २ महाशयोंनै, इसके खंडनार्थ लेखनी उठाई, वे बालचेष्टावत्, विद्वानोंके सन्मुख, हास्यास्पद, माने गये है, इसके स्वरूपकों, प्रथम समझले, वह कदापि स्याद्वादीके सन्मुख, तर्क नहीं करेगा, अद्यावधि जितनें श्वेतांबर जिन धर्म्मी श्रावक है, उनोंका जिन धर्म्म, यतियोंकी संगतिसैं ही, रहा है, अब चाहे जिनके उपदेशका लाभ मंतव्य करौ, अब तो यति-विद्वान ही समयके फेरसै, अल्पही रह गये, तादृसलाभ सर्वत्र प्राप्तही कैसै हो,

जिन मंदिरोंसै जैनधर्म्मकी प्राचीनता अन्य-दर्शनियोंकों भी विदित हुई, संवत् १९७५ के वर्षके मासिक पत्र प्रयाग सरस्वतीनै लिखा है मथुरामै पृथ्वी तल खोदते एक जिन मन्दिरका तोरण लेखयुक्त निकला है उस पर लिखा है शिवयशानै अर्हतकी पूजाके अर्थ ये जिन प्राशाद कराया, महावीरप्रसादद्विवेदी सरस्वती संपादक लिखते है, नोट मै, यह जिन मंदिर, ईशवी सन्के, केइ शताब्दी प्रथमका बना हुआ, अंगरेजविद्वानोंनै सिद्ध करा है, वह

लखनेऊके अजायब गृहमै, अंगरेज सरकारनै रखा है, इस प्रकार जिन मंदिर जिन मूर्त्तियोंद्वारा जैनधर्मकी प्राचीनता, अन्य दर्शनियोंके दृष्टि गोचर विश्वास करने योग्य हो रही हैं, क्यों कि बहुतसै जिनधर्मके द्वेषी जिन धर्मको विशेष प्राचीन नहीं मानते थे, लेकिन् जिन मदिरोंके प्राचीन प्रादुर्भावसै उनकों भी जिनधर्म प्राचीन है ऐसा मानना पडा है.

इस भरतक्षेत्रमैकेइयक मत मतांतर प्रथम होगये लेकिन् उनोंका नाम निशान तक अन्य दर्शनी नहीं जानते, यथा श्वेतांबर भगवती सूत्रमै गोसालेका कथन है, लेकिन् दिगंबर जैनी नामधारकोंके पुराणोमै उसका नामाचिन्ह पर्यंत भी नहीं है, श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख, प्रथम आर्यावर्त्तमै रहनेवाले जो बोद्धोंनै गोसालेकों वीरप्रभुसंग दृष्टिसै देखा था, वे बोद्धग्रंथमै लिखते है, निग्रंथ महावीरका एक शिष्य गोसाल कमी था इस न्याय श्वेतांबरोंका ग्रंथ लेख सत्यप्रतीति करनें योग्य है, गोशालेके मतको माननेवाले उसशमय ११ लक्ष श्रीमत गृहस्थ थे, और महावीर स्वामीके यथार्थ धर्मानुयायी सौराजा और एकलक्ष गुणसठ सहस्रव्रतधारी गृहस्थ श्रीमंत लिखा है, लिखनेका तात्पर्य ऐसा है, इग्यारेलाखके मताध्यक्षका नामचिन्ह तक आर्यावर्त्तमै नहीं रहा, और जैनतीर्थकरोंकी प्राचीनता और होना अन्य दर्शनियोंमै क्यों कर प्रगट होगई, सम्यक्त्वधारी श्रावकोंके जिनमंदिर करानेके प्रभावसै इसप्रकार गोशाले आदिपूर्व्व मतांतरियोंके गृहस्थ मंदिरमूर्ति बनवाते तो, इससमय उनोंका होना अन्य दर्शनी भी स्वीकारते, ऋषभदेव के शमय पर्यंतकी भी मूर्तियां अद्यावधि मिलती है, क्योंके निर्विवाद सिद्ध है, जैनगृहस्थ असंक्षकालसै जिनमंदिर, जिनमूर्ति कराते चले आये, [प्रश्ण] जिनमंदिर जिनमूर्त्ति, पुनःउसकी पूजामै जल, पुष्प, अग्नि, फलादि आरोपण करना, हिंसा है, और हिंसाका कृत्य जिनधर्मी श्रावक कैसै करै, [उत्तर] हे भव्य यह तो तुमभी बुद्धिसै निर्धार कर सक्ते हो, विना तीर्थ करके भक्त श्रद्धानवाले विना जिनमंदिर कोन करावेगा, और वेही जिनमंदिर कराते चले आये है, और तीर्थंकरके भक्त श्रद्धावंतकों, मिथ्यात्वी कहे, वह मिथ्यात्वी जिनाज्ञाका विराधक होता है तुम विचार लो तीर्थकरकी श्रद्धा भक्ति मिथ्यात्वीकों कैसै हो सके, जिनमंदिरोंके करानेवाले निश्चय सम्यक्त्ववंत सिद्ध होते है, मिथ्यात्वी वोही कहाता है जो तीर्थंकरसै वे मुख हो, अब रही ये कुतर्क की, पूर्वोक्त विधिमै हिंसा है, सो स्वरूपहिंसा यत्किंचित् एकेंद्री जीवोंकी दिखती है जिनमंदिर, जिनप्रतिमा, कराने, वा पूजामै, तबतो तुमलोकोंनै उपवास, बेला, तेला अठाई, पक्ष, मासक्षमणादि तपस्याकों भी त्यागदेना चाहिये, इस मनुष्य देहधारीके शरीरमै, बेइंद्री, तेंद्री, त्रसजीव भी असंक्ष है चूरणिये,

गिडोले, जूं, लीख, चर्मजूं आदिक २० जातिके, पन्नवनासूत्रजीवपद्मै, अशै मै, कठवेलमै, द्विन्द्रियजीव कहा हे नारुकों, वेइद्री जीव कथन करा है, उनोंका जीवतव्य मनुष्यकृत आहारपानीसै है, जवउपवाशादिमै, उन जीवोंकों, आहारपानी नही मिलता, तव वे, मर जाते है, अव तुम विचार करो, धर्मके अर्थ असंक्षजीव हलते फिरतेको, मारना, ये हिसा विशेष, वा जिनमंदिरादिमै, एकेंद्रीजीवोंकी हिसा वताकर त्यागदेना, वह विशेष, इसलिये ही आचारागसूत्रमै, लिखा है

आसवासेनिरासवा, निरासवासेआसवा, अर्थात् आश्रव वह निराश्रव, निरा-श्रव वह आश्रव, धर्मकार्यमै हिसाकी दलील करणी, जिनाज्ञासै विरुद्ध है सर्व्व कार्यमैं इरादा (भाव) अनुसार, धर्म्म, और पापका बंध होता है

प्रतिष्ठाकल्प नामग्रथ १० पूर्वधर श्रुतकेवली भगवान वज्रस्वामीका रचा हुआ है, इस लेखानुसार, जिनमदिर, जिन प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई जाती हे,

१२ कालीके अनंतर ८४ आगमोंमै २४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति आदि १६३ शलाका पुरुषोंका इतिहास, श्रावकोंका जीवन चरित्र आदि पूर्ण पने नहीं लिखागया, अन्य २ अनेकस्थल जैसे दृष्टिवाद विछेदगया वा ११ अगमै विंदुमात्र-स्थल लिखागया, वाकी पूर्वधारियोंने, वा श्रुतधर आचार्योंनै, जो लिखा, वह घोर जुल्मसैं वचेवचाये-लाखों शास्त्र जैनके विद्यमान है, पाटन, पट्टन, खंभायत जेसलमेरादिकोंके भंडारोंमै, वे शास्त्र जेनधर्मके अगाध ज्ञानका परिचय दे रहे हैं, सुत्रोंमैं विशेषतया साधुमार्ग काही उल्लेख लिखागया, श्रावकोंकी दिन-चर्या, रात्रिचर्यादिक आचार विचार, श्रुतधर आचार्योंनै गुरु परंपरागत श्रवण करे हुये प्रकीर्णलिखे उसमैं मिलते है,

ओसवाल-मरुधरदेश वास्तव्योंसैं दान लेनेवाले १६॥ जातिके-भोजक मग जाति अपनेको साकलद्वीपी कहते है, लेकिन काशी गयाके देशमै वसने वाले, साकलद्वीपी ब्राह्मन ओर हैं, वे भी भोजक कहाते है, काशीमै उनोंनैं अपणी ब्राह्मनोंमै, श्रेष्ठता सिद्ध करने, संस्कृतमैं पुस्तक छापी है, उन भोजक साकल-द्वीपियोंसे, इन भोजकोंसै कुछभी संवंध सिद्ध नहीं, इन ओसवाल मारवाडि-योके, भोजकोंका, इतिहास, टाडसहावके लिखे, राजपूताने इतिहाससैं, सवथ मिलता है, तत्व क्या है, वह तो सर्वज्ञ जानें,

ब्राह्मन ज्ञाति मुख्य तो एकही स्थापित हुई यथावेदोक्त श्रुती है, ब्राह्मणोमुख-मासीत्, जैन धर्मवाले भी माहण [ब्राह्मण] सज्ञा सम्यक्तयुक्त उत्कृष्ट द्वादश व्रत धारक, उभयकाल षडावश्यक, तथा षट् नियम नित्यधारक, पांचसै मनु-

ष्योंका नाम प्रचलित प्रथम हुआ, उनोंमै आज्ञाकर्त्ता आचार्य कहलाये, वाचना देनेंवाले उवझाय [उपाध्याय] कहलाये, उवझायशब्द जैनसूत्र प्राकृतका है, वृद्ध बहु श्रुती आर्श कहलाये, कल्याणकारी तपकर्त्ता कल्याण कहलाये, विस्तार अर्थयुक्त व्याख्याकर्त्ता, व्यास कहलाये, आगे जिनोंके वाक्य हितावह वह पुरोहित कहलाये, एवंज्ञाति उन माहनोंमै नानाकारणोंसै होती गई उसके अनंतर इनोंमें भेद हुआ ऐसा जैन धर्मका मंतव्य है, तदनतर दिनोंदिन वृद्धि होनेंसै देश २ मै भिन्न भिन्न वसनेंसैं, देशोंकी अपेक्षा जाती स्थापित होगई यथा सारस्वता कान्यकुब्जा, गौडाउत्कल मैथिला, पचगौड इतिक्षाता, विन्ध्यो उत्तर वासिन. १ इसप्रकार द्रविडदेशकी अपेक्षा पंच द्राविड कहलाये

सर्व ब्राह्मणप्राय अपनेकों इनदशोंके अंतर्गतही मतव्य करते हैं, जिसमै सरस्वती नदीके शमीपवर्ती सारस्वत कहलाये कनोजदेशवास्तव्य कनोजिये कहलाये, (सरवर) केशमीपवर्ती सरवरिये, गौडदेशवासी गौड, गुजरातके वास्तव्य गुज्जर गोड, उत्कल देशवास्तव्य उत्कल कहलाये, मिथिलावास्तव्य, मैथिल कहलाये, संखारङ्गीऋषिकी शंतान शंखवाल, पाराश्वरकेपारीक, दाधीचके दायमै, खडेलाके शमीपवर्ती खंडेलवाल, भृगुऋषिकेभार्गव (ढूसर) इत्यादि अनेक भेदांतर गौडोके इससमय है, द्रविड, कर्णाटी, तैलिंग, महाराष्ट्र, औदिच्य, गुज्जर, इनगुज्जरके भेदांतर, श्रीमाली, पुष्करणे, गूगली, तैलिंगके भेदांतर भट्ट, गोस्वामी, इत्यादि है, साकलद्वीपी भोजक, राजगुरुप्रोहित, भोजक, चोबे, सनाढ्य, पांडे इत्यादि ८४ भेदातर माने जाते है, जिन २ जातिकी पुरानेंमै, उत्पत्ति लिखी है वह पीछेसें सिद्धहोते है, और जिसकी उत्पत्ति पुराणोंमें नहीं लिखी है, वह सनातन प्राचीन ब्राह्मण सिद्ध होते है, (उदाहरण) पुष्करणे ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति किसीभी देवतासै, वा अमुक ऋषिके शंतान ऐसा लिखत नहीं देखनेमै आता, इसन्याय, जबसै बाह्मणवर्णकी स्थापना प्रचलित हुई तब हीसै पोसह करना ब्राह्मण हुये;-ये बलात्कार सिद्ध होता है, सूर्यचंद्रादिग्रह, इन्द्रादिकदिव्य शरीरधारी देवोंकी तेजोमई प्रतिछाया उनोंकी ये पहचान है, उच्च दरजेके देव, मनुष्य लोकको दुर्गंधिके कारण, एकाएक मृत्युलोकमै, आते नहीं, किसी तपेश्वरीके तपसिद्धिसैं, वा पूर्वभवके स्नेहके वश ध्यानके वस आते हैं, तो भूमिसै स्पर्श उनोंका पांव नहीं होता, न्यूनमै न्युन चार अंगुल पृथ्वीसै अधर रहते है, आंख नहीं टमकारते, पुष्पमाल कंठस्थ नही म्लान होती, मनमै धारे कार्य करने समर्थ, इतने चिन्ह दिखाई देतो, देव समझो, अन्यथा मनुष्य, मनुष्यलोकमैं तथा बागबगीचोमैं, जो देव रहते हैं, वे व्यंतर जाति, वनव्यंतर जाति एवं १६ उनोंमै भी, महान्पुण्यशाली व्यंतर देवभी मृत्युलोकमै पूर्वोक्तकारणविना नहीं आते, देव देवांगनासै, रतिक्रीडा करते, पूर्णतृप्ति, वायुके

श्वेतपुद्गलोंके, सग्गाट निकलनेसै, होती है, मनुष्यवत् शप्तधातुका शरीर देवका नहीं, इसलिये नतोवीर्य (शुक्र) निकलता, मनुष्य, तिर्यंचवत पुत्रोत्पत्ति नहीं होती, जिनधर्म्मवाले, तथा सायन्सवाले, तो मनुष्यसै मनुष्योंकी उत्पत्ति, तिर्यंचोंसैतिर्यंचोंकी उत्पत्ति मानते है, सूर्य, चद्र, इंद्र, इत्यादिनामके मनुष्यकों उत्पत्तिके कर्त्ता किसी श्री सत्रधमै, नामके कारण देव ठहराया होगा, ऐसा अनुमान होता है, १८ पुराणोमै तथा ईसाईमतावलवी, ईसाकी माता मिरयमकों, ईश्वरसै गर्भवती हुई ईसाको जन्मा, ऐसा लिखा है, दुसरोंका मंतव्य ऐसा है, जैनधर्म्मका नहीं है, कबीर पथी कबीरजीकी पुष्पोंमै उत्पत्ति, अतमै पुष्प होना कहते है, गोकुल सम्प्रदाई कृष्णका अवतार वल्लभाचार्यजीकी, अग्निकुंडमैं. उत्पत्ति, कहते हैं एव अनेक मत है आर्यसमाज मतके उत्पादक स्वामी दयानंदजी अपने रचे सत्यार्थ प्रकाशमै देवता, और नर्क, ये दोगति परोक्षकों नहीं मानी, लेकिन् दयानंदजी उक्तवेद क्रिया करनेसै, मनुष्योंका मुक्त आत्मा होना मंतव्य करा, वे मुक्तात्मा सैल करने, इछानुसार इधर उधर घूमते फिरते हैं, विचार होता है देवगति, नर्कगति, सर्व्व दर्शन सम्मत है, उसकों, नहीं मानना, सोतो समझा, लेकिन् मुक्तात्मा, इधर उधर घूमते फिरते है, इसमै प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है, क्या उनोंकों मनुष्योंनै कभी देखा है, वेदोंके पूर्व भाष्यकार, पुराण, कुराण, सर्व्वमत, देव, इंद्र, नर्कादिगति लिखी है, देवतोंकोंही मुक्तात्मा केइ मतधारी मानते हैं, मनुष्यवत् शप्तधातु निष्पन्न शरीर नहीं होनेसैं, नास्तिक मत उत्पादक बृहस्पति देव, नर्क, नहीं मानता, लेकिन् स्वामी दयानंदजी जीव, ईश्वर, माना, बृहस्पतिने नहीं माना इतना तफावत है,

इस महाजनमुक्तावलीमैं, राजन्यवंशी विशेषतया,-बाकी ब्राह्मणादि ३-वर्ण अल्प संख्यासै जिनधर्म्मकी शिक्षा विशेषपनै आपदा निवृत्ति होनेसै, पश्चात् सहवास उपगारी आचार्योंका करनेसै प्राप्तकरी उस उपगार कृत्यमै, दादा गुरु देवोंने, निज आत्मबल शक्तिकी स्फुरणा, निःकेवल अहिसा परम धर्म्मकी वृद्ध्यर्थही करी, स्वार्थवस किञ्चित् भी नहीं, उन २ चमत्कारोंका लेख देखकर, केइयक आधुनिक जैना भास अपनेमै साधुत्वगुण सिद्ध करने गर्व्वमत्त कहते है, उनोंमै साधुत्वगुण नहीं था, यदि होता तो लब्धि नहीं स्फुरण करते, ज्ञानशून्य, अविद्यामहादेवीके-संतानं, ऐसे वाक्योंको तहत्त कह कर सत्य श्रद्धानं इस वार्त्तापर लाते है, लेकिन् उनोंनैं बुद्धि खरच-करणी चाहिये, जिस लब्धिके फिरानेमैं, आज्ञा भंगका दोष लगे-आगे अनर्थकी परंपरा वृद्धि पावै, वह लब्धि फिरानेसै साधुकों आलोचना करना ऐसी आज्ञा जिनेश्वरनें दी है, और जिस लब्धिद्वारा अनर्थ कृत्यनिर्मूल होकर धर्म्मकृत्य वृद्धि पावै, उसमै आलोचन प्रायश्चित्त लेनेकी, किसी ग्रंथमैं

भी आज्ञा नहीं, २८ लब्धिमें केवल ज्ञान, मन पर्यवज्ञान, अवधिज्ञानकी लब्धि, पदानुसारणी लब्धि कही, जिसलब्धिसे केवल एक पदके पढनेसे लक्ष कोटि प्रमाण पद्र विगर पढे आ जावै, तो विचार लो पूर्वोक्त केवल ज्ञानादिक लब्धि प्राप्तहोनेसें क्या उसकी स्फुरणा, साधु नहीं करते है, क्या इनोकों दड कहांई लिखा है, श्रीजिनदत्तसूरिः प्रमुख आचार्योंनें आत्मबल लब्धि, निकेवल हिसक धर्म्म मिथ्यात्व त्याग कराने, करी, विचारे करे क्या, आपमै तो अंशमात्र, ऐसी आत्मबलशक्ति नहीं, तब उन अनभिज्ञ अपठितोंके सन्मुख ऐसी गप्पसप्प लगाकर, निज प्रतिष्ठा जमाते है, जो जिनधर्मके उपगारकर्त्ता आचार्योंके स्थापित ओसवालादिककुलनहीं होता, तो तुमको ये चगे मालमलीदे मिलने कहाथे हम जब आपके इस कथनकों, सत्य समझें, और आप में, साधुपना समझे, एक राजन्यवंशीकों, प्रतिबोध देकर, ओसवालोंमे मिला तोदी जिये, फक्त राधेकों, गंधने योज होकर, पुनः, उनोंमें, साधुपना, नहीं था, ऐसे २ मृषा लापकर पापपिंड भरते है,

और इन आत्मबल मंत्र चमत्कारोंसें, प्रतिबोधित महाजनोंके इतिहासोंकों, पढकर, आधुनिक आर्यासमाजी आदिकोंको, इन २ वार्त्ताओपर, प्रतीति नहीं आवेगी, लेकिन् उनोंने दयानदजीके लेखोंको, पढा होगा, योगसाधक योगीके, अष्टसिद्धिया, प्रगट होती है, वह अचित्य शक्तिधारक, उस योगद्वारा, अनेक कार्य साधने समर्थ होता है, यथा वर्त्तमान समयमें, उन गुरुदेवके योगमेंसें, अल्पास योगसाधक, मेस्मेरिजम कर्त्ता, अनेक, अद्भुत कार्यकी सफलता कर दिखाते है, व्याधि मिटा देते, भूत, भविष्यद्, वर्तमान, दूरवर्त्ती निकटवर्त्ती वतादेना, अपने आत्मबलकी शक्ति, अन्य आत्मासें मिलाकर मुक्तात्मा(मृत)कका आव्हान करना आदि प्रत्यक्षपने विद्यमान है, सुना है के अमेरिकामें तो चाहे जिस मृत मनुष्यकों बुलाकर, परोक्षपने वार्त्तालाप कराते है, वाणी द्वारा जानाजाता है की ये वाणी अमुक मनुष्यकी है, गुप्त गृहका रहस्य वता देता है, दृष्टिगोचर नहीं होता, तो फिर इस योगधारियोंसें असंक्ष गुणयोगमें दृढ साधन कर्त्ता श्री जिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंके चमत्कारोंमें सदेह करना, कोनसी बुद्धिमत्ता है,

पुन. दयानंदजीनें पचमहायज्ञमें, विवाहादि शोले संस्कारोंमें वेदोंके मंत्र लिखे है और लिखा है, अमुक मत्र पढकर अमुक कृत्य करना, इसका हेतु क्या होगा, ईश्वरको दयानंदजीनें आकाशवत् सर्व्वव्यापी कथन करा है, तब तो ससारके यावन्मात्र पदार्थ ईश्वरसें भिन्न रहा नहीं, वह सर्व्व ईश्वरके आधीन है, तो फिर मंत्रोंकों पढकर कंठशोष करनेसे क्या सिद्धि है हवनादि करते, वह तो त्रिकालदर्शी है, मनुष्योंकी अपेक्षा तीन काल है, ईश्वरकी अपेक्षा केवल सर्व्व

वर्तमानकाल है, ये वेदोंके मंत्र ईश्वरनै अपनी पूजाके अर्थ किस लिये रचे जो कुछ मनुष्य उसके अर्थ कृत्य हवनादि करे उससै ईश्वर प्रसन्न होता होगा, तब तो रागी हुआ, जो ईश्वरके अर्थ मंत्र पढ कृत्य नहीं करे, उसपर द्वेष करता होगा, इसन्याय द्वेषी ठहरा जब राग द्वेष विद्यमान है, एसेको कोन बुद्धिवान ईश्वर मान सक्ता है, यदि वेदोक्त मंत्र कुछ कार्य साधने समर्थ है तो, अन्यमंत्रोंको असत्य क्या समझ कहते है, मत्रका अर्थ गुप्त रहस्यका कहना होता है,

भगवत महावीर सर्व्वज्ञनै पंचम आरेमै, २३ वेर उदयकर्त्ता २००४ युग प्रधानोंका प्रादुर्भाव कथन करा ये आरा २१ हजार वर्षोंका है, उसमैंसै, जिन-वल्लभ, जिनदत्त, जिनचंद्र आदि नाम विद्यमान है, इन गुरुदेवोंनै, जिन धर्म्ममें उदय करा,

फर्मान जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादसा गाजीका हुक्काम किराम व जागीर दारान व करोरियान व सायर मुत्सद्दियान मुहिम्मात सूबे मुलतान बिदानंद किचू हमगी तवज्जोह खातिर खैरदेश दर आसूदगी जमहूर अनाम वल काफ फए जॉदार मसरूफ व मातू फस्त कि तबकात आलम दरमहाद अमनबूदा बफरागे बालबइबादत हजरत एजिद मुत आल इश्तगाल नुमायद व कब्ले अर्जी मुरताज सैर अंदेश जिनचंद्रसूरिः खरतरगच्छ कि वफैजे मुला-जिमत हजरते मासरफ इखतिसास याफता हकीगत व खुदातलबी ओव जहूर पेवस्ता बूद ओरा मशगूल मराहिम शाहशाही फरमूदैम मुशारन् इले है इलति-मास् नमूद् कि पेश अर्जी हीरविजयसूरिः सागर शरफ मुलाजिमत् दरियाफ्ता बूद दर हरसाल दोवाजदहरोज इस्तदुवा नमूदा बूदकि दरा अय्याम दर मुमा-लिके महरूसा तसलीख जान्दारे नशवद् व अहदे पेरामून मुर्ग व माहीव अमसाले ऑनगरदद् व अजरूय मेहरबानी अर्जा परवरी मुल्त मसे ऊदरजै कबूल याफ्त अकनू उम्मेदवारम्कि यकहफ्ते दीगर ई दुवा गोयू मिसले ऑ हुक्मे आली सरफ सुदूर यावद विनाबर उमूम राफत हुक्म फर मूदैम् कि अज तारीखै नौमी ता पूरन मासी अज शुक्ल पच्छ असाढ दर हरसाल तसलीख जॉदारे न शवद व अहद् दर मकाम आजार जॉदार मोरेनगर दद व अस्ल खुद आनस्त किचू हजरते वेचूं अजबराए आदमी चंदी न्यामतहाय गूनागू मुहय्या करदाअस्त दर-हेच वक्त दर आजार जानवर नशवद् वशिकमे खुदरा गोर हैवानात नसाजद लेकिन् बजेहत् बाजे मसालह दानायान पेश तजवीज नमूदा अंद दरीं विला आचार्य्य जिन सिंहसूरिः उर्फ मानसिंह व अरज असरफ अकदस रसानीद कि फरमाने कि कब्ल अर्जी व शरह सदर अज सुदूर याफ्ता बूद गुम शुदा विनाबरा मुताविक मजमून हुमो फरमान मुज दद फरमान मरहमत फरमूदैम में बायद कि

हस्बुल मस्तूर अमल नमूदा व तकदीम रसानद् व अजफरमूदह तसल्लुफ व इन हिराफ नवरजंद् दरीं बाब निहायत एह तमाम व कद्गन् अजीम लाजिम शनिस्ता तग इयुर व तबद्दु डुलू वकबायद् आंराह नदिहंद् तहरीरन् फीरोज रोजसी वयकुम माह खुरदाद् इलाही सन् ४९

अहिंसा फर्मान बादशाह अकबर

[१] वरिसालए मुकर्रबुल हजरत स्सुलतानी दौलतखां दुग्चौकी [उमदे उमरा]

[२] जुब्रद् तुल आयान रायं मनोहर दरनौवत वाकया नवीसी खा-जालालचंद्

हिन्दी योधपुरस्थ मुन्सी देवीप्रशादजी कायस्थने करा पारसीसे

फरमान मोहरछाप अकबर बादसा गाजीका सूबे मुलतानके बडे २ हाकिम जागिरदार-करोडी और सब मुत्सद्दी [कर्मचारी] जानले कि हमारी यही मानसिक इच्छा है कि सारे मनुष्यो और जीव जन्तुओंको सुख मिले जिससे सबलोग अमनचैनमें रहकर परमात्माकी आराधनामे लगेरहे इससें पहले शुभचिंतक तपस्वी जिनचंद्रसूरिः खरतरगच्छ हमारी आमखासमे हाजर हुआ जब उसकी भगवद्भक्ति प्रगट हुई तब हमनें उसको अपनी वडी बादशाहीकी मेहरबानियोंमें मिलालिया उसने प्रार्थनाकी इससे पहिले हीरविजयसूरिनें सेवामें उपस्थित होनेका [हाजर रहनेका] गौरव प्राप्त किया था और हरसाल १२ दिन मागे थे जिनमें बादशाही मुल्कोंमें कोई जीव मारा न जावे और कोई अदमी किसी पक्षी, मछली और उन जैसे जीवोंको कष्ट न दे उसकी प्रार्थना स्वीकार होगई थी, अबमें भी आशा करता हूं कि एक सप्ताहका और वैसा ही हुक्म इस शुभ चिंतकके वास्ते हो जाय इसलिए हमने अपनी आमदयासे हुक्म फरमा दिया कि आषाढ शुक्लपक्षकी नवमीसे पूर्ण मासीतक सालमे कोई जीव मारा न जाय और न कोई आदमी किसी जानवरको सतावे असल बात तो यह है कि जब परमेश्वरनें आदमीके वास्ते भांति २ के पदार्थ उपजाये है तब वह कभी किसी जानवरको दुख न दे और अपने पेटको पशुओंका मरघट न बनावें परन्तु कुछ हेतुओंसे अगले बुद्धिमानोंने वैसी तजवीज की है इन दिनों आचार्य जिन सिंहसूरिः उर्फ मानसिंहने अर्ज कराई कि पहले जो ऊपर लिखे अनुसार हुक्म हुआ था वह खो गया है इस लिये हमनें उस फरमानके अनुसार नया फरमान इनायत किया है चाहिये कि जैसा लिख दिया गया है वैसाही इस आज्ञाका पालन किया जाय इस विषयमे बहुतही कोशिश और

ताकीद समझ कर इसके नियमोंमें उलट फेर न होने दे ता. ३१ खुरदाद इलाही सन् ४९ हजरत बादसाहके पास रहनेवाले दौलत खाके हुक्म पहुं-चानेसै ऊमदा अमीर और सहकारी राय मनोहरकी चौकी और ख्वाजा लालचंदके वा किया [समाचार] लिखणेकी वारीमें लिखा गया

युग प्रधान जगद्गुरु भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरिः इल्काव इनायत मेजर जनरल सर जान मालकमकी लिखी हुई मेमायर आव् सेंट्रल इंडिया नामकी पुस्तक दो जिल्दोंमै है उसकी दूसरी जिल्दमें उनोंनें इस फरमानका जिक्र लिखा हे

तथा उज्जेण मालवाके जैनमंदिरमें इस फरमाणका शिला लेख है.

जैन ग्रथोंसे पुष्करत्रय प्रादुर्भाव

वीतभयपत्तन सिंधुदेशमें २५०० वर्ष लगवग राज्यथा उहा उदाई राजाथा उसनें विशाला नगरी जो पूर्व देसमे उसका स्वामी चेटकराजा उसकी वडी भगनी त्रिसला जो क्षत्री कुंडपुराधीश सिद्धार्थकों व्याही थी उससै नंदिवर्द्धन १ और वर्द्धमान [महावीर] ये दो पुत्र उत्पन्न हुये जिसमै महावीर ३० वर्षकी वयमें राज्य स्त्री त्यागकर निर्ग्रंथ हुआ १२॥ वर्ष तपकर मोहादिकर्मोंको क्षय कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी जैनधर्मका २४ मा तीर्थंकर कहलाया चेटककी ७ पु-त्रियां हुई ६ तो ६ राजोंकी राणिया हुई जिसमें प्रभावती उदाईकों व्याही ७मीसु ज्येष्टा कुमारी दीक्षाले साध्वी हो गई इसके संग पेढाल विद्याधर सन्यासीनें बलात्कार संगम करा तब उसके सत्यकी नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १४००० सहस्र विद्या सिद्धकर इग्यारमा रुद्र कहलाया जिसको लोक महादेव कहते हैं उस उदाई राजाकी स्त्री प्रभावतीको देवविनिर्मित जीवित महावीर स्वामीकी मूर्ति प्राप्त हुई, उस प्रतिमाकी पूजा त्रिकाल करती थी, उसकी पूजोपकरण रक्षार्थ कुब्जा-दासी नियत थी, निमित्तज्ञानसै अपनी आयु अल्प जाणकर पर भव सुधारने पति उदाई नृपसें दीक्षार्थ आज्ञा मागी राजानें कहा यदि तू तप संजम ब्रह्मचर्य द्वारा परलोकमै देव पद पावे और मेरे सकटमें सहायता करनेकी प्रतिज्ञा करे तो दीक्षाकी आज्ञा देताहू राणीनें प्रतिज्ञा करी आज्ञानुसार साध्वी हो षट्मास तपसजम आराधकर सौधर्म प्रथम देवलोकमै देव हुई, इधर जीवित स्वामीकी प्रतिमा राजा उदाई त्रिकाल पूजते रहा एकसमय गाधार देशी श्रावक जीवित स्वामीके दर्शन पूजार्थ आया उसकों अतीसारकी व्याधि हुई तदा साधर्मी जानकर कुब्जा दासीनें परिचर्याकी निरोग होनेपर उसनें दो गुटिका प्रत्युपकारमें कुब्जाकोंदी और कहा एक गुटिकासें तेरा कुब्जत्व निवृत्त होगा दूसरी गुटिकासे सौभाग्य वृद्धि होगी, वैसाही हुआ उससमय उज्जैण

१ इसका पूर्ण वृत्तांत जैन दिग्विजयछपे हुये ग्रथमें देखो ।

पुराधीस इसके रूपकी प्रशंसा श्रवणकर दूती संचार कर जीवित स्वामीतुल्य अन्य प्रतिमा स्थापन कर उस प्रतिमायुक्त अनल गिरि गंधहस्तीपर दासी और प्रतिमाको लेकर उज्जैण गया दुसरे दिन पुष्पमाला मूर्त्तिकी म्लान देख, राजा शंकित हुआ, क्योंकि मूल देवाधिष्टित प्रतिमाका अतिशय था, जो पुष्प आरोपन किया जाता, वह म्लान नहीं होकर निजरूपही रहते थे, दासीभी नहीं पाई, तदनंतर राजा, अपनें सर्व हस्तियोंकों निर्मद हुआ देखकर, अनुमान करा, अवश्य अनलगिरि गंधहस्ती इहा आया उसकी गंधसे सर्व हस्ती मेरे निर्मद होगये, वह चंड प्रद्योतविना अन्य राजाके नहीं है तब दूत भेजा दासी तुझे दी लेकिन जीवित स्वामीका स्वरूप पीछा भेज, दासी उस प्रतिमाका इष्ट होनेसें मूर्तिविना रहे नहीं, इसलिये चंडप्रद्योतने, देना इनकार किया, तदा राजा उदाई, ससैन्य चढाई करी, लोद्रव पत्तनकी भूमि शमीप, जल नहीं, शैन्या जलाभावसे, व्याकुल हुई, राजा चिताग्रस्त अत्यत हुआ, उस समय, वह प्रभावती देवता प्रगट हो, अक्षयजलका, दिव्य कुंडरच, चिता निवृत्तकरी, पुन अधुना रामदेवका स्थान हें, तत्र जलाभावसें, दुसरा कुड रचा, जो कुष्टी अंधेआदि किसी समय आरोग्य, रामदेवके मेले में उस दिव्य शक्तिसें होते है, तीसरा जलाभाव अधुना जो अजयमेरु नगर हे उसके निकट भूमीमें हुआ, तब तीसरा पुष्कर इहां देवतानें रचा, जिसकों अन्य दर्शनी पुष्कर तीर्थंकर मानते है, राजा उदाई चड प्रद्योतसें युद्धकर कारागार कर सग ले पीछा फिरा, एक दिवस भाद्रपद्र शुक्ल पंचमीको राजा उपोषित पोषध करने, रसोईदारसें कहा, मेतो आज उपोषित रहूंगा, चंडप्रद्योतकों, यथारुचि भोजन करा देना, रसोईदारने चंड प्रद्योतकों पूछा, तब चंडप्रद्योत भयभीत हो, विचारने लगा, निरन्तर उदाई मुझे, संग भोजन कराता, आज अवश्य विष देकर मारेगा, तब बोला, आज मेरे भी उपवास है, तब रसोईदारने चंडप्रद्योत कथित वार्ता कही, तब राजा भयसैभी उपवास करनेवाला, स्वसाधर्मी समझ, विचार करा साधर्मीको कैदी रखकर मुझे उपवास पोसह करना उचित नहीं, तब स्वर्णकी बेडी तुडा परस्पर क्षमापनाकर, पौषध साथमें करकर, उज्जयणीका राज्य पीछा दे, विदा किया, परस्पर साढू भी थे, क्योंके चेटक राजाकी पुत्री १ चंड प्रद्योतकोंभी व्याहीथी इसलिये, इति त्रिपुष्कर प्रादुर्भाव यह लेख दानादि कुलक, कल्पसूत्र वृत्ति आदि ग्रन्थोंमें लिखा है.

इस पुष्करके, किंचित् दूरवर्त्ती, वृद्ध पुष्कर [बुड्ढा] पुष्कर अन्य भी है, नमालुम विक्रम संवत् १२ शताब्दीमें, मंडोवरका राजा नाहरराव पडिहारने कोनसा पुष्करका जीर्णोद्धार करा, इस देवाधिष्टित पुष्करका जल तो अक्षय

पातालका है, घाट प्रमुख वधाया हो तो, आश्चर्य नहीं, इहाके पडे पोकरिये, सेवग कहाते है, उत्पत्तिका इतिहास इनोंकाये कहते है, व्यासके पुत्र शुकदेव, उनोके ५ पुत्र हुये, उनोंकी शंतान हम है, ब्राह्मणोंके पुराणोंसे सिद्ध है, शुकदेव, यावज्जीव ब्रह्मचर्य धारी ऋषि थे, जैनियोंके ज्ञातासूत्रमें भी ऐसा लिखा है, शुकदेव सन्यासी, द्वारिकामें, था वच्चापुत्र, जैनसाधुसे, धर्मसंबंधी प्रष्णोत्तर पूछकर, पाचसय सन्यासियोंसे, जैन दीक्षा, स्वीकार करी, अतमें सत्रुंजय पर्वतपर पंचशत ही मोक्ष पाये, तव किस शास्त्रानुसार, शुकदेवजीके ५ पुत्र होना, लोकमंतव्य करै, टाड सहाव २० हजार वेलदारोंका, पुष्करपर ब्राह्मन बनाना लिखा है, वह पुष्करणे ब्राह्मण, सैधवारण्य वासियोके संग विलकुल नहीं मिलता, क्योंके न तो पुष्करपर पोकरणोंका अधिकार है, न पुष्करके गर्दन वाह पोकरणोंकी वस्ती है इस लिये, दुसरी यह वात भीहै के ओसवालोंके भोजकोंमें ६ गूजर गोड गोत्रोंके ब्राह्मण ६ खंडेलवाल गोत्रोंके ब्राह्मण, ४ गोत्रके -पुष्करणे ब्राह्मण, मिलके, भोजक ओसवालोंके गृहकच्ची रसोई खानेसै, भोजनसै भोजक कहाये, जातिभास्कर ग्रथमें, श्रीमालमै ५ हजार ब्राह्मण भोजक होना लिखा है, और ओसवालोंके १८ गोत्र ओसियांमें उनोंके साथ भोजक होना लिखा है, ओसियां पत्त न भी श्रीमाल नगरीके राजपुत्रोंनें ही वसाई थी केवल ३० वर्षका अतर है, टाड साहवके प्रत्युत्तररूप ग्रथ व्यास मीठा लालजीनें छपाके प्रसिद्ध करा है, उसमे लिखा है, ओसवालोंके भोजक श्वय मंतव्य करा है कि हमारी १६ जाति ३ ब्राह्मणोंके गोत्र मिलके वनी है, जव २२२ वीयेवा इसे पुष्करणा ब्राह्मणगोत्र विद्यमान था, तमी तो उनोंमेंसे ४ गोत्र पुष्करणे, भोजक हो गये, तो फिर पुष्करणे ब्राह्मण पुष्करपर वनना कैसे सिद्ध हो, पोकरिये, पोकरणे, सदृश नाम मिलनेसै क्या दोनों एक हो सक्ते है, कदापि नहीं, ओसवालोंके भोजक, साकल द्वीपी सर्वथा नहीं है, न इनोंकी मग जाति है, मैं भी इनोंके कथनानुसार इनोंकों प्रथमावृत्तीमै मग लिखा था, अन्य २ प्रमाण मिलनेसे, त्रुटियोंकों यथार्थपने सुधारी, है, जव परशुरामनें कृत्तिकार्जुनका नाशकर हस्तिनागपुरका राज्यपती वना, यमदग्निकों कृत्तिकार्जुननें मरवाया था, इस द्वेषसे, तदनंतर क्षत्रियवर्गका ७ वखत नास करा, उस समय, वहोतसे, क्षत्रिय क्षत्रियधर्मको त्यागकर, व्यापार करने लगे स्यात् वेही रोडे, क्षत्रिय लवाणे आदि हो तो आश्चर्य नहीं, केइयक दरजी नापित आदि कर्म कर शूद्र वण गये, उस कृत्तिकार्जुन राजाकी स्त्री विद्याधर राजाकी पुत्री गर्भवती परशुरामके भयसे भाग कर तापस ऋषियोंके आश्रममें जाकर शरणागत हुई उनोंको निजस्वरूप कहा, वे दयासे इसकों भूमिगृहमें प्रछन्न रक्खा उहाँ पुत्रजन्मा तापसोंनें सुभूम नाम धरा जव वह ८ वर्पका हुआ उस

समय इसका मामा विमानमें बैठा उधरसें निकला उस बालकके पुण्यसे उसका विमान अटका, तब वह तापसोंके आश्रममें उतरा और नमन कर विमान खलनका स्वरूप कहा, तब तापसोंने जाति नाम वा स्थान पुछा उसने कहा, तब भूमि गृहमें बैठी सुभूमकी माता अपने भ्राताको जाण बाहिर आरुदन करती भ्रातासे संपूर्ण वृत्तांत निवेदन करा तद्नतर तापसोंकी आज्ञासें भगनी और भागनेयको विमानारूढकर वैताढ्य (तिब्बत) स्वराजधानीमें लेगया एक सहस्र आठशुभचिन्ह अलंकृत भागनेयको देख निमित्तज्ञानी [जोतषी] से पूछा इस बालकके भावी फल कहो । तब निमित्तज्ञने कहा, ये चक्रवर्ति साम्राट भूचरोंमे होगा और परशुरामका हंता यही बालक है, नैमित्तकको द्रव्य सत्कार कर विसर्जन करा अस्त्र शस्त्रकला आदि लीलामात्रेसे वह सुभूम अल्पकालमै ७२ कलामें निपुण हुआ इधर परशुरामने एकदा निमित्तज्ञसे पूछा मेरी आयु कितनी अवशेष है, तदा निमित्तज्ञनें शास्त्रानुसार कहा हे राम जिनक्षत्री राजाओंको मार २ दाढायें उनोंकी एकत्रित करीं है, उन दाढाओंकी जिसकी दृष्टि मात्रसे क्षीर हो जावे, उस क्षीरका वह भोजन करने लगे, वह तेरा हता जाणना, तब परशुराम शत्रुको पहचाननें नगरके बाहिर एक महादानशाला बनवाई जिसमे स्वदेशी विदेशी अतिथि तथा पथी जनोंकों अन्न जलादि मिले उहा एक शालामें, स्वर्णरत्नमई महान् सिंहासन स्थापित कर उसपर स्वर्णस्थाल क्षत्रियोंकी-दाढासें भरकर स्थापन कर पाचसय वीरोंकों तद्र रक्षार्थ सशस्त्रनियत करे और गुप्तरहस्य कहा, इधर एकदा सुभूमनें मातुलके समक्ष मातासे पूछा हे अंब मेरा पिता कहां है और अपना निजस्थान कहां है तब माता रुदन करती सपूर्ण वृत्तांत कहा उससमय माताको सुभूमनें कहा तू निश्चित रह में परशुरामको मेरे पिता शमीप प्राप्त करूगा राज्य लेलूंगा ऐसी प्रतिज्ञा कर मातुलकों संगले सीधा हस्तिनागपुर आया दानशालोंमें विश्रामार्थ प्रवेश करा इसकी दृष्टिपातसे दाढाओं स्वर्ण स्थालस्थ क्षीर हो गई मातुलकों कहा में क्षुधातुरहू क्षीर भक्षणकर्ताहूं और भक्षण करने लगा त्योंही सुभट धाये उनोकों मातुलनें छिन्नभिन्न कर डाले, ये खबर पाते ही परशु लिया हुआ परशुराम सुभूमके वधार्थ आया तदा उस स्वर्ण स्थालकों, अंगुलीपर घुमाके फेंका वह उससमय चक्ररूप हो परशुरामका शिर पृथ्वीपर गिराया, आकाशमै देव दुंदुभिका शब्द और देवतोंनें जयजय चक्रीश चिरजीव इत्यादि शब्दकर सुभूमपर पुष्पवृष्टि करी तदनंतर सुभूम षट्खंडके ३२ सहस्र मुकुट बद्धराजाओंको वसकरा, १४ रत्न, १६ सहस्र यक्षसेवक, नवनिधान, ८४ लक्ष हस्ती ८४ लक्ष अश्व, ८४ लक्ष रथ, छिन्नू कोटी सुभट, प्राप्तकर, पिता, और क्षत्रियोंका, वैर लेने २१ वेर निब्राह्मणी पृथ्वी करी, उस भयसे, ब्राह्मण केई तो शस्त्र

धारण कर लिये, केई व्यापार, क्षेती, भृत्यकृत्य, तथा केईयक, स्वर्णकार हो गये, जो ब्राह्मणि या सुनार कहाते हैं, मैथिल ब्राह्मण, चित्रकारपना करने लग गये, रजतस्वर्ण लकडी प्रमुखका कृत्य भी करते है, वह वीकानेरमें जेपुरिया कहाते हैं।

इस प्रकार मरण भयसे चारो वर्णोका कृत्य करने लग गये वनोवास त्याग, नगर, ग्रामोमे, निवास करा, अनुमान होता है, वे अग्निहोत्री, उस निब्राह्मणी पृथ्वी सुभूमके करनेके भयसे, भागकर, केइ इरानमें जावसे, इरानका नाम, अरण्य वास्तव्योंके रहनेसे, अरण्य शब्दका अपभ्रस हुआ हो तो आश्चर्य नहीं, वे मुसलमानोके मतके प्रशार समय भाग कर पुनः आर्यावर्त्तमें आये, वे पारसी कहलाते हैं, ईरानमें भी राज्यशासन सुभूमकाही था उस भयसें यज्ञोपवीत कमरमें प्रछन्नपनें रखी थी अभी भी उस मुजब ही रखते हैं, जैसें ब्राह्मणोंका अग्नि इष्ट है, उससे सविशेष पारसीयोंके, अग्नि इष्ट है, सूर्य, समुद्र, गऊ, जैसें इस समय ब्राह्मणोंके मंतव्य है, तद्वत् पारसियोंके भी है, इस कारण उस समयका अनुमान होता है, वकरीद करनेवाले मुसलमान भी, अजेर्यष्टव्यं, इस पर्वत ब्राह्मण कृत वेद पदके अर्थसे छागमेधसे, स्यात्सवध धराते हैं, मुसलमान होनेसे वेदमंत्रकी जगे, बिसमिल्लाह अर्थात् सुरु करता हूं नाम खुदाके, ऐसा इस अरबी पदका अर्थ होता है, जैसे पर्वतके चलाये वेद अर्थकी श्रुतियोंमें अनेक देवतोंके अर्थ अश्वमेध, गऊमेध, नरमेध, छागमेध, इत्यादि यज्ञयाग, किसी कालमें अत्यंत ही हुआ करता था, क्वचित् २ अभी भी होता है, ये आठमा चक्रवर्ति सुभूम हुआ, इसके पीछे पुनः ब्राह्मणधर्म, जाग्रत हुआ, तथापि चार वर्णोका कृत्य, सर्वथा छूटा नहीं, वैरानुभाव निकृष्ट वस्तु है, परशुरामजीने क्षत्री धर्म विध्वंस करा, तैसे सुभूमनें ब्राह्मणधर्म विध्वंस करा, इसलिये जैनसर्वज्ञका कथन है, हिंसा मत करो, जिसकों जो दुःख देता है, वह समय पाय वदला लेता है यथा मनुस्मृतिमें लिखा है मास इसकी निरुक्ति जिसको में भक्षण करता हूं ममा वह मुझकों भक्षण करेगा, ये कथन सत्य विश्वास करने योग्य है

कायस्थ दो प्रकारके है, प्रथम चित्रगुप्त क्षत्री ऋषभ भगवानके तनवकसीपर नियत था, आभूषण वस्त्रादि कायाके निमित्त भोगोपभोग वस्तु उसके स्वाधीन थी वह लिखत पठत शस्त्रधारण और षट्कर्मधर्म, और प्रभुकी काया सेवा करता था, उसके ८ पुत्र हुये विवाह इनोका काश्यप गोत्र क्षत्रियोंमें हुआ इनसें ८ गोत्र इनोंके हस आदि नामोंसे विख्यात हुये तनवक्सीका कार्य करनेसे लोकींक कायस्थ कहने लगे, भरतचक्रवर्तिनें इनोंको अर्हन्नीतिके वेत्ता जाणकर न्यायालयका कार्य, और राजा, राय, इत्यादि पद दे, पृथ्वीपति बनाया,

दुसरे चंद्रसेन कायस्थ, कृतिकार्जुनके परिवारवाले परशुरामके समय भयसे

चारों ही वर्णका कृत्य करने लगे, ब्राह्मणोंकी सेवासे कायस्थ नामसे प्रसिद्ध हुये ये ज्ञातिवाले बडे दक्ष चतुर राज्यकार्यकर्त्ता होते है हेदराबाद् दक्षणमे, कायस्थ, तथा खत्री जागीरदार राजापद रायपदसे युक्त है

आभीरदेशी, अहीर, गऊपालन, सेवा मुख्य वृत्ति है, वीकानेरमें केइ खवास कहाते है गोप, ग्वाले इनोंमेसे केई जाति भिन्न हो गई है,

तीन हजार वर्षसै पहिले तातार देससें शमीरामा महाराणीने दक्षण भरतपर चढाई करीथी ऐसा इतिहास तिमिरनासक्के तीसरे भागमें लिखा हैं उसनें महा-संग्राम पूर्वदेशमें कर शंव निसंव राजा जिन धर्मियोंको मार अपणी आज्ञावर्त्ताई मनुष्योंकों कष्ट देने लगी तब उसको प्रशन्न करने श्यामाकी मूर्त्ति सर्वत्र स्थापन कर लोक पूजने लगे और ब्राह्मणोके आज्ञानुसार भैसा बकरा आदिकी बलि देने लगे तब शमीरामा प्रशन्न हो अपने भक्तोंकों सोम्य दृष्टिसें देखने लगी देवी पूजाकी प्रवृत्ति दक्षण भरतमें उस दिवससें हो गई उसके राज्य शासनमें तातार देशी लोक इहां बस गये वे जाट नामसे प्रसिद्ध है इनोंकी स्त्रियोंका वेष घाघला आदि देख तातार देशी पना प्रसिद्ध होता है इनोमें कोई धर्म प्रथम नही था इहां मारवाडमे रहते २ जसनाथजी इनोमे हुये, इनोंमेंसे विसनोई भिन्न हुये इनोंमें जाभा जी हुये, इन दोनोंने दयाधर्म इनोंमे प्रवर्त्ताया, इन दोनोके उपदेश रहित जाट मद्यमासका परेज नहीं करते है, भाटी राजपूत इनोंसै विवाह करा, उस वंसमें, पजाब देशवासी, भरतपुर आदिके जाटराजा विधमान है, नाभा पटियाला आदि, थली देशमें भी जाटोंका राज्य था, संवत् १५०० सै पीछै राठोड-राव बीकाजी इनोंसै राज्य युद्ध करके लेलिया,

कोटंविक [कुणबी] ये दक्षण भरतके एक तरेके वैस्य जाति प्रथमसे है, गऊ पालन, खेती व्यापार राज्य सेवा इनोंका कर्त्तव्य है,

सीरवी यह भी एक कृषक जाति भरतक्षेत्रकी है, इनोंमे वगडावत २४ भाई राजा हो गये थें, इत्यादि नाना जातियोंका निवास स्थान, ४ वर्णोसे विभक्त दक्षण भरत हे, इस समय विशेषपने, धर्म नामसे ४ है जैनी, १ पुराणी २ समाजी, ३ और काजी ४ इनोंके भेदातर एक सहस्र-होगये है, ईसाई धर्म भी हिन्दमे होगया, वौद्ध धर्म इहां नही है, हिन्दू मत २० करोड मनुष्य संक्षा, २० करोड मुसलमान मत संक्षा, २५ करोड ईसाई मत संक्षा, ५० करोड मनुष्य, वौद्ध मत संक्षा है,

जिसमें मास नही खानेवाले वेजेटेरियन ५ करोड भी नही होंगें

मुसलमानोंसे सुणा है, जीवोंकों मारना आजाब है, लेकिन् खाना सवाव हे इसमें सम्मिलित एक मताध्यक्ष कहता हे जीवोंके मारनेसे एक पाप हो, बचानेसे

१८ पाप होय यदि ऐसा यह उपदेश राजा प्रजा सर्व मंतव्य करके एकको एक बचावे नहीं तब तो, प्रलयकाल, जैनियोंका छट्ठा आरा इस समय हो जावे वा नहीं, यह उपदेश न्याय मार्गका प्रत्यक्ष नाश कर्त्ता है क्योंके जब पोलिस आदि राज्य वर्ग तथा प्रजावर्ग एकको एक नही बचावे तब तो जगतमें वैरानुभावसे बलवान अवश्य निर्बलको प्राण रहित कर देगा, उससें बलवान् उस्कों प्राणरहित कर देगा सिंह श्वापदादि जंतु गण मनुष्योंका संहार कर देगा, इत्यादि स्वरूप वर्णनेसे, जगत् मे हाहाकार मचेगा, इस लिये बुद्धिवान विचार तो करे, इस उपदेशके कर्त्ता केसे न्यायवत है, और जीव जतु गणके केसे हित सुख बछक है राज्य धर्म विरुद्ध, ये उपदेशक सिद्ध होते है

अन्य दर्शनी ६८ तीर्थ कहते है जैन धर्मकी तीर्थावली इस मुजब है

सोरठ देशमें तीर्थाधिराज शत्रु जय तीर्थ १ गिरनार नेम प्रभुके चार कल्याणक तीर्थ २ आबू तीर्थ ३ नाडोल तीर्थ नाडोलाई तीर्थ ४ वरकाणा तीर्थ ५ राणपुरा तीर्थ ६ मूंछाला महावीर तीर्थ ७ ओसिया तीर्थ ८ संखेश्वरा तीर्थ ९ तारगा तीर्थ १० भोयणी तीर्थ ११ अंतरीक तीर्थ १२ मगसी तीर्थ १३ फलोधी पार्श्व तीर्थ १४ लोद्रवाजेसल मेरु तीर्थ १५ दक्षण हेदरावाद राजस्थ कुलपाक तीर्थ १६ अमी झरा तीर्थ १७ जीरावला तीर्थ १८ साचोर तीर्थ १९ भरु अछ तीर्थ २० खंभात स्थमन तीर्थ २१ पचासरा तीर्थ २२ गोगानवखंडा पार्श्व तीर्थ २३ पाटण तीर्थ २४ तिब्बत राजधानी अष्टापद [केलास] तीर्थ बरफसे ढक गया अलोप २५ बीकानेर भाडा सरादि तीर्थ २६ हस्तिनागपुर तीर्थ दिल्ली शमीप २७ कासी तीर्थ २८ भेलू पुर तीर्थ २९ भदाणी तीर्थ ३० सिंह पुरी तीर्थ ३१ चंद्रावती तीर्थ ३२ ये सब कासी शमीप है प्रयाग ऋषभ ज्ञानतीर्थ ३३, अयोध्या ऋषभ जन्मकी, रामकी राजधानीमें है, लेकिन् अन्यतीर्थ करके कल्याणक इस अयोध्यामें हुये इस लिये अयोध्यातीर्थ ३४ नवराई तीर्थ ३५ चपापुरी तीर्थ ३६ पावापुरी तीर्थ ३७ क्षत्रिय कुंड (कुंडलपुर) तीर्थ ३८ गुणशिला तीर्थ ३९ राजग्रहीमें ५ पचपहाड तीर्थ ४४ बराकडनदी [ऋजुवालिका] वीरज्ञानतीर्थ ४५ शिखर गिरिराजतीर्थ ४६ मिथलातीर्थ ४६ कपिलपुरतीर्थ ४७ मथुरातीर्थ ४८ जहा २ तीर्थपतिका जन्म १ दीक्षा २ केवल ज्ञान ३ निर्वाण ४ हुआ वे सर्वस्थल तीर्थरूप है, अधुना सवत् ६०० विक्रमकावणा भांदक (भद्रावतीतीर्थ) दक्षणमै चंद्रपुर हीं गणघाटशमीप है, ४९, काकदी तीर्थ ५० जहाँ २ जिनमदिर मुसलमानोंने, नष्टकर दिये, उस स्थानके तीर्थ अलोप हुये, केई जैन तीर्थोंको शिवर्वेष्णवमतियोनें, बलात्कार स्वतत्र कर लिये, उनोंके नाम नहीं लिखे,

केई कहते है, तीर्थतो, साधु १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका, ४ इन चारों सिवाय सूत्रोंमे, तीर्थ नाम चलाही नहीं, [उत्तर] जंबू द्वीपपन्नत्ती सूत्रमें तीर्थ करोंके जन्माभिषेक्के शमय ६४ इंद्र एकत्रित हो अपने २ आज्ञाकारी देवतोंको आज्ञा दी है, हे देवो तुम गंगा सिधू पद्मद्रहादि तीर्थोंका तीर्थजल अभिषेकार्थ लाओ तब वे देवता लाये है यदि स्थावर नदी तीर्थ नहीं होती तो समकितवत इंद्र तीर्थजल कैसे लानेका कहते पुन. भरतचक्रीका दिग्विजय षट्खडका इस ही सूत्रमें लेख है उसमें मागध १ वरदाम २ प्रभास ३ एवं ३ तीर्थोंको भरतादि चक्रवर्त्ति साधते है इन स्थावर स्थानोंको तीर्थ सूत्रोंमें लिखा है वा नहीं जो प्राणी एकांत पक्ष स्थापन कर्ता हे उसपर एकांतनय वादक मिथ्यात्वका अवश्य वज्रपात होता है सर्वज्ञ जैनधर्म स्याद्वादी है इस लिये एकातनय नही दयादान पूजा, विषय, और कषाय शुद्धभाव विगर एक क्षेत्र है, ऐसा समयसारमें लिखा है;

तीर्थकर्ता होनेसे तीर्थंकर कहाते है, ऊपर लिखे स्थावर तीर्थ भी उन तीर्थ पतीकी स्थापनासे है, जीव जिसद्वारा तिरे, वह तीर्थ कहाता है, किंवहुना जाति भास्कर वेंकटेश्वर प्रेसमे छपा सो लिखता हैं, वैश्योंका कृत्य खेती, व्यापार, गऊ आदि पशुवृत्ति, और व्याज, जैनियोंके उपदेशसै क्षेती गऊआदि पशुवृत्ति वैश्यों- नें त्याग दी, लेकिन् क्षेती करना अवश्य था इत्यादि (उत्तर) सर्वज्ञ जैनाचार्य उपदेशद्वारा लाभालाभ सपूर्णकृत्योका दर्शाते हैं, उसमें जिसकों जो रुचे वह व्रत वह अंगीकार करता है, माहेश्वरी, ओसवालादि तो क्षत्रिय वर्ण थे व्यापारमें विशेष द्रव्यलाभ देखा, जीवहिंसा अल्प, इस लिये, स्वीकारी होगी क्योंकि नीतिका वाक्य है, यन: वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी, किंचित् २ कर्षणे, अस्तिनास्तिच सेवाथा भिक्षानेवच नैवच १ अर्थ वाणिज्यसे लक्ष्मी वृद्धिपाती है, व्यापारद्वारा अमे- रिकन जर्मन जापानादि अब्वोंपति हो गये, व्यापार द्वारा अंग्रेजसरकार वाद-- साह साम्राट हो गये व्यापारसें पारसी मुसलमान बोहरे आदि महाश्रीमत हो गये, अग्रवाल, महेश्वरी ओसवाल पोरवालादिक हजारो लक्षाधीस सइकडों कोट्याधीस विद्यमान है व्यापार केवदोलत अहिसा धर्म पालनेसैं मनुष्योंमें श्रेष्ठ पदसे अलंकृत है, अग्रवालादि महाजनोंकी सेवा इस व्यापारमें चारोंवर्ण कर रही है, प्रथमसाह, बादसाह, इहा तक, उच्च श्रेणीमें व्यापार द्वारा प्राप्त हैं, [किंचित् किंचित् कर्षणे] अर्थात् कृषाणकर्मक्षेतीमैं कुछ २ द्रव्यप्राप्ति होय कभी वृष्टि अभाव होय तव धान्योत्पत्ति होय नहीं, तब ऋण लेना पडे व्याज देना पडे वर्षामें उत्पन्न धान्य ऋणमें चलाजावे, शुक [चिडिया सूए आदिपक्षी] सलभ [टीढी] चूए शूकर प्रमुख जीव धान्य भक्षण कर जावै, इस लिये द्रव्यलाभ विशेषतासें किसी भी समय होवै नहीं, और हल चलाते पृथ्वी फाडते

पृथ्वीमे रहे चूए, गिलेरी, साप, आदि अनेक स्थूल और सुक्ष्मजीवोंका संहार होता है टीडियोंके असंक्षदलको, धान्यरक्षार्थ, मारना, वह जीवहिंसाके अत्यंत लाभ प्राप्तिमे, द्रव्य लाभ अधिक कैसे संभव हो, व्यापारियो तुल्य धनपति कोई कृषक एक दोभी तो आपवतावेतो आपका आक्षेप जैन धर्म पर यथार्थ पने सिद्ध हो सके, जाति भास्कर ग्रंथ निर्माता उपासगदशासूत्रसे एक जैनधर्मी वैश्य आनद गाथा पतीका स्वरूप लिखा है, यह आनद २४ में तीर्थंकरका धर्मोपदेश श्रवण कर स्वशक्त्यानुसार महावीर भगवानके सम्मुख प्रतिज्ञा करी है के मे पाचसय हल (बीगा) पृथ्वीमै क्षेती कराऊंगा, लेकिन् महावीर प्रभूनें, उसकूं ये नहीं कथन कराके तूं क्षेती मत करा, वह गृहस्थपने यावत् रहा, तब तक क्षेती कराते रहा, लेकिन् उसका व्यापार ४ कोटि स्वर्णमुद्रासे चलता था ४ कोटि स्वर्णमुद्रा व्याज वृद्धिमें था ४ जहाज व्यापारार्थ, समुद्रमे चलते थे, पाच शय शकटस्थलभूमीमें माल लाने चलते थे,४कोटि स्वर्णमुद्रानिधानमे निरतर रखता था, ४०००० चालीस हजार गऊओंका ४ गौकुल था इस प्रकारके महावीर प्रभूके एक लाख गुणसठ सहस्र व्यापारी व्रतधर श्रावक थे १०० राजा भरत क्षेत्रके श्रावक उनोंके थे और सामान्य अनुव्रती, तथा व्रतवर्जित जिन वचन सत्य है ऐसी श्रद्धानवाले तो प्राय भारतवासी सर्वेही थे, श्रेणिक राजा (भंभसारा) दिक राजा, तथा जिन राजपूतोंसे यावज्जीव मास भक्षण मद्यपान नहीं भी छूटा तथापि जिनवचनानुसार हित अहित, पुण्यपाप, बंध, मोक्ष, का आत्मामे भान हो गया था एसै भी लखों राजपूत उस महावीर प्रभूके परमार्हत् जैनधर्मी श्रावक सम्यक्त धर कहाते थे, जिनोंका एक दोभवोंमेंही मोक्ष हो गया, तत्वज्ञान होना ये ही अलभ्य पदार्थ है, कायाकों अत्यत कष्ट, और पर प्राणियोका असंक्षा नास देख जो क्षेती नहीं करते, उसका जैनधर्म क्या करे, जैनाचार्योंकी पूर्व परिपाटी यह थी के, सर्व जनोंके लिये हितावह, मोक्ष प्राप्तिके मार्गका उपदेश कर देना, तूं अमुक वस्तु छोड ही दे, ऐसा अनुरोध जैनाचार्योनें कदापि नहीं करा है, जो आत्मबोधसे त्याग दे तो भी उस त्यागकी पूर्ण विधिमार्ग समझाना धर्म समझते थे,

द्रव्यव्यय करनेमै, लाभ होनेपर प्रथम श्रेणीमें, फाटका बाज ब्रेसेढ टाल भी, दूसरे श्रेणीमें कपडेका व्यापारी, तीसरी श्रेणीमें जौंहरी, चोथी श्रेणीमे धान्यादिके व्यापारी, पान्चमी श्रेणीमें सराफीवाले, छट्ठी श्रेणीमें केवल व्याज करनेवाला, सातमी श्रेणीमें सेवाकारक गुमास्ते, उत्तरोत्तर अल्प व्यय कर्त्ता जानना.

अस्ति नास्ति च सेवायां, अर्थात् नोकरीमैं धन होता भी है और नहीं भी होता, वह प्रत्यक्ष है, लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं, और भिक्षा नैवच नैवच अर्थात् भिक्षा वृत्तिसे द्रव्य नहीं होता,

अंग्रेज सरकारके राज्यशासनमें स्वदेशके लोग हाथोसे व्यापारकी वस्तु बनानेवाले मसीनसे बणती वस्तुके सन्मुख दिग् मूढ होकर कलाकोशलको जला-जली दे बैठे यावन्मात्र पदार्थका व्यापार विदेशी प्रचलित हो गया, उस व्यापारद्वारा मुख्य लाभ तो अन्य २ विलायतोंके व्यापारियोंकों प्राप्त होता है, और किंचित् २ आर्यावर्त्तके व्यापारियोंको भी मिलता है, लेकिन् अंग्रेज सरकारके सुखशांतिमय राज्यशासनके प्रताप लूटेरे डाकूओंसे बचाव होनेसे प्रजा इस समय द्रव्यप्राप्तिसे सुखसे निर्वाह करने लगी, गरीब लोक, कर्म करोंके लिये अनेक साधन आजीविकाके उपस्थित हो गये, जिससे भोजन वस्त्र मात्र गरीबोंको भी मिल जाता है, जो उद्यम करते है उनोंकों, प्रजाके सुखसाधन, रेलतार विजलीका उद्योत, अग्निबोट [जलयान] में चकुरसी आदि अनेकानेक वस्तु, मणियारी वस्तुमें, हाड, लकडी, टेन, एलोमीन, काच, लोह, आदिके नाना पदार्थ टेम-पीस [घडी] छापखाना आदि विद्यावृद्धिका साधन, वादित्रोंमें हारमोनियम् [वीणा] की प्रतिनिधि, छत्तीस कर्म करोके अस्त्र, क्षत्री धर्मार्थ तोप, बद्रूक आदिके साधन भी विलक्षण, द्रव्यरक्षार्थ तनजोरी नाना भेद, नाना प्रकारके वस्त्र नाना प्रकारके कागद, ऐसा कोई पदार्थ नहीं रहा, जो की अन्य स्थान यूरोपसे नहीं आता हो, रेसमी [कौसिक] वस्त्र जिसको ५ सय वर्ष प्रथम चीनाशुक आर्यावर्त्तवाले कहते थे, चीन देशसें आता था, बडे द्रव्यपात्रकी स्त्रिये ऐसे वस्त्रको पहरने उत्कंठित रहती थी, सहस्र मुद्रा देने पर प्राप्त होता था, वह कौसिक वस्त्र, मजूरणिये, पर धापन कर रही है, अर्थात् ३।४। मुद्रामें मिलनेलगा, इस्कूल [पाठशाला] दवाखाना [औषधालय] भी प्रजा सुखार्थ प्राय सर्वत्र प्रचलित है, कोई भी हिमायतीवाला किसीके मजबी [धर्म] बाबत अत्याचार नहीं कर सकता,- पोष्ट सबधी सुखसाधन अत्यंत ही उपयोगी जिसके सुख लेखनसे नहीं लिखसकते, सपूर्ण दक्षण भरतमें नदियोंपर पुल [पाज] सर्वत्र मार्ग सडक जिसपर अधा मनुष्य पशु गण भी सुखसे प्रस्थान करते है, यत्र २ जलका अभाव था तत्र २ नहर नल लगाकर जल संबधी सुखसाधन रच दिया, ब्रिटिस सरकारके राज्य प्रबधका सुख अवर्णनीय है, सर्व लिखा जावे तो एक बडा ग्रंथ बनजावे हमारी न्यायशील ब्रिटिस सरकारका यद्यपि निजनिवास स्थान इग्लंड (लडन) राजधानीमें हैं, तथापि न्यायनीति सुखसाधन प्रबंधद्वारा, दोनों प्रजावर्गको, एक शरीरके दो नेत्रोंकों तुल्यपने वर्त्तती है, और वर्त्तेगी, इनका राज्यशासन शांतिसुखमई चिरस्थाई रहे, जिससें सर्व प्रजा सुखकों प्राप्त हो, परम पदको साधे, किंबहुना,

यदि ग्रंथमें या प्रस्तावनाके सग्रहमें न्यूनाधिक लिखा हो तो विबुधजन क्षमा

प्रदान करेंगे, भूल-होना मनुष्य मात्रका धर्म है, सर्वज्ञ वीतरागही मूलसे बचे है, श्रीरस्तु. कल्याणमस्तुः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

१ उपाध्याय रामलालजीकी विद्याशाला बीकानेर मारवाढ मोहल्ला रांघडी
२ जैन मांगरोल सभा, मेघजी हीरजी मुंबई पायधोणी
३ श्री चिंतामणिजीका मंदिर पटियादारजी मुंबई दूसरा भोईवाडा.

छपे हुये ग्रंथ

		न्योछावर
१	रत्नसमुच्चय (रत्नाकर सागर) खरतरगच्छ, तपागच्छके सर्वधर्म कर्त्तव्य,	७)
२	पूजामहोदधि, ३७ पूजागायन विधियुक्त	२॥)
३	दादागुरुदेवपूजा, सिद्धमंत्रयुक्त	।=)
४	दादागुरुगुणरत्नावली, स्तवन, छंद, अष्टकादि,	१॥)
५	व्यवहारालंकार, धन कमानेका	१॥)
६	सिद्धमूर्ति भागप्रथम	॥)
७	सिद्धमूर्तिभाग दूसरा, ३२ सूत्रपाठसे मूर्तिपूजा	॥।)
८	शकुन, दुपग्गे, च उपग्गे, कालसुकाल, भावी फल मालम होना	१)
९	चाणक्य १६ अर्थ, पाशाशकुनावली, स्वरोदय भाषा	१)
१०	पंचप्रतिक्रमण, १६ स्तोत्र अर्थयुक्त	२।)
११	वैद्यदीपक, इसमें, रोगपरिक्षा, इलाज, देशी, यूनानी, डाक्टरी, होमियापथी, स्त्री, बाल, पशुचिकित्सा, अजमूदा है	५)
१२	स्वप्नसामुद्रक, तेजी मंदी, नीलामके अंक निकालन विधिः	।–)
१३	जैनदिग्विजय	६)
१४।	२२ समुदायवालोंके उपयोगी गुणविलास	१)
१५	महाजनवंश मुक्तावली, दुसरी आवृत्ति, अति उपयोगी स्यलवृद्धि,	२॥)

जबाव मंगानेवाला जुदा हुआ कार्ड भेजा करे, पुस्तक मंगाकर विदेशसे पीछा लोटावे, उसको २४ तीर्थंकरकी सौगन है, नाटपेट पत्र नहीं लेंगें, सौ रुपयेसे कम पुस्तक खरीददारको, कमीसन नहीं मिलेगा, इस समय कागद छपाई सबकी मंहगाई, जिसपर पोष्ट वे रजीष्टरी पोथी नहीं लेती, टिकट खरचदूना करा है।

अनुक्रमणिका ।

छापेके कारण अशुद्धिया रही है पृष्ट १७६ में वंधा करा है उस जगहमूं वंधा पढना, प्रस्तावनाके पृष्ट ४ मे वाठ साह जहा गिर करा है उस जगह शाह जहां पढना,

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ जैनराजपूत महाजन ओसवाल वंशोत्पत्ति प्रारम्भ ॥

वंदोंश्री महावीर जिन, गणधर गौतमस्वाम, मात ।
नमूं नित सारदा. पूरण वंछित काम ॥ १ ॥
ओसवालवड भूपती, शूर वीर मच्छराल ॥
राजकुमर दाता गुणी, शरणागत प्रतिपाल ॥ २ ॥
अश्वपती महाजन विसद, जिनधर्मी रजपूत ॥
दया धर्म श्रद्धा धरी, अदल करे करतूत ॥ ३ ॥
देव एक अरिहंत जिन, गुरू जती अभिराम ॥
द्रव्य भाव पूजा करे, अहनिशधर्मी धाम ॥ ४ ॥
ख्यात लिखूं-इस वंश की, वडज्यूं पसरो साख ॥
रहोसदा चढ़ती कला, धनसुत कीरति लाख ॥ ५ ॥

श्री चोवीसही तीर्थंकरोंके शासनमै उग्रकुल १ भोगकुल २ राजन्य-कुल ३ और क्षत्रीकुल ४ इन चारोंवर्णोवाले जो जैनधर्म पालते थे वो सब गृहस्थ श्रावक नामसें कहलाते थे, इतिहास तिमिर नाशकके ३ प्रकाशमै राजा शिवप्रशाद सतारे हिन्द लिखता है स्वामी शङ्कराचार्य्यके पहले इस आर्यावर्त्तमैं २० करोड मनुष्योंकी वस्ती सब जैन (बौद्ध) थे, वेदके माननेवाले काशी कन्नोज कुरुक्षेत्र काश्मीर इन चार क्षेत्रमै वहोत कम संख्या प्राय अस्तवत् रह गये थे, जैनोंको बौद्ध इसवास्ते लिखा है कि और विलायतों वाले जैनोंसें वाकिफकार नहीं है कारण, जैनियोंकी वस्ती मध्य खण्ड मै कई लाखोंकी संख्या मात्र रह गई है, चीन जापानके जो मांसाहारी तान्त्रिक, रातके खानेवाले बौद्ध है, उनसे आर्यावर्त्तके जैन-(बौद्धों) सें कोई संबन्ध नहीं है, मतलब अब जो जैनमतके विरोधी

हिन्दमें २० करोड मनुष्योंकी वस्ती है, वो सब जैनधर्म वालोंकी सन्तान है, कारण इनोंके वडेरे सब जैनधर्मी थे, जैनधर्मी राजा, तथा प्रजाकी वस्ती थी, इस वक्त मैं अमेरिका, इंगलिश्तान, जर्मन, आदि विलायतोंके, वडे २ विद्वानोंका, निर्धार किया हुआ है, कि, सृष्टीके प्रवाहकी, सरुआतसें ही, जैनधर्म है, बाकी आजीविकाके लिए, पीछेसें, मनुष्योंनें, नये २ धर्मोंकी कल्पना करी है, इस बातकी सबूती देखणी हो तो, अमेरिका वगैरह, देशोंमै फिर कर, दया धर्मका, उपदेश करनेवाले, स्वामी विवेकानन्दजी कृत, (दुनियाका सबसें प्राचीनधर्म), इस पुस्तकको देखो, इन स्वामीने आज दिन तक अन्यधर्म वालोंको, विलायतोंमैं, मदिरा मासादिक कुकर्म छुडाकर, बडा ही उपकार किया है, स्वामीका वेष, गेरू रंगित है, ऐसे संन्यासीयोंका, जीवितव्य, सदाके लिए, अमर है, स्वामी शङ्कराचार्य्य, जिन्होंको हुए हजार आठसै वर्ष हुआ, ऐसा इतिहास तिमिर नाशक मै, लिखा है, इन्होंनें, राजाओंकी मदद पाकर, जैन धर्मियोंकों, कतल करवाया, ये बात माधवाचार्य्य कृत, शङ्करदिग्विजय मैं, लिखी है, बस बलात्कार दयाधर्म जैन छुडाकर मिथ्यात्व हिंसाधर्म लोकोंकों, धारण कराया, मरता क्या नहीं करता, इस न्यायसें, लोकोंनें, कबूल कर लिया, पीछे रामानुजादिक, चार सम्प्रदायनें, मास मदिरा, योंतो खानेके लिए मनाई करी, मगर, यज्ञ कर खाने मैं, दोष नहीं माना, इस तरह जैनधर्म घटते गया, राजाओंनें, जैनधर्मके, कठिन कायदे देख, पूर्वोक्त आचारियोंका, माल खाना, मुक्त जाना, उपदेश पर, कायम होते गये, यथा राजा, तथा प्रजा, इस न्यायसें, जैनधर्म, जो मुक्तिमार्ग था, सो लोकोंनें, छोड़ दिया, वेद परयकी न मनानेवाले, स्वामी शङ्कराचार्य्यनें, ऐसा उपदेश करा, वेदकी श्रुतीसें, जो यज्ञ मै घोडे बकरे आदि जीवोंकों मारते है, उन जीवोंकी हिंसा नहीं होती, ये बात मासाहारियोंकों रुची, तब, देवी, भैरूं आदिकोंके, सन्मुख पूजाके बहाने, पशुओंकों मार, मांस खाणेमैं दोष नहीं, ये भी यज्ञ है, और रामानुजादिक भक्तिमार्ग वालोंनें, छप्पन भोग, छहों ऋतुओंके सुखदाई, खान पान, पुष्प, अतर, राम, कृष्ण नारा-

यणकी मूर्तिकी, बलि देकर, भक्तजनोंको, प्रशादी खाणा, शुरू कराया, ऐसे इन्द्रियोके सुख पोषण रूपधर्मके सन्मुख, पाचो इन्द्रियोंका, दमन करणा, ऐसा त्याग वैराग्य रूप, जैन धर्म, कम प्रशन्न, मोजी सोखी लोकोंको, आता था, इत्यादि कारणोंसें, जैन धर्म थोडे पालनेवाले, लोक रहगये, २४ मै अन्तके तीर्थंकरने फरमाया था कि, है गौतम, भस्म राशी ग्रह मेरे जन्म राशि पर, मेरे निर्वाण बाद आयगा, इस कारण जैनधर्मका, उदय २, पूजासत्कार, कम होता जायगा, तब महाप्रभाचीक आचार्य्य २१ हजार वर्षके पचम आरेमें २३ वक्त जैनधर्म बढाते २ उद्योत करते रहेंगे मेरा शासन अखण्ड २१ हजार वर्ष चलेगा चतुर्विध संघ रहेगा ऐसा लेख निर्वाण कलिका वगैरह ग्रंथोंमै लिखा है इस तरह जैनधर्मका स्वरूप भगवद्वचनसें जानकर जिन जिन आचार्य्योंनें जैनधर्मकी उन्नती करी नींव पुखता डाली सो संक्षेप वृत्तान्त यहा दरसाते है इस जैनधर्मके लखो श्रावक बनानेवाले पडते कालमै उद्योतकारी प्रथम सवा लाख घर राजपूतोंके महाजन वंशके १८ गोत्र थापनेवाले पार्श्वनाथ स्वामीके छठे पाटधारी श्रीरत्नप्रभसूरिः बाद ९२ गोत्र लाखों घर महाजन बनानेवाले श्रीमहावीरस्वामीके ४३ मैं पट्टधारी श्रीजिन वल्लभसूरिः एक लाख तीस हजार घर राजपूतोंको महाजन बनाने वाले दादा गुरुदेव श्रीजिन दत्त सूरिः हजारों घर महाजन बनानेवाले मणिधारी श्रीजिन चन्द्र सूरिः ५० सहस्र श्रावक बनानेवाले श्रीजिन कुशल सूरिः इत्यादि फिर गुजरात देश मै लाखों घर जैनधर्मी श्रावक बनानेवाले, मलधार हेम सूरिः, पूर्ण तल्लगछी श्रीहेमाचार्य्य, और छुटकर गोत्र कई २ और भी अल्प संख्यासे, और आचार्योंनें, बनाये है, ज्यादह इतिहास सर्व गोत्रोका लिखणेसें, लाख श्लोकसंख्या होणा सम्भव है, इस लिए विशेष प्रसिद्ध २ गोत्रोंका इतिहास लिखते है—

सबसें पहले महाजन १८ गोत्र ओसियां पट्टणसें प्रगट भये, ये पट्टण विक्रम सम्वतके पहले चारसे वर्षके करीब बसा था, जिसका कारण ऐसा हुआ, श्रीभीनमाल नगरीके राजा पमार भीमसेनके पुत्र २ बडा

ऊपलदेव, छोटा आसपाल, और आसल, ऊपलदेव राजकुमार, ऊहड, ऊध-रण, दो मंत्रियोंकों संग ले, दिल्लीके शाहन्शाह साधुनाम महाराजाकी आज्ञा ले ओसियां पट्टण नगर वसाया, राजाकी रक्षासें चारों वर्णोंके करीब, ४ लख घर, बस गये, जिसमै सवा लाख घर तो, राजपूतोंके थे, तीस वर्ष जब, राज्य करते व्यतीत हुए, राजा प्रजाका धर्म, देवी उपासी, वाम-मार्ग था, उन्होंकी देवी, सच्चाय थी, मासमदिरासें, देवीकी पूजा कर खाणापीणा करते थे, इस बातकों, मुक्ति जाणेका, धर्म समझते थे, इस समय, श्रीपार्श्वनाथजी भगवानके, छठे पाटधारी, श्रीरत्नप्रभसूरिः, केशी कुमारगणधरके, पोते चेले, मास क्षमणसें यावज्जीव पारणा करणे वाले, १४ पूर्व्व धर श्रुत केवली भगवान, विचरते २, श्रीआबू पहाड तीर्थ पर, पांचसौ साधुओंके संग, चातुर्मासमै रहै, जब विहार करणे लगे, तब उस तीर्थकी अधिष्ठायिका अम्बादेवीनें, अरज करी, हे प्रभु ! मरुधर देशकी तरफ विहार करणा चाहिए, गुरूने कहा, इस देश मैं, दयाधर्मी लोकोंकी, वस्ती नहीं होणेसें, साधुओंकों, धर्मध्यानमै अन्तराय पडता है, आहारपानी मिल नहीं सकता, तब अम्बाने कहा, आपके पधारणेसें, बहुत धर्मका लाभ होगा, तब गुरूने पाचसौ साधुओंकों, गुजरातकी तरफ भेजे, एक शिष्यको सग ले, विहार करते, ओसिया पट्टण पहुचे, किसी देवस्थानमै, आज्ञा लेकर मास क्षमण तप करते हुए ठहरे, चेला अपणे लिए गोचरी जाता, धर्मलाभ करते फिरता, लेकिन जैन धर्मकी मर्यादसें, किसी जगह आहारपानी नहीं मिला, तब, किसी गृहस्थका रोग, औषधीसें मिटाकर, उसके घरसें, भिक्षा लेकर निर्वाह किया, ये बात गुरूने, ज्ञानके उपयोगसें, जाणा, तब शिष्यको उपालंभ दिया, तब शिष्यनें, हाथ जोड बिनती करी कि, हे प्रभु इस वस्तीमै, हरगिज, ४२ दोषरहित, आहार नहीं मिलता, जानकर मैंनें दोषित आहारसें निर्वाह किया है, तब गुरूने कहा, विहार करणा चाहिये, तैय्यार हुए, तब उस महात्मा मुनिःके, तपके प्रभावसें, सच्चाय देवीनें विचारा, धिक् २, ऐसे तारण तरण, निस्पृही, मुनिः, इस वस्तीसें, भूखे जायगें तो, इस वस्ती मै अमंगल होगा, तब देवी साक्षात् प्रगट होकर, नम्रता पूर्वक, अरज करी,

हे कृपासिन्धु, ऐसे आपकों, जाना उचित नहीं है, आप इस प्रजाकों लब्धि मंत्रसे, धर्मकी शिक्षा दो, गुरूनें कहा, साधू विना कारण लब्धि फिरावे तो, दंड आवे, तब, देवीने कहा, हे भगवान, आपसें कोई बात छिपी नहीं है, तीर्थंकरोंकी आज्ञा है, भगवती सूत्र मै साधुओंको, तल्वार ढाल लेकर जिनधर्मके निन्दक, तथा, यातियोंकों समझाणेकों, साधू लब्धि वन्तको, उत्पतणा कहा है, संघ मै महा आपदा डालणे वाले, महा दुर्बुद्धि, वली ब्राह्मणकों विष्णु कुमारनें, पुलाक लब्धिसें, जानसें मार डाला, आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मुक्तिगये, उस दिनसें राखी बाधनेका त्यौहार ब्राह्मनोंनें चलाया, और आगे गोसालेका जीव जो साधुओं पर, रथ डालेगा, उसकों, सुमंगल साधू रथसहित जलायगा, गोसालेका जीव नरक जायगा, मुनिः आलोयण प्रायश्चित ले, उसी भव मै मुक्ति जायगें, दशा श्रुत स्कंध सूत्रमै, सबकी आपदा मिटाणे, लब्धि फिराणी लिखी है, आज्ञाका आराधक कहा, लेकिन सबके कार्य निमित्त लब्धि फिराणेवाला साधु विराधक नहीं, यदि विराधक होते तो, उसी भवमैं मुक्ति साधू कैसें जाते, संसारके जीव भी, लाभ विशेष, और हानि अल्प, ऐसा काम सब बुद्धिमान करते है, ऐसा व्यवहार देखणेमै आता है, और साधू लोक भी ऐसा करते है, जैसै मुनिः, एक गामसें दूसरे गाम, जब विचरते हैं तो, अनेक जीवोंकी हिंसा होती है, परन्तु एक जगह जादा रहनेसें स्नेहबद्ध मुनिः हो जाते है, और, अति परिचय, अति अवग्या, ये दोष भी लगता है, नालक वचन भी है, (दोहा) वहता पानी निरमला, पड़ा गंधीला होय। साधू तो रमता भला, दाग न लग्गे कोय ॥ १ ॥ और अनेक क्षेत्रों मै, विद्वान मुनिःयोके उपदेशसे, अनेक भव्य जीव, सम्यक्त्व व्रत धारते हैं, जिनमन्दिर, ज्ञान भण्डारकी, सम्हाल होती है, मिथ्यात्वी निन्हवोंका, दाव नहीं लगता, श्रावक लोक स्यादवाद-न्याय तत्व पढ़कर, अनेक जीवोंको समझाणेके लिए, समर्थ होते है, इत्यादि अनेक लाभकी तरफ विचार करके, विचरणेकी आज्ञा तीर्थंकरोंने दी है, फिर द्वार बन्द करणा, और खोलणेसें, प्रत्यक्ष पंचेंद्री जीवो तककी, हिंसा है, इसलिये साधू साध्वीके प्रतिक्रमण सूत्रमैं, (उग्घाड़ कवाड उग्घाड-

णाए) इसका पाप तीर्थंकरोंने, फरमाया, परन्तु साध्वीयोंको द्वार वन्द करणा और खोलणेकी आज्ञा दी, मतलब कोई लंपट रातको, खुला द्वार देख साध्वीयोंका, शील न खंडित कर दे जीवहिंसासें शील रक्षाका विशेष धर्म समझ साध्वीयोंको, उपाश्रयका द्वार वन्द करणा, तीर्थंकरोंनें फरमाया, इस तरह माछीगर धीवरसोनक कसाई सर्व यवन जातीयोंके देव कुल, मठ मंडपादि कराणेसें, एकान्त हिंसा, आरम्भ आश्रव फरमाया श्रीप्रश्न व्याकरण सूत्रके आश्रव द्वार मै, ओर महानिशथि सूत्रमैं, दानशील तप, भावनाका जो फल, ऐसा फल, श्रीजिनराजके मंदिर कराणेवाले श्रावकोंकों, तीर्थंकरोंने फरमाया है, मन्दिर जिनराजका कराणेवाला, श्रावक, वार मै देवलोक जावै ऐसा फरमाया है, इसलिये ज्ञाता सूत्रमै, जहा द्रौपदी पूजा करणे गई, उहा जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंका, कराया हुआ था, चम्पा नगरी भगवान महावीरके, केवल ज्ञानयुक्त विचरते समय मै, वसी, उसके पाडे पाडे याने महोल्ले महोल्ले में, जिन मन्दिर, श्रावक लोकोंके, कराये हुए थे, तभी तो, उवाई सूत्र मैं नगरीके वर्णनमैं, लिखा है, श्रावक लोकोंने जिन मूर्त्तियां असंख्या करवाई, तभी तो, व्यवहार सूत्रमें, साधुओंकों जिन प्रतिमाके सन्मुख, आलोयण लेणा, लिखा है, विगर प्रतिमा भराए, किसके सामने, आलोयण लेणा सिद्ध होता है, इत्यादि अनेक वातोंसें, सिद्ध है कि, जिसमैं अल्प पाप बहुत निर्जरा, वह काम साधु श्रावकोंकों. करनेकी आज्ञा तीर्थंकरोंने दी है, आप श्रुतकेवली, सर्व जाण हो, मै इतने दिन, मिथ्या धर्म मै, मुरझा रही थी, आज आपकों अवधि ज्ञानसें जाण, मिथ्यात्व त्याग, अर्हत भाषित तत्वको अक्षर-अक्षर सत्य समझा, आपके पास आई हूं और मेरी अरजकों आप, सफल करो, दयाधर्म वढे. इसमैं आपकों वडा ही लाभ है, यद्यपि आप वीतरागी, एक भवावतारी, निर्मोही हो, तथापि धर्म वृद्धि करणा, आपका कार्य है, क्या महावीर स्वामी, सद्दाल पुत्रकों, यों नहीं समझा सकते थे, तथापि उसके मकान पर चला कर गये, और अनेक वातें पूछी, पीछे श्रावक करा, केवल ज्ञानी वीतरागीकों, घर पर जाणेकी, क्या आवश्यकता थी, लेकिन जो जिस तरह पर, समझनेवाला हो, उसको उसी तरहसे दया

धर्मकी प्राप्ति, वीतरागी कराते है, इतनी वीनती सुण, गुरूने चेलेको भेज नगरमैंसें, एक रूईकी पूणी मंगवाई, दशमै विद्याप्रवाद पूर्व मै लिखे मन्त्रसे, उस पूणीका साप बनाकर आज्ञा दी, जैसे दयाधर्मकी वृद्धि होय, ऐसा कर, अब वो साप, भरीसभामैं, बेठे हुए राजा ऊपलदेवके पुत्रकों, जाके काट खाया, लोक मारने भगे, अदृश्य हो गया, राजाने विषवैद्य, गारुडी, जोगी, ब्राम्हन, मंत्र वादी चिकित्सकोंसे बहुतही चिकित्सा कराई, परन्तु विष विस्तार पाते ही गया कुमर अचेतन मृतकतुल्य हो गया, उस दिन नगरीमैं हाहाकार मचगया, प्राय. प्रजानें, अन्न जल भी, नहीं लिया, मरा जांण, श्मसानको ले चले, लाखो मनुष्य रोते, पीटते, नगरके द्वार पर्यंत पहुचे, तब गुरूकी आज्ञासें. चेलेनें रथी रोकी, और बोला, तुम इस रथीकों मेरे गुरूके पास, ले चलो. अभी कुमरकों जीवित कर देंगें, ये वचन सुनते ही राजा ऊपलदेवनें, कुछ धीरज पाया, और चेलेके पिछाडी हो लिया, जहां. श्री आचार्य्यजी महाराज, विराजमान थे, उहा पहुंचा, आचार्य्यको देखतें ही राजाका दिल, ऐसा दर-साव देणे लगा कि, अवश्य मेरे पुत्रको, ये भगवान जीवित दान देंगें, राजा अपना, मस्तक गुरूके चर्णोमैं धरकर, दीनस्वरसें, रोता हुआ बोला, हे प्रभु मेरे बृद्धपनेकी लाज, आपके आधीन हैं, पुत्रबिगर सब जग सूना है, इस तरह बहुत स्तुति करी, और बोला, स्वामी. मेरा कुटुम्ब तो उसराण, आपकी सन्तानसे कभी न होगा, बल्कि, ओसिया पट्टणकी सब प्रजा इस मुनिः भेषसें, कभी वेमुख न होगी, तब सब प्रजा भी, गद् गद् स्वरसे कहने लगी, हे पूज्य कुंवरजीकों जो आप सचेतन कर दोगे तो, सब प्रजा आपकी, सदाके लिए दासत्वपना करेगी, तब गुरू बोले, हे राजेन्द्र, जो तुम सब लोक, जैन धर्म अङ्गीकार करो तो, पुत्र अभी सचेत- हो जाता हैं, राजा प्रजा तथास्तु. जय २ ध्वनि. करने लगी, गुरूजीनें योग विद्यासें पास किया, तुरत वो पूणिया साप आकर, डंक चूसणे लगा, जहर उतारकर अदृश्य होगया, कुमार आलस मोडके बैठा होगया, और पितासें पूछने लगा, इतने लोक एकत्रित होकर मुझें जंगलमैं रथीमें डालकर, क्यों लाये, ये सुनतेही, राजा और प्रजाके, आनन्दके चौधारे छूटपडे, और राजानें कुमरकों छातीसें

छगाय, वडा आनन्द पाया, और राजा सेठ सामंत गुरूका, महा अतिशय देख, साक्षात् ईश्वर समझ चरणोंमें लगे, और जय २ ध्वनि होणे लगी, राजा बोला, आप, ये राज्य, भण्डार, सर्वस्व लेकर, मुझे कृतार्थ करो, गुरू बोले, हे भूपति, ये तुच्छ सुखदाई, महा दुःखका कारण, राज्यको समझ, हमने हमारे पिताका भी, राज्य त्याग दिया, इस लिये हे राजेन्द्र, स्वर्ग और मुक्तिका, अक्षय सुख देणेवाला, सर्व जीवनकों आनन्द उपजाणेवाला श्रीसर्वज्ञ अर्हत परमेश्वरका कहा भया, विनयमूल धर्मको ग्रहण करो, राजा पूछता है, हे स्वामी, मुझें समझाओ, तब गुरू, सर्व प्रकारकी जीवहिंसा, सर्व प्रकारका झूंठ, सर्व प्रकारकी चोरी, सर्व प्रकारका मैथुन, सर्व प्रकारका परिग्रह, सर्व प्रकारका रात्रि भोजन, त्यागणें रूप, जो धर्म है सो, हे राजा साधुओंके, करणे योग्य है, और गृहस्थकें, सम्यक्त्व सहित बारह व्रत है, वह, तीर्थंकरोंने, फरमाया है, देव अरिहंतके चार निक्षेपे, वंदनीक, पूजनीक है, जिनेश्वर देवकी, हे राजेन्द्र द्रव्यभावसे, पूजन करो, श्रीजिनेश्वरका, चैत्यालय कराओ, जिनेश्वरकी प्रतिमा करवाओ, सतरह भेदसें, अष्ट द्रव्यादिकसें, पूजन भावसे करो जैसें, श्रीराय प्रश्नीसूत्रमें, लिखा है, तैसे, सुगुरू पहले लिखे सो, पट्व्रतोंके पालणेवाले, जिनेश्वर देवका कहा भया, सत्यधर्मका उपदेश, यथार्थ करनेवाले, जिनोंकों वस्त्र पात्र, उतरणे मकान, अन्न, पाणी, औषधी, शुद्धगवेषणीय, देओ, वन्दन, सत्कार, गुण कीर्तन करो, धर्म केवलीकथित, जिसमै पहले तो, बाईस अभक्षका, त्याग करो, नवतत्व; षटद्रव्य, और श्रावक धर्मका आचार विचार सीखो, और आदरण करो; जिनधर्मकी प्रभावना करते हुए, गरीब, अनाथ, दीनहीनका उद्धार करो, रथयात्रा, संघयात्रा, तीर्थंकरोंकी कल्याणकभूमी स्पर्शन रूप, भावभक्तिसें, तीर्थ यात्रा करो, इस तरह, हे राजेन्द्र, व्यवहार सम्यक्त्वकी करणी करते, निश्चय सम्यक्त्वको, समझो, आत्माही देव, आत्माही गुरू, आत्माही धर्म, इस स्वरूपके ज्ञाता होकर, पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षाव्रत, एवं सम्यक्त्व युक्त १२ व्रत धारो, अमृत रूप जिनवाणी सुणके, सवालाख राजपूतोंका, अनादि मिथ्यात्वका पड़दा, दूर हुआ, सबोंनें श्रावक

धर्म, अंगीकार किया, सचाय देवीकी सहायतासे, धर्म पाया इस लिये सम्यक्त्व धारणी साधर्मणीकों, उपकारणी जाणके लपसी, नारेल, खाजा, -चूरमा, 'पक्वान्नसें, बली देणा शुरू रक्खा, जगत्तारक वीर प्रभुका मन्दिर कराणा शुरू कराया, सचायदेवीने, प्रकट होकर महाजन विरुद दिया, इस बातकों सुणके भीनमालका राजा, आसलने भी, जैनधर्म, अंगीकार करा, और, भीनमालमैं, महावीर प्रभुका मन्दिर, कराणा शुरू करा, दोनों मंदिरोकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त एक दिन होणेसें, रत्नप्रभ सूरिनें, दो रूप रचकर, ओंसिया-और भीन मालके मन्दिर मूर्तिकी, प्रतिष्ठा एक कालमै, करी, जैन धर्मका आचार विचार सीखके, सब राजपूत, १० वर्षमै हुशियार हुए, जब दोनों मन्दिर भी चार मंडपका शिखर बद्ध १० वर्षमै तैय्यार हुआ. प्रतिष्ठाके पीछै साधर्मी वात्सल्य राजानें किया, तब ब्राह्मन जो राजाके कुल भिक्षुक थे, उन्होंने भोजनकी वखत सिर फोडी करणी शुरू की, तब राजाने कहा, अगर जैनधर्मकी, श्रद्धा धारण करो, जिन मन्दिरकी सेवा और जतीगुरूकी टहल बन्दगी, धारण करो तो, तुम्हारा मरणे, परणे, लागभाग हम लोक देंगें, अन्यथा नहीं देंगें, तब पूर्वोक्त जातिके ब्राह्मनोंमेंसें, पाच सहस्र पुरुषोंनि कहा, ये बात हमै मंजूर है, परन्तु जिनमन्दिरमै जो बली चढाये जाती है, वो हमैं देणा होगा, क्यों के आगे, ये मर्यादा थी जो जिनमन्दिरमै बली (नैवेद्यफल) चढाए जाते थे, वो सब मन्दिर ऊपर, कूट पर, घरा जाता था, उसको कऊए आदि जीव भक्षनकर जाते थे, इस वास्ते, कोषमैं कऊएका नाम, संस्कृतमै बलिभुक् कहते है, तब राजाने, अपने पमारोंके कुलभिक्षुकको, महावीर प्रभुके मन्दिरमें झाडू देणे, बरतण मलणे, दीपक जलाणे, जल्लाणे इत्यादि मन्दिरका काम सुपुर्द कर दिया सम्हलाया, मन्दिरका बलिदान खाणेवाला बलिअद् जातका नाम पडा, लोकोंनें बलि अद्शब्दको बिगाड कर, (बलध) कहणे लगे, उपल देव पमारकी सन्तानका श्रेष्ठी गोत्र रत्नप्रभसूरिः नें, स्थापन किया था, वो विक्रम सम्वत् १२०१ मैं चित्तोड मैं, राणेजीकी राणीकी, आख अच्छी करणेसें, वैद्य पदवी पाई, इस दिनसें, श्रेष्ठि गोत्रका नाम, वैद्य गोत्र प्रसिद्ध हुआ, रत्न प्रभसूरिका,

उपकेशगच्छवजाताथा वह सम्वत् १०८० के वर्ष मै दुर्लभ राजाकी सभामै कुँअला विरुद पाया, ये वलीअद् भोजक, अभी भी, वैद्य गोत्र और कुमला गच्छके, सेवक पणेका, काम कर, अपना हक्क लेते है, इस तरह साधर्मी, वात्सल्य मै, ओसवाल महाजनोंके सग, भोजन करनेसें भोजक कहलाए, देव अरिहंत, और गुरू जतीकी सेवा करने लगे, तव राजा प्रजाऊचे शब्दसें, सेवक कहने लगे, इस तरह ८४ जातके व्राह्मनों मैं सें ४ गूजर गोडछखंडेलवाल व्राम्हणगोत्र १०, राजा ऊपल देवके महाजन होते सो ,वखत हुए, वाकी नव गोत्र वालोंका हक्क, १७ गोत्र, ओसवालोंके सेवक, भिक्षुकपणेके हक्कदार रहै, राजा ऊपल देवके पिताके भ्राता सालगजी जिन्होंकों, राजा, तातजी यानें (पिताजी) कहके पुकारते थे, इसवास्ते प्रथम गोत्र तातेहड़ १ वाफणा २ कर्णाट ३ वल्हरा ४ मोराक्ष ५ कुलहट ६ विरहट ७ श्रीमाल ८ श्रेष्ठि गोत्र ये राजा ऊपल देवका ९ सहचिंती गोत्र १० (ये राजा ऊपल देवके प्रधान था उसका) आई चणाग गोत्र ११ भूरि (भटेवरा) गोत्र १२ ये राजाके सेनापतिका, भाद्रगोत्र १३ चीचट गोत्र १४ कुंभट गोत्र १५ डीडू गोत्र १६ कन्नोज गोत्र १७ लघुश्रेष्ठि गोत्र, १८ ये गोत्र राजाजीके भ्राता छोटे आसपाल उसका हुआ, इस गोत्रमैं सोनपालजी नामके नामी पुरुष हुए इनके नामसें लघुश्रेष्ठि गोत्र वाले सत्र सोनावत वजणे लगे, ऊपल वडे भ्राता जिन्होंका श्रेष्ठ गोत्र आसपाल छोटा भ्राता जिसका लघु श्रेष्ठि, ये दोनों, वैध, सोनावत, वजते है, सेठिया, और सेठी, गोत्र जो, अव प्रसिद्ध है, वो सत्र, जिन दत्त सूरजीके प्रतिबोधे हुए है पालीनगरमैं, और सुचिंती गोत्र वर्द्धमान सूरिः खरतर गच्छाचार्यके प्रतिवोधक है, सुचिन्ती और सहचिन्ती दो गोत्र जुदे जुदे है, वाफणा गोत्र और वहुफणा गोत्र अलग २ है वाफणा मैसें ३७ साखफटी है, इन्होंका गच्छ खरतर है, श्रीश्रीमाल गोत्र श्रीजिनचन्द्र सूरि खरतर गच्छाचार्यनें महत्तीयाण गोत्र मैंसें प्रतिवोधके महाजन किए है, श्रीमाल गोत्र और श्रीश्रीमाल गोत्र जुदा नहीं है, एक ही है श्रीमाल ज्ञातीको, पावों मैं सोना पहननेकी मनाई नहीं

है, मुसल्मीन बादसाहोंने, सन्नके लिए. बक्सा हुआ है, इन्हों मैं जतकि नख बहुत थे तब तो सगपण भी श्रीमाल २ आपस मैं ही करते थे, अब परिवार बहुत कम होग या. लेकिन गच्छ खरतरमै ही रहे. इसलिए गुरु भक्तिसे लक्ष्मी तो इन्होकी अब भी दासी बन रही है: अब तो ओस-वालोंको बेटी देणे लेणे लग गये है, ८४ जातिके व्यापारी गोत्रों मैं श्रीमालोंको बादशाहने, उच्चपद दिया था, इस तरह १८ गोत्रोंकी प्रथम थापना भई. फिर सवालाख देस मैं, रत्न प्रभ सूरि.ने, मुथड चंडालिया. ये दो गोत्रोंके दस हजार घर प्रति बोधे, दश गोत्र भोजक लोगोंने वाम-मार्ग छोडा नहीं, प्रच्छन्न पणेसे भी क्रिया करते रहे. और अभी भी करते है, इसवास्ते इन्होंके द्वेपियोंने इस करतूतमें, इन्होंको, शूद्रों मै, दरज कर दिया, अभी विक्रम सम्वत् १९६७ मै, श्रीबीकानेर राजपूताने मै, इन्होंको शूद्र समझ, कर लगाणेका विचार था. आखर ब्राह्मणोंके पुरानोंसे. साबित हो गया कि, भोजक ब्राम्हणोंसे ही बने हुये है, टाड साहब कृत राज-पूताना इतिहास देखो, तथा व्यास मीठालालजी कृत टाड प्रत्युत्तर देखो, तथा जाति भास्कर ग्रथ देखो पुराण बणाणेवालोंकी ये चतुराई है कि जिसके गोत्रके प्रथम उत्पत्तिका पत्ता नहीं मिल्ता है तो उन्होंको किसी देवताकी सन्तान ठहरा लेणा है. मतलब. मंजा पूरणेड, इस न्यायमें, इतिहास तिमिर नाशक मै, राजा शिवप्रशाद, सितारे हिन्दने, इस पुरा-णोंकी बात पर पूंछड़िया राजाका दृष्टान्त भी लिखा है, वो सचा है. लेकिन जैन लोक ऐसा इतिहास कभी नहीं लिखते, कारण देवताओंकी सन्तान मनुष्य नहीं, देवताओं की उत्पत्ति भोगसे नहीं है, मनुष्यों की उत्पत्ति भोग वीर्यसे है, जानवरमें जान वर मनुष्योंकी मनुष्योंमे उत्पत्ति होती है, तुराईका बीज बोणेसें ककड़ी कैसे पैदा हो सक्ती है, भोजक लोक अपनी उत्पत्ति, सूर्य जो आकाशमें प्रकाश करता है, उससे मानते है, पुराणोंपर यकीन रखके, बुद्धिमान अंग्रेज तथा जैन तथा और भी अकलवरोंको विचार करणा चाहिये कि, क्या सूर्य देव ऐसे व्यभिचारी, और अन्याई है, सो सती कुन्तीका शील तोड

डाला, और मनुष्य ब्राह्मणोंकी कुंवारी लडकियोंका, बलात्कार शील तोड़ते फिरता है बाहर सूर्य नारायण गवर्मेन्टके राज्यमें ऐसा काम करणेवालोंको जबरजन्नाके कायदेसें, जरूरही सजा होती, उस वक्त उस कन्याके पितानें सूर्यको श्राप देणे रूप सजा देनी लिखी है, खैर हमको, इतिहास यथार्थ जो भया सो लिखणा है किसीके खंडन सें तालुक नहीं, भोजकोंके ६ गोत्र पीछेसें १० जातमें मिले है, इसमे २ गोत्र तो गूजर गोड ब्राह्मन थे, ४ पुष्करणे ब्राह्मण, ये ६ जात मालवदेशके वडनगर मै, श्री जिनदत्त सूरिजी पधारे, तब मरी हुई गऊ, जिन मन्दिरके सामनें, धर दी, उसको दादा साहबने, परकाय प्रवेश विद्यावलसें, उठाकर, रुद्रके स्थान पर जा गिराई, और भी इन ब्राह्मणोंने बहुत उपद्रव करणा शुरू करा, तब उहाके क्षेत्राधिष्ठायक वीरोंको, आज्ञा दी के, तुम इन सब ब्राह्मणोको समझाओ, उन वीरोंने उन सब ब्राह्मणोंको, उन्मत्त पागल वणा दिये, वो नगे होकर बुरी चेष्टासें भटकणे लगे, पीछे वडनगरके राजा, तथा प्रजानें, श्री जिनदत्त सूरिजीसे, विनती करी, तब गुरूनें कहा, कि ये लोक सदाके लिए, देव गुरू की, टहल करते रहै, और मेरे किये हुए, महाजनोंके, भिक्षुक रहै तो, अच्छे हो जाते हैं, सम्बध, और भोजन, आगे जो भोजक है, उन्होंके साथ, इन्होंको करणा होगा, राजा प्रजा जमानत करी, तत्काल, वो लोक अच्छे हो गये, इन्होंमें राजाका मुख्य गुरू ब्रह्मसेन, जिसका पुत्र देववृत, सो देवेरा भोजक कहलाया, जिसकी सन्तान बीकानेरमैं हसावत, तथा आदि सरिया बजते हैं, इन सोलह गोत्रोंका लाग दादा साहबनें समस्त महाजनों पर लगा दिया, पहिली १८ गोत्र पर ही था, महाजन लोक राज्यके कारबारी थे, इससें शिव विष्णुका मन्दिर भी इन्होंके, सुपर्द, करवा दिया, प्रायः भोजक देवीके उपासक है, मारवाडके ओसवालोंके पास दान परणे मरणे लेते हैं, टाड साहबने राजपूत इतिहासमै इन्होंका होना, अन्य ही प्रकारका लिखा है, कइयक इन्होंमें, कवि हैं, विद्या न्यून है, इस जातिमैसे जगत सेठजीके पास, कइ यक भोजक विद्वान पंडित गये थे, उस दिनसें, मुरसिदाबादमें, भोजकोंको पाडेजी कहा करते है, इतने कर संक्षेप इतिहास महाजन १८

गोत्रोंका, तथा १६ गोत्र भोजकोका, दिखलाया, इस बातकों हुए कितने वर्ष हुए, सो प्रमाण लिखते है, ओसिया नगरीके नामसें महाजनोकों ओसवाल संज्ञा भई, राजा ऊपलदेवका कराया हुआ, वीर प्रभूका मन्दिर ओसियामै, आसल राजाका कराया हुआ, भीनमालमै, अभी विद्यमान है, माहेश्वर कल्पद्रुम ग्रंथमै, ओसवालोंके होणेका जमाना इस तरह लिखा है,

सवईयाच्छन्द

श्रीवर्द्धमान जिन पछे वर्ष बावन पद लीधो, श्रीरत्न प्रभुसूरि नाम तास सत् गुरुव्रत दीधो, भीनमालसू उठिया जाय ओसिया वसाणां. क्षत्री हुआ साख अठार उठै ओसवाल कहाणां, एक लाख चौरासी सहस्र घर, राजकुल्मै प्रति बोधिया, रतन प्रभू ओस्या नगर ओसवाल जिण दिन किया ।१।, प्रथम साख पमार, सेसती सोद सिंगाला, रण थम्भा राठोड़ वंसच ऊआन वचाला, दइया सोलंखी सो नगरा कछावा धन गोड कहीजे, जादम हाड़ा जिद लाज मरजादलही जै. । खरदरापाट औपे खरा, लेणा पटाज लाखरा, ।एक दिवस इता महाजन भया सूर बड़ा बडीसाखरा ॥ २ ॥

इसके पीछै खरतर गच्छाचार्य्योंनें प्राय. बहुत गोत्र प्रति बोधे, किंचित् अल्प गोत्र, और २ आचार्य्योंने प्रति बोधे सो सब, इन्हों मै, मिलते गये, सुनते है, सम्वत् सोल्हसे मै खरतर गच्छाचार्य्यसे, मोहणोत गोत्र, प्रति बोधे गया, बस जाता जम्बूले गया, और आड़ी टाटी दे गया, बो न्याय इस गोत्रसें हुआ, फिर कोई भी गोत्र राजपूत माहेश्वरीया ब्राम्हनो मै से नहीं थापा गया, ये प्रताप सब तत्व दृष्टिसें देखोतो. जिन प्रतिमानिन्दकोसें हुआ, काल्का महात्म इन्होंका आचार विचार देख, राजपूतमाहेश्वरी और ब्राम्हण लोक, जैनधर्मसें, घृणा करणे लग गये, इस वखत जो जैनधर्म चल रहा है. सो सब प्रताप जती आचार्य महा राजोंका है, अब तो बाजे महाजन भी ऐसे कठिन बनगये है सो जिन धर्मकी प्राप्ति कराणे वालोंकी, सन्तानसें, वेमुख होगये है, और अपने वडेरोंके वचनोंकों, भूल गये है. लायक मन्द लोकोंका, बाप, और बात, एकही है, सवइयेमें लिखा है कि श्रीवर्द्धमान भगवानके निर्वाण पहुचे बाद ५२ वर्ष पीछै, रत्नप्रभ-

सूरिःकों आचार्यपद गुरूनें दीया है और ७० वर्ष पीछे वीरप्रभूके निर्वाणके ओसियांमैं अठारे गोत्रोंकी थापना करी, भोजक लोक सम्वत् वीया वाईसा कहते है सो सच है, लेकिन, वीया वाईसा, राजा नंदिवर्द्धनका है,—राजा विक्रमका नहीं, सो हिसाब लिखते हैं, जब भगवान महावीरने दीक्षा ली तब संवत्सरीदान देकर, प्रथम प्रजाका, ऋण उतारकर भाई राजानन्दिवर्द्धनका सम्वत्सर चलाया, पीछे प्रभू ४२ वर्ष विद्यमान रहे और निर्वाण पाये बाद ७० वर्ष पर १८ गोत्र हुए एव ११२ दस वर्ष बाद आचार विचार सीखते तथा मन्दिर कराणेमें लगा १२२ वर्षपर प्रतिष्ठा तथा साधर्मी वात्सल्यके भोजन पर, भोजक गोत्रकी थापना भई, ऐसाही प्रमाण कमला गच्छके आचार्यके पुस्तकमैं तथा हमारे बडे उपाश्रयके भण्डारके पुस्तको में लिखा है, तथा भगवान महावीरकों मुक्ति पहुंचे को, इस ग्रंथके लिखते वक्त २४४९ का सम्वत् चल रहा है, याने अश्वपती गोत्रकी प्रथम थापनाकों भए, आज, २३७९ वर्ष बीता है, विक्रम सम्वत् १९७९ तक, अब खरतर तथा और २ आचार्य्योंके बनाये भये, गोत्रका सक्षेप इतिहास दरसाते हैं,

प्रथम सुचिन्ती गोत्र

विक्रम् सम्वत् १०२६ मैं श्रीजैनाचार्य वर्द्धमान सूरिः खरतर विरुद पाणेवाले श्रीजिनेश्वर सूरिःके गुरू, विहार करते, दिल्ली पधारे, उस नगरका राजा सोनी गरा, चौहाण, उसका पुत्र वोहित्थ कुमारकों, बगीचेंमै सूतेको, पेणा साप, पी गया, नगरी मैं हाहाकार मचगया, रोते पीटते, मरा जाण स्मशान मैं गाडनेको लाये, उहां बड वृक्ष नीचे पाचसय साधुओंसे विराजमान, आचार्यने पूंछा, ये कोण मरगया लोकोंने सब स्वरूप कहा, राजानें, विनती करी, हे सन्त महापुरुष, आपका दया धर्म सफल होय, किसी तरह, मेरा सुत सचेतन होय तो, मैं, और मेरा परिवार, आपके उपकारसें, सदाके लिए आभारी रहेंगें, इस पुत्रकी सन्तान जहां तक सूर्य चन्द्रमा पृथ्वीपर उद्योत करेंगें उहा तक आपकी सन्तानकी चरण सेवा करते रहेंगें, इस वक्त जो दुःख, मेरे तनमैं हो रहा है, सो पर-

मेश्वर ही जानता है, इसके दुःखसे मै भी मर जा ऊंगा, तब आचार्य बोले, हे राजेन्द्र, जो तुम सपरिवार जैनधर्म धारण करो और मेरे शिष्य प्रशिष्योसें, वे मुख धर्मत्यागके तुमारी सन्तान कभी नहीं होवे तब तो पुत्र सचेत हो सक्ता है राजा तथा परिवारके लोकोंनें इस वातको पूर्ण ब्रम्ह परमेश्वरकी साक्षीसें प्रतिज्ञा की गुरूने दृष्टिसें पास किया तत्काल ही कुमर आलस्य मोड़ बैठा हो गया सर्व लोकोके मनमें परम आनन्द हुआ राजानें गुरू महाराजकों महोच्छव पूर्वक नगरमै पधराये धर्म व्याख्यान सुनकर सम्यक्त्व युक्त वारह व्रत उच्चरे कुमर जैनधर्मका आचार विचार सीखा गुरू महाराजने इसकों सचेत करणेसे सचेती गोत्र स्थापन करा गच्छ खरतर मानते है सहचिन्ती गोत्रसे सचेती गोत्र जुदा है।

वरदिया [वरडिया] दरडा।

धारा नगरीका राजा भोज परलोक हुए बाद तंवरोंनें मालवदेशका राज्य ले लिया भोजराजाके पुत्र १२ थे १ निहंगपाल २ तालणपाल ३ तेजपाल ४ तिहुअणपाल ५ अनंगपाल ६ पोतपाल ७ गोपाल ८ लक्ष्मणपाल ९ मदनपाल १० कुमारपाल ११ कीर्तिपाल १२ जयतपाल इत्यादिक ये सब राजकुमार धारा नगरीकों छोड़ मथुरा मै आ रहै तबसें माथुर कहलाये कुछ वर्षोके बीतने बाद गोपाल और लक्ष्मण पाल, के कई गाममै जावसे, सम्वत् ९५४ मै, श्री नेमिचन्द्रसूरिः श्रीवर्द्धमान सूरिःके दादा गुरू उद्योतन सूरिःके गुरू, वहा पधारे, उस वखत लक्ष्मणपालनें, गुरूकी बहुत भक्ति करी, धर्मोपदेश हमेशा सुणा करे, एक दिन, एकान्तमै, गुरूसे अरज करी, है गुरू न तो मेरे पास, ज्यादह धन है, और न मेरे, कोई शन्तान है, इन दोनों विना जीवितव्य, संसारमैं वृथा है, आप परोपकारी हो, कोई ऐसी कृपाकरो के, मेरी आसा पूर्ण होय, तब गुरूने कहा के,

१ इस गोत्रके भाग्यशाली सेठ वृद्धिचन्दजी सिंधीया सरकारके खजानची थे, इन्होके पुत्र गुलाबचन्दजीनें फल वर्द्धी पार्श्वनाथके मन्दिरके चारों और हजारो रुपे लगाकर गढ बणवाया पार्श्व प्रभुकी कृपासे इन्होके पुत्र हीराचन्दजी अजमेर नगरमैं महा श्रीमन्त धर्मशाली देवगुरुके भक्त रहते है.

जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, सर्व कामना सफल होयगी, धन पाकर सात क्षेत्रोंकी भक्ति करणा, सुपात्र तथा दीन हीनकों दान देणा व सदाके लिए, तुम्हारी सन्तान मेरे शन्तानोंके धर्म उपाशक, वेमुख न होगी तो, जा तेरे मकानके पिछाडी अगणित द्रव्य जमीनमैं, गडा है, उसको निकालते, जो तुझें मत निकाल ऐसा शब्द कहै, उसकों कहणा, मै, नेमिचन्द्र सूरिःका, श्रावक हूं, इस धनका आधा भाग, सुकृतार्थ लगावेगा, तब तेरे तीन पुत्र होगा इतना सुन, लक्ष्मणपाल अपनी भार्या समेत सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत गृहण करा उसी तरह, वो निधान निकला, शत्रुञ्जयका संघ निकाला, अगणित द्रव्य धर्म मै लगाते, तीन पुत्र उत्पन्न हुए, १ यशोधर २ नारायण ३ और महीचद्र, गुरू श्रीनेमिचंद्रसूरिने, आशीर्वाद दियाथा, इन पुत्रोंसें तुम्हारा कुल बढेगा, योवन अवस्थामें महाजनवंशमै इन्होंका विवाह किया, उसमैसे पहले नारायणकी स्त्रीके गर्भ रहा, पीहरमै जाके जोडा जन्मा जिसमै लडका तो सापकी आकृतीवाला और दूसरी लडकी, इन दोनोंको लेकर सुसरार आई, अब वो सांपकी आकृतिवाला लडका शीतकालमें चूल्हेके पास सोताथा, लोटपोट करता चूल्हेके पास चला गया, भावीके वस उसकी वहननें पाणी गरम करणे पिछली रातकूं अंधेरेमें चूल्हा सिल्गा दिया उससें वो नाग आकृति बालक जलकर मरा, शुभ भावसें व्यंतर देवता भया अब वो नागदेवके रूपसें आकर अपनी वहनको तकलीफ देणे लगा, तब लक्ष्मणपालने यंत्र, मन्त्र, बलिदान, वगैरह कराया, तब प्रत्यक्ष होकर बोला, जबतक मै व्यंतर योनिमें रहूंगा तबतक लक्ष्मणपालकी संतानकी लडकियां, कभी सुखी नहीं रहेगी, कुछ न कुछ आपदा होगी, ये बात सुण, बहुत लोगोने विचारा, सच है या झूठ, इतनेमें एक कमरके पीडावालेने आकर कहा, जो तूं सच्चा देव है तो, मेरी कम्मर अच्छी करदे, तब देव बोला, लक्ष्मणपालके घरकी दिवालसें तेरे दरदकी जगह स्पर्शकर, अभी पीडा चली जायगी, उसने दिवालसें स्पर्श किया, कम्मर अच्छी हो गई, तब उस देवनें लक्ष्मणपालको वर दिया, जो चिणक पीडावाला तुमारे घरका स्पर्श करेगा सो तीन दिनसें निश्चय पीडा

रहित होगा, वर दिया, उसका अपभ्रंश लोक वरढिया कहणे लगे वो उसकी बहिन भाईके हत्याके निवृत्त्यर्थ मोहसें शुभध्यानसें मर व्यंतर निकायमें देवी भई, भूवाल उसका नाम है, इसकों कुल देवी कर पूजणे लगे, नेमिचन्द्र सूरिः के तीसरे पाटधारी, जिनेश्वर सूरिःकों खरतर बिरुद् मिला, मूल, गच्छ इन्होंका खरतर है,

कूकड़ चोपड़ा गणधर चोपड़ा चीपड़गांधी वडेर सांड

खरतर गच्छाधिपती, जैनाचार्य, अभयदेव सूरिःजीके शिष्य, वाचनाचार्यपढ-स्थित, श्रीजिनवल्लभ सूरिः, ११५६ वर्ष विक्रमके, विचरते २ मदोदर नगरमै पधारे, उहॉका राजा, नाहडराव पडिहार साख इन्दा गुरूकी वहुत भक्ति करी, और विनती करी, है परमगुरू मेरे पुत्रके पुत्र नहीं, गुरूनें कहा, पुत्र होनेसें संसार बढ़ेगा, साधू ससार वढाणे विना जैनसंघके काम विना, निमित्त भाखे नहीं, इसलिए तूं, इतना करार करे की, पहले पुत्रकूं आपका शिष्य दीक्षित करढूंगा तो, वताकर पुत्ररूप सपदा कर दू, राजाने बडे हर्षसें, ये वात मंतव्य करी, गुरूने कहा, तुम और तुह्मारी स्त्री, ये मेरा वास चूर्ण, सिरपर लो, दोनोंनें लिया, गुरूनें कहा वचन. मत पलटना, चार पुत्र होगा, गुरू विहार कर गये, क्रमसें चार पुत्र हुए इधर सम्वत् ११६९ मै श्रीअभय देवसूरिः, वादि देवसूरिः अपने धर्म मित्रकों, कह गये, मेरे पट्ट पर, वल्लभकों, स्थापन करणा, देवसूरिःनें कहा, वल्लभकी आयू अव थोडी है, लेकिन इसनें वाचनाचार्य्य पद मै रहते ५२ गोत्र राजपूत माहेश्वरी ब्राह्मनोंकों, जिन धर्मी महाजन वनाये है, इस लिए, महा प्रभावीक है, मै आचार्य्य पद मै स्थापन कर दूंगा, श्रीजिन वल्लभ-सूरि.कों स्थापन किया, ६ महीने आचार्य्य पद पालके, देवभद्र सूरिःकों सोम चंदको पट्टधारी वनानेका वचन कथन कर स्वर्गवास हुए, १०८ चिन्ह करके सुशोभित, शरीरधारी, श्रीजिनदत्त सूरि नाम देवभद्र सूरिनें सूरि मंत्र दिया, तीन क्रोड़ ह्रीं कारके जपकी सिद्धि कर, श्रीजिन दत्त सूरिः विच-रते २ मन्डोवर नगर पधारे राजाने वहुत ही, उच्छव करा भक्ती दर-साई, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र, गुरू महाराजका वचन याद है, आपने

क्या प्रतिज्ञा करी थी, राजाने राणीसे पूछा, राणी बोली, राजाके पुत्रकों श्रीजिन दत्तसूरिः, घर २ भीक्षा मगायगें, सर्वथा पुत्र नहीं देने दूगी, पुत्र दिया तो, प्राणत्याग दूंगी, तब राजानें लाचार हो, गुरूसें कहा, हम सब, आपहीके है, आपका गुण हमारी शन्तान कभी नहीं भूलेगी, गुरू उहाँसे विहार कर गये, कर्मके वसरातकों भोजन करते समय, वडे पुत्रके, सापकी गरल खाने मै, आगई, कूकड देवके, प्रभात समें वैद्योंनें, चिकित्सा बहुत करी लेकिन् कुछ फायदा नहीं हुआ, तीसरे दिन सर्व शरीर फूट गया, मंत्र, यंत्र सब कर चुके, महा दुरगन्ध, महा विद्रूप, वदुनमेंसें, पूय झरणे लगा, मृत्युके मुख पडा, राणी, हाय २ कर रोने लगी, शहर मै, हाहाकार मच गया, तब गुणधरजी कायस्थ, हसजाति जो उस समय दीवान थे, उन्होंनें राजासें अरज करी, हे महाराज, आपने, महापुरुषोंसें, कपट करा, उसका फल है, आप यदि अपना भला चाहो तो, उन्हीं परम पुरुषके, चरण पकडे, राजा उसी समय घोडे पर सवार हो, सोजत इलाकेसें गुरूकों, पीछा लाया, गुरू देख कर बोले, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारकर, खरतर गच्छ के श्रावक बनो तो, आपका पुत्र अच्छा हो सक्ता है, राजानें कहा, कि मेरी आल औलाद, लायक वन्द होगी, सो खरतर गुरूका, उपकार, कदापि भूलेगी नहीं, न पराङ्मुख होंगे, गुरूनें कहा, ताजा मक्खन लावो, गणधरजी मुख्य मत्री, तत्काल कूकडी नाम गऊका, नवनीत [मक्खन] ले आए, गुरूने योग साधन विद्यासे, अलक्ष दृष्टि पाससें, आत्मबल विद्युत् प्रक्षेपन नवनीत ऊपर करके, आज्ञा करी, चोपडो, गणधरजी मत्रीनें, चोपडा, तत्काल पूय श्राव बन्द हुआ, तीन दिवसमै, गद निवृत्ति हो, स्वर्णवर्ण निज रूप हुआ, ये प्रत्यक्ष उपकार, चमत्कार देखकर, गुरूकों, धर्म तत्व पूछा, गुरूने, न्याय युक्तिद्वारा ३ तत्व देव १ गुरू २ धर्म्म ३ का स्वरूप जिनोक्त कथन करा, नाहडजी पडिहार, राजानें, सह कुटुम्ब, जिनधर्म धारण करा, गुरूनें उस पुत्रका, चोपडा, तथा कूकड़ गोत्र, स्थापन करा, तथा चीपड पुत्रका चीपड़ गोत्र, हुआ, साडे पुत्रसें, साड गोत्र हुआ, साड गोत्र दो है कूकड सांड,

इन्होंमै है, सियाल साड दूसरे हैं, उस समय मिथ्यात्व त्याग, हंसकायस्थ मंत्री गणधरने भी, श्रावक व्रत सहकुटुम्ब धारण करा, उनसें गणधर चोपडा गोत्र स्थापित हुआ, गुणधरमैसें, गाधीपनेके व्यापार करनेसे गाधी गोत्र स्थापित हुआ, नानूजीके पाच पुस्तान पीछे दीपचन्दजी भये, उन्होंका व्याह लग्नादि, ओसवालोंमै, शामिल श्रीजिन कुशल सूरिः गुरूनें सदाधर्म स्थिर रहैगा, इस न्यायसे, ओसवालोंकी पंक्तिमैं समिश्रित करादिया, दीपचन्दजी पीछै परिवारकी वहुत वृद्धि हुई, ११ मी पुस्तान सोनपालजी उन्होंके पौत्र ठाकुरसीजी महाबुद्धि शाली, चातुर, सूर, तव रावचूडेजी राठोडने, उन्होंको कोठारका काम सुपुर्द किया, वह कोठारी कहलाये, राव श्री वीकेजीने, वीकानेर मैं, हाकिम पद दिया, वह हाकिम कोठारी कहलाये, इन्होंकी शाखा १२ का पता लगा है कूकड १ कोठारी २ हाकम ३ चीपड ४ चोपडा ५ साड ६ वूवकिया ७ धूपिया ८ जोगिया ९ वडेर १० गणधर चोपडा ११ गाधी १२ गणधरोंका निवास मारवाड पंच पदरेमैं, अन्य २ स्थान भी है, मूल गच्छ खरतर, कोठारी सज्ञा अन्य गोत्रमै भी है, दूगड कोठारी, रणधीरोत कोठारी आदि उनसें भाईपा नहीं है,

(धाड़ेवा, पटवा, टाटिया, कोठारी,)

गुजरात देसमै विभंम पाटणनगरमैं ढेढूजी राजा राज्य करता था, डाभी वशराजपूत चार पाच सहस्र अश्वपति, लेकिन पर द्रव्य धाडा कर लूटै, एकदा समय खरतर गछ नायक श्रीजिनवल्लभ सूरीश्वरजी उहा पधारे, श्रावक जननें महामहोत्सव पूर्वक नगरमै पधराये, तव राजा ढेढूजीने, गुरूके ज्ञान क्रिया की महिमा श्रवण कर, दर्शनार्थ आया, गुरूनें धर्मोपदेश दिया, राजा उपदेश श्रवण कर, हर्षित हुआ, निरन्तर गुरूकी सेवा मै आने लगा, यों आते जाते अत्यन्त धर्म की रुचि वृद्धि पाई, इस अवसर मै ग्राम सामन्तका स्वामी ऊहड खीची राजपूत, उसने अपनी पुत्री व्याहनेकों, सीसोदिया राणा रणधीरकों, वहुत राजपूतोंके संग डोला भेजा, नवघोडा, एक हस्ती, पञ्चविंशतिसहस्र नगद मुद्रा, स्वर्ण, रूप्य, मई आभूषण रत्नादिक युक्त, इत्यादि द्रव्यसामग्रीका स्वरूप, ढेढूजी राजाने, श्रवण कर, गुरू भट्टारक,

श्रीजिनवल्लभसूरिजीके शमीप आकर, विनती करी, है गुरू मेरी विजय होय, ऐसा समय कथन करो, तब गुरूनें, मनमें श्रवण करके कहा कि मध्यान्ह समय, अभिजित् नक्षत्र मैं, विजय मुहूर्त आताहै उस मै जो कार्य किया जावै, वह सर्व सफल होता है ऐसा चामुण्डादेवी कहती है, ढेढूजो तथास्तु कह गुरू पद वन्दन कर सैन्यावल संग लेकर उक्त मुहूर्तमैं प्रयाण करा, उनखीचीके भेजे राजपूतों सै सबल संग्राम हुआ, ढेढूजीके सौ सुभट मृत्यु प्राप्त हुए डेडसो शस्त्र आघातसें, जर्जरित हुए, खीचियोंके दोयसै सुभट यमलोक प्राप्त हुए, अढाइसो शस्त्रोद्धारा जर जरित हुए, रण भूमिमै, ढेढूजीनि जय पाई, वदन कँवर कन्या और सर्व द्रव्यहस्ती अश्व आदि लेकर निज नगरमै आए, प्रथम गुरू महाराजके शमीप जाकर, बन्दन, नमन, कर, स्तुति करी, परमपूज्य आपके सत्य वचनानुसार मैंनें जय प्राप्त करी, मुझे जो आप आज्ञा करें वह प्रमाण करू, गुरुने कहा, हे राजेन्द्र यह वदन कवर राणीका जो पुत्र होय वह मेरा श्रावक होय, राजाने यह गुरूके वचनको प्रमाण करा, कालान्तरसें सम्वत् ११९१ वर्षे शालिवाहन शाके १०१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या तिथौ, बुद्धवासरे, सूर्योदयात् गत घडी १९ पल २९ पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रे, सुसमये, राणी वदन कवर पुत्रमनीजनत, दशोटन, करे पीछै, सोहड नाम स्थापना करी, तत् समये, श्री जिनवल्लभ सूरिः गुरू महाराजके चरणों उपर धरा, गुरुने वास चूर्ण क्षेपन करा, इसकी माता धाडेसे लाई गई, इसलिए गुरूने इसका गोत्र धाडेवाल स्थापन करा, श्री जिनवल्लभ सूरिःजी विहार कर देवलोक हुये, तद-पीछे वल्लभसूरिः के पद उपर सम्वत् ११६९ श्री जिनदत्तसूरिः जी हुए-उन्होंने सोहडको, विशेष प्रतिबोध दे श्रावक व्रत धारण कराया, और उपदेश दिया, पतीके मृत्युअनन्तर, मोहा अस्तपने, जो स्त्री अग्नि मैं जलकर मरे, उस्को लौकिक शती कहते है, उसकी मानता, पितर, कुल देवी, इत्यादिक सेवा, भक्ति न करणा, देव श्री वीतराग, अष्टादश दोषण वर्जित, मुक्तिप्रद की भक्ति, गुरू खरतर गच्छके-यति साधू, केवली कथित धर्म अर्थ है, अन्य सब अनर्थ रूप है, ऐसाही सम्यक्त्व युक्त व्रत जानकर, सोहडने

आत्मसाक्षी ग्रहण करा, परम जिनधर्मी हुआ, तदनन्तर जूनागढके नवलखे घूंधल साहकी पूत्री चन्द्र कुंवरसें व्याह किया, उसका नाम सामरे मै सज-नादे प्रसिद्ध हुआ, उससें ४ पुत्र उत्पन्न हुए, सारंग १ सगता २ सार्दूल ३ शिवराज ४, इन्होंका परिवार क्रमसै वृद्धि पाया कारणसें शाखा भिन्न २ हुई इति * मूलगच्छ खरतर.

(गोठी गोत्र उत्पत्ति)

मेघा नामका सार्थ वाह जिसके पाच सय वृषभों ऊपर नाना वस्तु किरि-याणेका भार वहता है, कई मनुष्य सेवक है, स्थान २ आडत है, एक समय इस प्रकार स्वरूप बणा, विक्रम शताब्दी ११९२ मै गुजरात देश अणहिलपुर पत्तनमैं एक महा द्रव्य पात्र राज्य माननीय यवन है उसके गृह भूमिके मध्य पार्श्व जिनेश्वरकी प्रतिमा है, उस पार्श्वप्रभूका अधिष्टायक, पार्श्व यक्षनें उस यवनको स्वप्न मै कहा तेरे गृह भूमिके मध्य मै, पार्श्व जिनेन्द्रकी प्रतिमा है, उसको तू भूमिमध्यसें निकाल कर, मेघा नाम सार्थवाहको देदे, और उस सार्थ वाहसें पांच सय मुद्रा तूनें ले लेना, वह कल प्रभात समय तेरे गृहद्वार सन्मुख वस्तु किरियाणेकी बालध लेकर निकलेगा, उसके मस्तक पर कुंकुम तिलक उपर अक्षत लगे हुए होंगे, इस चिन्हसें पहिचान लेना, यक्षराज हरा अश्वहरा पलाण (काठी) उसपर हरे वस्त्र हरित रग आप धारण करा हुआ, यवनको दर्शन दिया और कहा, यदि तूं मेरा कथन नहीं मंतव्य करेगा तो, तेरे पुत्र कलत्र परिवारको, तथा नगद द्रव्यकों, हस्ती अश्वादि सर्व सम्पत्तिको, कुशल कल्याण नहीं होगा, ऐसा स्वप्नमैं स्वरूप देख, यवननिद्रासें जाग्रत हो, अपनी स्त्री बीबीसें स्वप्नका स्वरूप सर्व निवेदन करा, बीबी ऐसा वृत्तान्त श्रवण कर भयभीति हो अपने पतिसें कहने लगी हे प्राणनाथ शीघ्रतया उस बुत्तको भूमिमैंसे निकालो नहीं तो कोई अवश्य हानी होगी, ये कोई जिन्दोंका बादशाह है

* प्रथम छपी मुक्तावली मैं छापा गया इतिहास वह एक जीर्णपत्र पर लिखा दूर करके यह इतिहास जोधपुरसें मेडतावाले ऋषभदासजी धाड़ेवालने ३ प्रमाण दे लिख भेजा इस लिए यह लिखा है.

या खुदाका भेजा प्रेसता है वह दर्शाव देकर तुम्है कह गया है, तब वह यवननें रात्रिकों उसी समय उठके उक्त स्थानको खोदा, तब वह पार्श्व-प्रभूकी मूर्ति प्रगट हुई, तब उस यवनकों पूर्ण विश्वास हो गया के जिसने-मुझकों दर्शन देकर जो वार्त्ता कही थी वह वार्त्ता वैसी ही होगी, तब बीबी और यवन अपने वालबच्चों युक्त पार्श्व प्रतिमा सन्मुख ताजीम (विनय)-सें हाथ जोड कहने लगा कि हे देव तू क्रोधितमत होना हम तेरी बंदगी करने तेरे बढे है, जो आज्ञा तेरी होगी वही करेंगे, गृहके द्वारा ऊपर जाके उस सार्थ वाहका मार्ग गवेषणा करनेको स्थित हुआ, इधर इस ही प्रकार उस यक्षनें मेघा सार्थ वाहको स्वप्न मै दर्शन देकर कहा अण हिल्पत्तन मै एक यवन तुझकों पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा देगा, और पाच सय मुद्रा तुझसें याचेगा, तूं शीघ्र उसको पाच सय मुद्रा देकर पार्श्वप्रभूकी प्रतिमा ले लेना, उसकी पूजा अष्ट विधीसे तू निर-न्तर प्रभात करना मध्यान्ह पुष्पादिसें अग रचना संध्याको आरती धूपोत् क्षेपन की करना, तुझें इहभव, परभव, उभय लोकमैं लभप्रद होगा, ऐसा कह अन्तर ध्यान हुआ, प्रभात समय उठ नित्य करतव्य स्नान तिलकादि कर प्रयाण करा सूर्योदय समय अणहिल पत्तन प्राप्त हुआ, देवकथित चिन्हों द्वारा पहिचान कर यवननें पार्श्व प्रतिमा अर्पण करी पाच सयमुद्रा याचनेसें सार्थ वाहनें यवनको दिये बडे विनयसें पूजा द्रव्यभाव करता स्वव्यापारमै महान् लाभ पार्श्वयक्षकी सहायतासें उपा-र्जन करता क्रमसें मेघा सार्थ वाह पारकर जो देश गोढवाड और पाली मारवाड के शमीपस्थ देश उहां जाकर प्राप्त हुआ, पार्श्व जिन प्रतिमाका चमत्कार, मनो वाञ्छित पूरक प्रभावसें, यात्राके अर्थ धर्मी जन आने लगे, ज्ञाता अङ्ग, राय प्रश्नी, जीवाभिगम सूत्रोक्त विधीसें सतरह भेदादिक द्रव्य भाव युक्त पूजा करने लगे, क्रमसें सार्थ वाहने स्थल भूमिमै प्रयाण किया जत्र १२ कोस आया अकस्मात् जिन प्रतिमाका वाहन स्थम्भित होगया पदमात्र चले नहीं, ये स्वरूप देख सार्थ वाह चिन्तातुरपनें निद्रा प्राप्त हुआ तत्काल यक्ष राज आकर स्वप्नमैं कहता है कि हे सार्थेश चिन्ता मत कर,

ये प्रतिमा यहासे, स्थल देशमै नहीं गमन करेगी, कारण इस देशके वास्तव्य, ग्रामीण, निर्विवेका मरु स्थल्या, अर्थात् निर्विवेकी (विचार शून्य) मनुष्य ग्रामोंके वास्तव्य, प्राय विद्याहीनपनेमै है, बूझ बुजाकडकी आज्ञा माननेवाले है, जलरहित, कंटकदेश है, इस लिए तूं, यहां पर पार्श्व प्रभूका, भुवन करा, जहां अक्षतके स्वस्तिक पर, नगद मुद्रा तूं देखे, उस स्थल मैं अगणित द्रव्य निकलेगा, और जहा हरा नारेल तूं देखे जल भरा, उहा मीठे जलका कूप निकलेगा, जहा गीला गोमय (गोवर) पडा तूं देखे, उहा खारे जलका कूप निकलेगा. अक्षतके स्वस्तिकपर जहा पुंगीफल (सुपारी) देखे उहा पाषाण (पत्थर) नाना प्रकारके जैसा चाहियेगा वैसा निकलेगा, शिला वटा, शिल्पशास्त्रका, पूर्णपारगामी सिरोही नगरमै रहता है, उसके गलत कुष्ठ रोग है, वह मिटा दूंगा, और उसको मन्दिर बनानेकों कहदूगा, उस्को आमंत्रण करना, इत्यादि कहकर अदृश्य हुआ, सार्थ वाह हर्षित हुआ, उक्त द्रव्यबलसें प्रथम दो कूप कराये तत्पश्चात् सिलावटेको बुलाया, पार्श्व भुवन कई वर्षोंसे चार मंडप, खभ २ पर, नाटक करती, वाजित्र वजाती, पुतलियां, एवं प्रशंसनीय कोरणीयुक्त, शिखरबद्ध, भुवन निष्पादन करा, कुकुम पत्रिका भेज २ श्रीसंघको एकत्रित करा, सवालक्ष देशमैं विचरते हुए, खरतर गण नायक, श्रीजिनदत्त सूरिःजीको, प्रतिष्ठाके लिए विनती करी, गुरू ऐसा शुभ लग्नमैं, चैत्यप्रतिष्ठा कर, पार्श्व प्रभूकू विराजमान कर, वासचूर्ण मंत्राभिषेक करा मंगल जय शब्द हुआ, उस समय आकाशमै देव दुंदुभिका निनाद, करके साढी बारह कोटि सोनइये देवतोंने वर्षा करी और कहा, ये सर्ववर्षित द्रव्य, संघपति, मेघाके लिये दिया गया है, ऐसा चमत्कार, श्रीजिनदत्त सूरी.जीका, प्रत्यक्ष देख, मेघा सार्थ वाह सम्यक्त युक्त बारह व्रत, दादासाहिबके, समक्ष धारण कर, खरतर श्रावक हुआ, मेघा पुत्र गौडी हुआ, इसने भी सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत धारण करा, गुजरात, गोढवाडके श्रावकोंने पार्श्व प्रतिमा पूजक समझ गोठी[1] कहना शूरू करा,

---

१ सस्कृतमें, महाधनवत, नगरमें मुख्य, राजा प्रजाका हितचिंतक, बुद्धिवानको गोष्ठी कहते हैं,

गुजरात देशमैं देव पुजारीकों वर्तमानमै गोठी कहा करते है, गोडीजी समाधि मरणकर मत्यक्ष हुआ, अवधि ज्ञानसें पूर्वजन्म देख उस पार्श्व प्रतिमाकी महिमा विस्तृत करके पृथ्वीतलमै रखकर मनुष्योंको स्वप्न देकर, मूर्तिको प्रकटाने लगा, बारह वर्षोंसें उसके नामसें, गवडी पार्श्वनाथ, नाम विस्तार पाया, आखरी विठूरे ग्राम प्रगटे, तद्पीछै दर्शन अद्यावधि मूर्तिनें नहिं दिया, गोडीके शन्तान, गोठीनामसें प्रसिद्ध हुए, मूल गच्छ खरतर,

(अथ खीमसरा गोत्रकी उत्पत्ति)

मरुधर देश मैं वालेचा चौहाण राजपूत खीमजी नामका उसनें प्रथम ग्रामका नाम परा वर्त्तन कर, खीमसर नाम प्रसिद्ध करा, एक दिवस इन्होंके शत्रु राजपूत माटी इन्होंकी गऊ ऊँठ प्रमुख द्रव्य लेकर पलायन हुए (भगे) खीमजी राज पूतोंके संग उस धनको लाने निकले, शत्रु प्रवल दलने इन्होंके, बलको, छिन्न भिन्न कर डाला, चिन्ता ग्रस्त हो, पीछै पुनः बल लेने चले, इतने मै खरतर गच्छाचार्य्य जिनेश्वर सूरिःके शिष्य साधुओं सहित सन्मुख मिले, प्रतापी गुरुत्व पन देख विनती करी, हे पूज्य आपपर दुःख भञ्जन हो, पर द्रव्य हरण कर ले जा रहे हैं, कुछ प्रतीकार करो, गुरूने कहा, यदि तुम निरपराधी जीवोंके हननेका, मद्य, मास, और रात्रि भोजनका त्याग करो तो, गुरुदत्त प्रतीकार है, स्वार्थ सिध्यर्थ खीमजी सहित सर्व राजपूतोंने, ४ नियम धारण करे, गुरूने शत्रुवशी करन, अमोघ विधि नमस्कार मंत्रके, ध्यानकी कथना करी खीमजी स्मरन करने लगा उस मंत्रके अमोघ प्रभावसें शत्रुओंके मनोगत पर्यायपलटे सन्मुख आकर सर्व द्रव्य देकर क्षमा याची, ये स्वरूप देख खीमजी आदि राजपूत साश्चर्य हो, जैनधर्म धारण करा, इन्होंके तीन पुस्तानोका व्याह सम्बन्ध राजपूतों मैं होता रहा, सगे राजपूत उपहास्य, व्याह आदिमै करते रहै, शस्त्र क्यों धारण करा है, तकडी (तराजू) लो, ये प्रत्युत्तर यथार्थ देते, अपराधियोंको दण्ड देते, इन्होंके मन मै व्याहादिकों मैं, मद्यपान, मांस भक्षणादि देखकर, भीमजी, ऐसी चिन्ता निवृत्त्यर्थ उपाय विचारते थे, इतने मैं जंगम सुर तरु दादा श्रीजिन दत्तसूरिः खीम-

सर पधारे, भीमजी वन्दन करनार्थ, सपरिवार युक्त गये, गुरूने धर्मोपदेश दिया, अवसर पाकर निज दु.ख कथन करा, दादा साहिबनें सभा समक्ष निरवद्य भाषण करा, साधर्मी सगपण समो, सगपन अवरन कोय, भक्ति करो साधर्मकी, समकित निरमल होय २ तब ओसवाल श्रावक इन्होंके पुत्र परिवारको अपनी जाति मैं मिलाये, इन्होंने व्यापार प्रारम्भ किया, खींमसर मैं होनेसें खीमसरा जातिका, नाम प्रसिद्ध हुआ, भीमजीदादा गुरुदेवके शमीप जाकर, अपने सपरिवार (कुटुम्ब) सहित व्रत नियम कर, नव तत्वके ज्ञाता हुए मूलगच्छ खरतर ।

(समंदरिया गोत्र)

पारकर देश पद्मावती नगरके शमीपस्थ ग्राममैं सोढाराजपूत, समदसी, जिस्के ८ पुत्र थे, देवसी १ रायसी २ खेतसी ३ धन्नो ४ तेजमाल ५ हरि ६ भोमो ७ करण ८ लेकिन उनके पास द्रव्य नहीं, कृपाण कर्मसें वृत्ति करे, धन्ना पोर वालसें ऋण लेवे, धान्यकी निप्पत्ति होनेसें, वृद्धि सहित द्रव्य दे देवे, कान्तार (काल गिरनेसें समंदसीको अत्यन्त कष्ट आपदा भोगनी हो, एक समय समदसीको विहार करते मुनिपती श्रीजिन वल्लभ सूरिः मार्ग मैं मिले, भव्य परणति होनेसें, वन्दना करी, गुरूने धर्म लाभ दिया समंदसीने पूछा, हे मुनिवर, मेरा दु.ख कब निवर्त्तन होगा, गुरूने कहा, प्राणी मात्र शुभ कृत्यसें सुख और पाप कृत्यसे दु.ख भोगता है, यदि तू सुखाभिलाषी है तो धर्म कर वह अहिंसा मूल धर्म है अहिंसाका स्वरूप निवेदन करा, और नित्य प्रति उभय काल एकान्त स्थलमैं बैठकर सामायक सम भावसें करना, शत्रु ऊपर शत्रुता नहीं, मित्र ऊपर मित्र भाव नहीं राग द्वेषको त्याग समाधिमैं लीन मन करनेसे आत्म गुणसामायक उदय होता है, इस प्रकार धर्मके रहस्यको श्रवण कर, समदसी, गृहस्थ धर्मानुकूल दोनों व्रत गुरूसें ग्रहण करे, उभय काल सामायक करता है प्राणिमात्रकी दया करता है, गुरू विहार कर गये, ये स्वरूप देख साधर्मी जानकर, धन्ना पोरवाल, द्रव्यसें पूर्ण सहायता देने लगा, और ८ पुत्रोंको विद्याभ्यास कराने लगा, भोजन वस्त्रसें न्यूनता नहीं रक्खी, तब समंदसी विचारने लगा अहो धर्मका महत्व-

पना निरुद्यम पनसें भी, भोजन छादन प्राप्त होने लगा, विक्रम सम्वत् ११७९ मै श्रीजिन दत्त सूरिनें पद्मावती नगरको चरण रजसे, पावन करा, समदसी धन्ना पोर बालके संग, गुरूकी वन्दना करने गया, गुरूने धर्मोपदेश दिया, तदन्तर समदसीनें गुरूसें विनती करी, हे पूज्य, गुरू दत्त मै व्रतसें इस भव मैं सुखी हुआ हू, पर भव अवश्य सुखा कर होगा, ये आठ पुत्र आपके हैं, गुरूनें वासचूर्ण क्षेपन करा खरतर श्रावक वनाये, धर्मेका रहस्य समझाया, तदन्तरधन्ना पोरवालनें, इन्होंकों, भागीदार बनाके, गुजरातमै व्यापार कराया, समुद्रके मार्ग गमन कर, मोक्तिक, विद्रुम, अम्बर, आदि व्यापारसें, आठो भ्रातानें, कोटान मुद्रा अर्जन करी, गुरू श्रीजिन दत्त सूरि.की कृपासें, ओसवाल ज्ञातिमै, मिले, समदर्सीके शन्तान, समुद्रके व्यापारी होनेसे, लोक समंदरिया बोहरा कहने लगे, मूल गच्छ खरतर,

(झांवक झांमड झंबक)

राठोड वशी रावचूडेजीके वेटे पोते १४ जिन्होंने १४ राज्य अलग २ स्थापन करा जिसमेंसें मालव देशमै रत्न ललाम (रतलाम) नग्रके आसपास २९ । ३० कोशके दूरीपर जो अव अबूआ नगर वसता है इस नगरीके राजा झंवदेके ४ पुत्र सुखसें राज्य करतेथे. सम्वत् ११७९ मै श्रीजिनभद्र सूरिः खरतर गच्छी विचरते २ उहा पधारे तव राजाने वडे महोत्सवसे नगर मै पधराये क्यों के रावसीहाजी आसथानजीने श्रीजिनदत्त सूरिःजीकी सेवा करी तव गुरू वोले हे राजेन्द्र क्या इच्छा है आसथानजी अरज करने लगे गुरू राज्य भ्रष्ट हो गया सो किसी तरह राज्य मिले ऐसी कृपा करो तव गुरूनें कहा जो तुम्हारी शन्तान मेरे शन्तानोंको सदाके लिए गुरू मानते रहैं तो मै आगे होनेवाली वातका निमित्त भाषण करता हूं आसथानजी बोले जहातक पृथ्वी और ध्रू अचल रहैगा उहांतक हम राठौडोंके गुरू खरतर गच्छ रहेंगे और कभी विमुख नहीं होंगे ये उपकार कभी नहीं भूलेंगे सूर्यकी साक्षी परमेश्वर साक्षी है इत्यादि अनेक वचन प्रतिज्ञा अन्तःकरणसें करी तव गुरूनें शासन देवीकी आराधना करी और कहा तुम्हारे कुल मै चूंडा नाम पुत्र होगा उसके १४

शन्तान राज्यपती राजाधिराज पृथ्वीपती होंयगे और आजसें तुम्हारी कला और तेज प्रताप दिन २ बढ़ते रहेगा, तवसें राठौड, राज्य, धन, परिवारसे दिन २ बढ़तेही गये, ख्यात राठौडों मै ऐसा लिखा है, (दोहा) गुरू खरतर प्रोहित सिवड, रोहडियो वारट्ट । कुलको मगत दे दडो, राठोड़ा कुल भट्ट ॥ १ ॥ इस वास्ते भवदे अपने कुलक्रमके उपकारी गुरूकी भक्ति मै तत्पर हुआ, इसवक्त दिल्लीके वादशाह यवनने भंवदे पर हुक्म भेजा के, तुम वडे शूर वीर मच्छराल हो, सो घाटेका मालिक, भींया टांटिया भील, न मेरा हुक्म मानता है, और गुजरात देश मै, चोरी कराता है राहगीरोंको लूटता है. वध वाघ ले जाता है इसकों पकड़के लावोगे तो, तुम्हारी खातिरी दरवार मै होगी, कुरव वढ़ाकर, पट्टा दिया जायगा; राजा उदास हो, गुरूके शमीप गया, चरण कमल वन्दन कर कहने लगा हे गुरू आप गुरुओंके आशीर्वादसें, ये राज्य पाया, आपके वडे गुरू लोकोंने हमारे वडेरोंके, कईयेक वेर कष्ट आपदा दूर किया है अवकी लाज मर जाद जो गुरू रख दो तो वृद्ध पण सफल हो जाय, और आपके सेवकोंकी अखियात कीर्त्ति राज्य रह जाय, तव आचार्य्य वोले, हे राजेन्द्र जो तुम हिंसा धर्म त्यागके अहिंसा रूप अणुव्रत सम्यक्त्व युक्त जैनधर्म धारोतो सव हो जावे एक पुत्रकों राज्य देणा वाकी महाजन वनो तव गुरूके वचन सुण तहत्त किया तव गुरूनें कहा कल प्रयत्न कर दूंगा काला भैरूं मंडोवराकों आराधन करा उसके वचन लेकर प्रभात समय विजय पताका जंत्रवणा कर राजाको दिया राजाने विचारा जो मै भुजापर वाधूगा तो न मालुम युद्धमै खुल पडे इस लिए उसने अपने वडे पुत्रकी जाघ मै चीरकर जत्र डालकर टाके लगा दिये और गुरूका आशीर्वाद लेकर चढा और उन दोनों भाइयोंको पकडके वादशाहके सुपुर्द किया वादशाहने वह सव भीलोंका इलाका भनुआ नगरके ताबे दिया सो अभी विद्यमान है राजाने अपने वडे पुत्रकों राज्य तिलक

---

१ जयचद साथे यति हाड़ गाले हे माले, सेतरामरी सरवग ईधरे पाछीपाले रायपारू-रायनें दीनपति ,प्रह्रो देखायो, कन ऊपर- कर कृपा असखदल अलग- उडायो, सूरनें त्रियामेली सरस किया इसावड २ कर्जा, खरतरे गच्छ हुआ इसाकदेनविर चोकमधजा ।

दिया और कहा हे पुत्र ये राज्य तुम्हारा नहीं समझणा सदा मदके लिए खरतर गुरूसे कभी ऋण मुक्त नहीं हो सकोगे, अभी भी वो राजा लोक उसी मुजब पिताके वचन निर्बाह करते है, राजा तीन पुत्रोंके परिवार सहित जैन महाजन हुआ, जिन्होंके ये तीन गोत्र गुरूनें, स्थापन करे, झावक १ झामड २ भवक ३ ये तीनों भबुआ नगर मै हुए,

(वांठिया, लालाणी, ब्रम्हेचा, हरखावत, साह मल्लावत, गोत्र)

विक्रम सम्वत् ११६७ मै पमार राजपूत लालसिंहजी रणत भंवरके गढके राजाको श्रीजिनवल्लभ सूरिःने इस प्रकार उपदेश दिया. लालसिंहजीके पुत्र ब्रह्मदेवके जलंधरका महा भयंकर रोग उत्पन्न हुआ, उस वखत लालसिहजीने, गुरूसें विनती करी हे गुरू, ऐसी कोई चिकित्सा करो, जिससें मेरा पुत्र आरोग्य हो जाय, तब वल्लभसूरिःने कहा, जो तुम, जैन धर्म धारण करो और मेरे श्रावक बनो तो, पुत्र अच्छा हो सकता है, तब लालसिंहजीने कबूल करा तब गुरूने, चामुण्डा देवीसें उसको आराम करवाया, तब लालसिहजीनें, सात पुत्रां समेत जैनधर्म धारण करा, उसका वडा पुत्र वडा वठयोद्धार था, उसकी शन्तान वठ कहलाए, ब्रह्मदेवके ब्रह्मेचा कहलाये, लालसिंहजीके छोटे पुत्रके लालाणी, साहकी किताव उदयसिंह पुत्रकों भरु अच्छेके नबावनें, इनायत की, वह साह कहलाये मल्ले पुत्रकी शन्तान मल्लावत कहलाये, हरख चन्दकी शन्तान हरखावत कहलाये, वाठिये चिमनसिंह सम्वत् १५०० से मै हुमायू बादशाहकी फोजमै देण लेण करणे लगे, गुजरातके हमलेमै, सोनेके वरतन फोजके लोकोंने, पीतलके भरोसे बेचा, इससें चिमनसिंह वाठियेके पास वे गिनतीका धन हो गया, इससे वहुत जगह व्यापार हो गया, चिमन सिंहने क्रोडो रुपये लगा कर वहुत जिन मन्दिरोंका उद्धार कराया, सत्रुजय तीर्थकी यात्रा जाते गाम २ प्रति आदमी प्रति, एक २ अकव्वरी मोहर, साधर्मियोंकों वांटी, पहले वठ कहलातेथे

---

१ मेडता नगरमें वादसाह खाजेकी दरगाह जाते आया द्रव्यकी आवश्यका होनेसें हरखावतको वुला ५२ सिकेके ६ लक्ष रुपया मागे चिन्ताग्रस्त आनदघनजी मुनिः पास गया मुनि ने योगसिद्धिसे ५२ सिक्के पूर्ण करे वादसाहने हरखावतको सोंह पद दिया।

मोहरें वाटणेसें वाठिया २ कहलाये इन्होंका परिवार जादह बीकानेर इलाके मै वसते है मूलगच्छ खरतर,

चोर बेडिया भटनेरा चोधरी साव सुखा, गोलछा, पारख, बुचा, गुल गुलिया, गूगलिया गदहिया राम पुरिया साख ९०

पूरबदेश, नगर चंदेरी मै, खर हत्थ सिंह राठोड राजा राज्य करता था जिस्के ४ पुत्र थे, अम्बदेव, नींबदेव २ भेंसा ३ आसपाल ४ सम्बत् विक्रम ११९२ मै मं, श्रीजिन दत्तसूरिः खरतर गच्छा चार्य्य, युग प्रधान, चंदेरी परगने मै पधारे, उस वखत, राठ लोकोंकी फोज, सग में लिये हुए यवन लोक काबली, मुल्ककों, लूटणा शुरू करा, बहुत अगणित द्रव्य लेकर जाने लगे, तब राजा खरहत्थकों, ये खबर हुई, तब दुष्टोंको सजा देणेके लिए, राजा, ४ पुत्रोंकों सग लेकर सेन्याके सग युद्ध करने चला, युद्ध मै सब धन राजाके सुभटोंने यवनोंसे छीन लिया, मगर युद्ध मै राजाके पुत्र घायल हो गये, राजा उन्होंको पालखी मै डालके पीछाफिरा, शस्त्र वैद्योंने जबाब दे दिया कि, ये पुत्र किसी तरह नहीं बच सकते, राजा सुणतेही मूर्छा खाकर नीचे गिरा, तब लोकोंने, ठंढा पाणी, ठंढी हवा, करके, सचेत करा, विलापात करणे लगा बेटे अचेत पडे है इतने मै मुनिगणसें सेव्यमान श्रीजिन दत्तसूरिः विहार करते चले आये लोकोंने राजासे अरज करी हे पृथ्वीपती शान्त दात जितेंद्री अनेक देवता है हुक्म मं जिनोके ५२ वीर ६४ योगिनीयोंको वस करता पाच पीरोंको तावेदार बनानेवाले, बिजलीकों पात्रके नीचे थामणेवाले, जंगम सुरतरु, आपके भाग्योदयसें वो पधार रहे है, राजा ये सुणतेही, सामने जाके चरणो मै गिरपडा और रोणे लगा, गुरूने कहा, हे राजेन्द्र क्या दुःख है, तब चारों पुत्र मृतकवत् पालखी मै जो पडे थे, सुभटोंने लाकर हाजिर करे, गुरूने कहा जो तुम जैनधर्मी बनो, मेरी आज्ञा मानो तो, चारों अभी अक्षत अंग हो जाते है, राजा कहता है, हे परम गुरूजी, जो मेरी शन्तान और मै आपसे और आपकी शन्तानोसे, वे मुख हो कभी सुख नहीं पावेगें आपकी आज्ञा खरहत्थ की सब शन्तानकों मतव्य हैं इत्यादि जब प्रतिज्ञा कर चुका तब गुरूनें जो गणियोंको याद फरमाया

गुरुकी आज्ञासें अमृत छिड़का तत्काल अक्षत अग चारों वीर योद्धार खड़े हुए गुरूके चरणकी पूजा करी सब राजपूत अचरजके भरे जैनधर्म अंगीकार करा उन्होंके न्यारे २ गोत्र स्थापन करे उन्होंके नाम समुच्चय लिखेंगे राजा खरहत्थके बडे पुत्र अम्बदेवनें चोरोंको पकड़ा वेड़ियें डाली सो चोर वेड़ियें अथवा चोरोंसें जाय भिड़े इस वास्ते चोर भिड़िये कह लाये लोक चोरड़िये कहा करते हे चोर वेडियोंमेंसे बहोत साखें निकली १ तेजाणी २ धन्नाणी ३ पोपाणी ४ मोलाणी ५ गह्लाणी ६ देवसयाणी ७ नाणी ८ श्रवणी ९ सद्दाणी १० कक्कड ११ मक्कड १२ भक्कड १३ लुटकण १४ समारा १५ कोबेरा १६ भट्टागिया १७ पीतलिया १८ सोनी १९ फलोदिया २० गमपुरिया २१ सीपाणी, दूसरे नींब देवकी शन्तान वाले, भटनेरा चौधरी, कह लाए, इन्होंने भटनेरके लोकोंकी, चौधरायत, भटनेरके राजाके कहणेसें करी, तबसें भटनेरा चौधरी कहलाये, तीसर भेंसा शाहके ५ स्त्रिया थी इन्होंने अपना रहना, माल्वदेश, माडवगड मैं करा था इन्होंके ५ स्त्रियोंसे ५ पुत्र चौथा पुत्र कुंवरजी इन्होकी शन्तानवाले सावण सूका कह-लाए सो इस तरह कुवरजी बहुत ज्योतिष निमित्त शकुन शास्त्र पढे थे जो बात कहते सो प्रायः मिल्ही जाती माडव गढसें चित्तोडके राणेजीनें कुव-रजीको बुलाये, परिक्षा करणेकों पूछा, कहो कुमर, सावण भादवा कैसे होगा, तब कुवरजी बोले सावण सूका, और भादवा हरा होगा, राणेजीने वहा ही रक्खा अन्तको जैसा कहा, वैसा ही हुआ, तब राणेजीनें कहा, सच्च तुम्हारा कहणा, सावण सूका गया, तबसें लोक, सावण सूका २ कहने लगे, इन्होंके वंश मैं गुलराजजी गुडके गुल गुले बना २ कर छोकरोंको खिलाया करते, इसवास्ते छोकरोंने गुल गुलासेठ नामधरा कुव-रजीके वंशवाले, जैसलमेरसें गूगलका व्यापार पालीनग्र मैं करते, इससें लोक गूगलिया कहने लगे, दूसरे बेटे २ गेलोजी इन्होके पुत्र वछराजजीकों माडव गढके लोक गेल्ह वछा कहते २ लोकोंमें गोलछा कहलाने लगे, तीसरे बेटे बुच्चा साह इनकी शन्तान बुच्चा कहलाये ४ बेटा पासूजी आहड नगर मैं, राजा चन्द्रसेनने इन्होंको सरकारी जवाराहत खरीदने पर झंवरी कायम

किया एकदिन एक परदेशी श्रीमाल झंवरी राजाके पास हीरा बेचनेको लाया राजाको दिखलाया राजाने शहरके सब झंवरियोंकों दिखलाया झंवरियोने उस हीरेकी बडी तारीफ करी, जिसके पीछे राजानें अपणे झवरी पासूजीको हीरा दिखलाया पासूजी बोले यद्यपि हीरा बडा कीमती है परन्तु इसमैं एक ऐब है, तब राजाने पूछा वह कौनसी पासूजी बोले, जिसके घर मे यह हीरा रहता है उसकी स्त्री मर जाती है, तब राजानें श्रीमाल झंवरीकों बुला कर पूछा, हमारे झंवरी पासूजी इस हीरे मै ऐसी एब बतलाते है, उसने अपना कान पकडा, और कहने लगा मैंनें हजारों नामी झंवरी देखे हैं, परन्तु पासूजीकी बडाई करणेकी जुबानको हिम्मत नहीं है, सच है, मैंने दो व्याह किए दोनो मरगई, तब इस हीरेको एब दार समझ बेचणे आया हू, पीछे तीसरा व्याह करूंगा, तब राजानें, सत्य पारख जाणके पारख पदवी, पासूजीकों, प्रदान करी, पासूजीकों लाख रुपया सालियाना देणा, उस दिनसें राजानें, कबूल करा, पासूजी उस हीरेकी लक्ष रुपया कीमत देकर श्रीऋषभ देव भगवानके मस्तक पर लगानेको तिलक बणाकर चढा दिया, इनकी सन्तानवाले पारख कह लाए, पाचमा पुत्र सेनहत्थ लडका नाम (गद्दासा) था, उसकी सन्तान, गद्दहिया कहलाई, खरहत्थजीके चौथे बेटे आसपालजी, इन्होंके आसाणी तथा ओस्तवाल दो लडकोंसें गोत्र हुए।

(भैंसा शाहने गुजरातियोंकी लङ्क खुलाई)

भैंसा साहके पास, खरहत्थ राजाने, जो यवनोंसें, धन बे गिणतीका छीना था, वो ज्यादह, इन्होंकेही पास रहा, इन्होंकी माता लक्ष्मीबाई, सत्रुंजयकी यात्राको बडे महोत्सवसे चली, जगह २ रथ महोत्सव, संघकों भोजन, धर्मशाला, जीर्णोद्धार, याचकोकों दान देते चली, पाटणनग्र पोंहचते धन पासमैं थोडा रहा, तब अपने गुमास्तोंको भेज वहांके बडे व्यापारी नामी चारोंकों बुलाया, उसमैं गर्द्दभसाह मुख्य था, तब उनोंसे लक्ष्मीबाईने कहा, हमैं क्रोड़सोनइये चाहिए हैं, सो हमारी हुण्डी माडवगढकी लेकरके दो, तब व्यापारी बोले, तुम कौन हो, क्या जाति, किस जगह रहते हो, हम पिछानते नही, तब लक्ष्मीबाईने कहा, मेरा पुत्र कहीं छिपा नहीं है, भैंसेंकी माता

हूं, ऐसा सुणकर गद्धासाह हसकर बोला, भैसा तो हमारे पखाल पाणीकी लाता है, ऐसी हसीकर चले गये, परन्तु देणा कबूल नहीं करा, तब मातानें सवार भैसेसाहके पास भेजे, और सब समाचार लिख भेजे, तब भैसासाह अगणित धन लेकर, पाटण पहुचा, और गुमास्तोंको भेज, गुजरात देसमै, जगह २ तेल खरीद करवा लिया, और पाटणमैं, उन व्यापारियोंसें, तेल मुद्दतपर, लेणेका वादा किया, लक्ष मोहरे देदी, अब पाटणके व्यापारीने गामोंमें गुमास्ते भेजे, तेल खरीदणे, लेकिन कहीं तेल मिला नहीं, आखिर को तेल देणेका वादा, आ पहुँचा, अब पाटणके सब व्यापारी, इकट्ठे होकर लक्ष्मीबाईके, चरणोंमें आ गिरे, और कहणे लगे, हे माता, हमारी लज्जा रक्खो, तब भैसा साह बोला, राजसभामैं चलकर तुम सब लोग, लंग खोल दो, और आइन्दे कभी दुलंगी धोती नहीं बावो तो, तेल लेणेकी माफी दूंगा. उन्होंने वैसाही करा, तबसें गुजरातवाले दो लगा नहीं रखते है बाकी गांमवालोंसें, तैल लेलेकर जमीनपर गिराणा शुरू कराया, तेलकी नदी ज्यो प्रवाह चलाया, आखिर गुजरातके व्यापारियोंनें हाथ जोड, माफी मागी. तब निशाणीके लिए सबोंकी लङ्ग खुलादी, और भैंसेको पाडा कहणा कबूल कराया भैंसेसाहके कहणेसे अपणे नामका सिकासे लहत्य (गद्दासाह) ने छमासे सोनेका गदियाणा बनाकर दीन हीन कगालोंको बाटा, तब पाटणके राजाने भैसासाहकों बुलाकर मान प्रतिष्ठा वढाकर रूपारेल विरुद दिया, याने रूपारेल शकुनचिडी प्रसन्न होकर, जब शकुन देती है तो, नवनिद्ध सिद्ध कर देती है, सम्वत् १६३७ मैं सत्रुंजय-पर श्रीजिनचन्द्रसूरि.खरतराचार्यके उपदेशसे, १८ गोत्र और माई होकर, गछ खरतरसे प्रतिबोध पाये, जिनखरहत्थ राठोड़की साखा, इतनी फैली, सगे भाइयोंका कुछ ज्ञात तो पहिले लिखा है, बाकी कानफरेंसकी रिपोर्टमै और भी गोत्र गोलछा पारखोंके सगे भाई लिखे हैं सावसुखा १ गोलछा २ पारख ३ पारखोंसे आसाणी ४ पैतीसा ५ चोरवेडिया ६ वुच्चा ७ चम्म ८ नावरिया ९ गद्दाहिया १० फाकरिया ११ कुंभटिया १२ सियाल १३ सच्चोपा १४ साहिल १५ थंटेलिया १६ लाकड़ा १७ सीबड १८ संखवालेचा १९ कुरकचिपा २०

साव सुखोंसे गुल्गुलिया २१ गूगलिया २२ भटनेरा २३ चौवरी २४ चोरडियोंमेंसें २४ फेर निकले ये सब गोत्र राठोड़ खरहत्थके ४८ गोत्र सगे भाई गच्छमूल खरतर ५० मां ओस्तवाल पारखोंसे ये सब जैन कानफरें-सकी रिपोर्टमें मिलाके श्रीजीके कारखानेमें मिलाके लिखे हैं १८ तीर्थ भाई कांकरिया १ सेल्होत २ भटाकिया ३ बूबकिया ४ मूतडा ५ नारेलिया ६ सिन्दूरिया ७ मूवड़ा ८ नींवाणिया ९ बाबेल १० काकडा ११ फोकटिया १२ इत्यादि इन सबोंका मूलगच्छ खरतर हैं।

(भणसाली २ चंडालिया भूरा-वद्धाणी)

लोद्रवपुर पट्टण जो कि जेसल्मेरसें ५ कोस हैं उहांका राजा यदुवंशी वीरांजी, भाटी उनके पुत्र सगर, सगरके श्रीधर, राजधर दो पुत्र थे सगर युवराज पदमें था सम्वत् ११९६ युगप्रधान श्रीजिन दत्तसूरिः लोद्रव पत्तन पास विक्रमपुर पत्तनमें थे सगर युवराजकी माताकों ब्रह्म राक्षस लगा हुआ था, सो अगम बात कहदेती, वेद पढ़ती, सन्ध्या तर्पण करती, पवित्रता में मग्न कई दिनों भोजन नहीं करती, और जब खाणे बैठती तो मण अंदाजके खा जाती तब राजाने अनेक मंत्रवादियोंको बुलाया मगर वो मंत्र मंत्रवादीका विगर पढ़े राणी आप पढ़ देती, आखिर राजाने जिनदत्तसूरिः जीकी प्रशंसा सुनी तब राजा आप सन्मुख गया, और लोद्रवपुर मैं गुरूकों लाया गुरूको देखते ही ब्रह्म राक्षस बोला, हे प्रभू आपके सन्मुख अब मैं लाचार हूं, कारण आपकी योग विद्याको मैं नहीं पहुंचता आपके सब देवता दास हैं, गुरूने कहा, आज पीछे वीराके कुटुम्बको कभी सताणा मत, तब ब्रह्म राक्षस बोला है गुरू इस राजाका मैं कथा व्यास था, एक दिन ऐसी हुई के इस राजानें देवीकी स्तुति करी-और मैंने विष्णु सतो गुणी रामचन्द्रकी प्रशंसा करी, राजानें मानी नहीं. तब मैंने कहा हे राजा मदिरा मांस चढ़ाणा, जगदम्बा नाम धराणेवाली, अपने पुत्रवत् भैंसे बकरेकों मारके भोग लगाणेवाली, जगतकी माता-

---

१ वीराजी ओसवाल हो गये इस लिये भाटी राजाके कुर्सी नामेमें इनोका नाम नहीं लिखा गया है।

कैसै हो सकती है, इतना सुणतेही राजानें क्रोधातुर होकर मुझे मरवा डाला, मैं दयाके परणामसें, मरकर, व्यन्तर निकायमैं ब्रम्ह राक्षस हुआ; पूर्व भवके वैरसे मै, इसके कुलका नास कर डालता, लेकिन आप समर्थ योगी हो, ऐसा कह कर राजा धीरकों कहणे लगा, अरे दुष्ट तूं, देवीकों, जीवोंको मारकर मदिरा मांस चढाता, और खाता हुआ नरक जायगा, अगर स्वर्गमोक्षकी चाह रखता है तो, श्री जिन दत्त सूरिःधर्मकी जहाज है, इन्होंका कहा धर्म धारण कर, सो तेरे कुटुम्बका दोनों भव कल्याण होगा, ऐसा कह कर, राजाके गढका मूल दर्वाजा उत्तर था, सो पूर्वमै स्थापन कर, गुरूसे सम्यक्त ग्रहण कर, ब्रह्मराक्षसनें राणीका अङ्ग छोड दिया, अपनी निकायमै चला गया, ऐसा चमत्कार देख राजाने अपने सहकुटुम्ब जैन धर्म अङ्गीकार करा, भंडसालमै वासक्षेप किया इस वास्ते भणसाली गोत्र, गुरूने स्थापन करा, वद्धाजी भणसालीकी शन्तान वद्धाणी कहलाये, थेरूशाह नामका भणसाली विक्रम सम्वत् सोलसयमैं हुआ, वो लोद्रवपुरमैं घीका रुजगार करता था, उसवक्त रूपसियां गांमकी स्त्रियें इसकों नित्य घी लाकर वेचा करती थी, एक दिन पिछली रातकों, वहुतसी स्त्रियां घीके घड़े ले, गांमसें निकली, इन्होंमैं एक स्त्री, अराई (इढाणी) भूलगई, रस्तेमैं उसनें एक हरीवेलकों मरोडके, अराई वणाली, लोद्रवपुर पहुंची, इसके घडेका घी तोलते २ अन्त नहिं आया; तब थिरूने विचारा, १९ सेरका घड़ा, इसमैं २० सेर घी तो निकल चुका, और फिर भी इसमैं घी इतनाही भरा है, अग्रिम वुद्धि वाणियां इस न्यायसें वो अराई, उसने नींचेसें निकाल कर, दुकानके अन्दर फेंकदी सवोंका घी लेके, अराई वालीकों, दूणे दाम दिये, तब वो विचारणे लगी, आज थिरू भूल गया है, तब पीछे बोली अराई तो दे घड़ा कैसे ले जाऊं, इसने कोडा ला, जो जेसलमेरमैं वणता है वो निकालके उसकों दे दिया, तव वो स्त्री वहुतही खुशी होगई आजमैं तो रूपारेल लेके आइथी, वो सव चली गई - अबथिरू साहनें जो अपने पास द्रव्य था, उसके नीचे, वो अराई धरी, जितना द्रव्य निकाले, उतनाही अन्दर, तव, श्री जिनसिंहसूरिः आचार्यसें ये सव वात कही गुरूनें कहा सुकृतार्थ संच, तव

थिरूनें घीर राजाका कराया हुआ सहस्र फणा पार्श्वनाथके मन्दिरका जिर्णोद्धार कराया, ज्ञान भण्डार कराया, इस तरह कोडों रुपये लगाये, नवरत्नोंके जिन बिंब भरवाये संघ भक्ति बहुत करी सम्बत् सोलासयबयासीमें सत्रुंजयका संघ निकाला श्री जिनराजसूरिः प्रमुख कई आचार्य संगमें थे, समय सुन्दर उपाध्यायनें इन्होंकेही संघमें सत्रुंजय रास बणाया था, इस वंशवाले जेसलमेरमें सुल्तान चन्दजी कच्छावा बड़े अकलके पूरे सायर पुरुष होगये है, उहा भणसाली कछावा बजते है, जोधपुरमें भणसाली सब जातके चौधरी हैं, बादसाह अकब्बरने थेरूसाहको दिल्ली बुलाकर बड़ा कुरब बधाया, थेरूसाहनें, नव हाथी, पांचसय घोडे नजर किए, तब बादसाहनें, रायजादा की पदवी प्रदान करी, इन्होंकी शन्तानके राय भणसाली कहलाये. आगरेमें वडा जिनमन्दिर थिरू साहनें कराया, सो अब भी विद्यमान है जोधपुरके भणसाली, नौ वर्षतक अपणे पुत्रोंकी, चोटी नहीं रखते है, दादा गुरूके दीक्षित चेले बणा देते है, बोरी दासोत भणसाली व्याह मोजक्कोंसे कराते हैं, ब्राह्मणोंकों, हींजडोकों, ब्याहमें नहीं बुलाते है

(भणसाली सोलंखी २)

आभूगढ़का सोलंखी राजा-आभड़दे, (वह आभीर नाम कहाता है) इसके पुत्र जीता नही अनेक देवी देवता मनाये, लेकिन पुत्र नहीं जीता तब सम्बत् ११६८ में श्रीजिन बल्लभसूरिः महाराज, विचरते २ पधारे, तब राजानें, गुरूसें विनती करी, हे गुरू महाराज, मेरे जो शन्तान होता है, वो मर जाता है, कोई यत्न करणा चाहिये, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्म धारण करो तो, मृतवत्सा दोष मिट जाता है, तब राजा राणी दोनोंने कबूल करा गुरूमहाराजनें कहा, तेरे सातराणियोंके, अब सात पुत्र होंयगें, सो जीते रहैंगे. राजा राणी दोनोंने उसी दिनसें गुरूसें, मंडसाल में वासक्षेप लिया, इस लिए भणसाली गोत्र थापन करा, सातोंके सात पुत्र हुआ, इन्होंकी आभूसाख प्रसिद्ध भई, इन भणसालियोंनें, जब अंबड़नामका अणहिल पत्तनका, और गच्छका श्रावक मुल्तान सिंधदेशके नगरमें जवाहरात खरीदने गया था, उस वक्त श्रीजिन दत्तसूरिः उहां पधारे, तब राजादीवान सेठ, सामंत,

सब लोक, सन्मुख आकर, वाजे गाजे वडी धूमसें, नगर मै लाये, क्योंकि यहा गुरू महाराजनें, दीवानके लडकेकों, साप काटे मृतकतुल्यको जिलाया था, इस लिए राना प्रजा सब गुरू महाराजके, सेवक थे, उस वक्त ये महिमा वो गुजराती अम्बड देख कर, गच्छके द्वेषसें, ईर्ष्या अग्निसें दग्ध होगया, तब गुरुकों कहणे लगा, आपका चमत्कार और त्याग वैराग्य जब मैं सफल जाणूंगा, इस तरहके उच्छवसें, जो आप अणहिल पाटण मैं पधारे तो, तब गुरूनें उसके वचनसें इर्ष्या जाणके, जवाब दिया, हम पट्टण मैं इस तरहके उच्छवसें आवेंगे, उस वखत, तूं कर्मगतिसे निर्धन होकर, तेल लूंण वेचता, हमारे सन्मुख आवेगा, पीछे, कई अरसेके गुरू उहा पधारे उस समय पाटण मै, श्रीजिन दत्तसूरिःके, तीनसय श्रावग वसते थे, वडी धूम धाम उच्छवसें सामेला हुआ, अकस्मात् दरिद्र रूप, चींथड, तेललूंण वेचणे, गामों मैं, जाता था, धन सव जाता रहा, ऐसा अम्बड सामने मिला, गुरूनें, पहिचान कर कहा, हे अम्बड, मुलतान मिले थे, पहिचानते हो, लज्जित होके, गुरूके चरणो मै गिरा और मन मैं द्वेष लाया के, इन्होंके कहनेसें मै निर्धन हो गया, मतना इन्होंकी महिमा, यहां वढे, तब कपटसें जिन दत्त सूरिःका, श्रावक वणगया, गुरूका धर्म व्याख्यान सुणा करे, एक वक्त गुरू महाराजके, तेलेका पारणा था, इसनें भक्तिसें, साधुओंको, वहरनें बुलाये, तब मिश्रीका जल जहर मिला हुआ, वहिरा कर वोला, ये जल गुरू महाराजके योग्य, निर्दोष है, मैंनें पारणेके वास्ते मेरे वणाया था, साधुओंनें गुरू महाराजकों दिया, गुरूने पारणेमैं पी लिया, पीछे मालूम हुआ के, इसमै विष है उसवक्त भणसाली श्रावक आभूसालवाला, पच्चखाण करणे आया तव गुरूनें कहा मुझें जहर होगया ह इतना सुनतेही वो श्रावक अपनी ऊंठनी (साड) वहुत शीघ्र गामनी पर सवार होकर मूलाप्यासा निकला विषापहारिणी मुद्रिका लेकर पीछा आया, आचार्य महाराजके वमन पर वमन और वे होसीं, वदन काला, और हाथोंमें ऐंठण, चलणे लग रहा है, हजारों मनुष्य इकट्ठे हुए, १ पहर मै पीछा आकर, उसकों प्रासुकजल मैं, डाल कर, साधुओंने दिया, तत्काल, सर्व उपद्रव, शान्त हो गये, ये वात फैलते २

राजाके पास पहुंची, तत्काल, अम्बडकों बुलवाकर राजानें, कबूल करवा लिया, राजाने प्राण लेणे की सजा मै, चौरंगा करणेका हुक्म दिया, तब जिन दत्तसूरि·ने साधुओंकों, राजसभा मै भेजकर, ये हुक्म बन्द करवाया, राजानें देसोटा दिया, जहां २ जावै, उहां हत्यारा कहके कोई इसकों बत-लावें नहीं आखिर गुरू पर द्वेष भाव रखता २ अधम मरके व्यन्तर हुआ, अब वैरानसबंधसें, गुरूका छल देखने लगा, अकस्मात् गुरूका, ओघा आसणसें दूर हटा, तत्काल वो व्यन्तर लेके, उत्पात करता गुरूकों उन्मत्त बणा दिया, गुरू अपने होस मै होय तो, अन्य देव भी याद करते ही हाजिर होय, उस वक्त बीर और जोगणिया सब उत्तर दिशा मैं कोई व्यन्तरोंके परस्पर युद्ध होता था उहां चले गये थे, भवि-तव्यता जब आती है तब सुभूम चक्रवर्त्ती तथा भगवान बीरके अनेक देव सेवा करते भी कई मरणान्त कष्ट भोगणा पड़ा था और उसवक्त उस दुष्ट व्यन्तरनें पूरा छल पाया तभी ये कार्य किया उस समय सब खरतर संघनें बलिदान मन्त्रादिक किया, तब व्यन्तर प्रत्यक्ष हो बोला, जो उस समय जहरका प्रतिकार करनेवाला भणसाली अपने सब गोत्रको, मेरे बलि करे तो, मैं ओघा देके, श्री जिन दत्तसूरि.कों, बिज सचामें, कर देता हूं, इतना सुणते ही भणसाली गुरुभक्तिसे गोत्रका, उतारा कराया, व्यन्तरनें ओघादेके जिन दत्तसूरि:कों, छोड दिया, भणसालीके सब कुटुम्बको, मारणे निमित्त, जो व्यन्तर उद्यत होता था, तत्काल श्री जिन दत्तसूरि:नें, उस व्यन्तरकों योग विद्यासें, स्थम्भन कर दिया, सब भणसालीके बचोंपर ओघा फेरते ही, सब सावधान हो गये, ऐसा अचरज देख, राजाप्रजानें, धन्य २ भणसाली तुह्मारी गुरूभक्ति, जो तुमनें, सारा कुटुम्ब, गुरूके निमित्त, अर्पण करा तुम खर (करडा) हो, तबसे सोलंखी भणसाली खरा भणसाली कहलाये, इन्होंका परिवार बडी मारवाड़ गुजरात मैं बसता है राय भणसालीसें चंडालिया नख प्रगट हुआ, कछवा हुआ, भूरेजीकी सन्तान भणसाली, भूरा कहलाये, कई पूगलसें उठे वह भणसाली पूगलिया कहलाते हैं, मूल गच्छ इन्होंका खरतर है।

(लूंकड़ गोत्र)

खेता नामका महेश्वरी वाहेती जिसके दो पुत्र छाजू, १ भीमा २ ये दोनों नवाव छोटी रुस्तम खाके खजानेका काम करते थे, जिसमै इन्होंने क्रोड़ोंका माल, अपने महेश्वरी ब्राह्मणोंकों, बांटदिया, सम्वत् १९८८ विक्रमके किसीने चुगली खाई, नवावनें, अहमदावाद मैं, इन दोनोंकों कैद करदिया, एक दिन, पहरे दारोंकी नजर बचाकर ये दोनों भगे, सो गोड़वाड़ इलाके मै, आये, पिछाडी इन्होंको पकड़नेको, घोड़े चढे, तब तपागच्छके जतीनें इन्होंसे करार किया, हम तुम्हें छिपायलें, मगर जैनी श्रावक होना पड़ेगा, इन्होंने कबूल करा, सिपाही लोक ढूंडके चले गये इन्होंने प्राण बचणेसें, जैन धर्म अंगीकार करा, बाद, जोधपुर, फलोदी, गामोंमैं, आनेसें, लुकणेसें लूंकड़ कहलाये, मूल गच्छ तपा)

(आयरिया लूणावत गोत्र)

सिंधु देशमै एक हजार गामके भाटी राजपूत राजा अभयसिंह राज्य करता था, सम्वत् ११९८ मैं श्रीजिनदत्त सूरिः विचरते २ वनमै उतरे थे, राजा अभयसिंह सिकारकों निकला, उस समय जिनदत्त सूरिः का, एक साधू, गोचरीके वास्ते सामने आया, उसकों देखते ही, राजा बोला, मुण्ड अमंगल है, ऐसे राजाके वचन सुन एक क्षत्रीनें गोली मारी, वह गोली साधूके लगकर गुलाबका फूल होकर गिरपड़ी, राजा घोडेसें उतरकर साधूके चरणोंमैं गिरपड़ा, साधूसें माफी मांगी, तब वो साधू समतासे बोला, हे राजेन्द्र, हमारे गुरू आचार्य वनमै उतरे है, ये सर्व महिमा उनोंकी है, तूं उनोंका दर्शन कर, तब राजा वनमैं गया, गुरूकों नमस्कार करा, तब गुरूनें धर्म-लाभ कहा, और राजाकों धर्मोपदेश देते कहने लगे, हे राजा, जीवोंकों मारणा है इसका फल दुर्गति है, जिसमैं भी, क्षत्रीयोंको चाहिये कि, निरापरावी जीवोंकों कभी हणे नहीं, षट्दर्शनको, बेकारण सन्ताना ये राजपूतोंका धर्म नही, जैसा इस समय आप करके आये हो, जैन संघकी रक्षा करणेवाली माशनदेवीनें, उस मुनिः की रक्षा करी, और गोलीका फूल कर दिखलाया, ये वचन सुनते ही राजा, आश्चर्य मै रहा, इन महापुरुषकोंमें

कर आया हूं, इस वातकी खवर यहां वैठेही होगई, ये कोई महापुरुष है, गुरू बोले हे राजा साशनदेवी मुझकों कहगई, इतनेमें सींधू नदीका तोफान उठा सो पाणीका पूर ऐसा आता दीखरहा है कि मानो पृथ्वीकों जल जलाकार कर सर्व वहा कर ले जायगा राजा बोला, हे गुरू आप शीघ्र रक्षा करो मेरी सर्व प्रजा हजार ग्रामके लाखो की वस्ती की, भवितव्यता आगई, गुरूनें कहा, हे राजा तुम्हारे सव भाटी राजपूत, जो कि हजार गावोंमै वसते है, मेरे श्रावक हो जावें तो, सवोकी रक्षा हो सक्ती है, राजाने कहा हे परम गुरू, सव महाजन होकर, आपके दास रहेंगें, मगर शीघ्र २ राजा तो घवडाकर उस दरियावके वेगकों नहीं देखणेकी सामर्थसें, गिरके बोल्ता है, हे गुरू मुनिः पर मेरे राजपूतनें, वेकारण गोली मारी, माफ २ रक्ष २ करता है तव गुरू बोले, आयरक्षा, हे राजा, आय रक्षा, उठके देख राजा उठके देखता है, तो, दरियाव, पीछा जा रहा है, तव राजाने उसी समय, वडी धूमसें, वाजा गाजा और अपनी प्रजासहित गुरूकों, सहर मै पधराया, और दश हजार भाटी राजपूतोंके संग, जैनी हुआ, गुरूनें आयरिया, गोत्र थापन किया इस राजाके सतरमी पीढी लूणासाह हुआ, इसकी सन्तान लूणावत कहलाये लूणा जेसलमेर परगणे में आया, मरुधर मै काल पडा देख जगह २ सत्रु-कार, देणा शुरू करवाया, पीछे सत्रुंजयका संघ निकाला, कोलू गाममें, का-वेली खोडियार, हरखूकों, लूणावत पूजणे लगे, ये लोग वहुत वरसों तक, वहलवे गाममें वसते रहें पीछे जेसलमेर में, इस तरह आयरिया लूणावतोका वंस विस्तार हुआ, मारवाडमै फैल गया मूल गच्छ खरतर है,

(वहुफणा, वापणा,)

धारा नगरीका राजा पृथ्वीधर पमार राजपूत इसकी सोलमी पीढी मै जोवन और सच्चू इस नामके दो नर रत्न उत्पन्न हुए, किसी कारण इस, धारा नगरको छोड जालोर गढकों फतह कर, अपना राज्य कर सुखसें रहने लगे, तव आगेके जो जालोरगढके राजा थे, उन्होने कनोजके राठोडोंकी, सहायता लेकर, जालोरगढ पर चढाई की, वडा घोरयुद्ध हुआ, एक भी हारे नहीं, तव इन दो भाइयोंनें, अपने दिलजमीके आदमी मुल्कों

मै भेजे, तब गुजरात मैं, श्रीजिनवल्लभ सूरिःको, चमत्कारी पुरुष जानके, सब हकीकत कह सुनाई, तब गुरूने कहा, जावो तुम तुम्हारे राजासें पूछो, जो अगर जैनधर्म अंगीकार करके महाजन वणोतो, हम शत्रुजय करादेते हैं, तब वो, सुभट, शीघ्र गतिसें जाकर, राजाकों खबर दी, राजा दोनों भाइयोंनें, नम्रता पूर्वक, पत्र लिखा, वह पुरुष पत्र लेकर, उहा पहुंचा तब श्रीजिन वल्लभसूरि.नें, बहुफणा, पार्श्वनाथ, शत्रुजय कर मंत्र दिया, और सब विधि बतलाई, वह पुरुषनें जोवन सच्चू राजाकों विधी पूर्वक, मंत्र दिया, वह एकाग्र मनसे साढे बारह हजार जप करके, कही विधीसे, घोडे असवार होकर सब सेन्या मैं जा खडे रहै, इन्होंको आया देख शत्रुलोक मार २ करते दौडे इन्होंने सबके शस्त्र छीन लिये, सबोंको जीत लिये तब सबने हाथ जोड़ माफी मांगी, ये तारीफ सुण, जयचन्द राठौडनें इन दोनोंको, सत्कार सन्मानसें बुलाया, सब हकीकत पूछी, इन्होंने गुरू महाराजकी सिद्धी बतलाई, तब राजानें अपने सामन्त वणाकर, मुल्क पट्टा इनायत कर, अपने देश जानेकी आज्ञा दी, पीछै आते गुरूकी तलाश करते, खबर पाई के, श्रीजिन वल्लभ सूरिःजी, स्वर्गवास हो गये, और श्रीजिन दत्तसूरिःभी, बडे जागती जोत उन्होंके पट्ट प्रभाकर है, तब दोनों भाई, जिन दत्तसूरिःजीके, चरणों मैं गिरे, और बोले आज हमारो बापना, हमारी रक्षा अब-कोण करेगा, गुरूनें कहा, तुम जिनधर्म अंगीकार करो तो, गुरू स्वर्गवासी सदा तुह्मारी सहायता करेंगे, इन्होंने श्रीजिन दत्तसूरिःजीसें जिनधर्मका तत्व समझके, श्रीजिनधर्मका सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत लिया, गुरूने बहुफणापार्श्वनाथके मंत्रसें सिद्धी पाई इसवास्ते बहुफणा गोत्र उन्होंने कहा बापना इसवास्ते दूसरा इस गोत्रका नाम बापना भी प्रसिद्ध हुआ-रत्न प्रभसूरिःने जो अठारह गोत्रोंमै बाफणा गोत्र वणाया था, वह अलग है, लेकिन वह भी पमार वंशी थे, इसवास्ते वेभी चैत्यवासी अपणे गच्छकों जाणकर, श्रीजिन दत्तसूरिःजीके श्रावक हो गये जोवन सच्चूके २७ पुत्र हुए, उन मैसें सांवतजी नामके जोवन राजाके पुत्र-राजा अजय पालके

पोते, पृथ्वी राजके सेनापती हुए, इन्होंके मुसलमीनोंकी सेन्यासें, ६ वखत संग्राम हुआ ६ वखतही काबुलके बादशाहकों पकडके चूडिया, लंहगा ओढणा, पहराके, बजार मै घुमाया, ऐसे महायोद्धाकों देख, पृथ्वी राजजींनें, युद्ध मैं नाहटा इस नामसे ही, पुकारणे लगे, लोक सब नाहटा २ कहणे लगे, इस तरह फतह पुरके नबाबनें, रायजादा पदवी एक पुत्रकों दी, वो रायजादा गोत्र हुआ, इस तरह, ३७ गोत्र बहुफणोंसें निकले १ बापना २ नाहटा ३ रायजादा ४ चुल्ल घोरवाड ६ हुडिया ७ जागडा ८ सोमलिया ९ वाहतिया १० बसाह ११ मीठडिया १२ वाघमार १३ आभू १४ धत्तूरिया १५ मगदिया १६ पटवा १७ नानगाणी १८ कोटा १९ खोखा २० सोनी २१ मरोटिया २२ समूलिया २३ भांघल २४ दसोरा २५ भूआता २६ कल्रोही २७ साहला २८ तोसालिया २९ मूंगरवाल ३० मकल वाल ३१ सभूआता ३२ कोटेचा ३३ नाहउसरा ३४ महाजनिया ३५ डूगरेचा ३६ कुवेरिया ३७ कूचेरिया [1] ये अनेक कारणोंसें शाखा फटी है, मूल गच्छ सबोंका खरतर है, गुरूका वरदान था, तुम धन परवारसें बधोगे ।

(रतन पुरा कटारिया जलवाणी)

विक्रम सम्वत् १०२१ सोनगरा चौहाण, राजपूत रतन सिंहनें रतनपुर नगर बसाया, जिसके पाचमी गद्दी सं. ११८१ मै अक्षतीजकों, धन पाल राजा तखत बैठा, एक दिन शिकार करने राजा जंगल मै गया, घोडा उल्टा सिखलाया हुआ था, थांमणेंकों ज्यों ज्यों राजाने लगाम खेंची, त्यों त्यों घोडा चोफाले होता रहा, तब राजानें लगाम ढीली करी, तब घोडा ठहर गाया शिकार हाथ नहीं लगणेंसें पीछा फिरा, रास्तेमें एक तलाव नजर आया, उहां दरखतकी छांहमैं घोडेकों बाधके आप सो रहा, इतने मैं एक सर्प निकलके,

---

१ पटवा बादरमल २ जोरावरमल ३ मगनीराम ४ वगैरह बड़े दानेश्वरी श्रीमन्त ५ भाई भये सत्रुंजयका संघ निकाला १८ लाख रुपया खरचणेकी सात क्षैत्रोंमें क्रोडों रुपये इन्होंने लगाये इन्होंकी सन्तान उदयपुर जेसलमेर कोटा रतलाम बगैरह शहरों में बसतें हैं हर्ष सूरि का सूरतमैं महेंद्र सूरि का मडोवर मैं जिन्होंने पाट महोत्सव करा इन्होंकी उदारता लिखणेकी कलममैं ताकत नहीं इस जमानेमैं ऐसे दाता दुर्लभ होगये ऐसे २ काम करे।

राजाकों काट खाया, राजा थोडी देरसें बेहोश होगया, आयुके प्रबल योगसें, श्रीजिन दत्त सूरिःआचार्य उस रस्तेसें विहार करते चले आए राज लक्षण अङ्गमैं देख, तत्काल ओघेसें पास करा, राजा निर्विष हो कर तत्काल बैठा हुआ, आगे गुरूकों देख, चरणोंमै गिर पड़ा, गुरूनें धर्म लाभ दिया, राजानें बड़ी धूमसें गुरूको अपने नगर मै, पधराये, राजा, अपने प्राण देणेके बदलेमें, गुरूकों राज्यमेंट करणे लगा, तब गुरूनें कहा, हे राजेन्द्र हमनें यावज्जीव धन कंचनका त्याग किया है, हम राज्यका क्या करें राजानें कहा आपका बदला कैसै उतरे, गुरूनें कहा, तुम जैनधर्म ग्रहण करके, हमारे श्रावक वणो, हमारा बदला उतर जायगा, तब गुरूकों चौमासे रखा, और धर्मका स्वरूप समझकर, बड़े हर्षसे सम्यक्त युक्त वारह व्रत ग्रहण करे, रतनसिंहका रतनपुरा गोत्र गुरूनें थापन करा, इन्होंके वंश मै झाझणसिंह बडा प्रतापी नर उत्पन्न हुआ, जिसकों दिल्लीके बादशाहनें अपना मन्त्री बनाया, झाझणसिंहनें प्रजाको बहुत सुख दिया, इसवास्ते सब हिन्द मै उसके नेक नामीका सितारा चमकने लगा, एक समय बादशाहके हुक्मसें सत्रुंजयका सघ निकाला, उहा पट्टणीसाह अबीर चन्दनें आरती उतारणेकी, बोली करी, झाझण सिंहने बाणवें लाख रुपये मालव देशके इजारे की आमदानी देकर प्रभूकी आरती उतारी, इन्होंके दूसरे भाई पेथडसाहनें, सत्रुंजय गिरनार पर ध्वजा चढ़ाई, रस्ते मैं धर्म पुन्य करते पीछा आके, सुल्तानसें, सलाम करी, एक दिन किसी चुगलनें, बादशाहसें चुगली कर दी, करोडों रुपये सरकारी खजानेके पुन्यार्थ मैं लगाने साबित कर दिये, बादशाहने गुस्सेमैं आकर, झाझण सिंहको पकड़नेको योद्धोकों भेजे, तब झाझण कटारी लेकर खड़ा हो गया, योद्धे भगे, बादशाहसें अरज करी तब बादशाह आप ही आकर बोले, अरे कटारिया, सच कह कि, सरकारी क्रोडों रुपये तेंने खाये, झाझण बोला, एक पैसा भी बेहकका मुझे खाणा हराम है, हां अलबत, हजूरके मालसें, खुदाकी बदगी और खैरायत; जरूर करी गई, अब जिसका पुन्य है, धर्म दलाली, मुझकों मिलेगी, हजूरका नाम जुग जाहिर था;

उसकों गुलामने, खुदातक पहुंचा दिया, ये बात सुण कर बादशाह खुश हो गया, और सातों गुने माफ कर दिये, दरबार मै, कटारीं रखणेका हुक्म दिया, और फरमाया हे नेक नाम, जो कुछ नाम, और जो कुछ तेरेसें सखावत, करी जाय सो कर, इस तरहसें, कटारिया साख भई, बाद कई पीढ़ी इन्हों की शन्तान, मांडवगढ़ मै जावसी, किसी कशूर वश मुसल्मानोंने कटारियोंके सब गोत्रवालोंको, मांडवगढ़ मैं कैद किया, २२ हजार रुपये दण्ड किया, तब खरतर भट्टारक गच्छके जती जगरूपजीनें, मुसल्मानोंको चमत्कार दिखलाकर, दण्ड नहीं लगणे दिया, एक रतनपुरा बलाई (ढेढ) लोकोंको रुपये देता लेता वह बलाई कहलाये, इस तरहसें रतनपुरा मै २४ जात चौहाणोंकी महाजन भये, हाड़ा १ देवड़ा २ सोनगरा ३ मालडीचा ४ कुदणेचा ५ बेडा ६ वालोत ७ चीवा, ८ कांच ९ खीची १० विहल ११ सेंभटा १२ मेलवाल १३ वालीचा १४ माल्हण १५ पावेचा १६ कांवलेचा १७ रापडिया १८ दुदणेच १९ नाहरा २० ईवरा २१ राकसिया २२ वाघेटा २३ साचोरा २४ इन २४ जातमेंसे १० साखमहाजन प्रसिद्ध हुए रतनपुरोंसे, रतनपुरा १ कटारिया २ कोटेचा ३ नराणगोता ४ सापद्राह ५ भलाणिया ६ सामरिया ७ रामसेन्या ८ बलाई ९ बोहरा १० इन सबोंका मूल गच्छ खरतर है।

डागा मालू भामू पारख छोरिया।

रतनपुरके राजाके दिवान माल्हदेजी राठी तथा भामूजी खजानची जातके राटी तथा राठीं बल्लासाह ये राजाकी फोजके मोदी थे जिस समय राजा रतनसिंहकों जिन दत्तसूरिःजीने साप काटे हुएकों बचाया, तब चमत्कारी महापुरुष जाण माल्हदेजीके बडे पुत्रकों, अर्द्धांगकी बिमारी बहुत सख्त होगई थी, सो किसी विधसें इलाज नहीं हुआ, तब श्रीजिनदत्त सूरिजीसें कही, महाराज बोले रतनपुरके जात राठी महेश्वरी जैनधर्म अंगीकार करें तो, में तेरे पुत्रकों, बचानेका उद्योग करूं, सब राठी रतनपुराके, बासिन्दोंने ये बात कबूल की, कारण एक तो माल्हदेजी दिवान सबके भरण पोषण करनेवाले, व दुसरे ऐसे चमत्कारोंकी

महिमा, दुसरा ऐसा सन्सारमें कोण होगा, जिसमें आपदा नहीं आती है, तब अपने कुटुम्बके रक्षाकारण जाणके, सब राठी मिलके, पालखीमै डालके पुत्रकों लाये, सबोंने कहा, आपकी शन्तानके हमारी शन्तान सदाके वास्ते, आभारी रहेगें, किसी तरहसे ये कुलदीपक, रूपदे, अच्छा हो जाय, गुरूने योगणियोंको बुलाया, और कहा, इसको तुम सावधान करो, जोगणियोंने कहा हमारी आज्ञा कारणिया, वींझेविणजारेकी सात लडकियां अग्निमै जलकर मरी, इसका कारण रूपदे है वीझेविणजारेको महसूल की, चोरीमैं, रूपदेने पकडके, कैद किया, और सब माल, असबाब, जब्त कर लिया, तब सातों इसकी कंवारी कन्यायें, क्रोधसें, अग्निमै जलकर, भस्म होगई, सो शुभ परणामके वश, चाण्डाल जातिकी, सातोंई कन्या, व्यन्तर हुई है, हम उन्होंको, अभी लाती है; ऐसा कह उन्होंको लाई तब उन्होंने कहा, हे परम गुरू, हमारा पिता कैदमै है, उसको छोड़ दे और माल पीछा दे दे तो, आपकी कृपासें, ये अच्छा हो जायगा, गुरूने, वीझेंकी बेड़ी तोडाई, माल सब दिलाया, तत्काल उसका अङ्ग, अच्छा होगया, तब जोगणिया, और वींझ बाइयोंने कहा, अरे राठीयों जबतक तुम जिन दत्तसूरिःके आज्ञाकारी बणे रहोगे, और खरतर गच्छका उपकार नहीं भूलोगे, उहातक अर्द्धांगकी बीमारी तुम्हारे कुलमैं नहीं होगी, ऐसा कह, गुरूकी आज्ञा ले, अलोप भई, ये चमत्कार देख, सब रतनपुरके महेश्वरियोंने, जिनदत्तसूरिःजीका, वासक्षेप ले जिनधर्मी हुए, डागा, गोत्रमहेश्वरीयोंसे मूंधडामहेश्वरियोंसे, मूंधडाश्रावक गोत्र स्थापन किया, भामूजीका पारख, अबींध कांन नहीं विधावे, ये राठी महेश्वरियोंसे गोत्र थापा, मोरा गोत्र, राठियोंसें, छोरिया, गोत्र राठियोंसें, सेलोत राठी महेश्वरियोंसे, रीहड राठी महेश्वरी, इस तरह ९२ गोत्र रतनपुरमें, महेश्वरीयोंसें, जिन दत्तसूरिजीने स्थापन करा, अनेक जातिनाम महेश्वरियोंमैंथावोही रक्खा।

(रांका सेठी सेठिया कालाबोक बांका गोरादक०)

वल्लभी (वला) सोरठ देशमैं, गोड़ राजपूत, काकू और पाताक, नामके दो भाई, बहुत द्रव्यसें, तग रहते थे, नगरके दरवजेके बाहर तेललूंण बेच-

नेका व्यापार करने लगे, पेट गुजरान भी मुशकिलसें हुआ करे, एक दिन नेमचन्द्रसूरिः आचार्य, वल्लभी नगरमैं पधारे, उससमय ये दोनों भाई, नित्य व्याख्यान सुननेकों, जाने लगे, गुरूसें पूछणे लगे, हे स्वामी, हमभी कभी सुखी होंगे, गुरूनें कहा, जो तुम जिनधर्म सम्यक्त्व गृहण करो तो, सत्र वताता हूं उन्होंनें ग्रहण करा, गुरूने कहा, तुम्हारा भाग्य वल्लभी मै राज्यसे खुलेगा, बहुत धनवान हो जाओगे, वृद्ध अवस्थामैं, तुमकों राजा धन छीनके निकाल देगा, आखिर यवनोंकी फौज लाकर तुम वल्लभी नगरीका विद्धंश कराओगे, और तुम्हारी शन्तान पारकर देशमै पांचमी पीढी, विस्तार पावेगी, ये दोनों भाई नेमचन्द्रसूरिः सें, सम्यक्त्वी भये, सगपण राजपूतोंमैं था, आखिर ये राजाके मानवंत हुए, वल्लभीका नाशभी इन्होंसे ही हुआ, तद्पीछै ये वल्लभी छोड़ पारकर देश, पाली नग्रपास गांम मैं आ वसे, फिर इन्होंकी शन्तान, खेती कर्म करणे लगी आखरको पांचमी पीढी मैं इन्होंके, रांका, और बांका नामके दो लडके, उत्पन्न हुए वे खेती करते थे, ईधर श्री नेमिचन्द्र सूरिःके छठे पाटधारी, श्री जिनवल्लभ सूरिः, विहार करते, उस रस्ते चले आये, इन दोनोंने, वन्दना कर, आहार पाणी वहराया, गुरू बोले तुमकों एक महिनेके अन्दर, सापका डर होगा, इस लिए तुम महापाप कारी ये कृपाण कर्मका, त्याग करो, ऐसा कह गुरू विहार करगये, ये दोनों, इस बातकी परिक्षा करणेको, करी भई खेतकी रक्षा करते रहे एक दिन सांझको, खेतसे पीछे आते थे, रस्तेमें, सांप पडा था, पूंछ पर पांवटिका, सापने फुंकार किया, तब ये भगे, उस सांपने इन्होका पीछा किया, तब ये दोनों एक तलावमैं, कूदपडे, तिरके पार निकले, दिलमै डरते २ एक चामुण्डा देवीके मन्दिरमें घुसकर, दरवज्जा बन्धकर सोगये, प्रभात समय, सांपको देखणे, मन्दिरकी छतपर चढे, देखते है साप मन्दिरके आसपास घूम रहा है, तब इन्होंनें, मरणान्त कष्ट जाण, गुरूका वचन याद करा, तब चामुण्डा देवीकी स्तुति करणे लगे, तब देवी मूर्तिके मुख बोली, अरे मूर्खों, जो तुम उसी दिन खेती करणेका त्याग करदेते तो, तुमको, ये डर नहीं होता, गुरूका वचन नहीं माना, जिसकी ये, तुम्हें सजा मिली है, ये श्रीजिनवल्लभसूरिः युग,

प्रधाननें मुझकों सम्यक्त्व ग्रहण कराया, और मदिरा मांसकी वलि छुडाई, तुम उनोंके, श्रावक होजाओ, तुम सब तरह सुखी होजाओगे, आज पीछै, व्यापार करणा, गुरू महाराजका श्रावक हुए वाद, तुमकों स्वर्ण सिद्धि मिलेगी, जाओ अब सांप नहीं है, ये दोनों, उहासे निकल कर, घर पर आए, उन्होंने खेतीका अनाज बेच दुकान करी, व्यापार चलणे लगा, इधर श्रीजिनवल्लभसूरिः परलोक पहुंचे, उन्होंके पाट श्रीजिन दत्त सूरिःविराजे, स. ११८९ इधर विहार करते पधारे, ये दोनों भाई गुरू महाराजके शिष्य जांण, सेवा करते व्याख्यान सुणकर सम्यक्त्व युक्त, वारह व्रत गृहण करा, गुरूने, आशीर्वाद दिया, तुम्हारा कुल बढेगा, इन्होंने कहा, हम खरतर गच्छसें, कभी वे मुख नहीं होंगे, गुरूने विहार करा उन्होंकीं पैठ प्रतीति पारानगर मैं खूब बढ़ी, इधर १ जोगी रस कूपी भरकर, पाली आया, इन्होंनें भक्ति करी, तब बोला, वच्चा हम हिंगलाज जाते है, इस तूंबीको तुम्हारे झूंपड़े मैं, लटका जाता हूं, आऊंगा, तब ले लूंगा, लटका गया एक दिन तवा, तपाभया, उस पर, वो रस की बूंदगिरी, तवा सोनेका हो गया, बस इन्होंने, उसकों उतार, असख्य द्रव्य, वणा लिया, वडे दानेश्वरी, सात क्षेत्रों मै, वहुत द्रव्य लगाया, पल्लीवाल ब्राह्मणोंकों, गुमास्ते रखकर, जगह २, व्यापार कराया, इस करके पल्लीवाल ब्राह्मण, सब, धनपती हो गये, एक दिन सिद्धपुरपट्टणके राजाकों, लडाई मै, ९६ लाख सोनइये चाहिये थे, किसी साहूकारनें नहीं दिया, तब सिद्ध राजनें, इनकों बुलाया, इनोंनें सब दिया, तब सिद्ध राजनें श्रेष्ठ पदका स्वर्ण पट्ट मस्तक पर, रखने की आज्ञा दी, जिस मैं लिखा हुआ कुवेर नगर सेठ रांका, और बांकेकों कहा, आवो छोटा सेठिया, उस दिनसें, रांकोंसे सेठि, और बाकेसें सेठिया, इन्होंकी सन्तान काला, गोरा, दक, बोक, रांका, बांका, एवं ८ शाखा प्रगट हुई, रत्नप्रभुसूरिःनें, जो श्रेष्ठि गोत्र, थापन किया, सो वैद वजते हैं, इन सबोंका मूल गच्छ खरतर है, ।

(राखेचा, पूगलिया, गोत्र)

जेसलमेरका राजा भाटी जेतसी उसका पुत्र केल्हणदे, उसके गलित

कुष्ठ की बिमारी, उत्पन्न हुई, उसकी वय नौ वर्षकी थी, राजानें बहुत देवी देव मनाये, मगर आराम नहीं हुआ, तब राजा अपणे कुलदेवीको वलि वाकल दे, स्तुति करी, तब किसीके अग मैं बोली, हे राजा, जो तूं पुत्र अच्छा कराया चाहै तो, सिन्धु देश मै, परोपकारी, युग प्रधान श्रीजिन दत्तसूरिःके चरण शरण जा. राजानें सिन्धु देश मै जाकर, गुरूजीसें सब अरज करी, और बोला, आप कृपा कर, लोद्रव पट्टण पधारो, सब नगर आपके दर्शनकी, राखेचाह, गुरूनें कहा, जो तुम, जैनधर्म धारकर खरतर गच्छके, श्रावक वणो तो, मै चलता हूं, जेतसी रावल बोला अहो भाग्य आपकी सेवा, और अहिंसा रूप जिन धर्म की, प्राप्ति, पुत्र मेरा निरोग होय, इससें मै जांणता हूं, मेरे पूर्व पुन्य उदय हुए, तब गुरू, लोद्रव पुर पधारे, तीन दिन दृष्टि पास किया सोवन वर्ण काया हो गई, अब राव जेत-सीनें सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा मकड़ पुत्रकों राज्य तिलक दिया, गुरूका—त्याग वैराग्यका, हमेशाका उपदेश सुण, केल्हण कुमार, दीक्षा लेणेको तैयार हुआ तब गुरूनें समझाया, हे वच्छ, तूं बालक नादान है, संजम खाडेकी धार हैं, पिता तेरा वृद्ध है, तूं अरिहंत देवकी पूजा द्रव्य भावसें कर, महा व्रती, अणु व्रती तथा सम्यक्तियोंकी मन शुद्ध भावसें द्रव्यादिक अनेक प्रकारसें भक्ति कर, बारह व्रत पाल, श्रावक धर्म पालणे वालाभी, एक भवसें, मुक्ति जाता है, सात क्षेत्रों मै, द्रव्य लगा, केल्हण कुमार बोला, मेरे दीक्षा की करी हुई प्रतिज्ञा भग होती है, तब गुरू बोले, तेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करणे की सदा मदके लिए, तजवीज, बताता हूं, तूं मेरे सन्मुख मस्तक मुण्डन करा, और मै वास देता हूं, गुरूने सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत उच्च-राया, और कहा, तेरे कुलका बालक नव वर्षका, जब होय, तब इसी तरह पट मुण्डन करा, मेरे शन्तानोंका वास चूर्ण लेगा तो, तुह्मारे कुलकी वृद्धि होगी लक्ष्मी राज्य लीला करते रहोगे, दर्शन की राखेचाह, दीक्षाकी राखेचाह, इस वास्ते गुरूनें राखे चाह गोत्रका नाम, थापन करा, सं. ११८७ मूल गच्छ खरतर वृद्ध थाल आरथाल खरतर भट्टारक गच्छका राखेचाह सदा करते हैं पोत तथा व्याह मैं, पूगलसे उठके दूसरी जगह वसे सो पूगलिया राखेचाह वजते हैं।

(लूणिया गोत्र)

सिन्धु देश मुल्तान नगरमैं मूंधड़ा महेश्वरी धींगडमल (हाथी साह) राजाका दीवान था, राज्यका वन्दोवस्त न्यायसे करता था, इससें प्रजा हाथी साहको, प्राणकी तरह मानने लगी, इसका पुत्र लूणा, वडा चतुर, राजाका मान्य, योवन अवस्थामै, शादी करी, एक दिन लूणा स्त्रीके संग, पलग पर सोता था, उस वक्त, सांपने उसको काट खाया, और नींदसें चमक उठा, ये वातकी खवर होतेही मत्रवादी, वहुत जहर उतारणे वाले, वैद्योंकी, चिकित्सा करवाई, मगर लूणा मृतक वत् होगया, उसवक्त जिनदत्तसूरिःमुल-तानमें थे, महिमा सुण, हाथीसाह रोता हुआ, चरणोंमे जा गिरा, सव हकी-कत कही, गुरूनें कहा, जो तुम जैनधर्मी,-हमारे श्रावक हो जाओ तो, पुत्र सचेतन होता है, हाथीसाहने सह कुटुम्व, कवूल करा, गुरू चौतरफ पडदे लगावाकर, पिलगपर ज्यों स्त्री भरतार सोते थे, त्यों सुलाकर, गुरूनें अलक्ष आकर्षण करा, सो सांप आया, और मनुष्य भाषा वोलणे लगा, हे गुरू, मेरे इसके पूर्वजन्मका वैर है, इसने जन्मेजय राजाके यज्ञमें, ब्राह्मणपणेमै वेदका मंत्र पढके, मेरेको, होम डाला, यज्ञस्तंभके नींचे शातिनाथ तीर्थं करकी मूर्ति, इन ब्राह्मणोंने, शान्तिके निमित्त जव गाडी, याने, कोई दया-धर्मी देवता, यज्ञमैं विगाडन कर देवे, उस मूर्तिको, मैने गाडते देखी, उस प्रतिमाके देखणेसें, मैने विचारा, ये मुद्रा मेंने पहिले देखी थी, इस करके मुझको मूर्छा आगई, तव जाती स्मरण ज्ञान मुझकों उत्पन्न हुआ, मैंने पूर्व-जन्म देखा, पूर्वभवमेंमैं जैनधर्मका साधू था, तपस्याके पारणे, भिक्षाकों गया, वालकोंने, मुझे चिडाया मे क्रोध करके मरा, सो साप हुआ, मैंने मनसे सम्यक्त्वयुक्त श्रावक व्रत ग्रहण कर लिया, उस वक्त ब्राह्मणोंके, कहणेसे राजा परिक्षितकीं सन्तान, राजा जन्मेजयने, सापोंकों पकडवाकर, मंगाया, और ब्राह्मणोंने वेदका मंत्र पढकर, मुझे हवन करा, उस मरतेवक्त मुझे क्रोध हुआ उहांसें, मरके, मैं नाग कुमार देवता हुआ, ये शिवभूति ब्राह्मण गलत कोढसें मरके, ८४ हजारके आउखेसें, नारकीया हुआ, उहांसे निकल, वानर हुआ, उहां वनमें, जैनसाधु देशना देते थे, उन्होंने कहा

यज्ञमै पशुहवन करणा इसका फल-हिंसा, हिंसाका फल नरक ऐसा वानर सुणकर, जाती स्मरण ज्ञान पाया, उहां सरल भावसें मरकर, हाथीसाहका पुत्र हुआ, मैंने इसकों ज्ञानसें देखा, तब पूर्व वैरसें मारणेकों, सापके रूपसें, डंक मारा, तब गुरू बोले, हे देव, किये कर्म छूटते नहीं, तेरा वदला तेंनें लेलिया, अब ये हमारा श्रावक है इसका जहर उतार दे, तत्काल नागदेवने, डंकका जहर उतार डाला, और सब लोकोंसें, देवता कहणे लगा, अहो लोकों श्रीजिनदत्तसूरिः तीर्थंकरकी आज्ञा मुजब, सामाचारीके उपदेशक, पंचमहाव्रत पालक एका भवावतारी तारण तरण गणधर है लूणासावधान हो, सम्यक्त्वयुक्त व्रत पच्चखाण करा, गुरूने लूणिया गोत्र थापन करा, स. ११९२ मूलगच्छ खरतर],

[डोसी सोनीगरा गोत्र]

- सम्वत् ११९७ में में विक्रमपुर जो कि भाटीपेमैं है उहाके ठाकुर सोनीगरा राजपूत, हीरसेन, इन्होंने क्षेत्रपालकी मानता करी, मेरे पुत्र होगा तो तुम्हारे निमित्त सवालक्ष मोहरें लगाऊगा, देव वश, राणीके पुत्र हुआ, खेतलनाम दिया, अनुक्रमसें सात आठ वर्षका वह बालक हुआ, ठाकुर जात देणेकी चिन्तामें, मगर सवालक्ष मोहरोकी जोड़ वणे नहीं, तब क्षेत्रपाल उपद्रव करने लगा कहीं अंगार लगा देवे, कभी राजा- राणीका शिर आपसमें लडा देवे, कभी गहणा छिपा देवे, कभी राणीकों छिपा देवे, कभी राजाके सधि २ में दर्द कर देवे, खेतल कुमार उन्मत्त हो गया, आठ २ दिन भोजन नहीं करे, विगर पढ़ा शास्त्र पंडितोंसे सवाद करे, हजार मनुष्योंसे नहीं उठणेका पदार्थ उठा लेवे इस वक्त श्री जिनदत्त सूरिः विक्रमपुर पधारे, ठाकुरनें महिमा सुण बड़े महोत्सवसें गुरूको नग्रमें पधराये, खेतलकुमार गुरूकों देखते ही बोल उठा हे परमगुरू, इस ठाकुरनें, मेरी बोलवा करके, पजा नहीं करी, इससें ये दोषी है, गुरूने कहा हे ठाकुर, जो तुम सहकुटुम्ब, जैन धर्म धारण करो, तो में संकट काट देता हूं, क्षेतल कुमार पृथ्वीसें कूद २ कर ५० हाथ ऊंचे छत्तपर जा बैठता है, फेर कूदकर डमरू त्रिसूल लेकर घुघरू पांवमें बांध, गुरूके सन्मुख नाचता है, ये चमत्कार देख बहुत लोक

जमाहुए, ठाकुरनें श्रावक होना मंजूर करा, तत्काल क्षेतल कुमार सावधान होगया, क्षेत्रपाल निजरूपसें, गुरुके चरण पकड बोला, हे गुरू हे सर्व देवताओंके स्वामी, आपकी आज्ञा लेपेसो, इस भव परभव दुखी हो, आपके जब श्रावक यह लोक हुए तो, मेरी क्या, बल्के चारों निकाय के देवताओंकी मगदूर नहीं, सो इन्होंकी बुराई कर सके, ठाकुर सह कुटुम्ब जैनी महाजन हुआ, गुरूने गोत्रका नाम दोसी रखा, लोक डोसी कहने लगे, बाकी राजपूत श्रावक हुए, उन्होंकी शाखा सोनीगरा, बजणे लगी, इन्होंके प्रधान सोहन सिहजीके पुत्र, पीथलजी श्रावक भए उन्होसे पीथलिया गोत्र प्रसिद्ध हुआ, पीथलजी पमारथे, मूल गच्छ खरतर।

[सांखलासूराणा गोत्र सियाल सांड सालेचा पूंनम्यां]

विक्रम स. ११७९ में, सिद्ध राज जयसिंह, सिद्धपुर पाटणका राजा, उसके पल्गाका पहरेदार, जगदेव जिसको राजा, एक वर्षका एक लक्ष सोनड्या देता था, जगदेवजीके सात पुत्र थे, सूरजी, सखजी, सावलजी, सामदेव, रामदेव, छारड इस तरह सुखसे पाटणमै रहते थे, जगदेवजी बडे शूरवीर थे अर्द्ध रात्री, काली चवदाशको, पहरा दे रहे थे, उस वक्त, बनमें, बडी धूम्र किलकिलाट अटहहस्ती, सुणके, सिद्धराजने जगदेवजीकों कहा, ये शब्द कहां हो रहा है निश्चय करके आवो, जगदेवजी, जो हुक्म कहकर, उहासे निकले, आगे देखते है तो, कालिका वगैरह, बडे २ वेत्ताल, व ६४ जोगणिया, इकट्ठे होकर, नाचते और गाते हैं, जगदेवनें पूछा, अरे तुम कौन हो, और क्यों फैलबाजी करते हो, जोगणिया बोली, सिद्धराजनें हमारा बलिदान बकरे भैसें देणेका बन्द कर दिया, सो अब एक महिनेमै मरेगा, जगदेवने पूछा कैसे मरेगा, जोगणिया बोली, इस देशमै, महम्मद गजनवीकी सेन्या आवेगी उसमें लाखों मनुष्य मरेंगे, हमारे खप्पर रक्तसें, भरेंगे, उस युद्धमै, हम जोगणियां, तथा क्षेत्रपाल वीर मिलके दुश्मनोंके हाथ, सिद्धराजको मरवाकर, बलिदान लेंगे, तब जगदेव बोला, किस प्रकार सिद्धराज बचे, जोगणिया बोली, ३२ लक्षणा पुरुषका जो, अगर बलिदान देतो, शत्रुओंकी फौज मै, हम सहायता नहीं देंगे, तब जगदेव बोला, मेरा शिर

काटके, तुम्हारे सामने धरता हूं, तुम प्रसन्न होकर, सिद्धराजकी लम्बी ऊमर होय, ऐसी करो, तुम उसपर सुनिजर रक्खो, जोगणिया उसका सत्व साहस देखणेको बोली, तू बत्तीश लक्षणवन्त, शूरवीर है, तेरे मस्तकके बलिदानसें हम, सब सन्तुष्ट हो जावेंगें, तब जगदेव अपणे खड्गसे अपना मस्तक काटने उद्यमवंत हुआ, ऐसा सत्व देख जोगणिये जय २ शब्द कर हाथ पकड लिया और कहा हे सत्वशिरोमणि तू जयवंतरह, अभी सिद्धराज जयसिंह बहुत वर्ष जीवेगा, म्लेच्छ सेन्या इहां आवेगी, उनको जयकारणी शत्रुदल भजणी अमोघ विद्या देकर विदा करा, जगदेव सिद्धराजकों सर्व वृत्तान्त कहा, अपना मस्तक काटने आदिका मुख्य वृत्तान्त नहीं कहा, सिद्धराज प्रशन्न हो जगदेवकी महान् प्रशसा करी राजा युद्धकी सर्व सामग्री तइयार कराई, मलधारहेम सूरिः (मलधार विरुद अभयदेव सूरिःकों, मिला था) -आत्मारामजी सवेगी पाल्हणपुर प्रश्नोत्तरमें लिखा है, उस नगरमें आये, जगदेवजी ७ पुत्रयुक्त उनके शमीप जाते आते थे, राजाकी शेन्यामें जगदेवजीके पुत्र सूरजी शेन्यापति थे, एक महीने पीछे काबलके यवनोंका लस्कर आया, युद्ध होने लगा, सूरजी हेमसूरि.से बीनती करी हे गुरु, युद्धमैं जय हो ऐसी कृपा करो, गुरुनें कहा सावद्यकृत्यमै सहमति देना हमारा आचार नहीं, यदि तुम श्रावक हो जाओ तो प्रयत्न कर देता हूं, तब ७ पुत्रोंनें मंतव्य करा, गुरुनें विजयपताका यत्र दिया, सूरजी भुजापर बाघ सेन्यामें गये, तत्काल यवन दल भाग गया, सिद्धराजने कहा साबास सूरराणा, वहसूराणा कहलाये, संखजीके साखले कहलाये, (शांखले राजपूत ओसवाल हुए, वे भी ज्ञातिनामसे शाखले कहाते है) सावलजी युद्धमें भग गये, उनके सर्व शतानवाले सियाल वजने लगे, जो सावलजीके पुत्र बडे मजबूत बदनमें हृष्ट पुष्ट थे, सिद्धराज जयसिंह उसको सड मुसंड कहते थे, एक दिन एक चारणनें सभामें हसी करी, कि बाप तो सियाल, ओर बेटा साड कैसें, । तब सिद्धराजनें कहा, " हे सांड हमारा सूरजका साड है, उससे तू लड़े तो, दुनियामें, सच्चा सांड कहलवै, । वह उसी वक्त खड़ा हुआ, जब राजाके मस्त साडकों, छोडा, उसी वख्त पकड सींग धक्का लगा कर दया चित्तमें

रखता धीरेसे, जमीन पर सुला दिया, । राजा प्रजा जय २ शब्द करकै कहने लगे कि, सच्चा साड तूं है; मेरी दी हुई पदवीको तैंने सफल कर बताई; उस दिनसे साड गोत्र हुआ । दूसरा बेटा, सावलजीका सुक्खा हुआ, जिसके सुखाणी कहलाये, तीसरा साल्दे, जिसके सालेचा कहलाये । चौथा पूनमदेव, जिसका पुनमिया, कहलाया, । इस तरह, जगदेवजीके तीनों बेटोंसे इतनी शाखा फैल कर, महाजन हुए । उस जमानेमें तीन आचार्य हेमसूरी नामके विद्यमान थे,— मलधार हेमसूरिः पूर्ण तल्लगच्छी हेमचन्द्रसूरिः । तीसरे हेमसूरीके गच्छका पता नहीं है, मगर आत्मारामजी संवेगी लिखते है राजा कुमार पालकों, तीनोंने प्रतिबोध दिया था, तीनोंको राजा धर्मदाता गुरू मानता था ।, मलधार खरतरकी शाखा है, बाकी पूर्ण तल्ल गच्छ विच्छेद गया ।, इन सुराणोंकी माता सुसाणी ओर लेसल, कहाती है; । पीछे अन्यमतका सवत् विक्रम सोलहसौ मै इस वंशमें प्रचार हुआ । मूल गुरु मलधार गछ. इस वस्त सुराणे देवी मोर खाणेकी पूजते हैं ।

आघरिया गोत्र ।

सिंध देशमैं अग्रोहा नगर का राजा गोपाल सिंह भाटी राजपूत उसका परिवार पनरेसें घरका विक्रम सं. १२१४ मैं मुसल्मानोंकी फौजनें लड़ाई मैं राजाको कैद करलिया उस समय,- खोडिया क्षेत्रपाल सेवित चरणकमल, श्री मणिधारी जिनचन्द्र सूरिःगुरू, अग्रोहा नगर पधारे, उस समय उनका प्रधान घुरसामल, अग्रवाल प्रछन्नपणे मै, आकर रातको गुरूसें विनती करी, हे गुरू, जो हमारा राजा कैदसें छूट जाय तो, आपका उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे, गुरूनें कहा, जो राजा हमारा श्रावक बणे तो, हम उपाय कर सक्के है, घुरसामलनें, कबूल किया, गुरूनें कहा, तुम आजही देखो, क्या स्वरूप बणता है, अकस्मात् पनरेसें राजपूतोंकी बेड़ी, टूटपडी मुसल्मीनोंको खबर हुई, फिर डाली फेर टूट गई, ऐसे सात बेर जब हुआ, तब मुसल्मीन समसेरखा, आश्चर्य मै: आकर, पूछने लगा, ये गोसलसिंह क्या चमत्कार है, गोसल भाटी बोला, मैं नहीं जाणता, ये क्या बात है, समसेरखां, मनमें सोचने लगा, इस राजाके पीछे, किसी

महा पुरुषकी, सहायता है, राजाकों सपरिवारसें, छोड़कर, बोला, हांसी हिंसार तुम खरचके वास्ते लेलो, और मेरे उमराव बनो, गोसलने कहा, देखा जायगा, सहरमें आकर दीवान के घर आया, तब दीवाननें सब बात कही, और गुरूके पास ले गया, और धर्म सुणने लगा, गुरूसें राजा कहने लगा, किसी तरह पीछा राज्य मिल जाय, गुरूनें कहा जैनधर्म धारण करो, राजा सपरिवार जैनी हुआ, रातकों समसेर खाको, क्षेत्रपालने, दरसाव दिया, यातो तुम राज्यपीछा गोसलकों दे दो, नहीं तो तुम्हारे हक्क मे, अच्छा नहीं होगा, सुवहकों समसेरखानि, मारे डरके, राजाकों पीछा राज्य दिया, और आप उहांसे अपनी फौज ले चल धरा, गुरूने, आघरह्या गोत्रका नाम धरा, उसको लोक आघरिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर।

[दूगड़ सेखाणी कोठारी गोत्र, तथा सुघड़]

पाली नगर में खीची राजपूत, राजाका दीवान था, किसी दुश्मननें राजासे चुगली खाई, तब राजाके डरसें भगा, सो जंगलगढ़मै जानेसे उसकी इग्यारमी पीढ़ीमें, सूरदेव बड़ा शूर बीर पैदा हुआ, उसके दो पुत्र दूगड और सुघड, ये दोनों भाई मेवाड़में जाके आघाट गामके ठाकुर होगये, उस गांमके, चौतरफ भील मेंणे चोरी धाडा मारते, प्रजाकों दुख देते, उन्होंको दूगड़नें कैद किये, ये तारीफ सुणकर, चित्तोड़के राणाने, इन दोनों भाईयोंको बुलाकर, कुरब वढाया, राव राजा की पदवी दी उस आघाट गामके बाहिर, एक नारसिंह बीरका पुराणा मंडप था, उस गामके लोकोंने, उस मकान को तोड़ाय डाला, तत्काल नारसिंह बीर, गांमके लोकोंको बडी, तकलीफ देणे लगा, पणिहारियोंके घडे फोड़ डाले, मनुष्योंके हाथसे खाने पीने की चीजें जमीनमें गिरवा देवै, इत्यादिक पत्थरोंकी बरसात रजो वृष्टि नानाप्रकार के उत्पात देखाणे लगा, इन रावराजाओंने, जंत्र मंत्र, वलि बाकुल बहुत करवाये, लेकिन उत्पात बन्द होवै नहीं, इस वक्त श्री दादा साहबके पट्ट प्रभाकर मणिधारी श्री जिन चन्द्र सूरिः उहां पधारे, सं. १२१७ में, इन्होंके सन्मुख, दोनों भाईयोंने विनय पूर्वक गांमके कष्टका स्वरूप कहा, तब गुरू बोले, जो तुम जैनी श्रावक हो जाओ तो, बन्दोबस्त

हो जायगा, दोनों भाई श्रावक होगये, तब गुरूनें धरणेन्द्र पद्मावती की, आराधना करणेकों उपसर्ग हरस्तोत्र का स्मरण किया, पद्मावतीनें नारसिंहको पकड़के, गुरूके, चरणोंमें लगाया, गुरूनें कहा, आज पीछे उपद्रव नहीं करना ये मेरे श्रावक हैं, नारसिंह वीरनें, कबूल करा गुरूने दूगड सुगडकों कहा, नागदेव तुह्मारे वंशके, सहायक होंयगें, ये चमत्कार देखसी सो दिया, वैरी शाल श्रावक हुआ, वह सीसोदिया गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, इन दोनोंका वंश, धन और जनसें, दादा गुरू देवकी भक्ति करणेंसें, दिनपर दिन वड़की शाखा ज्यों, विस्तार पाया, मूल गच्छखरतर, अभीभी दूगडगोत्री, नागकुमारकी पचमी, कई २ पूजते है, दादा गुरू देवकू सब दूगड मानते है, सेखाजीकी ओलाद सेखाणी वजते है, कोठारका काम करणेसें कोठारी भी दूगड वजते हैं, मूल गच्छ खरतर है,

(मोहीवाल आलावत, पालावत, गांगा, दूधेड़िया शाखा १६)

मोही नगरमें पमार राजा नारायण सिंह राज्य करता है, चौहाणोंने घेरादिया, नारायण गढ़का बन्दोबस्त कर, चौहाणोंसे युद्ध करने लगा, लेकिन् चौहाणोंके पास बहुत धन और लाखोंकी फौज थी, नारायण चिन्तामें चूर्ण हुआ, तब गगपुत्रनें पितासें अरज करी, कि, हे पिताजी, श्री जिन दत्त सूरिःके पटधारी, श्री जिन चन्द्र सूरिःका मैंनें मेवाड देशमें, दर्शन किया, था, सो बडे चमत्कारी महापुरुष है, राजानें कहा, हे पुत्र उन्होंके पास पहुंचणा मुशकिल है, गगने कहा, मे हरसूरत, पहुच जाऊगा, दूसरे दिन, ब्राह्मण जोतषीका, स्वाग वणाकर, चौहाणोंकी फौजमें गया, और फौजी लोकों को, तिथिवार बताता २ फौजमें से निकल गया, अजमेर परगणेमें गुरुका वन्दन करा, गुरूकों एकान्तमें, सब वार्ता कही, गुरूनें कहा, तुह्मारा पिता सहकुटुम्ब हमारा श्रावक जैनी हो जाय तो, में सब बंदोबस्त कर देता हूं, गंगराज कुमारनें, ये बात कबूल करी, तब श्री गुरू महाराजनें जया विजया देवीकी, आराधनारूप, पार्श्व मंत्र स्मरण किया, देवीनें एक तुरग लाकर दिया, गुरूसें अदृश्यता पणेमें, मालूम करा, इस अश्वका चढ़णे वाला, अजयी हो जायगा, गुरूनें, गगसे कहा, तुम इस घोडेपर सवार हो, देखते

रहो, असंख्या दल तुह्मारे पीछे आजायगा, शत्रु सब भग जांयगे, हमारे कहे हुए वचन चूकणा मत, तुह्मारे मनोरथ सदा सिद्ध होंगे, गंगने चौहाणोंको वेरलिया चौहाणोंकी फौज भगी, गढके अन्दरसें राजा नारायण सिंह देख रहाथा, अजबी चमत्कार देखा, हैरतमें रहा, इतने मै राजकुमार गंगसिंहने, आके मुजरा किया, और सब हाल कहा, अब राजा अपने सब पुत्रोंको संग ले, विजय डंका बजाता, श्रीगुरू महाराजके पग मंडे, मोही नगरमें करवाये, जब धर्मोपदेश सुणा तो, राजा रोम २ सें फूलणे लगा, और जैनधर्मी महाजन हुआ, उन सब बेटोंके गोत्र हुए, बडे राजाके पुत्र मोही नगरमें, मोहीवाल कहलाये १ आलावत २ पालावत ३ दूधेड़िया ४ गोय ५ थरावत ६ खुड़धा ७ टोडरमल ८ माटिया ९ बांभी १० गिड़िया ११ गोढ़ वाडा १२ पटवा १३ वीरीवत १४ गाग १५ गोध १६ मूल गच्छ खरतर

बोथरा, फोफलिया, दसाणी, बच्छावत, साह, मुकीम, जेणावत, डूंगराणी, साखा ९

श्रीजालोर महा गढके धणी देवडा वंशी चौहाण, महाराजा सामन्तसीजी उन्होंके, दो राणियां थी, जिनसें सगर १ वीरम दे २ और कान्हड ३ ऐसे तीन लडके, और उमा नामकी एक लडकी हुई सामन्तसीजीके पाटपर, वीरमदेव बैठा, तब बडा पुत्र सगर आकर आबू पहाड देवलवाडेका राजा हुआ, कारण सगरकी माता देवलवाडेके राजा भीमसिंहकी लड़की थी, वो दूसरी राणीकी अणबणतसें, सगरको लेकर, अपने बापके पास जारही, भीमके पुत्र नहीं था, इस वास्ते दोहीतेको राज्य देगया, एक सो चालीस गांम सगरके ताल्लुके थे, उसका तेज चारों दिसामें फैल गया, बडा बहादुर दानेश्वरी पणेंसें, नेकनामी पैदा की, उस वक्त चितोड़के राणा रतनसीपर, मालव देशका मालिक मुहम्मद बादशाह की, फौज चढ़ आई, राणा रतनसीनें, सगरको बहादुर जाण, अपनी मदतको बुलाया, सगरके मुहम्मदसें युद्ध

---

१ दोहा, गिरि अढार आबूधणी, गढ जालोर दुरंग, तिहांसामन्तसी देवड़ो अमली माण अभंग १ २ उमा पिंगल राजाको व्याही थी

हुआ, मुहम्मद भाग गया, राणे रतनसिंहनें, सगर राणा वीर सामन्त, ऐसा पद दिया, सगरनें मालव देश तावे कर लिया, कुछ मुद्दतके बाद गुजरातका मालिक, वह लीमनात अहमद बादशाहनें, राणा सगरकों, कहला भेजा कि मेरी सलामी, और नौकरी मन्जूर कर, नहीं तो मालवा छीन लूंगा, सगरनें करडा जवाब देदिया, अब इन्होंके युद्ध हुआ, अहमद भग गया, गुजरात सगरनें अपने आधीन कर लिया, कुछ मुद्दत पीछे दिल्लीका बादशाह गौरी-साह, और राणा रतनसीके आपसमै तनाजा हुआ, गौरीशाहकी फौज चित्तोड पर आई, "उस समय राणेजीनें सगरकों बुलाया, सगरनें आपसमें मेल करा दिया, बादशाह से २२ लाख रुपये दण्डके लेकर, मालवा गुजरात सगरनें बादशाहको पीछे दे दिये, उस वक्त राणेजीनें सगरकी बुद्धि मानी, और सखावत देख सगरकों मंत्रीश्वरपद दिया, सगर पीछा देवल वाडेमें रहने लगा, इसका चरित्र बहुत है, ग्रन्थ बढणेके सवब नहीं लिखते है धर्म इन्होंका शैवमत था, सगरके पुत्र वोहित्थ देवल वाडेका राजा हुआ, बड़ा शूर वीर अकलवर था, सम्वत् इग्यारह सताणवेमें श्रीजिनदत्तसूरिः देवल वाडेमें पधारे, गुरूके पास राजा बोहित्थ आया, गुरूने धर्मोपदेश दिया, राजा बोहित्थ पूछने लगा, हे गुरू मुसल्मानोंनें, बडा जुल्म उठा रक्खा है, और ये बडे जुल्मी है, सो हमारे राज्यकी क्या दशा होगी, गुरूनें कहा, जो तुम हमारे श्रावक बनो तो, सब वृत्तान्त कह देता हूं, वोहित्थ राजा बोला, गुरूमहा-राज श्रावक होनेसे, व्यापार करणा होगा, शस्त्र डाल देणे होंगे, राजापणा चला जायगा, गुरूनें कहा, हे राजा, तुमको संसारके स्वरूपका, ज्ञान नहीं, हाथीका कान, पींपलका पान, जैसा चञ्चल एसी राजलक्ष्मी चञ्चल है; चक्रवर्त्तीके पुत्रके पास कमैं वस ५ घोड़े नहीं मिलते हैं, इतने राजपूत वसते है, क्रोडो, उसमैं राजा कितने हैं, वह विचारो, और मैं तुम्हारे सन्तानोंकों सदाके वास्ते, लक्ष्मी पुत्र बना देता हूं, इतना सुनते ही, वोहित्थ राजानें तत्वकों समझ, जैन धर्मको ग्रहण करा, बोहित्थ राजाकी राणी, बहु रंगदे, जिसके ८ पुत्र थे, बडा श्रीकर्ण १ जेसा २ जयमल्ल ३ नान्हा ४ भीम-सिंह ५ पदमसिंह ६ सोमजी ७ पुण्यपाल ८ इस तरह सातों पुत्रों समेत,

१२ व्रत सम्यक्त्व युक्त ग्रहण करा, पद्मा वेटी थी, तब दादा श्री जिनदत्त सूरिःनें आशीर्वाद दिया, हे राजा वोहित्थ जहातक तेरा वंश मेरी आज्ञाके मुताबिक चलेगा, खरतर गच्छकी भक्ति रक्खेगा, उहांतक राज्यकार्यमें तेरी शन्तानका मानप्रतिष्ठावन्त, एक न एक, सदाके लिए रहेगा, ठाठका मालिक तेरा वंश, पाटका मालक राजा रहेगा धर्मसे वेमुख नहीं होंयगें उहातक, लेकिन हे राजा तुम पर भवकी नींव लगावो, तुम्हारी आयु थोडी है, तब वोहित्थजीका वडा वेटा जिसनें जैन धर्म नहीं धारा, उसकों राज्य पदवीका युवराज वणाया, इस वक्त चित्तोडके किल्लेपर, दिल्लीके बादशाहकी फौज आई, राणा रायमल वोहित्थ राजाकों अपनी सहायतापर बुलाया, वोहित्थ राजाने दादा साहिवके वचन याद किये, गुरूनें कहा, आयु थोडी है, सोमोंका आय बना है, तब सातों पुत्रोंकों, द्रव्य दे देकर, मारवाड, गुजरात, कच्छ देशकों जाणेका हुक्म दिया, और आप श्री कर्णकों देवल वाडेका राज्य-तिलक देकर, युद्धमें चढ गये, उहा चारों आहारका त्याग कर, वादशाहसें युद्ध किया, वादशाहकों भगा दिया, मगर आप ११ से सोनहरी वंधसे, युद्धमें अरिहन्तदेव और परम गुरू जिन दत्तसूरिःजीका, ध्यान करते, मरके व्यन्तरनिकायमें, वावन वीरोंमें हनुमन्त वीर हुए, जिन्होंकी शक्ति पूनरा सर गांममें प्रगट है, और जिन दत्तसूरिःजीकी सेवामें, हाजिर रहने लगा, इन सात पुत्रोंकी शन्तान वोहित्थरा, वड़की शाखा ज्यों धन और जनसें विस्तार पाये, अब राजा श्रीकर्णके ४ पुत्र उत्पन्न हुए, समधर १ वीरदास २ हरीदास ३ और उद्धरण ४ श्रीकर्ण सूरवीर इसनें युद्ध वलसें मछेन्द्र गढ़का राज्य लेलिया, एक समय वादशाहका खजाना जा रहा था, तब पिताका वैर याद कर, खजाना लूंट लिया वादशाहकों, खबर हुई, तब फौज भेजी, उस लडाईमें राणा श्रीकर्ण काम आया, वादशाही फौजनें मछेन्द्र गढ कबजे किया, उस समय राणे श्रीकर्णकी राणी, रतनादे, कुछ रत्न संग ले, चार पुत्रोंको संग लेकर, अपने पीहर खेडीपुर जा रही, और अपने पुत्रोंको कला अंभ्यास कराते, २ पण्डित वणालिये, एक दिन रातको सेते हुए,

चारोंकों, पद्मावती देवीनें, स्वप्न दिया, कल यहा खरतर गच्छ नायक, श्री जिनेश्वर सूरिः आचार्य, आंयगे, उन्होंके पास तुम जैन धर्म अंगीकार करोगे तो, तुम पीछै राज्याधिकारी वन जाओगे, प्रभात समय, वोहि वात वणी, ये चारों श्रावक हो गये व्यापार करणे लगे, अगणित धन पैदा करा, अपने गोत्री वोहित्थरोंको संगले, सत्रुंजयका संघ निकाला, रस्तेमें गाम २ में जणे प्रति एकेक मोहर, चादीका थाल सोपारियोंसे भरकर देते चले, तबसे फोफलिया कहलाये, समधरका पुत्र, तेजपाल उसने गुजरात देशका ठेका लिया, तीन लाख रुपये लगाकर श्री जिन कुशल सूरिःजीका, पाट महोत्सव किया, सत्रुंजयका संघ निकाला, खरतर वसीमें २७ अंगुलके बिंबकी प्रतिष्ठा कुशल सूरिसें करवाई, पिताकी तरह मोहर थाली ५ सेरका लड्डू वाटते, सात क्षेत्रोंमें वहुत द्रव्य लगाया, पाटणमें जिन मन्दिर धर्म शालायें, करवाई, तेजपालका वील्हा, वील्हाके २ पुत्र, कडवा १ और धरण २ कडवा वडा दातार, पिताकी तरह सत्र जीर्णोद्धार, लाणें वाटी, एक दिन कडवा, चित्तोड़ गया, राणेजीनें सन्मान किया, अकस्मात् माडव गढ़का वादशाह मुसल्मान चित्तोड़पर चढ आया, तव राणेजीकी प्रार्थनासे, वादशाह सें मेल करा दिया, तव राणेजीनें, वहुतसा, धन, घोडा, सिरोपाव देकर, मंत्री वनाया, कुछदिन पीछै फिर गुजरात पाटण गये, राजानें पीछी पाटण देदी, गुजरातकी, जीवहिंसा, वन्द करदी, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनराजसूरिःका, सवा लाख रुपये लगा कर, पाट महोत्सव करा, सं० १४३२ सत्रुंजयका संघ निकाला, सात क्षेत्रोंमें क्रोडों रुपये लगाये, कडवे-जीके तीन पीढीका नाम मिला नहीं, चोथी पीढी जेसलजी हुए, उन्होंके वछराजजी, देवराज, हंसराज, तीन पुत्र हुए, वछराजजी अपने भाईयोंको संगले, मंडोवरके राव रिडमलजी, राठौड़के, मंत्री वण गये, राव रिड़मलजीको चित्तोड़के राणे कुम्भकर्णने धोखेसे मारडाला, मंत्री वछराज जोधेजीको हिकमतसें, मंडोवर ले आया, जोधेजीके मंत्री वछराज रहै, जोधेजीके नवरंगदे राणी साखलोंकी वेटीसे दो पुत्र पैदा हुए; वीका और वीदा किसी कारण

वस १४ प्रधान नामी पुरुषोंके संग बीकाजी योध पुरसें रवाना हुए १५४१ में राजतिलक राती घाटी पर विराजकर किल्ला डाला १५४५ में बीकानेर वसाया, मंत्री वछराजने, अपने नामसें, वछासर गाम वसाया, वछराजने, सत्रुंजय गिरनार तीर्थोंकी यात्रा करी, इनके कर-मसी, वरसिंह रत्ता, और नरसिंह तीन पुत्र हुए. देवराजके दस्सू, तेजा, भूणा, तीन पुत्र हुए, वछराज जीसें, वछावत कहलाये दस्सूजीके, दस्साणी इसतरह पुत्रोंके नामसें बोथरा गोत्रकी कई शाखा निकली, बीकाजीके पुत्रराव लूण करणजीनें करमसी को मत्री वणाया, मुहते करमसीनें, करमसी सरगांम बसाया, बहुत श्री संघकों इकट्ठा करके, खरतर गच्छाचार्य श्री जिनहंस सूरिःका पाट महोत्सव करा, सं.। १५७० में बीकानेरमें नेमनाथ स्वामीका सिखरबद्ध मन्दिर करवाया, जो भांडासाह के मन्दिरके पास विद्यमान है। सत्रुंजयका संघ निकाला, एक एक मोहर, एक एक थाल, पांचसेरका लड्डू घर २ प्रति, गांम २ में साधर्मियोंको देता, बीकानेर आया, रावलूण करणजीके पाट, राव जैतसी जी, उन्होंनें करमसीके, छोटे भाई वरसिंह कों, अपना मत्री बनाया, वह नारनोलके, लोदी हाजी खानके साथ, युद्ध कर, काम आया, वरसिंहके, मेघराज, नागराज, अमरसी, भोजराज, डूगर सी (डूंगराणी) कहलाये, और हरिराज, ऐसे छह पुत्र हुए, मंत्री नागराज को, चंपा नेरके बादशाह मुंदफरकी नोकरीमें रहणा पड़ा, उसनें बादशाहके हुक्मसें, संघ निकाला, तीर्थोंपर, गुजरातियोंकी गड़बड़ देख, भण्डारकी कूंची, कबजे करी, रस्तेमें, एक रुपया, एक थाल पाचसेरका लड्डू, साध-र्मियोंकों देता, बीकानेर आया, १५८२ में बड़ा काल पड़ा, तब तीन लाख रुपयोंका, अनाज, कंगालोंको, बांटा, एकदिन मोहता नागराजके, सिंध-देश देराउर नगरमें, दादा श्री जिनकुशलसूरिःजीके दर्शनकी, अभिलाषा हुई, संघ निकालणा विचारा, फिर चिन्ता हुई के, सिंधके रस्तेमें, जल मि-

१ काका कंधलजी २ रूपाजी ३ माडणजी ४ मडलाजी ५ नाथूजी ६ भाई जोगायत्तजी ७ बीदाजी ८ सांखुला नापाजी ९ पडिहार वेलाजी १० वैदलाला लाखणसी ११ कोठारी महाजन चोथमल १२ वछावत वरसिंह १३ प्रोहित विक्रम १४ माहेसरी राठीसाहसालाजी.-

लणा मुशकिल है, इस चिन्तामें निद्रा आगई, तव स्वप्नेमें, दादा गुरूनें, दर्शन दिया, और फरमाया के, हमारा थुंम कराणा गाम गडालेमें, (नाल)में, फागुण वदि अमावस सोमवार कों, वडका दरखत फटके, सवापहर दिन चढे, देराउरके निज चरण यहा प्रगटे गें, सत्य स्वरूप जाणना, प्रभात समय, मुल्कोमें कागद भेजादिया, बहुत संघ इकठ्ठा हुआ, स. १५८३ में, उस मुजव चरण प्रगटे, सव संघपर, आकाशसें, केशरकी वर्षा हुई, नागराजने थुम कराकर, चरण थापन करे राव वीकेजीके सग, मंडोवरसें, भैरू की मूर्ती आई थी, वह कौडम देसरपर थापन करी थी, भैरूनें स्वप्नमें, राव जैतसीजीकों, कहा शहरकी प्रजा, मेरी यात्रा करणे आवे, सो मेरे गुरू, दादासाहिवकी हाजरी मेला किया करे, कारण ५२ बीरोंके मालक दादा गुरुदेव है, राव जैतसीजीनें, भाद्वा सुदी १३ कों, वैसाही मेला भरवा दिया, अभी यात्रा हुआ करतीं है, नागराजमन्त्रीनें, नगासर गाम वसाया, राव जैतसीजीके, पाट, राव कल्याणसीजी, विराने, इन्होंनें नागराजके पुत्र, संग्रामसिंहको, अपना मंत्री वनाया, श्री जिनमाणिक्य सूरिःकों संग ले, सत्रुजयादि तीर्थोंका सघ निकाला, एकएक रुपया, एक थाल लड्डूकी लाणी बांटते केशरिया नाथके दर्शन कर, चित्तोड़ आये, राणा उदयसिंहजीनें, वडा सत्मान दिया, बीकानेर नरेश वडे प्रशन्न हुए, सग्राम सिंहके करमचन्द-पुत्र हुए, सो वडे बुद्धिमान, शूरवीर, दातार उत्पन्न हुए, ये महाराजा रायसिंहजीके मंत्री हुए, इन्होंके वर्त्तमानमें त्यागी वैरागी क्रिया उद्धारी, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीकी, आणेकी वधाई करमचन्दको, मल्ल कवीनें दी, तव सवाक्रोडका सिरो पाव, वधाई मैं, कर्मचन्द मुहतेनें दियां, बडे महोत्सवसें बीकानेरमें सामेला किया श्री संघका कराया हुआ उपासरा, श्री चिन्तामणि स्वामीके मन्दिरके पासमें जोथा, सो घरवारी महात्माओंने, अपने घर

---

१ नवहाथी दिया नरेश सो तो मदसें मतवाले, नवें गांम वगसीस लोकनित आखे झाले । एराकीसो पांच सो सो जगसगलो जाणे । सवाक्रोड़कों दान मल कवि सब वखाणे १ कोई राव न राणा करसके, संग्राम नदनतें कियो, युग प्रधानके नाममें, करमचन्द इतना दिया, ॥ २ ॥

वणा लिये, तब मंत्रीनें, अपने घोडोंकी घुड शाल, माणक चौक (रांघडी) में थी, उहा आचार्यको, चौमासे रक्खा, चौरासी गच्छके सब श्रावक, यहा आते थे, और धर्म ध्यान होता था, संसार त्यागके बहुत लोग साधु होगये, अनेक बाइयोंनें, साधवीपणा लिया, उनके धर्म ध्यानके लिए, अपनी गऊशाला दी, जो कि अब बडा उपासरा, व छोटा उपासराके नामसे, प्रसिद्ध है, सं। १६२९ का चतुर्मास संघके आग्रहसें, बीकानेरमें करा, प्रतिमा निंदक मतको फैल्तेकों उपदेशद्वारा परास्त करते गुजरातके तरफ विहार किया, कुछ दिनों बाद श्रीबीकानेरसे व्यापारी वन कर्मचन्द लाहोर नगरमें बादशाह अकब्बरशाहके पास गया एक दिन बादशाहने करमचन्दसे पूँछा की करमचन्द धर्म सबसें बडा कौन है करमचन्द बादशा-हका आशय समझ गया क्योंके बुद्धिका सागर परम जैनतत्वका जाणकार सम्यक्त्वी था तब बोला (दोहा) बडाधर्म महमंदका, तातें शिव कछु न्यून, एकण राजा बाहिरो, सबसें जैन जबून, ।१। बादशाह अकब्बर, इस दोहेके अर्थको खूब समझ गया के, करमचन्द बडा सायर, जैनधर्मका एक नररत्न है, तब पूच्छा अय करमचन्द तुम किस अबलियाके,मुरीद हो, करमचन्द बोला, हुजूर सिलामत श्रीजिनचन्द्रसूरिःका, बादशाहको जैनधर्म सुणनेकी और ऐसे पुरुषके दर्शनकी चाह भई, तब अपने उमरावोंके संग, विनती फुरमाण खास कलम लिख भेजी, गुरू विचरते २, लाहोर पधारे, बडे हगामसें बादशाहने सन्मुख आकर कदम पोशी करी, गुरूनें धर्मोपदेश करा, उस दिनसें बादशाहको, धर्म रुचि उत्पन्न हुई, हमेश व्याख्यान सुणते २ मदिरामास, तथा कन्द मूलेका, यावज्जीव त्याग करा हिंसाका त्याग अमलदारीमें करवाया, यावज्जीव सबपाणीका त्याग कर, एक गगाजल बरताव करणेको बाकी रक्खा, पर-स्त्रीका यावज्जीव त्याग करा, जैनधर्मकों सब धर्मोसे श्रेष्ठ समझणे लगा, ऐसी सम्यक्त्वकी श्रद्धा, प्रगट हुई, । तब बादशाहनें गुरू अपना मान कर चँवर छत्रादि आपके सब राजचिह्न नजर किये, गुरूनें कहा, त्यागियोंको ये उपाधि नहीं चाहिये, बाद० आपका त्याग सदा कायम है, आपने फर-माया मूर्छा हैं सो परिग्रह है, आप मूर्छा रहित है, क्योंके देव तत्वका

स्वरूप आप दरसाते, तीर्थंकर परमात्माके आठ प्रातिहार्य, चौंतीश अति-शय बतलाये, जैसे वे, देवताके समवशरण सोनेके कमलोंपर चलणे आदि, विभूति रहते, तीर्थंकर जैसे वीतराग है, तैसे मै मेरी भक्तिसें, इस राज्य चिन्होंसें, उपासना कर, जन्म सफल मानूगा, आप तो दुनियासे तार्के हो, लेकिन बादशाह राजादिक सेठ सामन्तोंके गुरू, परम चमत्कारी प्रभा-वीकपणेसें, आपकों जिन पद है, (ठाणासूत्रमें ९ जिन फरमाया है) आप धर्मकी जहाज हो मदा मदके लिए, आपके शन्तानोंके साथ, मेरी भक्तिका निशाण कायम रहै, तब करमचन्दनें अरज करी, हे पूज्य, राजा भियोग है, जिसपर भी जैन धर्म की दुनिया मै आडम्बर महिमा दीखेगी सब श्री संघ इस बातसे, आनन्द मानेंगे, तब गुरूनें मौन करा, बादशाह इन्होंके शिष्य श्री जिनसिंह सूरिःको, तखत बिठलाकर राज्य चिन्ह सब कर दिये, और मुल्कों मै बन्दा वणीका फुरमाण लिखा दिया, माही मुरा तब दिया, ये अकबरका मुरातब बीकानेरके बडे उपासरेमें, करम चन्दनें भेजा दिया, श्री गुरू महाराजके साधु लब्धिवंतनें काजी की टोपी आकाशमें ठहरी हुई को, ओघेसें उतारी, तीन बकरी बताई, अमावस की पूनम कर दिखलाई, इत्यादि चमत्कार दिखलाकर, सब तीर्थोंकी रक्षा के लिये जगह २ बादशाहनें अपने सूबेदार जागीर दारोंपर हुक्मनामा भेजा दिया और हिन्दमे अमारी उद्-घोषणा छ महिना एक वर्षके वास्ते जाहिर करा चैत भादवा आसोज चौंदस आठम अमावस पूनम हुमायूका जन्म दिन मरणेका दिन अपना जन्म दिन राज्यका दिन इत्यादि मिला करके तथा हुमायूं बादशाहने बलात्कार आर्य लोकोंको मुसलमान वणाना सुरू कराथा वह अकब्बर के दिलसे गुरूनें मिटादिया बादशाह हुमायूंने सब भेष धारियोंकों बलात्कार गृहस्थी बनानेकी आज्ञा दीथी इसमे स्वामी, सन्यासी, वैरागी, जती लोग, बहुतसे घरबारी बन गये थे, आत्मार्थी त्यागी लोकोंने बहुतोंने प्राणत्याग दिया था, बहुत त्यागी रहने-वालोंने शिर पर वस्त्र बांध लंगोटबद्ध महात्मा होगये थे, इत्यादिक जुल्म करमचन्दके कहणे मुजब, श्री जिनचन्द्र सूरिःजीनें बादशाहको उपदेश दे दे-कर, बन्द करवादिये, सब मतोंके अवलियोंसें, सत्संग करणा, अच्छा समझ,

उन्होंकी सगत करणे लगा, आज्ञा दी के, कोई धर्मवाला होय, उस पर बलात्कार, कोई अत्याचार हिमायतीवाला, नहीं कर सकेगा, सच है, ऐसे मंत्री और ऐसे गुरू महाराजकी शिक्षा जबसे अमल दरवलमें लाया- बस इसही बातोमे अकब्बर बादशाहकी नेक नामी सदाके लिए हिन्दमें स्थिर हुई प्रजाके सुखकारी नियम जो जो गुरूने बादशाहसे करवाये सो लिखें तो एक बडासा ग्रथ बण जावे, इतना है, इस सब बातोंका मूल कारण बच्छावत बोथरा करमचन्द था, इसवास्ते इन्होका इतिहास विस्तारसें लिखा है, ये जमाना भस्म रासीग्रह भगवान वीरके, जन्मराशी पर, जो निर्वाण समय आया था वह उतरनेका था, उक्त महाराजाने जैनधर्मका उदय-पूजा सत्कार प्रगट करा, तबसे, ढों फिरका साधुओंमें होगया एकतो सिद्धपुत्र क्षुल्लक जती धर्मोपदेशी पडित. तथा श्रीजिन चन्द्र सूरि.के खरतर गच्छके सब पंचमहाव्रती जैनसाधु इसके बाद तपागच्छ नायक श्री-हीर विजय सूरिः दिल्ली पधारे तब भानुचद्रजी सिद्ध चन्द्रजी यति प्रमुखनें कलाकौशल्लतासे बादसाहको प्रसन्न करके ई कार्य उपगारके कराये, सूर्य सहस्त्रनाम कल्पनकर बादसाहको नित्य सुनाने आदि इसलिये केइफरमान भी लिखाये पाच पहाडोंके हिफाजतका फुरमाण हीर विजयसूरिः जीकों लिखवा दिया जिनचन्द्र सूरिःनें तपागच्छी सिद्धिचद्रयतीको बादसाह अकबरके पुत्र साहसलेमनें दुराचारके कारण कैदकर दियाथा तब आप बादसाहकों समझा कर कैदसे छुडाया, ऐसे उपगारी हुये, खरतर गच्छकी गुर्वावलीमें समय सुन्दरजीने लिखा है, फिर विजय दानसूरि के शिष्य धर्म सागरजीने स्वकल्पित ग्रंथमें खरतर गच्छपर केइ असत्य आक्षेप लिखे, तब जिन चंद्र-सूरिः पाटण पधार उस समयके विद्यमान उपाध्याय वाचकादि अन्य २ गच्छ वालोंको एकत्रित कर उहां रहे धर्म सागरजीको बुलाया लेकिन मृषा-वादी होनेसे सभा समक्ष नहीं आये केई दिन समारही, आखर असत्यवादी समझ खरतर गच्छको विजयपत्र सर्व विद्वान् साधु मंडलीने लिखा, ताम्र-पत्र पाटण वाडी पार्श्वनाथजीके मंदिर ज्ञानभण्डारमें रखा, ये सर्व वृत्तांत समाचारी शतकमें लिखा है, प्रथम बलाकर खरतरगच्छ वालोंनें कमीमी

विपवादरूप शब्द नहीं लिखा जब तपोंनें आक्षेप करा तब उत्तर देना वाजबी समझ कर दिया, हीर विजय सूरिः भी, त्यागी, वैरागी, आत्मार्थी, जैनधर्मके उद्योत् कारी, प्रगट, हुए, उन्होंका ज्यादह, विहार, गुजरात, गोढ़वाड़में रहा, ये दोनों आचार्य चन्द्र सूर्यसम उदय, २ पूजा सत्कार के, कराणे वाले, प्रगट, हुए, इन्होंकाभी दो फिरका चलता रहा, आपसमें बडा संप रहा, खरतर तपोंके, बादशाहके माननीय होनेंसें, जती लोकोंका चमत्कार देख २ के, सिद्ध पुत्र जतीयोंको, राजालोक गाम जागीर मन्दिर उपासरेके हिफाजत करणें, शिष्योंको विद्या पढाणेको, देते गये, सो अभीभी विद्यमान है, वच्छावत कर्मचन्दने वीकानेरमें सत्ताईश गवाड, गांम सारणि, घोत, लाहण, वगैरह जातीके कायदे बांधे, मुसल्मान समसेरखानें, जब सिरोही इलाका लूंटा, उस लूंटमेंसें, १९०० जिन प्रतिमा सर्व धातुकी मिली, सो करमचन्दनें वीकानेरमें चिन्तामणिजीके मन्दिरमें, धरवाई, सो अभी भी बडे कष्ट उपद्रवादि दूर करणेको, बाहिर निकाली जाती है, पर्यूपण पर्वमें ८ दिन, कसाई, भडभूंजे आदिकारुओंके, आरम्भ बन्द करके, लाग बांध दिया, सो अभीभी जाहिरी है, सोलेसय ३९ का काल पडा, उसमें करमचन्द वच्छावतने, कगालोंको, तथा जैनी भाइयोंको, गरीब जाणके, साल भरका गुजरान दिया था, महात्मा लोगोंने, जिन चन्द्रसूरिः की, अवज्ञा करी थी, महाजनोंकी वसावली पास रहणेसे, मस्त हो रहे थे, भवितव्यताके वस, ये काम बुरा हुआ, करमचन्दनें सोचा, जब लोक वही बट्टोंको धन देते रहेंगे तो, जैन धर्मके आदि कारण जती साधुओंका, बहुमान लोक नहीं करेंगे, ऐसा विचार कर, बोखेबाजीसें, गृहस्थी महात्माओंको, इकट्ठे करके, वंशावलीकी वहियें माणक चौकके कूए में गिरादी, उन महात्मा गृहस्थियोका, रकीना, औसर व्याहोंमें बागवाडी वगैरह का, बांध दिया, वह भी मजूरी करे तो, जो जो वशावली, भण्डारोमें, तथा श्री पूज्यजी महाराजके, पुस्तकालयमें, तथा दूरदेशी महात्माओंके पास रहगई, सो हाजर है, परन्तु किसी वंश वालोंके नाम, ओस वालोंके महात्मा लोकोंके पास सें न मालूम, किस तरह पर, भाट लोकोंके पास दस ९ पीढीके

हाथ लगणेसें, भाटोंने ओसवालोंपर सिक्का जमाणा प्रारम्भ करा है, और अश्वपत लोक जैन धर्म वरानेवाले जती लोकोंसे, हरवातपर मुह मचकोड़ते हैं, और भाटोंके लिए कडा कंठी मोती दुशाले देकर, इनायतीकी खूबी दिखाते है, जती महात्मा तो कुपात्र ठहरगये, मांस, मदिरा खाणेपीणेवाले भाट लोकोंका दान, सुपात्रों में, दरज हुआ, वाहरे पंचम आराकलियुग, तेरे विना, ये दशा कोन वनाता, अश्वपती महाजनोंकी वंशावली जती महात्मा विना अन्यके पास होय सो, विल्कुल गलत झूठी है, अश्वपत लोकोंको, इस बातका निर्धार करना चाहिए, आखिरकों, वादशाहनें, करम चन्दकों, हमेशा अपणेपास रखणा शुरू करा, तव किसी कारणसें, राजा रायसिंहजी; गुस्से होगये, सूरसिंहजी जव गद्दी नशीन हो, दिल्ली पधारे, तव करमचन्दके पुत्र पोतादिक परिवार वालोंको, विश्वास दे वीकानेर लाये इन्होंके पास, सातसय योद्धा राजपूत थे, एका एक सूरसिंहजीनें इन्होंको मारणे को, सेन्या भेजी, तव उन्होंके पुत्र भागचन्द लक्ष्मीचन्दनें अपणे हाथसे, सव परिवारकों, कतलकर, सातसय राजपूतों संग, केशरिया वागे पहन, युद्ध करके काम आये, इन्होंका चाकर रगतिया झूझार हुआ सो, भोजक लोकरगतिया वीरकर के पूजते हैं, एक वहु गर्भवती, किसनगढ, अपणे पीहर चली गई थी उससें जो पुत्र हुआ, उनकी शन्तान, किशनगढ उदयपुर वगैरहोमें वसते है, वाकी-बछावत मारवाड वगैरह वीकानेरके इलाकोंमें, वसते हैं, पीछे सूरसिंहजीनें उन्होंकी जड निकालनेसे, माणक चौकका नाम, रांवडी रक्खा, कई दिनोंवाद कोई वादशाही काम पडा, तव राजा इन्होंका स्याम धर्मीपणा विचारके, वहुत पछताये, आखिरकों, एक पुत्र खेमराजकों, वुलाकर, खींयासर गाम उसके नामसें वसाया, अठारह हजार वींघा जमीन देकर, वडे कारखानेमें, वच्छावतोंका हाजर रहणा हमें सके लिये कायम रक्खा, ये जमीन रिणी गांमके तालुकेमें है, वोथरोंकी मूलशाखा ९ प्रतिशाखे अनेक है, मूल गुरू गच्छ खरतर, वोथरा १ फोफलिया २ वछावत ३ दसाणी ४ डूंगराणी ५ मुकीम ६ शाह ७ रत्ताणी ८ जैनावत, ९ (दोहा) वडसाखा ज्यों विस्तरो, वोहित्थ राणा वंश, दिन २ प्रति चढतीकला, अनघन कीर्ति प्रशंस, ॥ १ ॥

(गेहलड़ा गोत्र)

विक्रम सं १५५२ खीचीगहलोत राजपूत, गिरधर सिंहके पास पिता बहुत धन छोड़गया था, लेकिन ऐश आरामदातारी चारण भाटइं मलोकोंको, करता, सब धन उड़ादिया, आखिर बहुत तंग हो गया, स्वामी, जोगी, फकड़ोंके पासकीमियागिरी, ढूंढ़ता फिरता है, एक दिन, खरतर गच्छाचार्य, श्री जिन हंस सूरिः को, बहुत साधुओंके बीच, खनवाणा गाममें विराजमान देख, भक्तिसें वन्दन कर बैठ गया, अवसर पाकर अपनी सब व्यवस्था कहके बोला, हे दीन दयाल, धन विना जगतमें गृहस्थीकों जीनेसें मरणा अच्छा है, गुरूनें कहा सत्य है (दोहा) चढ़ उत्तंग फिर भुय पतन, सो उत्तंग नहीं कूप, जो सुखमें फिर दुखवसे, सो सुखही दुख-रूप ॥ १ ॥ इसवास्ते सुपात्र विवेकीके पास धन होता है तो, वह उस धनसें स्वर्ग मोक्षकी नींव डालता है, और जो बुद्धि हीन, धन पाकर, सुकृत नहिं सचते बंबूलके वृक्षरूप कुपात्रोंको दान देते हैं, वो, इस जन्म, व पर-जन्ममें, दुखी होते हैं जिन मन्दिर कराणा १ जिनराजकी मूर्तियें भरवा कर अंजन शलाका कराणी, चैत्य प्रतिष्ठा कराणी, २ केवली कथित सिद्धान्त लिखाणा, पाठशाला स्थापन कराणा, विद्यार्थियोंकों सब तरहसें सहायता देणी, दीन हीनका उद्धार करणा, ऐसे सुकृतके अनेक भेद है, तब गिर-धर बोला, महाराज अब जो मेरे पास धन हो जाय तो, ये सब काम करूं, गुरूनें कहा, जो तुं जिनधर्मी श्रावक हो जावे तो, धन फिर हो जाता है, इसने गुरूसें जिनधर्म अङ्गीकार करा, तब जिन हस सूरिःने, वास चूर्ण मंत्र कर दिया कि, आज रात्रिको कुम्भारके ईंटके पजावेपर, ये डाल देणा, भाग्य योगसें बाहिर ९ हजार इटोंका छोटा पजावा दिखाई दिया, वास चूर्ण उसमें डालदिया, वह सोनेकी होगई, चादकी चादनीमें, रातोरात, घरपर उठा लाया, ईटोंके मालिकको, दुगणा मोल देकर, खुश कर दिया, गिरधरसाहके पुत्र, गेलाजी, भोला था, अब तो इन्होंके राजकाज लगगया, धर्ममें बहुत द्रव्य लगाया, वाद गेला साहकों शहरके लोकोंने कहा, चिणेका दाणा तो, सबोंके घोड़े खाते है, आपके घोडोंको तो, मोहर खिलाणी चाहिये, तब

गेला साहनें, मोहरोंसे तोबरे भरके चढा दिये, तबसें लोक गेलडा २, कहन लगे, इन्होंके सातमें पीढी एक पुरुषकों, राठोडोनें किसी अपराधमें पकड़ कर, सब धन छीन लिया, तब वह दुखी हुआ, उसकों नागोरमें , ज्योतिष निमित्तसें, एक जतीनें, मुहुर्त वतलाया, इस वक्त तू पूर्व देशमें चला जा, राजा साम्राट हो जायगा, ये निकला, सात कोस पर जाके, दरखत की छाह में सो गया, नींद आगई, सूर्य की धूप मुंह पर आई, तब एक साप निकल के, छाह करके सूर्यके तरफ रहा, इतनेमें ये जागा, सापको देख कर घबराया, फिर पीछा आया, जतीजीनें देख कर कहा, अरे पीछा क्यों आया, तब वह बोला ये स्वरूप बणा, जतीजीनें कहा, अरे तूं छत्रपती होता था, वह शकुन सांपनें दिखाया था, अभी खेह मरा चलाजा, राजा तो नहीं होगा, तो भी राजा महाराजा बादशाहोंका श्रीमन्त माननीय हो जायगा, ये चलता २, तीन महीनेसें मुरसिदाबाद पहुंचा, क्रम २ व्यापारसें, वढते २ जहाजोंमें माल भेजने लगा, आखिरको खाली नाव पीछी आती, तोफानमें आई, तब नावड़ियोंने भरतीमें पत्थर डाला, वह सब पन्नारत्न था उस दिनसें, असंख्य द्रव्यपती होगया, इन्होंके पुत्र खुशाल रायजीको दिल्लीके बादशाह ओरंगजेबने, जगत्सेठकी पदवी बखसी, उस पीछे खरतर गच्छाचार्य श्री जिन चन्द्र सूरिःकों स. १ १७२२ में मुरसिदाबाद विनतीसें बुलाये, महाराजनें उपदेश दिया, समेत शिखर पहाड़की यात्रा जाते रस्तेमें, प्रजाकों चोरोंका भय, रस्ता मिले नहीं इस लिए संघको दर्शन सुलभ होना चाहिये, तब सेठ साहबनें, झाड़ी जंगीमें साफ रस्ता ६ कोस पर चौकी पहरो, बिठलाये, ऊपरवीसों भगवानके जहां चरण नहीं थे उहा पधराये, और जावमाईजी आवै, उसकों श्रीमन्त बणा देना, बड़ी भक्ति अनेक जिन मन्दिर, घर देरासर, कसौटीके पत्थरसें बनाकर नवरत्नोंके बिंब स्थापन किये, ये मन्दिर हमने विक्रम सं० १९२२ की सालमें, आंखोंसे देखा था, उनकी वदौलत, मुर्शिदाबाद, महमापुर, महाजन टोली अजीमगञ्ज; बालूचर, वगैरह गंजोंमें एक हजार लक्षाधिपति महाजनोंको बना कर वसाया। बीकानेरके गावोंके, वासिन्दे, जो जो, गरीब महा--

जन जगत सेठजीके पास पहुंचा, उसे निश्चयही श्रीमन्त बना दिया। अंग्रेज सरकारको जगत सेठ साहबकी बदौलत बादशाही इज्जत रखनी हुई। नाग-पुरके मरेठे राजाको अर्वोंकी जवाहिरात, जगतसेठजीने, बख्शी। बनारसमें राजा शिवप्रसाद् सितारे हिन्द, जो अंग्रेज सरकारके माननीय हो गये, इन्हीके वंशके थे जिनने कई इतिहास बनाये हैं,। मूल गुरु गच्छ खरतर गेलडा गोत्र कुचेरा गांमके चारोंतरफ बहुत बसते हैं।

लोढागोत्र २

लोढागोत्र दो हैं। एक लोढा तो चौहाणोंसे उत्पन्न हुए है; पृथ्वीराज चौहाणका सूबेदार लाखण सिंह देवडाचोहाणके पुत्र नहीं था, तब रविप्रभ-सूरिजीरुद्र पल्ली खरतरसे निकली शाखावालोंसे, लाखण सिंहने, पुत्रके वास्ते दुख निवेदन करा। तब गुरुजीने कहा कि जो तूं जैनधर्मी हमारा श्रावक बनें तो तेरे पुत्र हो लेकिन कपटसे जैनधर्म ग्रहण करा जिससे पुत्र हुआ वह लोढे जैसा था, तब राजा पृथ्वी राजनें कहा, अरे मूर्ख ये तेरे कपटका फल है, तब लाखणसी, गुरू कों ढूंढता २ बड नगरमें गया, अपणा कपट कहा, गुरू बड वृक्षके नीचे उतरे थे, उस बडमें रही जो देवी, वह बड लाई, बोलीके, निशल्य होकर, जैन धर्म कबूलकर, पुत्रके हाथ पैर सब गुरूके आशीर्वादसें हो जायगे, तब इसनें ऐसाही करा सम्यक्त्व युक्त बारह व्रत लिये, गुरूने उस लडके पर बास क्षेप करा सब अंगोपाङ्ग प्रगट-हुए, उसका लोढा वंश थापन करा, इन लोढोंकी चार शाखा है, टोडर मल्लोत १ छजमल्लोत २ रतनपाल्लोत ३ भाव सिंघोत ४ टोडर मल छजम-लकों दिल्लीमें बादशाहने साहकी पदवी दीथी, राजा टोडर मोजी शौखीनथा-सो टोडरमलजीको स्त्रियें ब्याहमें गीत गाने लगी, माता बडलाई पूजते है, लोढोंका, जोधपुरमें, रावकी पदवी है, पुत्र हुए पीछे इन लोढोंकी स्त्री, बड-लाई पूजेबिगर बाहर नहीं निकलती, ब्याहमें कुम्भारका चाक नहीं पूजते, कालीभैंस बकरी नहीं रखते, झडूला भी पुत्रोंके माताका रखते हैं मूल गच्छ रुद्र पल्ली खरतर, वोगच्छ विच्छेद हुआ बादसम्वत् सतरहसेमें केइयोंने तपगच्छ कबूल करा बाकी खरतरमें है

(लोढा दूसरे)

लोढामहेश्वरी चावा विक्रम सम्वत् हजारकी सालमें गुरुमहाराज श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेश सुणकर जैनधर्मका, श्रावक हुआ, ये फक्त दशहरा पूजते है, पाटीकी पूजा करते हैं इन लोढोंका अभी भी गच्छ खरतर है, मेडता जिल्लेमे इन्होंके घर हैं, और सोझत इलाकेमै है

(बोरड़ गोत्र)

आवागढ़में पमारराजपूत राव बोरड राज्य करता है, सं. ११७५ में खरतर गच्छाचार्य, श्रीजिनदत्तसूरिःजी, उस नगरमें पधारे राजा शिवजीका भक्त था, सो जोगी सन्यासी जितने आवै, उनसें राजा एसीही विनती करे के, मुझको, स्वामी शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, लेकिन कोईभी करा नहीं सक्ता, एक दिन राजा श्रीजिनदत्तसूरिजीकी महिमा सुणके, गुरूके पास आया और वन्दनकर, यह विनती करीके हे गुरू मुझे शिवजीके प्रत्यक्ष दर्शन करवाइये, तब गुरू कहणे लगे, अगर जो तू शिवजीका कहा बचन माने तो, प्रत्यक्ष शिवजीसें मिलादूं, राजानें प्रशन्न होय, यह बात मानी, तब जहां शिवजीका लिङ्ग था, उहां गुरू पधारे और राव बोरडकों कहा, हे राजा अब तूं एकाग्र दृष्टि शिवजीके लिङ्ग पररख, राजानें समाधि लगाय एकाग्र दृष्टि धरी, इतनेमें लिङ्गमेंसे प्रथम धुंआ निकलना शुरू हुआ, बाद शिवजी भस्मी लगाये, नान्दियेपर सवार, अर्धांगा पारवतीकों लिये, त्रिशूल हाथमें लिए हुए, मूर्तिके अन्दरसें, निकले, और राजा बोरडको दर्शन दिया, और माग २ ऐसा वचन मुखसें कहने लगे तब रावराजा बोरड़ने, हाथ जोड विनती करी, हे नाथ, अन, धन, जन सब आपकी कृपासें हाजिर है, लेकिन जन्म मरणसें छूटूं ऐसा जो परमपद है वो मुक्ति मेरेकों प्रदान करो, वेर २ यही विनती है, तब शिवजी, हड २ हंसने लगे, और बोले, हे राजा, मेंनें आपनेंही मुक्ति नहीं पाई, (दोहा) जाहीतें कछु पाइये, कीजेताकी आस। रीते सरवर पे गये कैसें बुझे पियास ॥ १ ॥ हे राजा सासारिक कार्य जो कोई मेरेसें होने लायक होय सो मैं, पूरा कर सक्ताहूं, भाग्यसे उपरान्त, देवता भी देणेमें समर्थ नहीं, और मुक्तिका

अर्थ, हे राजा कर्मोका छूटणा वह तो मोहके क्षय करणेसें कर्म जीवसें छूटता है, अगर ऐसी जो तेरी मुक्ति पानेकी इच्छा है तो, तेरी पीठपर खड़े आत्मार्थी जितेन्द्री परम गुरूके वचनानुसार चल, क्रमसें जरूर मुक्त हो जायगा, ऐसा कह शिवजी एक कोटि रत्न दिखलाकर, अन्तर ध्यान हुए, तब राजानें चकित होकर, गुरूसें मुक्तिका स्वरूप पूछणे लगा, तब गुरूनें, नव तत्वका उपदेश दिया, राजानें अपने सह कुटुम्ब जैनधर्म धारण करा, इन्होंसे बोरड़ गोत्र प्रसिद्ध हुआ, मूल गच्छ खरतर,

(नाहर गोत्र)

पहले नांगोरके पास, मुंधाड नगर मूधडा महेश्वरियोंनें बसाया, उस जगह मुंधड देवीका मन्दिर है। उस देवीके, मूधडे महेश्वरी शैवमती, सर्व भक्त बसते है, उन्हीमेंसे भीमका पुत्र देपाल, प्रल्हाद, कूप नगरके राजाका, प्रधान हुआ, और वह धनसे श्रीमंत बनगया, उस देपालके, एक अत्यन्त प्रिय पुत्र था, जिससे उसका नाम आसधीर रक्खा, । उस नगरमें, श्रीलघुशान्ति स्तोत्रके कर्ता मान देवसूरिः आचार्य आये, । सूडाजी नामका उनका शिष्य गोचरी गया, मगर शैवमती लोगोंनें, जैनधर्मसे द्वेष रखनेके कारण, आहार पानी नहीं दिया, तब सूडानें गुरूसें सब वृत्तान्त कहा, तब गुरू विहार करने लगे, इस समय शासन देवी आकर बोली, हे गुरू यहां धर्मका लाभ होगा, आप यहां एक दिन जप तप साधो, । तब गुरू शिष्य तेला कर बैठ गये, । इतनेमें शासन देवतानें, देपालके पुत्र आसधीरको उहासे प्रछन्न पणे उठाकर, लेगई, । जब मातानें बालकको नहीं देखा तब सर्वत्र खबर करी, मगर पता नहीं चला, । देपाल पुत्र प्रेमसे विमूढ होगया, । शिष्य जंगल गया था, उसको देपाल बहुत मनुष्योंके साथ रोता पीटता रास्तेमे मिला, उसे रंजमें देखकर, चेलेनें पूछा, तब सब हाल भृत्योंनें, कह सुनाया, । चेला बोला, मेरे गुरूके पास जावो, वह अतिशय चमत्कारी है निश्चय तेरा पुत्र बतला देंगे, । सच है गरज दुनियामें, अजब वस्तु है, (दोहा) गरज २ सब कोई करे, गरज होत घनघोर । बिना गरज बोले नहीं, जंगलहूको मोर, । १ मतलबरी मनु-

हार, नेतजिमावे चूरमो, विन मतलब कोई यार, रावन पावे राजिया, । १ । यह वेचन सुनते ही, सुडाजीके चरणोंमें गिरा, देपाल बडा दुखी होकर कहने लगा, हे गुरू परमात्मा पुत्रके विना मेरा, और स्त्रीका, प्राण निकल जायगा, इसवास्ते आप कृपाकरके, बडे गुरू महाराजके पास ले चलो, तब सुंडाजी संग लेकर गुरूके पास आए, गुरूसें देपाल मंत्रीनें, बडे दीनस्वरसें निवेदन करा तब गुरू बोले, जो तूं, वृहद्गच्छका जैनी श्रावक बने तो, पुत्र मिला देता हूं, देपालनें कहा इसी समय, गुरूनें कहा, पुत्र मिले पीछे तब गुरूनें कहा जातू, दक्षिण दिशाके उद्यानमें, तेरा पुत्र सुखसें, बैठा है, देपाल और शिष्य व बहुत लोग, उसके सग गये, आगे शासन देवी सिंहणीके रूपसें, उस लडकेको स्तनपान करा रही है, देखते ही, देपाल डरता हुआ, पीछे आकर गुरूसें अरज करी, तब गुरूने कहा, तू निशंक चला जा, उस नाहरीकों कहना श्रीमान देवसूरिःका, मै श्रावक हूं, मेरा पुत्र पीछादे, इतना कहते ही, तुझे पुत्र दे देगी, इतना सुण, साहसकर गया, तब नाहरणी गोदमें पुत्रको लेकर बैठी है, देपाल हिम्मत वचन गुरूसें, नाहरणी पास जाके, गुरूके वचन कह सुनाये, तब नाहरणीनें, देपालकों पुत्र पीछा दिया, और आकाशमें जय २ ध्वनि होने लगी, बहुत हर्षके साथ अपना बडा भाग्योदय मानता, सपरिवार, गुरूके पास जाकर, जैनधर्मी भया, गुरूनें उस आसधीरका, नाहर गोत्र स्थापित करा मानदेव सूरि कोटिक गच्छ चन्द्र कुल वज्रशाखाके आचार्य थे, इन्होंके शन्तान जिनेश्वर सूरिकों खरतर विरुद मिला, मूलगच्छ खरतर देवी इन्होंकी शासन देवी व्याघ्री है, बीकानेरादिक मारवाडके नाहर अभी भी खरतर गच्छमें है।

(छाजेहड़ गोत्र)

राठौड राजपूत धांधल रामदेव [१] पुत्र काजल, संवत विक्रम १२१९ में श्रीजिनचन्द्र सूरिः मणिधारी खरतर गच्छा चार्य, सवीयाण गढमें पधारे,

---

१ विद्यमान समयमे सताब चन्दजी नाहरके पुत्र मुरसिदा बादमें बडे श्रीमन्त दातार, अंग्रेज सरकारके माननीय, बुद्धिवन्त, मुन्नीलाल पूरणचन्द वगैरह जयवन्त हैं, ।

तब कानलने, गुरूसे विनती करी के, गुरू महाराज दुनियामें लोग रसायण सिद्धि सोना वगैरह होती बतलाते हैं, यह बात सच है या झूंठ, गुरूनें कहा, हम त्यागी लोकोंको, धर्म क्रियाकों वर्जके और नाटक चेटक करना योग नहीं, तब कानल बोला, जिस तरह धर्मकी वृद्धि होय, और मैं इस विद्याकों एकवार अपनी आखोंसे देखलूं, ऐसी कृपा करो, आपके गुरू श्रीजिन दत्तसूरिःजी तो, ऐसे चमत्कारी होगये, इतना चमत्कार तो, आप ही बतलावो, तब गुरू बोले, जो तूं जैन धर्म अगीकार कर, हमारा श्रावक बणे तो, ये काम भी हो सक्ता है, तब कानल अपने पितासें, पूछणें गया, तब रामदेव बोला, हे पुत्र, राठौड जात, खरतरगच्छके, चेले हैं, तू अहो भाग्य समझ सो गुरू तुझे जैनधर्म धराते हैं,तब आकर बोला,हे गुरुमहाराज जैनधर्म करो, गुरूनें नवतत्त्व सिखाकर, श्रावक बनाया पीछे दीपमालिकाकी रात्रिकों, श्रीलक्ष्मी महाविद्यासे, मंत्र कर, कानलकों, वास चूर्ण दिया, और बोले, जा इतना वास चूर्ण जिसपर डालेगा, वो सोना होजायगा, लेकिन आजही रातकों, प्रह उगतेमें, लक्ष्मी देवीका विसर्जन कर दूंगा, फिर नहीं होगा, कानलकों तो, यह चमत्कार ही देखणा था, उपाश्रयसें निकलकर, मन्दिर श्रीजिनराजके छाजोपर, कुछ वास चूर्ण डाल दिया, कुछ देवीके मन्दिरके छाजोंपर कुछ अपने घरके छाजोंपर डालकर घरमें जाके सो रहा, भूंअन्धारे उठके, श्रीजिनमन्दिरमें जाके, दर्शनकर, बाहर निकला, इतनेहीमें, बहुतसे लोक, रस्ते निकल्ते, बोले, अरे यह सोनेके छाजे, मन्दिरके किसनें चढाये, कानल देख् २, बहुत प्रशन्न हुआ, इतनेमें बहुतसें लोक आकर, कहने लगे, रामदेव कानल राठौडके घरके, तथा देवीके मन्दिरके, जैनमन्दिरके, तीनों छाजे सोनेके हैं, तब कानल बोला, अरे लोकों, ये महिमा सब, खरतर गुरूमहाराजकी है, उस दिनसें, कानलोत अजेहड कहलाय, मूल गच्छ खरतर, ।

(सिंघवी गोत्र)

नगर सिरोही गोढ्वाडमें, निनवाणा ब्राह्मन बोहरा, सोनपालके पुत्रकों, सांप काट खाया, खरतराचार्य श्रीजिनवल्लभसूरिःनें सं. ११६४ में जहर

उतारा, सोनपालजीनें जैनधर्म धारण करा, पीछै सत्रुंजयका संघ निकाला, जिससें संघवी कहलाये, पीछै केइयक संघवी गोत्रवालोंनें संवत् विक्रम अठारहसेमें, तपागच्छकी सामाचारी करने लगे, तबसें केइयक खरतर गच्छमें है, केइयोंका तपागच्छ है, शाखा ४ नवलखा १ फरसला २ ननवाणा ३ पल्लीवाल ४।

(सालेचा बोहरा)

सालमसिंहजी दइया राजपूतको श्रीमणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि.नें प्रतिबोध देकर जैनी महाजन किया स. १२१७ की सालमें सियाल कोटमें बोहरगत करणेसे बोहरा कहलाये, मूलगच्छ खरतर।

(भण्डारी गोत्र)

गोढ़वाड देश गाम नाडोलका राव, लखणजी, चौहाणका बेटा, महेसराव वगैरह ६ पुत्र थे, उन्होंको श्रीभद्रसूरिजी खरतर गच्छाचार्यनें, स। विक्रमके १४७८ में प्रतिबोध देके जैनधर्मी श्रावक बनाया, देवी इन्होंकी आसा पुरी, जात नाडोल गाममें इन्होंकी लगती है गाम कुचेरोंमें आकरवसे मूलगच्छ खरतर है, पीछै बाद कोई २ दूसरा गच्छ भी माननें लगे, कुचेरा परगणेके भण्डारी अभी खरतर गच्छमें है, साखा दीपावत मोनावत, लूणावत, नींबावत,।

(बांगाणी)

विक्रम सम्वत् सातसयमें वृहद्गच्छी यशो देव सूरिःजैतपुर पधारे, उहां जयतसिंहजी चौहाण राजाके पुत्र अन्धे होगये थे, जयत सिंहजीने गुरूसें विनती करी, तब गुरूनें जैनी श्रावक होणा कबूल करवाके, शासण देवतासें एक दिनमें दिव्य नेत्र करवाये, बंग देवका बागाणी, गोत्र प्रसिद्ध हुआ यह यशोदेव सूरि. खरतर गच्छ वालोंके बड़ेरे थे, इस वास्ते मूल गच्छ खरतर, पीछै संवत् सोलहसेमें और २ सम्प्रदाय मानने लगे,

(डागा)

गोढ़वाड़ देशगाम नाडोलमें, चौहाण राजपूत, डूगर सिंहजीको पकडनेके लिए, दिल्लीके बादशाहनें, फौज भेजी, कारण पहली डूंगर सिंहजीनें, बहुतसे

खान सुलतानकों, मार डाला था, ये खबर डूगरजीको हुई, तब खरतर गच्छा: चार्य, दादासाहिब श्रीजिन कुशलसूरजीके शरणागत हुए, गुरूनें कहा, जो तुम हमारे श्रावक बणो तो, बादशाह तुम्हारे सामने आकर, अभी, आजीजी करणे लगे, डूगर सिंहजी, अपणे कुटुम्ब समेत. कुशल सूरिदादासाहिबके, श्रावक हुए, रातकों बादशाह अपणे महलमें सूतेकों दादासाहिबनें वीरकों हुक्म देकर, उपासरेमें पलंग समेत उठाकर बुलाया, राव डूगजी उहां बैठे थे, ये चमत्कार देखणेको डूंगजीनें बादशाहसूतेकों जगाया, बादशाह जागकर देखे, तो, कहाका कहामें आगया, तब डूंगजी बोले, अहो दिल्लीपति, दिल्ली तखतके मालिक, आपनें तो हमकों पकड्नेको फौज भेजी, मो तो अभी यहा पहुं-चीही नहीं है, और मैंने तो तुम्है कैद करवाके मगालिया है, तब बादशाहनें पूछा ये वस्ती कौनसी है, तुम कौण हो, और मुझे कैसे बुलाया, तब डूंग-जी बोले, देख मेरे जागती कला जागती जोत, सद्गुरूका मेरे शिर पर हाथ है, तू मेरा क्या कर सक्ता है, बादशाहने, उठके गुरूमहाराजके चरणोंमें अपना ताज रक्खा, और बोला, अय परवर्दिगार खुदाई कुदरत तुम्हें मुबारक है, मुझें क्या हुक्म है गुरूनें कहा, डूगजीके परिवारकों, कभी कड़ी नजर नहीं देखणा, दुसरे तेरे राज्यमें जैनधर्मवालों पर कभी जुल्मींपणा मुस-ल्मीन करणा नहीं, और हमारे श्रावकोंको, हर व्यापार बादशाही फुरमाया जावै, बादशाहनें अजब कुदरत देख, सब करणा कबूल करा तब गुरूनें कहा, जा पलग पर बैठ, आख मूचले, उसी समय दिल्ली दाखल कर दिया, उस दिनसें, सेवड़ोकी कदम पोशी सब जात करणे लगी, डूंगजीसे, डागा गोत्र, प्रसिद्ध हुआ, राजाजीके राजाणी, पूजेजीसें पूजाणी, इन्हीं डागोंकी, शन्तान, जेसलमेर केइबसे, वो जेसलमेरिया बजणे लगे, मूलगच्छ खरतर, सं. विक्रम १३८१ में डागा गोत्र हुआ, ।

(श्रीपति ढड्ढा तिलोरा गोत्र)

विक्रम स. ११०१ में गोढ़वाड़ देशमें नाणा बेडा नगरमें, पाटण नगर का राजा, सोलंखी राजपूत, सिद्धराज जयसिंहके पुत्र, गोविन्द चन्दको, खरतर गच्छी श्री जिनेश्वर सूरिः, खरतर बिरुद पाने वालेने, धर्म तत्वका

प्रति बोध देकर, जैनी महाजन बणाया, गोविन्द चन्दका पुत्र तेल्का-व्यापार करा, बहुत धन उपार्जन करा, तबसें श्रीपति गोत्रकों तिलेरा साखासें पुकारने लगे, तीसरी पीढी झांझण सीजी हुए, जिन्होंनें संघ निकाल्कर सत्रुंजयकी यात्रा की, इन्होकी ६ मी पीढी विमलसीजी हुए, जिन्होंने, नाडोल, फरड, फलोधी, नागोर, बाहड मेर, अजमेर, इत्यादि क्षेत्रोंमें, जगह २ जिन मन्दिर कराकर प्रतिष्ठा कराई, स. विक्रम बारहसेमें, इन्होंके वंशमें, भाडाजी हुए, जिन्होंने जेसलमेर, सिद्धपुर, पट्टण, जालोर, भीनमालमें, शास्त्र सग्रह कराणेमें, ज्ञानभण्डार कराणेमें द्रव्यकी बहुत सहायता दी, भाडाजीके पुत्र धर्मसीजीनें शाह पद प्राप्त किया, सत्रुजय, आबू, गिरनार, बनारस वगैरहमे, प्रशाद कराया, संघ माल पहन कर, समेत सिखरकी यात्रा की, सत्रुंजय, गिरनार, तारंगा वगैरह, हरजगह पर, सोनेका कलश चढाया, चौरासी यात्रा की, संघमे मोहर २ लाहण बांटी, मोतियोंकी माला, सोनहरी कल्पसूत्र, मुनियोंके अर्पण की, मुनियोनें संघके भण्डारको सुपरद किया, पृथ्वी परिक्रमादी तीन क्रोड असरफिया खरचकर, भण्डार स्थापन करा, बहुतसे मकान बणाये, धर्मसी नामको धर्म करणीसें, अमर कर दिया, सम्वत् १२९६ में अम्बिका देवीनें, प्रशन्न होकर, आमके वृक्षके नीचे, धन बतलाया, धर्मसीजीके नवमी पीढी, कुमार पालजी हुए, उन्होंने सिद्धपुर पाटण छोड सिंधदेशका निवास किया, श्री शान्तिनाथजीका मन्दिर सिंधमें करवाया, कुमारपालजीके तीसरी पीढी बाढजी हुए, वह शरीरमें बडे हृष्टपुष्ट मजबूत थे, सं. १६१९ की सालमे, सिंधदेशकी भाषामें, इन्होको ढड्ढा कहणे लगे, संस्कृतमें (द्रढा), तबसें ढढानख प्रसिद्ध हुआ, बाढजी की चौथी पीढी सच्चावढासजी हुए, उन्होके पुत्र सारगजीसे सारगाणी ढड्ढा कहलाये, सिंधदेशकों छोड, फलोधी नगरमें बसने लगे, सारगजीके रुवनाथ मलजी, और नेतसीजी, दो पुत्र हुए, नेतसीजीके खेतसीजी आदि ४ पुत्र हुए, इस जगह रुवनाथ मलजीके परिवारका, पता नहीं मिला, नेतसीजीके तीन पुत्रोंका भी परिवार बहुत हुआ, लेकिन यहा खेतसीजीके परिवारका पत्ता पाया, सो लिखते है, खेतसीजीके, रतनसीजी, तिलोक-

-सीजी, विमलसीजी, करमसीजी, एवं ४ पुत्र हुए, तिलोकसीजीनें, हुल्करकों सहायता दी, और जो धन, उस लड़ाईमें मिला, उसका चौथा हिस्सा, हुल्करने तिलोकसीजीकों दिया, क्रोड़पती होगये, बाकी तीनों भाइयोंकी शन्तान, बहुत है, लेकिन तिलोकसीजीके चार पुत्रांके नाम,

१ पद्मसीजी	२ धर्मसीजी	३ अमरसीजी	४ टीकमसीजी
ज्ञानमलजी	रामचंदजी	नथमलजी	लालचंदजी
सदासुखजी	सागरचन्दजी	सुजाणमलजी	गुणचन्दजी
उदयमलजी	पुत्र २	सुमेर, उदय,	मगलचन्दजी
		चांदमलजी	
शोभागमलजी	लक्ष्मीचन्दजी	गुलाबचंदजी एम ए जनरल	
कल्याणमलजी	कान्फरेंस जैन		

तिलोकसीजी बीकानेर वसे, इन, ४ पुत्रोंकी शन्तान, बीकानेर, तथा जयपुर, अजमेर वसते हैं, बाकी ढड्ढे फलोधी आदि मारवाड़में, सारंगजीके पहलेका परिवार, कच्छदेशमें दसा बीसा हो गये,

(पीपाड़ा गोत्र)

गेलोत राजपूत, पीपाड़ नगरका राजा, करमचन्दकों, वर्द्धमानसूरिःनें सं० १०७२ में प्रतिबोध करके महाजन किया मूलगच्छ खरतर।

(घोड़ावत छजलाणी गोत्र)

राजपूत रावत वीरसिंह जायल नगरका राजा था, उसकों शिकार खेलनका बड़ा शौकथा, एक दिनभी शिकार खेले विना रहे नहीं, एक दिन राजा शिकार खेलने गया, उसी समय नागोर नगरसें विहार करके, श्रीजय प्रभ सूरिः, रुद्र पल्ली खरतराचार्य जायल नगरके वनमें, उतरे थे, आचार्यनें कहा, हे राजा निरपराधी जीवोंकों मारणा, ये राजपूतोंका धर्म नहीं, जो दुस्मनशस्त्र डालदे, मुंहमें घासका तृण उठालेवै, अथवा भगजावै तो, खान-दानी राजपूत, न्यायवन्त, ऐसे शत्रुकों कभी नहीं, मारे, तो हे राजा, हिरण, खरगोश, बकरा वगैरह जानवर शस्त्र रहित, नंगे, घास-मुहमें डालणेवाले भयसे भागनेवाले, निरपराधियोंकों तूं कैसें मारता है, राजा न्यायवन्त बुद्धि

वाला था, पूर्व पुण्य जाग्रत हुए, और बोला, हे प्रभु आज पीछै, शिकार करके किसी भी जीवकों मारणेका मुझें, यावज्जीव त्याग है, लेकिन सीधा मांस मिल जाय, उसके खानेमें तो कुछ दोष नहीं, तब गुरू बोले हे राजा, मांस खानेवाले नहि होय तो, कसाई जीवोंकों किसलिए मारे वह उन खाने वालोंके लिए मारता है, इस लिए आधाकर्म लगे मनुस्मृतीमें आठ कसाई लिखे हैं, तब राजा बोला जैसै हरीं वनस्पतिके सागकों, जब गृहस्थी पका डालते है तो, जैनके साधु उसें निर्दोष समझके, ले लेते है, इसी तरह ही किसी और राजपूतनें, मास आपके लिए, मारके राधा हो, फिर तो वनस्पतिकी - तरह खाणेमें दोष मुझे नहिं लगे, गुरूनें कहा, हे राजा, वनस्पति एकेन्द्री जीव चेतन, प्रथमतो शस्त्र,- अग्नि, और खारके स्पर्शसें हीं, निर्जीव अचित्त हो जाता है, वैसा मांस अचित्त निर्जीव नहीं होता, मांसके पिण्डमें समय २ असंख्य जीव, संमु- र्छिम पंचेन्द्री अग्निपर रंधते भी उत्पन्न होते, और मरते है, इस तरह, वो पंचेन्द्री एक जीव मरण पाया तो, क्या हुआ, लेकिन असख्य जीवोंकी हिंसा,- मांसाहारीकों लगती हैं, मल, मूत्र, सेडा, वीर्य, खून चरबीका पिण्ड,- हे राजा मांस खाना मनुष्योंका धर्म नहीं, विवेकी, मनुष्य सुकाकर,- अपणे हाथसें वनस्पति तक नहीं खाते है, और सूकी वनस्पति काला- न्तरमें जीवाकुल हो जाय तो भी, नहीं खाते, एकेन्द्री वनस्पति वगैरह ५ थावर विगर मनुष्योंका, जीवित नहीं रह सक्ता, लेकिन, बे इन्द्रीसें लेकर पंचेन्द्री तकके शरीरके पिण्डकी, मनुष्योंकों, खाणे विगर कोई हरजा नहीं पहुंचता, बल्कि मांसके खाणेसें, प्रत्यक्ष दश[1] अवगुण है, इत्यादि अनेक प्रश्नोत्तरसे, राजा प्रति बोध पाकर जैनी महाजन हुआ,- उस वखत, राजाकी कुलदेवी, नवरतोमें, भैंसा, बकरा बलिदान नही मिलणेसें,- उत्पात करणे लगीं, तब राजानें गुरूसें कही, गुरूने विद्या बलसें, देवीकों बुलाई तब देवी बोली, आज पीछे बलिदान नहीं लूंगी, तब राजानें विचारा,- ये देवीकी मूर्ति अगर जायल नगरमे रही तो, न जाणे किसी समय,-

---

१ देखो हमारा बनाया हुआ वैद्य दीपक ग्रन्थका तीसरा प्रकाश ।

फिर भी इस देवीके लोग उपासक होकर जीवहिंसा करणे न लग जावै, ऐसा विचार अपने पुत्र छजूं कुमारको हुक्म दिया के, जाओ, कुमार इस देवीकी मूर्तिकों, जायल नगरके कुअेमें, जल शरण करदो, छजू कुमार, परम सम्यक्त्वीनें वैसा ही करा, और अपने पुत्र परिवारकों, हुक्म दिया के, आज पीछे, मेरे शन्तान कभी कूँएकों झाखके मत देखणा, और न देवीकी पूजा करणी, तबसें छजूजीके छजलाणी गोत्रवाले, ये दोनों काम नहीं करते, फिर इन्होंका परिवार बहुत फैला, जिसमें एकशेर सिंह नामका पुत्र नागोर नगरमें, बडा घोडेका शौखीन था, उसकी औलाद घोडाबत कहलाये, एक क्षातमें लिखा है कि, रावत वीरसिंह राजपूतोंमें, गौड राजपूत थे, इसवास्ते छजूजी छजलाणी दुसरा पुत्र वैरीसालके गौडावत कहलाये, जरूर जातके गौड ही थे, घोडावत कहणे लगे, प्रथम गच्छ रुद्रपल्ली खरतर पीछै दुसरा गच्छ स. १९०० सेमें माननें लगे, छजूजीका बनाया हुआ एक कवित्त भी, हमकों याद है, पिताके जीते बनाया है, (कवित्त) नंदनकी नवरही वीसलकी वीसर ही रावणकी सब रही पीछे पछताओगे, उततेंन लाए आथ इततेंन चले साथ इतहीकी जोरी तोरी इत ही गमाओगे, हेमचीर घोडा हाथी काहूकेन चले साथी बाटके बटाऊ- जैसै कल ही उठ जाओगे, कहत है छजू कुमार सुण हो मायाके यार बंधी मुट्ठी आये हो पसारे हाथ जाओगे, । १ । धन्य है राज रिद्धी भोगते भी चित्त में कैसा वैराग्य था, ।

(कठोतिया गोत्र)

जायल नगरके शमीप कठोती ग्राम है, उहापर अजमेरा ब्राह्मण रहता था, उसकों भगंदरका रोग था, स. ११७६ में श्रीजिनदत्तसूरिःनें उसको, मंत्र शक्तिसें, आराम कर उसकों जैन महाजन करा कठोतिया बजणे लगे, गच्छ खरतर ।

(भूतेडिया गोत्र)

स विक्रम १०७९ में सरसा पत्तन जंगल देशमें, कछावा राजा दुर्जन सिंघके राज्यमे, ब्राह्मन लोक वाममार्गीथे, सो एक दिन आसोज वदी चतु-

दशीके दिन देवीके उपासी पणे कर, मदिरा मासले गये, इस मतकी बहुत सी स्त्रियें, उस जगह एकट्ठी हुई, राजाका कोई तो प्रोहितथा, कोई कथा व्यास था, कोई देरासरका मालिक देरासरी था, कोई दानाध्यक्ष था, कोई यज्ञोपवीत धारणकराणे वाला गुरू था, राजा अपणे महलके गोख में, बैठा संध्या करता था, इतनेमें, इन एकेक ब्राह्मनोंको, अंधेरी रात्रि में, एकही दिशाको, जाते देखा, राजानें, अपणा प्रछन्न मनुष्य भेजा, मनुष्यों- नें, खबर दी के, गरीब परवर, ये सब ब्राह्मन, आज काली चवदश है सो, देवीकी पूजा करने गये हैं, इस बातकी खबर, अपने मतावलम्बी, वाममार्ग- वाले बिगर, और किसीकों, ये बताते नहीं, ये सुणकर, राजानें देखा, ये क्या करते है सो, दिखाते नहीं, इस बातको जाननेके लिए, सय्या पालकको कहा के, में किसी काम जाता हूं, तू में आऊं जब दरवज्जा, दरबानोंसें कह- कर, खुला देना, राजा तलवार हाथमें ले, गुप चुप उहां गया तो, जंगलमें, एकान्तदेवीका मंडप, उसका दरवाजा बन्ध देखा, मगर अन्दर शब्द सुनाई दिया, अब वो स्वरूप देखनेके लिए पासमें एक ऊंचा बडका वृक्ष देख उसपर चढकर देखा तो, उहां एक जोगी, उसके पास शराबकी बोतलें धरी हुई, एक बडा पात्र जिसमें बडे पकोडे मास पकाया हुआ, सर्व एकत्र किया हुआ, एक प्याला जिसमें मदिरा भरकर, मंत्र बोलता था, फिर पहले उसनें पिया, पीछे सब ब्राह्मनोंकों देवीभक्तोंको उसी प्यालेसें पिलाया, पीछै एक स्त्रीको नग्न करके, उसके, भगकों, जलसें, मदिरासें, प्रक्षालकर, सबकों चरणामृत दिया, पीछै वह कुंडेका नैवेद्य, भगपर चढा २ कर, सबोंकों, बांट दिया, सो सब लोगोंने खाया, पीछै एक घडेमें सब स्त्रियोंकी, कंचुकी, उस योगीनाथनें, एकठी करके, उस घडेमें डालदी, फिर सबोंको आज्ञा दी के, जिसके हाथ डालणेसे, जिसकी कंचुकी जिसके हाथ लगे, वह चाहै माता हो, चाहै बहिन, बेटी, कोई हो, उससें रमण करे, अर्थात् मैथुन करै, वह गुरू वो देवीसें रमण करै, उस जोगीका और देवीका वीर्य जो निकले, उसकों एक पात्रमें लेकर, पुष्पोंके बीच धरके, भजन गायन करै फिर वह वीर्य, घी सहत मिलाके, सबे वाममार्गीचाटे, इस तरह इन्होंके चार मार्गी घूम

मार्गी १ बीजमार्गी २ काचलिये ३ और कौल ४ इन चारोका स्वरूप देख, राजा अचम्मेमें, रह गया, राजा अपने महलमे आया, प्रभात समय, स्नानकर, कोई तो भस्मी लगा, रुद्राख्य धारण करा, पंचकेशी, पावोंमें खडाऊ, वगलमें मृगछाला, पुस्तक, कमण्डल धारे हुए, ओं नमः सिवाय जपते हुए, ब्राह्मण पधारे, कोई रामानन्दी त्रिपुण्डधारे, तप्त मुद्रा लिए भये, कोई माधवाचारी तिलक किये, कोई केशरकी आडम्बर खेंचे, कोई कुकुमके दो फाड तिलक किये, कोई मूछ मुडाये, लम्बी एक लङ्क खुली धोती, कुसा डाभ बिछाकर, बैठणेवाले, नानाप्रकारसें, विप्रगण पधारे, राजाने उन्होंको देखतेही, सुभटोंको हुक्म दिया के, जल्लादोसे, इन सवोंको मरवाढो, इन्होंने मेरा देश, कापट्यतासें, डूबादिया, बस उन सबोंको राजानें, मरवा डाला, वे मरते कुछ शुभ अभिप्रायसें भूत हुए, अब नगरीमें, घरोंमें विष्ठा वर्सावै, पत्थर फेंके, इत्यादि बहुत उपद्रव करणे लगे, राजा इस बातसें बहुत दुखी हुआ, इस समय, तरुण प्रभसूरिःरुद्रपल्ली खरतराचार्य, उस वनमें आए, ये स्वरूप सुणके राजा, उहां आया, सब स्वरूप कहा, गुरूनें कहा, जो तूं, जैनी श्रावक हो जावै तो, अभी उन सबोंको, बुलाताहूं, राजाने कबूल करा, गुरूने जिनदत्तसूरि दत्ताम्नाय विधिसें, आकर्षण करतेही, भूत प्रकट हुए, गुरूनें कहा खबरदार आज पीछे ऐसा उपद्रव, मत करणा, नहीं तो कीलन करताहूं, भयसें, सब भूतोंनें, कबूल करा, और अन्यत्र चले गये, गुरूनें उस राजाकी, भूत तेडिया जात प्रसिद्ध करी, लोग भूतेडिया कहणे लगे, मूल गच्छ खरतर,

(जाडिया गोत्र)

सवालख देश, नागोर मेडतेके शमीप कुम्हारी नगर, यादव भाटी, कुलधर राजा, उसके राणी तो ३२, परन्तु पुत्र किसीके भी नहीं, उस चिन्तामे राजा दिलगीर था, इतनेमें श्रीजिन कुशलसूरिः, दादा साहिब उहा पधारे, तब दिवाननें कही, आप चिन्ता छोडके, इन महाराजाके, चरणका जल राणियोंको पिलाओ, यह गुरू दादासाहिब हाजिरा हुजूर साक्षात् देव है, जिस करके जरूर पुत्र होगा, तब राजाने, बडे हगामसें, गुरूकू, नगरमें

पगमंडे कर, चरण धोकर, केशरादिक उत्तम अचित्त द्रव्यसें नव अंगकी पूजा, देवमूर्त्तिकी तरह करी, और वह चरणामृत ३२ ही राणियोंकों भेजा, और राणियोंकों, कहला भेजा कि, इस जलकों, बांट २ कर, पीजाओ, इसमें २१ राणियेंनें तो, गुरूकी भक्तिं करके, पी गई, ११ राणियोंनें सुझा कर नहीं पिया, २१ राणियोंके तो पुत्र हुए, ११ राणियोंके नहीं हुए, उस दिनसें खरतर गच्छके सब श्रावक गुरूका महान् अतिशय जांण, पट्ट धारियोंका, चरण प्रक्षालन कर, नंव अंगे पूजणे लगे, उस पर मोहर रूपिया वगैरह चढाणे लगे, पीछै बादसाह अकब्बरनें फुरमाण लिख कर आम श्रावकोंसे, प्रारम्भ करवाया, खरतरा चार्योंने, द्रव्य लेणा नहीं चलाया, शाहन्शाहनें ये रिवाज प्रारम्भ कराया, सो श्रावक लोक करते है, और करते चले आये है, अब तो श्रावकोंकों कुछ २ संकल्प विकल्प भी उत्पन्न होता है, मगर इतना खयाल नहीं करते के, प्रथम इन आचार्यों विगर, तुम जैन धर्मको क्या जाणते, दुसरा तुम सबों पर, बादशाह हुमायूका जुल्मका हुक्म, मुसल्मान बनानेका था, सो श्री जिनचन्द्रसूरिः न प्रगटते तो, इक लाय लाय इल्लिल्ला महम्मदे रसू ल्लिल्लाके कल्मासरीक होना पडता, और इन्हेंके पहले लाखों मनुष्योंकों, बादशाहनें हिन्दुओंसें मुसल्मीन कर भी डाला था, उस उपकारकों देखते, द्रव्य कोई चीज नहीं है, पद्म सूरिः महाराजका चतुर्मास, नागोर था, तब राजा गुरू महाराजका, अडोला २१ सोई पुत्रोंके सिर पर रक्खा, और गुरूके पास लेकर आये, गुरूनें कहा आवो बच्चे अडियाओ, इधर आवो, गुरूनें सबों पर वास क्षेप करा, वह जडिया गोत्र प्रगट हुआ, इन्हीं २१ सोंकी कई २ न्यारे २ नख भी, हो गये, सो लिखणेका अवकाश नहीं, मूल गच्छ खरतर, ।

---

१ सूरि अने साम्राट् ग्रंथ विद्याविजयजीनें लिखा है, उसमे हीरविजयसूरि जीकी पृष्ठ २६४ मांडण कोठारी, मोहरोंसे, पृष्ट २७६ में अबजीभणशाली स्वर्णमुद्रासे, पृष्ट-२६५ मे छ हजार मोंहरोंसे राधनपुरमें पूजा करी, इस प्रवाहानुसार श्रीपूजजीकी पूजा द्रव्यसे सरू है हीरविजयसूरि जींकों त्यागी वैरागी सब मानते हैं,

(कांकरिया गोत्र)

कंकरावत गामका खेमटरावका पुत्र, राव भीमसी, पड़िहार, राजपूत, चित्तोडके राणाका सामंत वह राणाजीका हुक्म मानें नहीं, और न नौकरीमें जावै राणाजीनें तलब करा लेकिन' गया नहीं, तब राणेजीनें इसकों पकडने शेन्या भेजी, स. ११४२ में खरतर गच्छाचार्य श्रीजिन वल्लभ सूरिः माम्य योग ककरा गांममें पधारे, राव भीमसी, राणेजीके क्रोधका समाचार कहा, गुरूने कहा, सैन्या यहा आवेगी, उसका में प्रयत्न कर दूंगा लेकिन तुम हमारे श्रावक जैनी हो जावो तो, भीमसीनें श्रावक व्रत लिया, तब गुरूनें, काकेर बहुतसे मंगवाये, और उस पर दृष्टि पास करा और राव भीमकों कहा के, जिससमय, राणे जीकी शेन्या आवै, उस समय, तोपों पर बन्दूकों पर तलवार वगैरह शस्त्रों पर, राणेजीकी सेन्या पर, ये काकरे डाल देना, सो सब शक्ति हीन हों जायगे, और में मास कल्प यहा धर्म ध्यानसें करूंगा, शेन्या आने पर अपने विश्वासी ब्राह्मन पोकरनेकों देकर, वह काकरे हर शस्त्र अस्त्र फोजी लोकों पर डलवाये, सब तोप, बन्दूक छूटनेसें रह गये, तरवारसे एक पत्ता भी नहीं कटे, तब निरास होकर, शेन्याके लोकोंनें, राणाजीकों लिखा, राणाजीनें, सात गुना माफ कर दिया, और तुम्हारी नौकरी माफ तुम्हारे हमारे मध्य परमेश्वर है, इत्यादि खातिरीसें खास रुक्का लिखा, तब राव भीमसिंहनें गुरूकी आज्ञा मांग चित्तोड गया, राणाजीनें सत्कार किया, सब हाल पूछा, तब राव भीम सिंह बोला, गुरूश्री जिन वल्लभ सूरिःका, काकरिया करामाती है, मेरेमें तो अकडाई है, उस दिनसें कंकरावत गामसें कांकरेके मंत्र अतिशयसें, काकरिया गोत्र, हुआ, मूल गच्छ खरतर, ।

(आवेड़ा तथा खटोल गोत्र)

मारवाड गांम खाटूका चौहाण राजपूत आडपायत सिंह, १ बुधसिंह २ थे उन्होकी सं. १२०१ में श्री जिन दत्त सूरिः नें लक्ष्मी कामना पूर्ण कर जैनी करा आडपायतरा आवेडा, बुधसिंहका पुत्र खांटूगांव, से खटेड हुआ,

मूल गच्छ खरतर, । सं. १९८७ में कई २ इन वंश वाले और गच्छमें गये ।

(खेतसी पगारिया मेड़तवाल)

पमार राजपूतोंका गुरू शंकर दास ब्राह्मन, सनाढ्य था, सं ११११ में श्री अभय देव सूरि.का उपदेश सुण भीनमाल नगरमें शिव धर्म त्याग जैनधर्मी हुआ, अभय देव सूरिःको मलधार बिरुद था इस वास्ते मूल गच्छ खरतर. बाद और गच्छमें कई २ गये ।

(श्री श्रीमाल)

श्री दिल्ली नगरमें श्रीमन्त साहश्री मल्ल महतियाण जात पेड़ पमार, यह बादशाहके खजानेके मालिक थे, बादशाह श्री मल्लशाहसें, धर्मके बाबत हमेश ठट्ठा करता था, तुह्मारे साहजी ईमान तो जगह पर है ही नहीं, ब्रह्मादेव, विष्णुदेव, महादेव, देवी, सूर्य, अग्नि, पानी, गणेश, इस तरह, अगर गिनावें तो साहजी लाखसें कम नाम नहीं होंगे, तब कहो, ईमान तो कहां रहा, शास्त्र तुह्मारे पुराण ऐसे हैं सो, ठोड़ न ठिकाना, एक पुराणकी बात दूसरे पुराणसें गलत है, सो तुम जानते ही हो, मैंने एक दिन जिन चन्द्रसूरिःसेवड़ेसें, धूर्त्ताख्यान हरिभद्रसूरिःका बनाया हुआ, सुना था, सो तुह्मारे पुराणोंमें, ठगाई और पागलके बनायेसें मालूम देते हैं, गुरू तुह्मारे भोजन भट्ट, आजीविका करनेमें हुशियार, तुलसीकों माता कहै, और चाब जावे, शालगराम गंडकी नदीका पत्थर, उसकों ठाकुर कहै, और काती सुदी ११ कों बेटाजी, तुलसीमां, सालग बापका, ब्याह अपने हाथ करे, हमारे खान सलेमनें कहा था कि, लंब बादी ऐसा नर, जो पीर बबरची भिस्ती खर, सोतो ब्राह्मण तुह्मारे गुरूकों ही देखके, कहा था, नीचसे नीच जातका दान ले लेते है, छोकरे खिलाता, पाणी पिलाता, बोझा उठाता, सन्देशा लाता सईसी, कोचवानी, ऐसा काम कोनसा है, जो तुह्मारे गुरू नहीं करते है. उडिया देशमें जगन्नाथ तीर्थ मै, पंजाब कास्मीरमें, बंगाल वगैरहमें, ब्राह्मण मच्छी बकरेका गोस्त खाते है, वेद तुह्मारे ऐसे हैं

जिसकों तुम, खुदाके कहे हुए मानते हो, उसमें किस जानवरकों, मारके खाणा अंगारमें होमके नहीं बतलाया, छी छी इस वखतके जरूर मुसल्मान लोग गोस्त खाते है, मगर ये नहीं कहते हैं कि, खुदाका हुक्म है, कुरानकी रूहसें जानका मारनेवाला गुनहगार है, देखो वेदमें चारों वर्ण वालोंका वेटीका द्यमाद घर पर आवे, तब पहली मधुपर्क करना, यानें, गऊको जिवह करनी, फिर उस गोस्तको उबालकर, सब घर वालोंसें, मिजमानी करनी, साहजी मुसल्मीनोंको, क्यों बुरा कहते हो, हाथ लगजाय तो, स्नान करते हो, मुसल्मीन जाजमपर बैठ जाय तो, जल नहीं पीते हो, जैसै तुह्मारे ब्रह्मण वेदके मंत्रको पढ़कर छुरियोंसे, वा, गला घोट कर, घोडा बकरा हिरण वगैरहको, अंगारके कुण्डमें, हवन कर खानेसे स्वर्गमें जाना मानते है, ऐसे हमारे काजी पाजी बिसमिल्ला कहके, जानवरोंकी गरदन काटते है, जैसा वेदका मंत्र, वैसा हमारे मजहबका बिसमिल्लाह, अरब्बी मंत्र कुरानी है, इस तरह हमेश बादशाह, ताना दिया करै, श्री मल्लजी मुहता, इस बातकों हमेश विचारे, और पुस्तकोंको देखे तो, बादशाहके वचन, सच्च मालुम देते हैं, एक दिन बादशाहनें कहा, देखो साहश्री मल्ल, तुह्मारे सब देव ऐसेही जिन्होंसे तुम तरणा चाहते हो, भागवतके दुसरे स्कंधमें तुह्मारे ब्रह्माजीने सराब पीकर अपनी बेटी सरस्वतीसे जना किया, तोबा २, जिसके बनाये वेद, और उसकी सन्तान ब्राह्मन, जो कुछ करे सो, थोडा है, इस समयमें, खबर नवेसीने खबर दी के, हजूर, जापनाह ,जिन चन्द्रसूरि.से बडा आया है, बादशाह श्री मल्लको साथ लेकर, सामने गया, आदाब अरज बजाकर, सामने बैठा, गुरूनें देव तत्व गुरुतत्व और धर्म तत्वका, स्वरूप धर्मोपदेश दिया, बादशाहनें मांस खाना छोड दिया, श्री मल्ल साह प्रतिबोध पाकर निर्दोपित जैनधर्मका श्रावक हुआ. बादशाहनें कहा अहो श्री मल्ल, अब तेरा जन्म, सफल हुआ, मैं इस धर्मको अच्छी तरह जानता हूं, मगर इस धर्मके कायदे करडे बहुत है, खुदासे मिल जाणें वास्ते, दुनियामें ये एकही धर्म है, बादशाहनें, उसदिनसें, अम्बाडी, मोर्छल, चमर, छत्र, बख-

सीसकर, राना श्री श्री मल्ल, लिखकर, कुरब हाथी निवेश, और तानीम दी. तुह्मारी शन्तान सदाके लिए पावोंमें, सोना पहर सकती है. इसकी औलाद श्री श्रीमाल कहलाये, भाईपाइनोंका, श्री मालोंसें रहा सादी मिजमानी श्रीमाल ओसवाल दोनोंसे, कोई ख्यातमें लिखा है श्री मालोंमें महतियाण गोत्र जो है सो ही श्री श्रीमाल पदवी पाई है, धर्म पहले शैव विष्णु सर्वोकाही रहा था, मूलगुरू गच्छ खरतर है,

(बाबेल संघवी,)

-चौहाण राजा, बाबेल नगरका, रणधीर, रगतपित्तके रोगसें दुखी था, उसनें कई वैद्योंसें इलाज करवाया, लेकिन आराम नहीं हुआ संवत १२७१ की सालमें श्री जिन कुशल सूरिःजीके गुरू श्री जिन चन्द्र सूरिः, उहां पधारे, राजा वांदणे आया, राजाका वदन जगह २ से फूट गया, गुरूनें कहा, हमारे श्रावक होवो तो, आराम होसक्ता है, राजानें कबूल किया, गुरूनें रातकों चक्रेश्वरी देवीकी आराधना करी, देवींनें संरोहणी औषधी दी, प्रभात समय गुरूनें पेटमें पिलाई, और ऊपर भी लगाई, सात दिनसें, कंचन काया हो गई, बाबेल नगरसें, बाबेल कहलाये, इस वक्त वो गांम वापेऊ बजता है, मूल गच्छ खरतर, फेर सत्रुंजयका संघ निकाला, वो बाबेल संघवी बजते हैं, ये संघवी दूसरे है संघवी, और कोठारी, बहुत जातमें है ।

(गड़वाणी मड़गतिया)

गडवा राठोड अजमेर परगणा, गांम मखरींमें, श्री जिन दत्तसूरिनें, प्रति बोध देकर, धनकामना पूर्ण करी, गडवेजीसेगड़ वाणी, मस्करी करनेंमें भड़क उठा, जिसवास्ते पूरसिंहजी कूं लोक मड़गतिया, कहने लगे । गच्छ खरतर सवालख देशमें सोढा राजपूत सवासौ रूणवाल वेगाणी गोत्र घर-रूण गाममें रहते हैं, उन्होंका मुख्य ठाकुर, वेगानी, उन्होंके पुत्र नहीं, और क्षीणताकी बिमारी, अकस्मात् श्रीजिन दत्तसूरिः, सवालाख देशमें विच, रते २ पधारे, सोढे राजपूत सब गये, और ठाकुरकी, हकीकत कही, गुरू बोले, क्षीणता मिट जायगी, जो तुम जैनधर्मी हमारे श्रावक हो जाओतो,

इन्होंनें-ठाकुर वेंगेजीको कही, उसी समय सपरिवार आके मिथ्यात्व त्यागके जिन धर्मी हुए, रूण गामके नामसें रूण वाल गोत्र हुआ, गुरूनें वेंगेजीकों उपसर्ग हरस्तोत्रका, कल्प साधन वतलाया, दूध घृत चावल मिश्रीकी क्षीर खाकर, एक वखत, अरण्य वास, एकान्त ध्यान, सवालक्ष करना, वतलाया गुरू विहार कर गये स. १२०२ में रूण वाल गोत्र हुआ ६ महिना साधनासें, एक महिष जितना वली हो गये, गुरूदेव सं. १२११ में अज-मेरमें, देव लोक हुए, तव गुरू महाराजके प्रेमी, जो विमानक वासी देव हुए थे, उन्होने आकर सर्व खरतर गच्छके संघको कहा तुम्हारे गुरुदेवसो धर्म-देव लोकमें, चार पल्पकी आयुसें, टक्कलविमानमें, देवता हुए है, तव संघनें कहा, श्रीमधर स्वामीसे पूछके, निश्चय कर दो, गुरू महाराज कितनें भवसें, मुक्ति सिधायगें, तव वह देवता, महा विदेह पुंडरीकणी नगरीमे, श्री सीमंधर भगवानकों, वंदन स्तवन कर, खडा रहा, तव श्रीमंधर जिनेश्वरनें दो गाथा कही, वह गाथा, गुर्वा वली, तथा गणधर पद वृत्ति प्रमुख ग्रथोंमें दरज है, परमार्थ उसका ऐसा है, टक्कल विमानसें—चवके तुम्हारे गुरू, महाविदेह क्षेत्रमें, श्रीमन्त कुलमें जन्म लेकर, एक भवावतारी; उहासे दीक्षाले, केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष होंयगें वह देवता, यहां सर्व खरतर संघको, वह गाथा श्रीमंधर स्वामीकी कही सुनाई, तव सर्व संघनें, जगह २, ग्राम २ नगर २ में, गुरूके चरण थापना कर पूजने लगे, धर्म दाता सम्यक्त्व व्रत देणेके, उपकारी, जिन्होंने लाखोंजीवोंको, जिन धर्म देकर, तार दिया, इन्होंके पाट मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिः विराजै, वह गुरू रूण पधारे, तव वेगाजीनें पुत्रकी वीनती करी, गुरूने क्षेत्रपालसे पूछी, खेडिये क्षेत्र पालनें, जो विधी कही, चक्रेश्वरी देवीकी पूजा, वतलाई, चैत्र सुदी आशोज सुदी, अष्टमी, नोरल चढाकर, लपसीका, नैवेद्य करनेसें, पुत्र होगा, वेगेजीके पुत्र ४ हुए दो पुत्रकी शन्तान नागोरमें स. १५७७ में लोढा तपगच्छियोंकी बेटी व्याही थीं, पार्श्व चन्द्र सूरिःनें, तपागच्छमेंसे अलग सम्प्रदाय निकाली; तव वेगाणी २ पुत्रोंकी शन्तान, उस सम्प्रदायकों मानने लगी, गुरू खरतर को भी मानते हैं, मूल गच्छ खरतर, बीकानेर वगैरहमें वसते है।

(पोकरणा गोत्र)

गांम हरसोरका राठौड सकत सिंह, अपने परिवार समेत पुष्कर तीर्थके मेले पर, स्नान करनेकों, पधारे, उहां एक स्त्री, जिसके ४ छोटे २ पुत्र, और उसके सगा सबंधी कोई नहीं, वह विधवा स्त्री अपने ४ पुत्रोंकों, कुछ खानेकों देकर, घाट पर बिठाकर स्नान करने लगी, इतनेमें गोहने, आके, उस स्त्रीके पावोंमें, तन्तु डाला, वह स्त्री पुकारी, इतनेमें खरतर गच्छके, श्रीजिन दत्तसूरि महाराजका शिष्य देवगणिः अकस्मात् थंडिल, जाके आ निकला, सकतसिंह बोला, अरे दोडोरे दोडो, कोई नहीं गिरा- सकतसिंह दया लाकर, उस स्त्रीकों पकडने कूदा, इतनेमें गोहनें, इनकों भी, तन्तुसें, खेंचा, तव देवगणिःने, जल निस्तारणी, अमोघ विद्या स्मरण कर, कहाकेमें, मेरा श्रावक जांण, बचाता हू तत्काल ऐसा आश्चर्य हुआ के, मानो हाथ पकडके, कोई निकालता होय, दोनोंको घाटपर लाके खडा कर दिया, हजारों आलम, ये चमत्कार देख, देवगणिःके चरण पकडे सकतसिंहने देवगणिःके चरण पकडके कहा, हे गुरू आपन होते तो आजमे, इस जीवका भक्ष होगया था, धिक् है ऐसे धर्मके चलाणे वालोंको, जो हजारों सूक्ष्म और बडे जीवोंका घात, आत्माका घात, ऐसा नदी, कुण्ड तलावोंमें, प्रवेश कर, स्नान धर्म बतलाया, अब आपने जैसा मुझे जिवतव्य दिया है, ऐसामें ऋणमुक्त हो जाऊ ऐसा करो, तब देवगणि बोले हे महाभाग, मेरे गुरू अजमेरमें है, सो कल यहा पधारेंगें, चौमासा आज उतर गया है, दुसरे दिन गुरू पधारे, धर्म सुनके, ४ पुत्र, उस महेश्वरीके और सकतसिंह सह कुटुम्ब जैन महाजन हुआ, किसी जगह लिखा है इनमें पुष्करने ब्राह्मण श्रावक हो गये इससे पोकरणे गोत्र नाम प्रगट्य मूलगच्छ खरतर पुष्करसें पोकरणा कहलाये।

(अथ कोचर-गोत्र)

पृथ्वी अनादि, श्रेष्टि अनादि, छ द्रव्य अनादि, द्रव्य गुण नित्य, पर्याय अनित्य, उत्सर्पणी कालवर्त्तकर, अवसर्पणीवर्त्ते, ऐसे-अनंते काल चक्र बीता, और बीतेगा, श्रीआदीश्वर भगवांनसें, जैन धर्म चला, आदिश्वरके

संग, ४ हजार राजवियोंने, दीक्षा ली, उन्होंसे, भूख नहीं सही गई, तब बनमें जाकर, ऋषभ देवका एक हजार आठ नाम बनाकर, गंगाके तट पर, आदि ब्रह्मा, आदि विष्णु, आदि शिव, आदि योगी, आदि बुद्ध, पुरुषोत्तम, जगत्कर्त्ता, इत्यादि स्तवन करते, फलफूल खाते, गगाजल पीते, वृक्षोंकी छाल ओढते, विछाते, तीनसे तेसठ मत उन्होंसें चला, वल्कल चीरी तापस कहलाये, ऋषभ देवके पोते, मरीचीनें पहले तो जैन दीक्षा ली, जब क्रिया लोच वगैरह नहीं कर सका, तब सुखदाई दण्डीका भेष बणाया, इसका चेला कपिल, कपिलका आसुरी, आसुरीकों कपिलदेव ब्रह्मदेव लोकमें देवता हुए पीछै प्रकृती १ और पुरुष दोसे २५ तत्वसृष्टिका अनादि पना सिद्ध करा इसके शिष्योंकी संप्रदायमें, शख आचार्यसें, साक्षमत प्रसिद्ध हुआ, भरत चक्रवर्तिनें, इन्द्रके कहनेसें, बारह व्रतधारी श्रावकोकों, भोजन कराया, वह भरत राजाकी भक्तिसें, माहन कहलाए, संस्कृतम, माहन प्राकृत शब्दका (ब्राह्मन) मतहन, यानें ब्रह्मकों पहिचान, यथा राजा, तथा प्रजा, छखंडके लोक, माहनोंको, भोजन वस्त्रादिसें सत्कार करने लगे, विद्या माहण लोकोंके बालक पढणे लगे, तब भरत चक्रवर्तिने, इन्होंको पढाणें, ऋषभदेव, ४ मुखसें, समवरणमें, देसना देनेवाले, आदि ब्रह्माके बचनानुसार, अहिंसा धर्मका स्वरूप त्याग व्रतका स्वरूप, छ द्रव्य, नवतत्वका स्वरूप, स्याद्वाद न्याय, गृहस्थके उपनयन, सोलह संस्कार वगैरह अनेक भावमिश्रित जिनयजनका स्वरूपरूप, चार आर्य वेद रचकर संसार दर्शन वेद १ संस्थापन परामर्शन वेद २ विद्या प्रबोध वेद ३ तत्वावबोध वेद-४ पाठशालमें पढाणे लगे, ६ महिनेसें परिक्षा अनुयोग होनेपर, विद्या मुजब इनाम पारितोषिक देणे लगे, और गृहस्थोंकें माननीय, ७२ कला, जो ऋषभ देवनें, दुनियाके सुख जीवनके लिए, ग्रन्थ बनाकर, प्रजाकों सिखाया था, सो सब ग्रन्थोंपर हक्क, चक्रवर्त्तिनें, माहणोंकों सोंपे, सोलह संस्कार गृहस्थोंके, जन्मसे लेकर मरण पर्यन्त, गृहस्थोंका करवाना, माहनोंके सुपुर्द करा इन्होंमेंसे, वैराग्य पाकर बहुत माहण लोक, ऋषभ देवके पास दीक्षा ले लेकर जगह २ साधू होते रहै, गृहस्थ धर्ममें, त्रिकाल श्रीजिनमूर्तिका

अष्टद्रव्यसें, नाना प्रकारसें, याग (पूजा) करते, साधुओंको वन्दन व उनका व्याख्यान सुनना, व्रत पच्चखान ९ अनुव्रत ३ गुणव्रत ४ शिक्षा व्रत, पर्व तिथीमें पोसह करनेसे, पोसह करणा माहण प्रसिद्ध हुए, जिन्होंकी आज्ञासें माहण लोक प्रवर्ते उपधान, आवश्यकादि षट्कर्म करै, उन २ अत्यन्त उत्कृष्ट ज्ञानवन्त माहणोंको, चक्रवर्त्तीने आचार्यपद दिया, जो वेद आवश्यकादि सूत्रोंके अध्यापक, उन्होंको उवझाय (यानेउपाध्याय) पद दिया, जो आचारजओझा अपभ्रंस शब्दोंसे पुकारे जाते हैं, एक दिन, भगवान कैलाशपर समवसरे भरत वांदणेकों गया, और माहण वंश स्थापन करणेकी वधाई सुणाऊं, इस अभिप्रायकों, भगवानने, फरमाया, हे राजा, जो उत्कृष्ट श्रावक, माहण नामसें, तेंनें, स्थापन करा है, वह सब नवमें भगवान सुविधिनाथ निर्वाण तक तो, जैनधर्मी रहेंगे, पीछे जैनतीर्थके साधू बिल्कुल विच्छेद हो जांयगे, तब, ये माहण लोक, तेरे बनाये, सम्यक् श्रुत, ४ वेदोंमें, अपनी पूजा प्रतिष्ठा वढानेको, सर्व देवोंके देवमाहण, हैं, इत्यादि आजिवीका जमाने, श्रुतियां वणा २ कर डालेंगे, और क्रम २ सें, जैन धर्मके द्वेषीपणे कर अनेक मतोंके विश्वकर्मा वण बैठेंगें, सर्व ग्रन्थोंमें क्रम २ सें, मिथ्यात्व भरते जायगे, आगे इन्होंमें, याज्ञवल्क्य उत्पन्न होगा, सो यथार्थ वेदकूं त्यागके, नई कल्पना कर, याज्ञवल्क्य हो वाच इत्यादि अपने नामका वेद श्रुति, जिसका नाम ही परावर्त्तन करेगा, फिर पर्वत, और राजा वसुके समय, यज्ञ शब्दमें, हलते चलते, जीवोकों, हवन करणा मांस भक्षण करणा, वेदका धर्म पर्वत करेगा, भावी प्रबल है भवतव्यता टलेगी नहीं, चक्रवर्ति वहुत पछताणेलगा, फिर बोला, हे प्रभु, मैंने तो अच्छा काम, धर्मी जात थापना करी है, आगे जो करेगा, सो भरेगा, इसतरह ही हुआ, इस वेदमें हिंसा क्यों कर डाले गई, सो स्वरूप आठमें नारदने, रावणसें कहीं है, ये सब अधिकार, जैन रामायणमें लिखा है, इस तरह आर्य वेदकी कई २ श्रुति वेदोंमें, रह गई, वाकी सब, मासा हारी माहणोंने वेदको नष्ट भ्रष्ट कर डाला, जो श्रुतिया, जंगलमें रहनेवाले, ब्राह्मनोंको जुदी २ याद थी, सो व्यासनें

इकट्ठी करी, इस लिए उसकों ब्राह्मन वेद व्यास कहने लगे, प्रथम सज्ञा वेदकी तीन ही करी, ऋग् १ यजु २ और साम ३ फिर, इनमेंसे, उद्धार कर चौथा अथर्वण बनाया, इस तरह ४ इन्होंमेंसे, परमार्थकी बात बिल्कुल दोसे चार सय श्लोक संक्षा होय तो, आश्चर्य नहीं, बाकी यूं यज्ञ शाला बनाना, यो बोडेको बाधणा, यूं फरसीसें काटणा, यूं अग्निमें पकाणा यो फलाणेको हिस्सा देणा, माता मेध, पिता मेध, अश्व मेध, गौमेध, छाग मेध फलाणे देवताकों, इस तरह यज्ञ कर तृप्त करणा, सोत्रा मणीं यज्ञ कर, मदिरा पीणा. इत्यादि अधिकार, ही भरा है, इतिहास तिमिर नाशकका तीसरा प्रकाश देखो, वेदोंके भाष्यकार संस्कृत कायदेसें वेदकी श्रुतियोंमें विरुद्धता देखकर, आर्षत्वात् ऐसी समाधानी करते है, इस तरह वेदका हाल डाक्टर मेक्स मूलर सस्कृत साहित्य ग्रथमें लिखते हैं कि वेदके मंत्र भाग बणेको, ३१ सो वर्ष, और छंदो भाग बणेको, २९ ससैं वर्ष मात्र हुए हैं, दुसरी बेर वेद फिर लिखणेका समय विक्रम सम्वत् तीनसेमें मुन्शी जीयालाल अग्रवाल फरुख नगरवाला, सिद्ध करता है, और पुराणोंका बनाना विक्रम सम्वत् सातसेमें, उक्त पुरुष सिद्ध करता है ये मनुष्य भी बडा खोजी नर रत्न है, पहले इन्होंका वंश वेदमतका था, इन्होंके पिता श्वेताम्बर जैन हुए, अभी ये दिगम्बरी जैन अच्छेगृहस्थ सुननेमें आते हैं, कोचर वंशोत्पत्तिमें, ये बात इसवास्ते लिखी है के, कोचर वशाके बडेरे, पहले तो जैन धर्मी थे, बाद फिर वेदमतमें होगये, बाद फिर जैन राजा हुए, बाद सुजाण कवर परम जैन धर्मी राजाके, ७२ सामन्त. परम जैनधर्मी थे, जिसका फिर, इन ७३ पुरुषोंको माहेश्वरी होना पड़ा, सो वृत्तान्त यहां थोड़ा लिखते हैं, जैन इतिहास मुजब,—

खंडप्रस्थ नगर, जो अब मालवदेशकी सीमापर खण्डेला बजता है किसी इतिहास लेखकने खंडेला जयपुर शमीपस्थ लिखा है खंडेल राजा परम जैन धर्मी था, गुरू इनके दिगम्बर जैन थे, राजानें भट्टारकजीसें पूछा, मेरे पुत्र नहीं. सो स्वामी क्या कारण है, भट्टारकजी बोले, चैत्यालयमें, नाना- विधीसे पूजन करा अतिथी भिक्षुकोंको, दान दे, साधर्मी वात्सल्यता कर, तब

सम्यक्ती देव प्रशन्न होकर, तेरी कामना होणी है तो, पूर्ण करेंगे, राजाने, अपने राज्यमें वह पुण्य कृत्य कराणा प्रारम्भ किया, १२ महिने सम्पूर्ण होनेसे, चक्रेश्वरी देवीनें, आकाशवाणी करी के, हे राजा, पुत्र तो तेरे होगा और दयावन्त, दातार. शूरवीर भी, होगा, परन्तु ब्राह्मण मिथ्यात्वी उसकों, धोखा देकर. मिथ्यात्वी, और भिक्षारी कर देंगे ब्राह्मण यज्ञथम्भ, जहा रोपते है, उस थम्भके नीचे अरिहन्तकी मूर्ति गाड देते है, जिससें कोई दयाधर्मी देवता देवी वगैरह उस यज्ञको विध्वस करे नहीं, इस लिए सम्यक्ती देवता तो, उस यज्ञके पासही नहीं फुरकते है, ऐसा कह, देवी अन्तर्ध्यान हुई, पुत्र हुआ सुजाण कवर नाम दिया, सम्पूर्ण ७२ कला सीखके हुशियार हुआ नवतत्व स्याद्वाद न्याय पढा, पितानें, पुत्रकों कहा, हे पुत्र अपने सुभटोंकों भेज २ कर, कहाई भी हिंसक यज्ञ मत होणे देणा, लेकिन तूं खुद यज्ञ होता हो, उहा मत जाणा, ऐसी शिक्षा देकर राज्य तिलक देकर, आप अनसन आराधकर स्वर्गवास हुआ अब राजा सुजाणसिंह, जिनेन्द्र देवके, गाम २ में, मन्दिर पूजा धर्मध्यान करता, जैनमुनि जैन साधर्मीयोंकी भक्ति करता, दयावन्त, कहीं भी जीवोको कोई मारने नहीं पावे, ऐसी उद्घोपणा कराता हुआ सुखसे सामायक, प्रतिक्रमण, पोसह, दान, शील, तप भावनामें लीन, अपने सामन्तोंकों भेज २ कर, जगह २ हिंसक यज्ञ, ब्राह्मनोंका बंद करा दिया, जैनधर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनोंको समतुल्य गिनता हुआ, जैन ब्राह्मनोंकों लाखों क्रोडोंका द्रव्य देता हुआ हिंसक जीवोंको सजा देता वेदकी हिंसा जगह २ बन्ध करवादी, तीन दिशामें दयाधर्म सर्वत्र फैला दिया, उत्तराखण्डमें, म्लेच्छ मांसाहारियोंकी वस्ती, गुण पचास, बडी राजधानियोंमें, म्लेच्छोंहीकी वस्ती समझ इस दिशामें धर्मोपदेश नहीं करवाया, अब इस समयमें मासाहारी ब्राह्मनोंको, मास मिलणा मुशकिल हो गया, पहले तो देवताओंके नामसें, यज्ञके बहानेसें, घोड़े बकरेका मास मिल जाता था, तब काश्मीर देशमें, ब्राह्मनोंने गुप्त सभा-- वेद धर्मी मासा हारियोंकी सुजाणसिंहके भयसें, इकठी करी, उहां ऐसा भाषण करा ईश्वरका कंहा हुआ वेद, उसका जो कर्मकाण्ड अश्वहवन गऊ

हवन, मधुपर्क वगैरह, पाखण्ड नास्तिकमती बौद्ध जैनोंनें, बन्द कर दिया, पुरोडासा यज्ञकी मांसप्रसादी देवता, पितर, ब्राह्मनोंको जो मिलता था, सो सब बन्द कर दिया, इस वास्ते ऐसा कोई ऊपाय होणा चाहिये, सो यज्ञ पीछा शुरू हो जाय तब पांच ऋषियोंने इस बातका प्रचार करणा कबूल करा, और मनमें पाचों दाय उपाय सोचते, मरु धरमें आये, यहा इन्होंकों, ४ राजपूत मिले, जिन्होंको सुजाण कंवरने नोकरी व जागीरसें, वे तरफ कर निकाल दिये थे, वह चारों, आबूगिरी राजकी तलहटीमें पाचो ऋषियोंको मिले, इन्होने अपना २ दुःख उन ब्राह्मनोंको कह सुनाया, बस ब्राह्मनोंको, भूखोंकों भोजन जाने मिला, विचार करा ये ४ उस सुजाण सिंहके, घरके भेदु हैं, अपना मनोरथ, इन्होंसे सिद्ध हो जायगा ऐसा विचार कर बोले, तुम हमारे कहे मुजब, करो तो, राज्यपति, राजाधिराज बन जाओगे, उन्होंने कहा, हे ऋषियों अधोंको तो, नेत्रही चाहिये हैं, हम इसी आसामें फिर रहे हैं, वह चारों, इन्होंके संग होगये, आबूपर जाके, इन्होंको कहा के, हम यज्ञ करते हैं, तुम जीते हुए जानवरोंको पकड लाओ, यद्यपि धर्म उन्होंका जैन था लेकिन राज्यका और धनका लालची, क्या क्या, अकृत्य नहीं करता, वह चारों, जंगली भीलोंसें मिले, और उन्होंके हाथसें, तरह २ के जानवर पकडवा मंगाये, यहां ब्राह्मनोंनें अनलकुण्ड बनाया, और उन जीवोंको हवन करना प्रारम्भ करा तब वह राजपूत, घभराये, ब्राह्मनोंनें कहा हे राजपूतों, वेदमंत्रोंसे, जो देवता, इन्द्र, वरुण, नक्त, पूषा, वगैरहको, बलि दी जाती है, इन जीवोंकी, हिन्सा नहीं होती, ये जीव, और, करणे, कराणेवाले, सब स्वर्ग ही जाते हैं, बडा पुन्य होता है, अब उनके दिलका खटका दूरकर, ऋषियोंने, मांस आपभी खाया, और उन्होंको भी, खिलाया, पहाडके वासिन्दे, भील मीणोंको भी खिलाया, अब वह भील मीणे, इन्होंके हुकम बरदार-भये, ब्राह्मणोंनें कहा, हम जो छल करेंगें, सो तुम सुणों, हम एक ऋषिकों, महादेव बनायगे, एक भीलणीकों पारवती, और आबू पहाडसें ऐसी २, औषधी लाई जायगी, उसका धूवां लगते ही मनुष्य तत्काल बेहोस हो जायगे, तुम लोक भीलमेंणोंको संग लिए, यज्ञस्थानके आस

पास ही रहणा, और एक मनुष्यको भेजके सुजाणसिंहको, कहला भेज-णा कि, हे राजा तुमनें तो, सारे आर्यावर्तमें, यज्ञ करणा बध करवाया, लेकिन् ब्राह्मण तो, खण्डप्रस्थ नगरके पासही जीवहवनरूप यज्ञ शुरू करा है, वह जब यज्ञविध्वंस करणे आवेगा, तब हम उन्होंको, जहरका धूंवा देकर, अचेत कर भाग जायगें, तुम लोक उस वक्त खंडप्रस्थका राज्य लेकर चार भाग करलेणा, और ब्राह्मणोंकी भक्ति, राजसूयादि यज्ञ करणा ब्राह्मणोंको, ईश्वर समझणा, उन्होंकों, यथार्थ यह वार्ता पसन्द हुई, बस वैसाही, हुआ, वह सब ७२ राजा युक्त, विष धूम्रसें, अचेत हुए, जैसा क्लोरोफार्मसे होते है, उन्होंने, राज्य दबा लिया, ब्राह्मण भाग-कर एक योगीकों बैल पर चढ़ाकर, एक औरतको संग लिए, उन्होंके पास पहुंचे, ठंडा पानी छिडक कर उस मूर्छाका उतार करना ठंडे पदार्थ कपूर वगैरह सो विप्रलोग जानते थे, सो करवाया, वह जोगी बैल पर चढा, भस्मी लगाये, गलेमें साप, आदमियोंके खोपरियोंकी माला पहना खडा रहा, इतनेमें मूर्छा रहित उठे, शस्त्र इन्होंके पहले ही ब्राह्मणोंनें, उठा लिए थे, ब्राह्मन लोक बोले, अरे ये महेश्वर शिवपार्वतीनें, तुमकों सचेतन करा है, तुम सब ब्राह्मणोंके यज्ञविध्वस करणेको आये थे, तब दिया जो श्राप, उससे तुम पत्थर हो गये थे, अब तुम महेश्वरकी उपा-सना करो, इतनेमें एक मनुष्यनें खबर दी के खण्डप्रस्थमें, ४ पुरुष राज्या-धिकारी होगये है, तब ब्राह्मनोंनें सुजाणसिंहको कहा, अरे अरे तूं मृत्यु-नींदसे जागा, तबसे जागा नांम प्रगट हुआ, तब ब्राह्मणोंने, अपनी २ व्रत उन्हों पर लगाई, वह सब माहेश्वरी कहलाये, इन ब्राह्मणोंने, अपने वेद धर्म पर अपने पंजेमें गंठे बाद इन्होंकी स्त्रियें, बाल बच्चे, और कुछ २ व्यापार करणे लायक धन, उन ४ राजपूतोंसे दिलाया, उहा ये माहे-श्वरी जात हुई कोई कहते हैं, डीडवानेमें होनेसे डीडू कहलाए, उस नगरीका नाम महेश्वर धरा, वो चोली महेसर मालव देशमे है सुजाणसिंह पर ब्राह्मणोका द्वेष था, तब ब्राह्मणोंने कहा अरे भिक्षुक तू इन्होंकी पीढीयोंका गुणकीर्त्तनकर, मांग खा, वह इन बहोत्तरोंका भाट हुआ, विचारा करे क्या, परवस पड़े लगे.

नहीं कारी, ये सब उहां माल्वदेशसे, उठके मारवाड डीड वाणेमें आवसे वह सब महेश्वरी डीडू वाणिये कहलाये, ।

इन माहेश्वरियोंमें, जोगदेव पमारके बेटे भी, महेश्वरी डीडू होगये थे, सो कई पीढीयों तक माहेश्वर ही रहे, ये बातका पूरा सवत् तो हाथ लगा नहीं है, मगर विक्रम सम्वत् सातसैका जमाना सम्भव है, वह चार राजपूत पमार १ चौहाण २ पडिहार ३ सोलखी ४ इस जातके थे, अव्वल वो सुजाणके नोकर थे, कर्म वस राजाका तो जागामाट हुआ, और नौकरसो ठाकुर हुए, अब ब्राह्मण लोक इन महेश्वरियोंसें, कहणे लगे, तुम यज्ञ कराओ, और यज्ञका भाग पुरोडासा मास खाओ, तब ये राजपूत जैनधर्मीपणे, दयाके भींजे हुए अन्तरग, से बोले, हे ब्राह्मणों, ये अकृत्य तो, हमसे नहीं होगा, तुमको गुरू माना, महेश्वर देवभी पूजा, लेकिन ये काम तो, मर-जायगे तोभी नहीं करेंगे, तब ब्राह्मण, मरणे, परणे, दान, दापा, लेणा इन्होंसे, ठहराया, क्रम १ सें इन्होंकी सन्तान, ब्राह्मण मिथ्यात्वीयोंकी संगतसे, रात्रीको भोजन, बिगर छाणा हुआ पाणी, और कन्दमूलादि अभक्ष पर उतरते गये, पीछै स्वामी शंकरका मत चला, उन्होंने जगतमें दयाधर्म फैला हुआ देख, अपना सिक्का जमाणेको, जैनियोंको मारकुटके वेदपर यकीन तो करवाया, लेकिन यज्ञकी क्रिया तो जैनके हुए दयाधर्मीयोंकों, कब रुचे, तब ब्राह्मणोंसे संप करा, सल्ला विचार कर कहा, अब वेदकी क्रिया छोड दो, वेद ईश्वरोक्त है उसकी फकत श्रुतियां विना अर्थ सोलह संस्का-रादिकमें, काम लाओ, लेकिन यह बात कहते रहो, वेदकृत्य सच्चा है, ईश्वरोक्त है, यज्ञ करणा, सतयुगका काम था, अब कलियुग है, इसमें घी तिल खोपरा चिरोंजी, बिदामादिक सुगन्ध द्रव्यही, हवन करणा चाहिये, ऐसा कराते रहो, करते रहो, नहीं तो, ये लोक हिन्सा जीवोंकी देखकर, फिर जैन होजांयगे, और ऐसे २ शास्त्र बनानेका हुक्म ब्राह्मणोंको दिया के प्रजाका, दिल ठहरावो, तब पारासर स्मृतीमें ऐसा श्लोक डाला (यतः) अश्वालंभं गवालंभं, पैत्रिक पलमेवच । देवराच्च सुतोत्पत्ति., कलौ पच विवर्जयेत् । (अर्थ) अश्वहोमणा गौ होमणी, श्राद्धमें, तथा मरेके पिछाडी, पिंडमें,

मांस देणा, और बडे भाईकी स्त्री, पति मरे पीछे देवरसें लडका उत्पन्न करणा यह पाच कांम कलियुगमें मना है, यह काम होता था, वो ब्राह्मण वेद मतवालोंका सतयुग था, उसके पीछे जैन आचार्योंका उपदेश सुणके राजा राजपूत तथा महेश्वरी पीछे जैनधर्मी होते गये, सो हमने संक्षेपमें कई २ महेश्वरियोंका, जैनमतमें होणा, पीछा लिख भी दिया है, तब विक्रम सम्वत् तेरहसेमें माधवाचार्य दक्षिणमें हुए, इससे माधवाचार्य सम्प्रदाय विष्णुमतमें कहलाती है, रामानुज, शंकरस्वामीके मतकों धक्का लगानेवाला दयाधर्म कुछ माननेवाला दुनियांको गोष्ठीप्रशाद रामचन्द्रजीका भोग लिलाकर रिझाणे-वाला वेदपर पडदा डालकर अपना भक्तिमार्ग दिखाणेवाला, रामचन्द्रको ईश्वर माननेवाला, शठकोप कंजरका शिष्य मुनिवाहन, यवनाचार्य, चौथे दरजेके शिष्य रामानुज, इस तरह प्रगट हुए द्वैतपक्ष जैनियोंका मन्जूर करा, प्रपन्नामृत ग्रंथ बनाया, सौच मूलधर्म मानकर, खडे तीन फाडेका, तिलक और शंख, चक्र, गदा, पद्म, लोहेका तपाकर, अपने मतावलंबियोंको, दाग देणेवाला, महादेवके लिङ्गको नमस्कार नहीं करणेवाला, उसने विष्णुमत नया सांक्षमत चलाया, इसके पीछे, माधवाचार्य २ नीमार्क ३ और विष्णुस्वामी ४ विष्णु स्वामीसे निकला वल्लभाचार्य, इन्होंने कृष्णकों देव माना इत्यादि मत चलाया, माधवाचार्यनें फिर अपने मतावलंबियोंको, जैन होता देखके, और जैन पंडितोने शंकर स्वामीके शिष्यनें, शंकर दिग्विजय अभिमानसें जो बनाया उसको खण्डन करता, ऐब लगाता देखके, शंकर स्वामीके २९० वर्ष बीते पीछे दूसरा शंकर दिग्विजय बनाया, उसमें अपने मतावलंबियोंको, ऐसा डर बैठाया, जैसे कोई मातापिता अज्ञान बालककों डराणेको कहते है के हाऊ है, बाघड है, ये है तो कुछ नहीं, लेकिन डराणेको कहा करते है, सोहाल किया है, (यत) न पठेत् यावनीं भाषां, प्राणैः कण्ठगतैरपि । हस्तिना मार्यमाणोपि, न गच्छेज्जिनमंदिरम् । १ । अर्थ । उरदू फारसी हिन्दुस्थानी प्रमुख भाषा न पढणी न बोलणी चाहै प्राण क्यों नहीं चले जांय, और हाथी मारता होय तो भी शरण लेणे भी, जैन मन्दिरमें नहीं घुसणा । १ ।

इसमें सिर्फ अपने वाबेकों मजबूत करणेसिवाय और कोई भी, प्रमाण सिद्ध नहीं होता, खैर-ब्राह्मनोंके वचनसें अज्ञान बालकवत् शैव विष्णु लोक जैन मन्दिरमें नहीं घुसते है, और ज्ञानवान, इस वचनकों, कुजड़ी केबेर समझते है, अपने बेर मीठे, ओरोंके खट्टे, लेकिन बडा अफसोस तो यह है कि शैव विष्णु ब्राह्मन लोक प्रथम लिखे शिक्षाकों क्यों भूल गये, माधवा चार्यने लिखा है कि उर्दू फारसी मत पढो, सो तो हमनें हजारों मनुष्योंको, फारसी उर्दू पढके नौकरी करते व वकालत करते देखे है, माधवाचार्यनें, संदिग्ध वचन धरा है, विचार करता था कि, सभामें पंडित लोक प्रमाण पूछेंगें; तव तो कह दूंगा कि, जैन नाम वैश्याका है यानें। वैष्णवोंने, हाथीसे मरते भी, वैश्याके घरमे जाणा नहीं, तब तो सब लोक कबूल करही लेंगे, नहीं तो अपढ लोकोंकों पल्लेमें गांठणेकों, प्रगट नाम जैन मन्दिरहीमें जाना निषेधक होगा, इस समय, वोही हाल बण रहा है, ये इतनी वात प्रसग वस कोचर जाती महेश्वरी हुए पीछे फिर जैन महाजन हुए, इस-वास्ते जैन लोकोंकों, वाकिफ करणेको, लिखी है अब कोचरोंको महाजन होणा, लिखते है, सम्वत् ९।९८ में पमार वंसी डीडू महेश्वरी जिनोंकी प्रथम जात, पवार डोडा, पीछे जोगदेव चोटीलेका पुत्र सुजाण कुंमर साथ, महेश्वरी होगया, जिनोंमें पवारोकी राठी जात पडी, राठियोंके १६२ नख जिनोंमें, डोडा मुंहता १२९ में नखमें, डोडाजीसू डोडा मुंहता कहलाया सिरोहीमें पंवार वसी राज करते थे, उन्होंकी दीवानी करणेसें मोहता पद, डोडाजीकों, राजाने इनायत किया, प्रथम सिरोही पमारोंनें वसाई थी सो वेद गोत्रके इतिहासमें हमने लिखा है, जब गोढ़ वाढ़में विष्णु शैवमती पोर वालोंको, हरिभद्रसूरिजीने, उपदेश देकर, जैनी करा, तब डोडाजी भी जैनधर्म

---

[१] डोडाजीसे डोडा मोहताराठी बजने लगे ये माहेश्वर कल्पद्रुम पाने ११३ में [२] सिरोही पमारोंमें वसाई सो लेख कमले गच्छके महात्मा लखजी वेदोंकी पीढी दी जिसमे लिखी है और भी कई गोत्रोंका नाम गाम देकर हमको ये इतिहासमें पहले सहायता दी है इन्होंका जस माननीय है कोचर वंसकी उत्पत्ति हमको कोचर मुंहता लूण करणजी जे सक्षेप दी थी सो धन्यवाद देता हूं।

धारण किया है विक्रम सम्वत् ९।९८ में यहांमे जैनधर्म पालणे लगा, पीछे इन्होंके पोते स्याम देवजी ब्राह्मनोंकी संगत, राजाओंकी नोकरीमें. श्राद्ध करना, मरेके पीछे, सब घरवालोंने, बाल मुडाणा, इत्यादि अनेक कर्म मिथ्यात्वीयोंका करणे लगे, इस वक्त सं. १००९ मे श्रीनेमिचन्द्र सूरि वृहद्गच्छ वालेने पुनः मिथ्यात्व छोडाय. बारह व्रत उच्चराय सम्यक्त्वकी पहिचान कराई. और गुरूने फरमाया. यहांसे धन माल लेकर तूं गुजरात पाल्हणपुर चलाजा, यहां राज्यमे भंग होगा. तब श्याम-देवजीने. अपने पुत्रको. बहुतसा धन लेकर राजासे प्रच्छन्न भेजदिया. वह रामदेव. उहां बहुरायत करणे लगा, यहांसे पाल्हणपुरी बोहरा कहलाये. देवी इन्होंकी वीमल, गुजरातमें मानी. पहली मंत्राय थी. सं. १०१२ में पाल्हणपुर दूकान रह वास पूगल करा तबसें पूगलिया बजने लगे पीछे पूगलमे मुसल्मानोंका ऐल फैल देखके सं. १३८९ में पूगल छोडके, मंडो-वरमें श्रीमंडजी आकर बसे, सं. १४४९ में महीपालजीको राव चूंडा-जीने मारवाड़का सब काम सुपर्द करा राठोडोने मुंहता पद फिर दिया इस महीपालजीके पुत्र नहीं सो चित्तमें चिन्ता किया करे एक दिन सोजत गांमके वासिन्दे महात्मा पोसालिया लंगोट बद्ध तपागच्छके किसी राज-काजके वास्ते मडोवर आये वो काम महीपालजीके हाथ था महात्मा इन्होंके घर आया और बोला महताजी ये काम मेरा करो तुम्हारा कोई काम मेरे लायक होय तो कहो तब महीपालजीने वह काम राव चूंडजीसे कह निर्वाण चढाया और कहा मेरे पुत्र होगाया नहीं तब महात्मा बोला आज पीछे तेरी सन्तान तपागच्छके महात्माओंको गुरु मानें तब विधी बता देता हूं जिससे पुत्र होगा इसके पहले सिन्धमें तथा मंडोवरमें रहते नेमिचन्द्र सूरिके पाटधारी खरतर गच्छको गुरू मानते थे. तब महीपालजीने तपागच्छ मानना कबूल करा। तब महात्माने कहा—आसोज चैतमें नवरते करो. वीमल देवी मनावो पुत्र होगा। जब देवी कोचरीके रूपसे बोलेगी. तब कोचर नाम देना. फिर तुमारे वंशको कोचरीका अपशकुन नहीं लगेगा. पूजन आसोज चैत ८ तथा ९ करना। वीसलरायकी भैंसेकी असवारी है. पुत्र जनमे तब जयता

परणै तब १।) देवीकी भेट करै। जब पहले पुत्रका कोचरमें आधान रहे तब पांच महीना स्त्रीके वीतनेसे पूजै तो १।) कलसमें राती जोगा दिरावै दसहरा पूजै लोंगी हाथ १।) नारेल १ नव नैवेद्यसे पूजा करणी, इतना काम कोचरोंको करना नहीं, काला कपडा, नीला कपडा. रखै नहीं, घूघरा भैंस बकरी साकल राखे नहीं, बिछियोंमें रुणरुणा डालै नहीं, चन्द्रबाईका चूड़ा पहरै नहीं, कदास कोई पहरै तो पीहरसे पहरै चरखा पालना झुणझुणा रखे नहीं, । पीला ओढणा पहले पीहरका स्त्री ओढे, पीछे घरका ओढे, इतना काम करणा तब महीपालजी सब कबूल कर, वीसलदेवी मनाई, पुत्र हुआ, कोचरी बोली तब कोचर नाम दिया। पीछे कोचरजी मडोवर छोड़-कर महीपालजीके संग फलौदीमें आयबसे, सम्वत् १५१९ पीछे महाराजा सूर सिंहजीके संग, उरजाजी कोचर वंशी बीकानेर आये उसमें उरजेके बेटे आठ जिसमें रामसिंहजी १ भाखरसीजी २ रतनसीजी ३ ओर भीमसीजी पिताके संग बीकानेर आये, बीकानेरमें महाराजा सूरसिंहजी सं १६७३ में लेखणकी खिजमत इनायत करी और गांमपट्टा दिया, जिन्होंकी सन्ता-नके घर अन्दाजन १०१ बीकानेर बसते हैं फिर तो सायर मडी दीवानी-वगैरह, अनेक कांमके करता स्वंमधर्मी राजाओंके हुए, कितनेक घर रतन गढ़ बीदासर गांम ददरेवा या गाम सारूंडे इलाके राजगढ, या तालूके-संदरंम, रहते हैं, बेटे ४ फलोधी उरजेजीके रैहे राहूजी १ डूंगरसीजी २-पचायण दासजी, ३ राजसीजी ४ इन्होंके घर ८० अन्दाजन फलोधी बाकी जोधपुर वगैरह वडी मारवाड़ सब मिलके जुमले अन्दाजन घर तीनसय कोचरोंके होयगे, जिनराजके मन्दिरोंकी भक्ति सातक्षेत्रमे धन लगाणा, गुरुभक्ति, सनातन जैनधर्म पर विचारणा, सूरवीर नामी २ पुरुष इन्होंमें हुए, और होते जाते है, फलोधीमें, केइ कोचर कानूगा, बजते हैं, (दोहा) देव गुरूकी भक्तिधर, पुत्र वधेपरि वार। अनधनसें चढतीकला, कोचर बहु सुखकार। १ विद्यमान तपागच्छ।

(पीढियोंकी तफसील)

रामदेवजी १ हरदेवजी २ धनदत्तजी ३ वाहडजी ४ भीमदेवजी ५-

रूपसीजी ६ जसवीरजी ७ मेघरायजी ८ श्रीचन्दजी ९ पाळणसीजी १० मूलराजजी ११ देहडाजी १२ भीमडजी १३ चम्भड़जी १४ झाझणजी १५ महिपालजी १६ कोचरजी १७ माणोजी १८ देवोजी १९ सीहोजी २० उरजोजी २१ ।

(अथ वेदश्रेष्टी गोत्र)

प्रथम राजपूत धूम १ अगन २ धीर ३ रावसी ४ धाघू ५ वीमल ६ आसल ७ सोमदेव ८ इन्होंके पुत्र ११ सो सुत पमार कहलाये, सोढलसी इसकी औलाद् सब सोढा कहलाये. सोमदेव १० सीहलदे भाई. भोमरेनरदेव, ११) धीरके पुंडरीक १ माधादेव २ कीरत चन्द ३ जोधदेव ४ भोपाल ५ धरणीवाट ६ नरम ७ गर्द्दमिल्ल (गंधर्वसेन ८ विक्रमादित्य इन्होंके पाटानुपाट ९ राजा विक्रम हुए ९ भोज हुए राज तख्त उज्जैन लघु भोजके मरे पीछे राज्य गया १२ पुत्र उहांसे निकल गये ६ वीसलका ७ चक्रवर्त्ति ८ पालणदेव ९ जोगीन्द्र १० ११ समरसेण १२ सुखसेण १३ नरदेवके गोदुवनराव १४ अचलसेण १५ कर्मसेण १६ कवरसेण १७ चोहसेण १८ वीरधवल १९ देवसेण २० सनखत्त २१ सेणपाल २२ आसधर २३ महीधर २४ शिवधर २५ विक्रमसेण २६ भीमसेण २७ सामदेव २८ वछराज २९ सुदवछ ३० रतनसी ३१ चन्द्रसेन ३२ । २६ पटधर भीमसेन भीनमालनग्र अपणे नामसे वसाया और सिरोही नगरके पहाड़ पर गढ वणाया इस वास्ते नगरका नाम सिरोही हुआ ३२ डूगरसी ३३ रामसी ३४ कनकसी) भीमसेनके तीन पुत्र उपलदेव बड़ा सो तो ओसियां वसाई सामदेव सिरोहीका राजा हुआ आसल भीनमालका राजा हुआ इसमें उपलदेवने तो जैन धर्म धारण करलिया सो ओसवाल हुआ और आसलका श्रीमालगोत्र प्रसिद्ध हुआ नाना श्रीमल्लराजाके नामसे २७ भीमसेणका २८ ऊपलदेव रत्नप्रभसूरि नें सेठियागोत्र थापा और ओसवाल कहाया भीनमालमें आसल, पीछे कनकसी, सामदेवकी सन्तानको राजा करा। २८ ऊपलदेवके भूगुनरेश ३९ चक्रवर्त्त ३१ पालदेव ३९ जोगीय ३३ कोगुर ३३ समरसी ३४ सुखमल ३५ सुखमलका छोटा भाई अचल,

से भीनमालके राजा कनकसीके गोद दिया. माल्हो ३६ ममरथ ३७ करमण ३८ वोहन्थ ३९ यहामें भीन मालका राज्य मिगइविाले इन्होंके परिवार वालोंने दाव लिया, यहा ४ पीढी तक भीनमाल और ओसियाका सिरोहीका एक राजाही हुआ. ४० वीरधवल नाणाने पैदा हुआ इस समय विक्रमादित्य पमार उजैणमें राजा हुआ, उसके वहिनका वेटा, भाणजा, सालिवाहन प्रतिष्ठान पुर (महेश्वर)का राजा सका चलाया ये राजा जैन था, उन्होकी संन्तान पहले महेश्वर. तथा गुजरात भावनगरमें, पालीताणे राज्य करते है ।

यहांसे व्यापार करणे लगे ४० वीरधवल ४१ पुन्य पाल ४२ देवराज ४३ सनसत्त ४४ जीवचन्द ४५ वेलराज ४६ आमधर ४७ उदयर्म, ४८ रूपसी ४९ मल्सी ५० नरभ्रम ५१ श्रवण ५२ ममरसी ५३ मावंतसी ५४ महनपाल ५५ राजसी ५६ मानसी ५७ उदयसी ५८ विमलसी ५९ नरसी ६० हरसी ६१ हरराज ६२ वनराज ६३ पेमराज सुखराजभाई ६४ पेमके थानसी ६५ वैरसी ६६ करमसी व्यापार भी करता और वैद्यविद्या भी करणे लगा लोकवेद २ कहते ६७ धरमसी ६८ पुनसी ६९ मानसी ७० देवदत्त ७१ दुल्हा स १२०१ में चित्तोडके राणा भीमसीकी राणिके आखमें, आकका दूध गिर गया तव दुल्हाको बुलवाया, और कहा तुम वेद्य नाम धराते हो राणीजीकी आंख अच्छी करो,-तव दुल्हा वोला- अभी दवो लाता हू वो चौमामा श्रीजिनदत्तसूरिजीका चित्तोडमें था. गुरुके पास जाके, अरज करी, तव गुरुने कहा तुमारे पोते दो हैं. सो एकको- हमारा श्रावक करो तो- तत्काल आज खोल देता हू. दुल्हेने कवूल करा तव गुरु वोले जाओ जो तुम लगाओगे उससे तत्काल सिद्धी होगी दुल्हेजीने घीमें गुड मिलाके आखमे लगवाया तत्काल आंख अच्छी होगई- तव राणाजीने कुरव वढाकर वैद्य पदवी दी यहांसे श्रेष्ठि गोत्र वदलके वैद गोत्र हुआ दुल्हेके ७२ वर्द्धमान ७३ सचा तथा शिवदेव शिवदेवको जिनदत्तसूरिका वासक्षेप दिलाकर खरतर गच्छमे कर दिया, वो वर्द्धमानवैदकान्हासर. अजीम गञ्ज, मारवाड- वगैरह देशोंमें, अभी चिरजीवी है सचाके ७४

महदेव और करमण ७५ सहदेवके जसवीर ७६ मोहले ७७ के माणक भाई गोढ माणकसी इन्होंकी शन्तान बहुत फैली ७८ देल्हो ७९ केल्हणसी ८० त्रिभुवनजी ८१ सादूलसीजी ८२ लोणाजी लखणसी जैतसी ३ भाई २ भाईवोंकेजी मग बीकानेरमें आए जैतसीजीका परिवार फलोधीमें अन्दाजन ८० असमीघर वसते होगे अवशेष सव मारवाडमें लोणाजीके ८३ श्रीमन्तजी ८४ अमराजी सूरमल्लजी भाई ८५ अमरेकासींमाजी ८६ जीवणदासजी जीवण देसर वीकानेरके इलाके गांम वसाया ८७ ठाकुरसीजी ८८ राजसीजी ८९ आसकरणजी ९० रामचन्दजी ९१ उदयभाणजी ९२ दौलत रामजी ९२ माणक चन्दजी ९३ घमडसीजी ९४ मूल चन्दजी अवीरचन्दजी गच्छ कुअला देवी सचाय सेवग बलि अट्

(मिन्नी खजानची भुगडी साख १५)

मोहनसिंहजी जातका चौहाणराजपूत उसने दिल्लीमें मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिसे प्रति बोध लेकर महाजन हुआ स १२१६ में मोहनजीरामीबी खजानेका काम राव बीकाजीका करा खजानची बजने लगे, भुगड़ी सूखे बेर सिन्धमें बेचते थे इसवास्ते भुगडी नख-हुआ वाकी नख इनमेंसे फटे है लेकिन् नाम नहीं मिला, इसलिए मिलणेसे लिखेंगे, मूलगच्छ खरतर

(मुहणोतगोत्र पींचागोत्र)

किशनगढ़ मारवाडके रावराजा राठोड रायपालजीके १२ पुत्र थे, सो मोहनसिंहजी और पाची सिहजी भाइयोंकी अणवणतसे जेसलमेर गये, उहां रावलजीने बहुत खातर मुजमानी करी, उहा माणिक्यसूरिः महाराजके पाटधारी, श्री जिन चन्द्रसूरिःका, त्याग वैराग्य उत्कृष्ट ज्ञान, तपकी तारीफ सुणके, हमेश व्याख्यान सुणने, आने लगे, अन्तको मिथ्यात्व त्याग गुरूके पास सम्यक्त्व उचर कर व्रतधारी श्रावक हुए रावलजीने बहुतही महिमा करी, जेसलमेरमे वसे मुणेजीके मुहणोत, पाची सिघजीके पींचा गोत्र, प्रगट १५९५ में हुआ उहा सम्वत् सोलेहसेके करीबमें, तपा गच्छके विद्यासागर जतीनें मुहणोत गोत्री खरतरोंको, अपने गच्छमें कर लिया पीछे खरतरमे हीं रहे, बाद उहासे मुहणोत किसनगढ जोधपुर वगैरहमें राज्यके मुसद्दी हो गये,

ठाकुर कहते है, बस ये आखिरी जात है ये विद्यासागर ढूंढियोंकी तरह क्रिया कष्ट दिखाते बृहद्गच्छी खरतरादि गच्छोंके, प्रतिबोधे, राजन्य वंशियोंको, अपने पक्षमे करते गया।

(विज्ञापन)

ओसवन्स रत्नागर सागर है मेरा ये इतिहासक ग्रंथ गागरतुल्य है इसमे कहा तक समावे लेकिन तथापि जो कुछ इतिहास मिला उसको संग्रह कर के अनेक इतिहास रत्नोंमें इस ग्रंथ गागरको अश्वपति महाजनोंके गुण रत्नमें भरके मैंने पूर्ण कलश करलिया और महाजनोकी नाम श्रेणि रूप मुक्तावली इस कलसको पहराकर जैनधर्मरूपकमल पुष्पपर विराजमान अल्प बुद्धिमें करता हूं, जो कोई भूल चूक अधिक कम लिखा होय, सर्व श्री संघसे क्षमा मागता हूं ॥ आपश्री संघका सुनिजर वाच्छक, उ। श्री रामलालगणि दन्तकथामें सुणा है कि एक भोजकने अश्वपतियोंके १४४४ नख लिखे घरपर आया स्त्रीने पूछा सर्व जातलिखली, भोजक बोला- हा, तब बोली, मेरे पीहरके, डोसी जात असपत है, देखो तुम्हने लिखाया नहीं, तब देखा तो डोसीका नाम नही. भोजक हारके बोला, और लिखूं डोसी, फेर घणाई होसी सच्च है मूलगोत्र तो थोडे, लेकिन मगर कोई व्यापार, कोई गामके नामसे, कोई राजाओंकी नौकरीमें, खजानेका कामसें खजानची, कोठारी, मुसरफ, दफ्तरी, वगसी, हीरेजीकी सन्तान, हीरावत, इत्यादि पिताओंके नामसे- लेखणिया. कानूगा, निरखी, इत्यादि राजाओंकी तरफसें इनायत होके, जात पडी, सिंघवी, भण्डारी, इत्यादि फिर मुल्कोंके नामसें, मरोठी, फलोधिये, रामपुरिये, पूगलिये, नागोरी- मंडतवाल, रूणवाल, इत्यादि वहुत फिरघीया तेलिया, भुगडी, बलाई, चंडालिया, वाकूचार वामी, ये सब कारणोंमें नख हुआ है. ओसवालोंमें सैकडो गोत निज जात राजपूतोंसें भी विख्यात है. राठोड, सीसोदिया, सांखला, कछावा, इत्यादि. अनेक जांण लेणा, इसवास्ते २ हजार नख होयगे, अठारह जातके नख शाखा तो कवलागच्छ प्रतिबोधक है, ६०० नख खरतर गच्छ प्रतिबोध कहै बाकी नख, खरतरके भाई, मल-

धारगच्छी, प्रतिबोध कहै, कई एक अल्प संख्या वडगच्छ चित्रावाल गच्छ प्रतिबोधक राजपूत होंगे, बाकी मलधार श्रावकोंको, हीरविजयसूरिः आदिकोंने, बहुतोंको तपा गच्छ माननेवाले करे, और वस्तपाल तेजपालके द्रव्यकी सहायतासें, ज्यादह हो गये है, गुजरातके पूर्ण तह्ल गच्छके भी. इस वक्त तपागच्छ मानते हैं, प्राय जैन पोर वाल हरि भद्राचार्य प्रति बोधक है, श्री श्रीमाल श्रीमाल सर्व जात वैष्णव हुए बाद खरतर गच्छी श्रीजिन चन्द्र सूरिःके प्रति बोधक है. जहा जिस नगरमें जिस गाममें निज गच्छके गुरू नहीं हो उहा ३ तीन पीढी वीतणेसे जो वेषधर सम्प्रदाय होय वो गुरू ठहर जाते हैं ओस-वस तो सुरतरू है जो उसकी छाहमे बैठते है उसको छाया फल पुष्प सुगन्ध देते ही हैं. सुरतरूका बीज बोणे वालोंके संतानोके तो, जरूरही उपकारके आभारी होनेका फरज हैं. इस समय गच्छोंमें तो कमला तपा खरतरा इन तीनोंकी साखाओंही फैलकर जती ३ फैल गये है क्यों कि १३ तपेमेंसें सम्प्रदाय निकलीं पाचंमकी सवत्सरी माननेवाले जो जो सम्प्रदाय है वह सब तपागच्छमेंसे ही निकले है लोंकाजी भी तपा गच्छी श्रावक था इत्यादि सम्पूर्ण, जैसे किसी कविनें कहा सर्वे पदा हस्तिपदे प्रविष्टा ८४ गच्छ महावीरके सब जाके चार रहे तपा. खरतर, वड गच्छी भाई है, पार्श्व नाथके कुंअला, ये भी ८४ में ही है क्यों कि उद्योतनें सूरिःके वासक्षेपमे आगये. जैनके सब सम्प्रदाय वड गच्छ. खरतरगच्छ कुअलाको वर्जके इस तपागच्छसे अलग नहीं. गुजरातमें तपागच्छमेंसे ही अलग होते गये, सामाचारी अलग २ होते गयी कमलामेंसे कोई शाखा निकली नहीं खरतरमे ११ साखा अलग फटी, लेकिन सबोकी सामाचारी एक है जिसमे ७ शाखा मौजूद हैं, दो तो आचार्य गच्छ खरतर पाली १ दुसरे बीकानेर २ रंग विजय खरतर गच्छ लखनेऊ ३ भाव हर्ष खरतर गच्छ बालोतरा ४ मडोवरा खरतर गच्छ भट्टारक जैपुर ५ बृहत् खरतर गच्छ भट्टारक बीकानेर ६ पीपलिया खरतर गुजरातमें फिरते सुणा है - लोंका गच्छके जती तो ६ के है लेकिन पुज्याचार्य तो ४ ही विद्यमान है गुजराती लूंपक गच्छी १ कंवरजी पक्षके गुजराती २ धनराजजीके

पक्षके ३ नागोरी २ इनमें १ मे भी आचार्य नहीं है उत्तराधी लोंका गच्छी जती थोड़े हैं आचार्य नहीं है तथा खरतर वड गच्छ कमलोंसे लोंकागच्छवालोंके भाईपा है लेकिन् कछमें रही जो आंचल गच्छी सम्प्रदाय वो लोंकागच्छ वालोंमे भाईपा नहीं रखते है, कारण वो पूर्व पक्षका लाते है लेकिन् हम तो गुजराती आचार्य नरपत चन्द्रजी पूज्याचार्यको तथा अजय-राजजी पूज्याचार्यको, तथा नागोरी प्रेमचन्द्रजी पूज्याचार्यको, तथा रामच-न्द्रजी पूज्याचार्यको, अनग्ग भक्तिसे जिनप्रतिमाको जिन सदृश भावसे भाव भक्तिदर्शन पूजा करते देखा हैं, हमारे तो इस न्यायसे लोंकागच्छी प्राणसे भी प्यारे है सामाचारीका झगडा फिजूल आपसमे चलणा नहीं अपणी २ गोटियोंके नीचे सब अन्धार देते हैं व, देरहे है आत्मार्थी आत्मामावे श्राव-कोंको जिन आज्ञा मुजब उपदेश करे पक्षपात करे नहीं वह अच्छा है जो प्रश्न श्रावक अथवा जती पूछे तो पूछे का जबाब सूत्र सिद्धान्त पचांगी मे लिखका दाखला दिखाके देणा जिसकी सामाचारी सूत्र सिद्धान्तकी राहसे मिलती होगी तो वह जरूर खराही कह लायगा, क्रियावत जरूर तपेश्वरी कह लायगा सिवना पण वर्त्तना जिस कामोंमे जैनधर्म जगतमें अतुल ओपमा पावे उस वातोंकी खोज करणा सर्व यती समुदायका मुनिजर वाचक उपा-ध्याय श्री राम ऋद्धिसार गणिः ।

(कच्छदेशी श्रावकोंका वृत्तांत)

पारकर देशपाली सहरके गिरदावके महाजनलोक, सोलहसे ३९ के वर्षमे, ममधरमें बडा काल पडा, उस वखत ९ हजार घर सिन्धुदेशमें अनाजकी सुकलायत जाणके, चले गये, उहा महनत कर गुजरान चलाणे लगे, दो तीन पीढिया वीतनेपर धर्म करणी भूल गये, उपदेशक कोई था नहीं, विना खेवटिये नाव गोता खावे, इसमें तो आश्चर्य ही क्या, उहा इतना मात्र जांणते रहे के, हम जैन महाजन फलाणे २ गोत्रके हैं, तद् पीछे सवत् सतरेसयमें एक आंचल सम्प्रदायके जती, कच्छके राजाके पास पहुंचा, और राजासे कहा मेरा कुछ सत्कार करो तो, वणियोंकी बस्ती ला देता हू राजाने कहा जागीर दूंगा, गुरु भाव रक्खूंगा,

तब वह जती सिन्धमें पहुचा और इन लोकोंको, मिला और पूछा इस देशमे सुखी हो या दुखी, तब वह लोक बोले मुसल्मीन लोक बहुत तकलीफ देते है, कोई जिनावर घरमें बीमार होता है तो. काजीको खबर देणा होता है, तब काजी आकरके हमारे घरपर जीती गऊके गले पर छुरी फेरता है, आधे मुसलमान हो गये है, उस जतीने कहा, हमको तुम जाणते हो, हम कौण है उन्होने कहा, नही जाणते, तुम कौण हो, तब वह बोला, हमारे संग चलो, कच्छ भुज देशमें राव खेंगारके राज्यमें, तुमको सुखस्थानसें, बसादूगा, वह सब इकठे होकर, उस जतीके संग कछ देशमें आए, रावखेंगारनें सुथरी, नलिया, जखऊ आदि, गामोंमे, बसाया, बहुत खातर तब ज्या करी, अब वह जतीजी तो राज्यके माननीय, जागीरदार बण बैठे, एक तो राज्य-मद, दूसरे विना कमाया जागीरका धन, अब धर्म उपदेश इन्होकी बजाय करै, वो महाजन खेती करे, गुरुजी जागीरदारसें. रुपया ब्याजसें उधार लेवे, रोटी भी जतीके यहा खालेवे, इत्यादि हाल ऐसा बणाके बावाजीका बावाजी, तरकारीकी तरकारी, बावाजी तुम्हारा नाम क्या बावा बोले बच्चा बेंगणपुरी, वो हाल बणाया तब राजाने अपने जो राजगुरू प्रोहित थे, वह इन्होंके गुरू बणा दिये, परणे मरणे जन्मणे पर, वो ब्राम्हनोंने अपना घर भरणे इन्होको पोपलीला सिखलाई, अनेक देवी देव पुजाने लगे खेतीका काम करणेसे ज्यादह धनवान, इन्होमें कोई नहीं था, क्यों के, नीतिमे लिखा है, (यत) वाणिज्ये वर्द्धते लक्ष्मी किंचित् २ कर्षणे । अस्ति नास्तिच सेवायां भिक्षा नैवच नैवच ॥१॥ (अर्थ) व्यापारसे लक्ष्मी बढती है, खेतीसे कभी होय कभी बरसात नहीं होय तो करजदारी हो जावै, नोकरीमे धन होय किसी सूमके, नहीं होय खाऊ खरचूके, और भिक्षुक व भीख मागणे वालेके कभी धन होवे नही लेकिन श्रीमाली ब्राह्मनकों वर्जके और भिक्षुकोंके १ इस तरह गुजरान् करते थे इस वक्त मुबंई पत्तनको, अंग्रेजसरकार ने, व्यापारको, मानो सागरही खोलके वसाया, इस वक्त आंचल गच्छके श्रीपूज्यरत्न सागर सूरिःके दादा गुरू सम्वत् १८ गुजरातसे कच्छमे पधारे पहले मार-वाडमें विचरते थे, इन्होंने जिन २ पूर्वोक्त गच्छोंके प्रतिबोधे महाजनोंको,

अपणी हेतु युक्तियोंसे अपणे पक्षमे करे थे, वो कई दिनो तक इन्होंकी राह देखते रहे, ये तो कच्छ देशमें उतर गये, तब मारवाडके आचलिये, लोकोंने नागोरी, तथा गुजराती, कुंवरजीके, धनराजजीके पक्षको, मानने लगे, मारवाडमें ज्यादह प्रचार नागोरीलोकोंका हो गया, सम्वत् १८ में कच्छ देशके महाजन लोक नाती थोडी होणेके कारण. बेटी नहीं मिलणेसें, नाता भी करणे लग गये, उस वक्त आचल आचार्यने, उन्होंको धर्मोपदेश देकर समझाया, खेनीमें महापाप है, कई लोकोंको सौगन दिलाई, व्यापारके वास्ते बम्बई पत्तन बताया, कइथक लोक इधर आए बदनके मजबूत और उद्यमी साहसीकपणेकर. पहली मजदूरी करनेमे कुछ धन हुआ पीछे साझेसे कम्पनी व्यापार खोला, गुरूदेवकी भक्ति और जती लोकोंके उपकार पर कायम रहे, दिन पर दिन चढती कला, अन्न और धनसें होती गई, नरसी नाथा कोट्याधिपति धर्मात्मा प्रथम हुआ, उसने बहुत सहायता देकर नातीका सुधारा करा, अडबों रुपये जगह २ मन्दिर धर्मशाला गुरुभक्ति साधर्मी भक्तिमें कच्छ वासी श्रावकोंने सो डेढसे वर्षोंमें लगाया वह प्रत्यक्ष है, जनी श्वेताम्बरियोंका जैसा मान पान भक्ति कच्छी श्रावक रखते है ऐसा कोई विरला रखता है, दस्सोंका नाता नरसी नाथेनें बन्द करा, अब तो धर्मज्ञ हो गये, लक्ष्मीमें कुसप बढ गया, ये पञ्चम कालका प्रभाव, सब गच्छके थे, लेकिन वर्त्तमान आचल गच्छ मानते है इस्से सब, बीमे कच्छमें माडवी बंदराढिकमें सैकडो घर खरतर गच्छ अभी मानते हैं, वैसे व्यापारके वास्ते मारवाडसें उठके कच्छमे बस गये, गुजराती कच्छमें गये वो तपागच्छ मानते हैं,

(अथ श्रीमालगोत्र)

(उत्पत्ति)

भीनमालनगरी जिसका नाम भगवान महावीर स्वामीके विचरते समय श्रीमाल नगर था, राजा श्रीमलकी पुत्री लक्ष्मी उसका विवाह करणेकी फिकरमें राजाने ब्राह्मणोंसें पूछा, मेरी कन्या साक्षात् लक्ष्मी तुल्य है, इसके लायक रूपवन्त, गुणवन्त वर राजकुमार मिलणेकी तदबीर बतलाओ, स्वयम्बर मण्डप करणेसे, बहुत राजा आंयगे, इसके रूपको देखकर, मोहित

होकरके, आपसमे लडकरके, लाखो आदमी मरेंगे, इससे बदनामी मेरी होगी, तब ब्राह्मनोंने कहा, हे राजेन्द्र, अश्वमेध यज्ञ कर, इसपर लाखों ब्राह्मण देश २ के एकत्रित होयगे, उन्होको पूछनेसे तथा जज्ञके पुन्यसें तुह्मारी कन्याको इन्द्रके समान वर मिलेगा, राजाने अश्वमेध यज्ञकी सामग्री असख्य द्रव्य लगाकर तइय्यार कराई भगवान महावीरका, समोसरण सत्रुजयतीर्थकी तलहटीमें हुआ, लाखो पशुजीवोंकी हिंसा देख, श्रीमल्लराजोंका प्रतिबोध, गौतमसे होणेवाला देख, भगवानने गौतम गणधरकों आज्ञा दी, हे गौतम, श्रीमाल नगरीका, श्रीमल्ल राजा तुमसें प्रतिबोध पावेगा, लाखों जीवोंका उपकार होणेवाला हैं, इसवास्ते तुह्मारे शिष्य पाचसय साधुओंको सगले, तुम श्रीमाल नगर जाओ. भगवानकी आज्ञासे, गौतम विहार करते २ मरुधर भूमीमें प्राप्त हुए, इधर राजाने लाखो ब्राह्मणोंको. देश २ मेंसे निमन्त्रण देदे बुलवाया, वे सब यज्ञ करणे तइयार हुए, बोकडेको देश २ में फिराके उहा लाए और भी जीव जलचर थलचर खचर ब्राह्मनोंके वचनसें श्रीमल्ल राजाने अग्निमे हवन करणेको मगवाये है सो सब जीव त्रास पाते विलापात करते करुणा स्वरसे ऐसा जता रहे है, अरे कोई दयाका भरा हुआ महापुरुष हमारी अरजी सुणके हमे बचावे, हम बे कसूर मारे जाते है अपने २ दिलमें तथा निजभाषामें कहते हैं अरे दुष्ट ब्राह्मणों हम स्वर्ग नहीं जांणा चाहते, ऐसे स्वर्गमें तुम तुह्मारे कुटुम्बके प्यारे. माता पिता भाई वगैरहको, क्यों नहीं पहुचाते अरे मास खाणेके लालचियो, हमारे प्राण लेणेसे तुमको स्वर्गके स्वप्न आवेंगें, इस हन्यासें राजा और तुम मासाहार करणेसें; नरक पात्र होवेंगे, जिसने एसा सास्त्र बणाया, और तुमको ये क्रिया सिखलाई वह कभी मुक्ति नहीं पावेगा, दुर्गतिमे भटकेगा, हे अन्तर्यामी तुम पूर्ण ज्ञानसें सचराचर जीवोंके, अभ्यन्तरी परणाम सब देखते हो, जाणते हो. हे प्रभु आप दयालु कृपालु हो अब हम निराधार निस्सरण अनाथ जीवोंकी, फरियाद सुनकर, हमारी सहायता करो, इस वखत गौतम गणधर उन २ जीवोंकी कामना मनपर्यव ज्ञानसे, जाणकर, लब्धिबलसे शीघ्र उहा पहुंचे; उहां यज्ञ में हवन होणेवाले जीवोंके, प्रतिपाल, यज्ञशालाके, बाहिर ठहरकर;

दयाधर्मका उपदेश करणे लगे, तब अग्निहोत्री ब्राह्मण गौतमके बहुतसे गोत्री सगे सुसेर, साले, मामा, फूफा, वगैरह तथा पांचसय मुनियोंके सगे, कुटुम्बी वगैरह, गौतमको, देख वेद पाठी यज्ञका निर्द्धार करणे आए गौतमने न्याय सूत्रसे सबोंके मनमे दयाका अंकुर बोदिया, यज्ञ याजन पूजाया श्री जिनराजके मूर्तिकी पूजा है सो गृहस्थोंके ताइं दयाधर्म रूपयज्ञ है, श्री प्रश्न व्याकरण सूत्रमे दयाके साठ नाम, जिसमें पूजा है सो दया है तब उन्होंने यज्ञका स्वरूप समझा, पंचेंद्री जीवोंका हणना. यज्ञ छोडा, सम्यक्त्व युक्तव्रत धारी ब्राह्मण हुए. उह श्रीमालनगरके होणेसे, श्रीमाली ब्राह्मण दया धर्मी सज्ञा हुई, बाकी पंच गौड देश वासी. तथा पंच द्राविड देशवासी जो जो ऋषि उस यज्ञमे हाजिरथे, उन्होंने तो जीवको होमणका यज्ञ छोडा, और मास मदिरा पीणा त्यागकर दिया, गौतमके चरण पूजणे लगे सब जीवोंको यथास्थान पहुचाया उहा सवालक्ष राजपूतोंने श्री मल्लराजाके साथ, जैनधर्म धारण किया, उन श्रीमालोंकी एकसो पैंतीस जातस्थापन हुई, पंचाल देशी (पंजाब) बंगदेशी कन्नौजदेशी सरवरिये इत्यादि ऋषि विप्र जो यज्ञमे नहीं आए थे, वह सब मासाहारी ही रहे. क्योंके वेदका यज्ञ तो, जैनाचार्योंने प्राय आर्या वर्त्तमे बन्द कर दिया, तथापि वह ब्राम्हण तो, मास खातेही रहे, दायमा गौड, गूजर गौड, संखवाल. पारीक, खण्डेलवाल, सारस्वत, और बायड, इत्यादिकोंने, गौतमके उपदेशसें, माममदिराका खान पान करणा यज्ञ छोडा, इस तरह राजपूत ब्राह्मण दयाधर्मी गुरू गौतमके सेवक हुए, पूजा गौतमकी करणे लगे, उसके पीछे मुल्क २ में अलग २ वसणेसे श्रीमाली ब्राह्मणोंकी ४ शाखा फट गई मारवाडी १ मेवाडी २ लटकण ३ और ऋषि ४।। उस यज्ञमें सैंधवारण्यवासी (सिन्ध देशके जगलमे रहणेवाले) पांच हजार ब्राम्हणोकूं गौतमका उपदेश कर्मयोग नहीं रुचा वेदोक्त पुरोडासा खाणेको यज्ञक्रिया अश्वादिक हवनको सत्य मानते गौतमकी पूजाको व सत्कारको नहीं सहते गौतमकी निंदा करणे लगे तब श्रीमल्ल राजाके हुकमसे सर्वतत्रस्थ ब्राम्हणोंने ब्रम्हकर्म रहित जाण, आर्यवेदके बाहिर किया रावणके दिग्विजय

समय पर्यंत ब्राम्हणोंमें पशुवधरूप यज्ञ आरम्भ हुआ आर्यवेदोंमें मामाहारियोंने हिंसक श्रुतियें बणाकर मिला दी उव्हट-महीधर मायन आदिक भाष्यकर्त्ताओंने भी वेदोंका अर्थ पशुवध रूप यज्ञ कर माम भक्षण लिखा इसलिए श्रीमालमें बहुतोंकी सम्मती गौतमके सत्य दयाधर्म पर ठहर गई वो विप्र पीछे सेंधवारण्यकों चले गये खेती करणे लगे भाटी राजपूत जो सिन्धुदेशमें तथा लवाणे जो सिन्धुदेशमें दरियावकी मच्छियोंको सुकाकर बेचने थे उन्होंके गुरु बण गये अब भी उन्होंके गुरु यही हैं जब सम्वत् सतरहमें ओसवाल लोक सिन्ध देशमें कच्छ देशमें आए तब कईयक भाटीये लवाणे कच्छमें आवसे, उन्होंको वल्लभाचार्यजी गुसाईजीने वह व्यापार छुडाकर व्यापारी बणालिया, जो अब भाटिया बजते हैं. अब थोडे ही अरसेमें. श्रीमल्लराजाकी राजधानी पर सिरोही गढके राजा पमारका पुत्र. भीमसेन, राजपूतोंको संग ले श्रीमाल नगरीको घेरलिया, तब राजा श्रीमल्लनें विचारा मैं वृद्ध हूं पुत्र मेरे है नहीं, एक कन्या लक्ष्मी है. मैं युद्ध करणेके समर्थ हूं मगर युद्धमें लाखों जीवोंका संहार करणा, आखिर तो कोई दूसरा ही राज्य करेगा जीव वधका पाप मुझे भोगणा होगा, ये घर घर रोगा आगई है, पुत्री देकर पुत्र गोद ले लेणा, दुरस्त है, ऐसा विचार राजा श्रीमल्लने अपने प्रधान सुबुद्धिके संग भीमसेनको कहला भेजा के मेरी पुत्री आपको दी, व्याह करके हथलेवेमें श्रीमाल नगरका राज्य दिया, राजा श्रीमल्ल सब राजरीती सबोंका कुरब कायदामान मुलायजा पुन्य दान किए हुए ग्राम सुसद्दियोंकी खातरी सब गुप्त रहस्य, जामातको सिखलाते ९ वर्ष श्रावक धर्म पालते राज्यमें रहे तब लक्ष्मीराणीके दो पुत्र हुए, उपलदेव १ और आसल २ और आसपाल पीछे हुआ ३ राजा भीमसेन आसलको नानेके गोद दिया और राज्य का हक्क आसलको कर दिया आसलका नानेके नामसे वोही श्रीमाल गोत्र रहा बाद श्रीमल्ल राजा जामातकी बेटीकी आज्ञा लेकर गौतम पास जाके राजग्रहीमें दीक्षा लेकर तपकर केवल ज्ञानपाय मोक्ष गये, भीमसेनका मत वाममार्ग था, उपल और आसपाल वाममार्ग मानते रहे आसल फक्त जैन नामधारी, नानेके नामपर रहा, जैनधर्मकी शिक्षाचार

नहीं जाणता था, भीमसेनके राज्यमें, श्रीमाल वस वाले जैन धीरे धीरे गुजरात, गोढ़वाड मालवा, हिन्दुस्तानमें क्रमसें विखर गये, श्रीमाल नगरका नाम भीनमाल धरा गया जब ऊपल्देव होशमें आया तब पिताकी आज्ञा लेकर, छोटेभाई, आसपालकों, सग ले, ओसिया पट्टण जा वसाई, यहा वृद्ध अवस्थामें, रत्नप्रभसूरि-ने, इन्होंकों जैनधर्म धराया, श्रेष्टि गोत्र स्थापन किया, आसपालका लघु श्रेष्टि गोत्र थापा श्रेष्टि गोत्र तो १२०१ में वैद वजणे लगे, लघु श्रेष्टि वाले सोनपालजीके नाममे सोनावत वजणे लगे, भीनमालमें भीमसेनकी गद्दी आसल वैठा, वो भी रत्नप्रभसूरिःसे जैनधर्मको धारण करा श्रीमाल गोत्र इसी वास्ते १८ गोत्रोंमें गिणते हैं, श्रीमाल गोत्रकी थापना गौतम स्वामीनें ही करदी थी, अब लक्ष्मी माता वृद्धावस्थामे विचारणे लगीं, के मेरे पिताके हाथसें, ९००० विप्र निकाले गये तब इन्होंने अपने पुत्र आसलकों कहकर, उन सबोंको बुलाया और गौतम गुरुकी आज्ञा दयाधर्म पालणा कबूल करवाया टाडसाहव राजपुतानेके इति-हासमें पुष्करणोका ओडोंसे होना लिखा है ये विना विचारे लिखा गया, पुष्करणे सनातन है नूतन नहीं है क्योंके गौतमकी अवज्ञा करी थी ब्राह्मणोमे भिन्नता की थी इस वास्ते तत्रस्थ विप्रोंको प्रशन्न करा वेदाधिकार देकर ब्रह्मकर्म नेष्टित करा, दुसरे ब्राह्मण श्रीमाली छन्यातवाले कहते हैं पुष्कर खोदणेसें ओडोको ब्राह्मण करा ये वार्त्ता असत्य है यह वार्त्ता, द्वेषमें वाकी ब्राह्मणोने शुरु करी है उस समय ब्राह्मणों की आज्ञा नहीं मानी दयाधर्म और गौतम स्वामींकी अवज्ञा करी थी, राजाके देवी सहाय थी वह पुष्करणोंनेमानी, सिन्धमें देवी ऊंठायी, गोत्र पुष्करणोंका, साण्डिल्यस वगैरह जातिका जुदा जुदा हैं, एक २ गोत्रमें छव २ नख हे जैन शास्त्रसें, पोसह करणा माहन, भरत चक्रवर्त्तिनें, नाम थापन करा था, पर्व तिथीमें पोषध करणेवाले (धर्मस्य पुष्टि धत्ते इतिपोषध) धर्मकी पुष्टि करणे वाले, जैनधर्मी असंख्य वर्षतक रहे, फेर और धर्म सबोंने मनमतसें आजिवीका रूप कर डाला, उस पोसह करणा शब्दका अपभ्रन्श पोकरणा लोक कहणे लगे, श्रीमाली ब्राह्मनों की देवी वो राजपुत्री लक्ष्मी है, फिर स्वामी शङ्करा-

चार्यके जुल्मसे श्रीमाली पुष्करणे ब्राह्मणोंने वेद कृत्य कबूल करके यज्ञका मांस खाणा तो कबूल नहीं करा लेकिन मन्नावत श्रीमाली दुगड़ वगैरह पत्तों पर लपसीका भेसा बणाकर कुसाघास डाभसे वेद मन्त्र पढ़कर उसके गर्दन पर फेरके प्रसादी बांट खाते है ये महिमा अब भी वेदके यज्ञकी करते है पुष्करणे ब्याहमें आधी रातको कोरपाण वस्त्रपर सब बैठके गुडकी लपसी और दूध खाते पीते है बाद कल्सा जानके दिन जनेउ . . कर स्नान करते हैं ये निशाणी स्वामी शंकराचार्यजीने पीछी सिखलाई, जो रूढ अब भी करते है. अब तो इन्होंमें मुद्धा चारकी वृद्धि है, त्याग देना ही उत्तम है, क्योंके बुद्धे फलंतत्व विचारणंच जाति मुवार विद्या वृद्धिमें सम्बन्ध रखता है, विक्रमस मानमयमें श्रीमाली ब्राह्मणोंने श्रीमाल पुराण बणाया, उसमें कुछ भेद पाठान्तर ये बात लिखी है. हिन्दमें सब नहीं, करमसोत राजपूतोंका कटक नहीं कुत्तों की कनार नही पोकरणोंके पुराण नहीं, श्रीमाल पुराणके अन्तर्गतही अपणी उत्पत्ति मानते है. कई पुष्करणे भीनमालमे कच्छमें गये आधे मरवर, जेसल्मेर, पोकरण. फलोधी, मल्हार जोधपुर बीकानेर. छड बिछडे. और २ जगह, इस वक्त सब पोसह करणे ४० हजार करीब होंगे, विशेष गोकली गुसाइयोंके सखा बण रहे हैं, बाकी कुछ शाक्त हैं।

श्रीमाल ब्राणिक गुजरातमें श्रीमाली दसावीसा बजते हैं गोत्रका नाम नहीं जाणते स्वामी शङ्कराचार्यजीके हमलेमें जैनधर्म छोड शैवमती विष्णुमती हो गये थे गुजरातमें हेमाचार्यने फिर जैनधर्म इन्होंका कायम रक्खा सगपण जैन विष्णुवोंके होता है दिल्ली लखनऊ आगरा जयपुर झुझणूके जो श्रीमाल है इन्होको श्रीजिनचन्द्र सूरिने शैव धर्मसें प्रतिबोध देकर जैन धर्मी करा वह सब खरतर गच्छमें है वडे २ श्रीमन्त लक्ष्मीपति श्रीमाल गोत्री वर्सत है इन्होंकी १३५ जाति राजपूतोमें फंटी है, ।

(श्रीमाल गोत्र १३५)

१ कटारिया २ कहूथिया ३ काट ४ कातेला ५ कांदड्य ६ कुराडिक ७ काल ८ कुठारिये ९ कूकड़ा १० कौडिया ११ कौनगढ़ १२ कं-

तिया १३ खगल १४ खारेड १५ खारे १६ खांचडिया १७ खांसडिया १८ गढउडया १९ गल्कटे २० गपताणिया २१ गढइया २२ गिला हूला २३ गींढाडिया २४ गूजरिया २५ गूजर २६ ग्रेवरिया २७ घोघडिया २८ चरड २९ चाजी ३० चुगल ३१ चडिया ३२ चंढरीवाल ३३ छक-डिया ३४ छालिया ३५ जलकट ३६ जूंड ३७ जूंडीवाल ३८ जाट ३९ झामचूर ४० टाक ४१ टाकरिया ४२ टींगड ४३ डहरा ४४ डागड ४५ डूगरिया ४६ टांर ४७ ढांढा ४८ तवल ४९ ताडिया ५० तुरक्या ५१ दसाज ५२ धनालिया ५३ धूवना ५४ धूपड ५५ ध्याधीया ५६ तावी ५७ नरट ५८ दक्षणत ५९ नाचण ६० नादरीवाल ६१ निव्रहटीया ६२ निरदुम ६३ निवेहडिया ६४ परिमाण ६५ पचौ-सलिया ६६ पडवाडिया ६७ पसेरण ६८ पंचोभू ६९ पचासिया ७० पाताणी ७१ पापडगोत ७२ पूरबिया ७३ फलवधिया ७४ फाफू ७५ फोफलिया ७६ फूसपाण ७७ बहापुरिया ७८ बरडा ७९ बडलिया ८० बंदूवी ८१ बाहकटे ८२ बाईमझ ८३ बारीगोत ८४ बायडा ८५ बिम-नालक ८६ बींचड ८७ बौहलिया ८८ भद्रमवाल ८९ भाडिया ९० भालोढी ९१ भूबग ९२ भंडारिया ९३ भाडूंगा ९४ भांथा ९५ महिम वाल ९६ मऊठिया ९७ मरडूला ९८ महतियाण ९९ महकुले १०० मरहटी १०१ मथुरिया १०२ मसूरिया १०३ माचलपुरी १०४ माल्वी १०५ माल्हमहटा १०६ माढोटिया १०७ मूसल १०८ मोगा १०९ मुरारी ११० मुढडिया १११ राडिका ११२ राकिवाण ११३ रीहालीम ११४ ल्वाहला ११५ लडारूप ११६ सगरिप ११७ लडवाला ११८ सागिया ११९ साभडती १२० सीधूड १२१ सुद्राडा १२२ सोहू १२३ सौठिया १२४ हाडीगण १२५ हेडाऊ १२६ हीडोय्या १२७ अंगरीप १२८ आकोडूपड १२९ ऊवरा १३० वोहरा १३१ सागरिया १३२ पलहोट १३३ घूघरिया १३४ कूचलिया १३५ ।

इसतरह श्रीमालोकी १३५ जाती थी बहुतसी तो गुजरातमें बसनेसें गोत्र मारे गये, गुजरातमें गोत नही, मारवाडमे छोत नही, इस न्यायसे और

वाकी देशोंमें, जो श्रीमालोंकी वस्ती है, उन्होंमें गोत्रका पत्ता लगता है, भीन-माल गुजरात मारवाड़की सधी पर है, इस वास्ते श्रीमालोंके विवाह मरणे परणे का रिवाज, गुजरातियोंकी राह मुजब है, अब तो गुजराती श्रीमालियोंकी. अनेक तरहकी नई जाती सज्ञा बन्धगई है. जैसे के मारफतिया, धमधम. देवी इन्होंकी लक्ष्मी है ये बात यथार्थ मिलती भी है श्रीमाली ब्राह्मण और श्रीमाल लक्ष्मीके तो पात्रही हमने बहुतोंको देखा है,

(पोरवाल जांगडा गोत्र २४)

श्री पद्मावती नगर (पारेवा) में २४ जातके राजपूतोंके सवालक्षगृह वसते थे. उन्होंको महावीर स्वामीके ५ में पट्टधारी, श्रीयशोभद्रसूरि प्रभुके निर्वाण पीछे डेढसे वर्ष करीब विक्रमके पूणा तीनसय वर्ष करीब पहले प्रति बोध देके, जैन धर्म धारण कराया, पारेवा नगरके होणेसे पोरवाल कहलाये पीछे फिर कई हजार घर शैवधर्मी राजाओंकी नोकरीसें होगये बाकी जैनधर्मी रहे विक्रम राजाके १०८ वर्ष बीतने पर पोरवाल जावडसा, बडे नामी शूर वीर जिनधर्मी अडबो रुपये लगाकर जिनमन्दिर जीर्णोद्धार, सात क्षेत्रोंमे द्रव्य लगाया, सत्रुजयका सघ निकालकर क्रोडो सोनइये. जात्रियोंके लिये लगाये. फिर सत्रुजय तीर्थका चौदहमा उद्धार कराया सोले उद्धारोंमे इन्होंका नाम मौजूद है. कई हजार घर विष्णुधर्मीयोंको हरिभद्रसूरिजीने. प्रतिबोधे फिर संम्वत् एक हजारमें उद्योतनसूरिःजीके निजपट्ट धारी. वर्द्धमानसूरिः वैश्नव विमलशाह मत्रीके. गोत्रवालोंको, तथा विमल मत्रीको उपदेश दे आबू तीर्थ ब्राह्मणोंने दबा लिया था सो अठारह क्रोड बावन लाख सोनइये खरच ब्राह्मणोंको द्रव्य दे खुशकर पीछे कबजा करा वर्द्धमानसूरि ने मंत्राराधनासे अम्बिका देवीको, प्रत्यक्ष कर बादशाहोंको. बुलाया, जमीनमे अलोपमन्दिर पुष्पमाल ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्याके, हाथसे जहा गिरे. उहा ही जिनमन्दिर है उसस्थान प्राचीन मन्दिर निकला ये सब विस्तार खरतर गच्छकी गुर्वावलीमें विस्तारसे विवरण लिखा है. जिनमन्दिर करवाया. सो विमलवसी नामसें विख्यात है, फिर वस्तुपाल तेजपाल. वह सब सघमे दस्सा करनेवाला, इन्होंने

जगचन्द्र सूरि.को चित्तोडके राणेके पास महातपा विरुद दिराके, आचार्य पदका नन्दी महोत्सव करा, महातपाका तपानामक रखिया जगचन्द्र सूरिःका, जगह २ विहार करवाया तपागच्छ माननेवालोंको हजारोंको श्रीमन्त बणाया, १३ सत्रुंजयका सत्र निकाला वे गिणतीका द्रव्य इन्होंने लगाया, तपागच्छको बहुत सहायता दी, इन्होंकी सहायतासे मारवाड, गुजरात, गोढवाड़में तपागच्छ फैला, आज विद्यमान जो २ मन्दिर जैनियोंके मौजूद है, क्रोडोंके लागत केसो सत्र पोरवालोंकाही कराया हुआ है, बाकी जैनराजाओंका श्री श्रीमाल श्रीमाल ओसवालादिकोंका क्रोडों ही लागतका कराया हुआ मन्दिर मुसल्मान बादशाहोंनें नामी मन्दिर तीन लाख तोड डाले गुर्जर भूपावली वगैरह इतिहास देखणेसे मालुम होता है फिर निन्नाणवे लाखसोनइये धन्ने पोरवाल राणपुरेके मन्दिरको लगाया ऐसे २ धर्मात्मा पोरवाल वन्शमें होगये समय मुताबिक मन्दिरोंकी भक्तिमें अब भी लगाते है गोढवाडमें जैन पोरवालोंकी वस्ती बहुत है खरतर गच्छमें भी पोरवाल बहुत थे उपाश्रय खरतरोंके खालीपडे खरतर साधुओंका विहार कम हुआ इस ६० वर्षोंमें तपगच्छी साधुओका जाणा आणा वणतेरहा गच्छ दोनों पोरवालोंका है खरतर तपा मालवेमें चम्बल नदीके किनार तीन हजार घर अभी भी वैष्णव धर्मी है।

(पोरवाल २४ गोत्र नाम)

१ चौधरी २ काला ३ धनवड ४ रतनावत ५ धनोट्या ६ मजावट्या ७ डवकरा ८ मादल्या ९ सेठया १० कामल्या ११ ऊधिया १२ वखराड १३ भूत १४ फरक्या १५ लमेपस्या १६ मडावऱ्या १७ मुनियां १८ घाट्या १९ गलिया २० भैसोंटा २१ नेत्रपऱ्या २२ दानगढ २३ महता २४ खरड्या, देवी इन्होंकी पद्मावती है।

(हुंदड़ गोत्र)

पाटण नगरका राजा अजित शत्रु, जिसके पुत्र दो भूपतिसिंह १ भवानी सिंह २ भूपतिसिंहकी माता, देवलोक हे गई, भवानीसिंहकी माता, पाटराणी, राजाके माननीय थी, राजपूतोकी रसम है, बडा पुत्र होयसो,

पाटका मालिक हो, वैश्य महाजनोंकी रसम है छोटा पुत्र घरका मालिक होय हिस्सा बराबर जितने पुत्र होंय जितना करैं, पिताके जीते दम एक पत्तीपिता अपणी रख लेवे, माताके जीते माता अपणा सब गहणा रख लेवे, पीहरसें मिला हुआ भी, माताको रखनेका अधिकार है, देवे तो खुशीसें हिस्सेमें दे सकती है लेकिन कायदेसें, हिस्सेदारोंका हक नहीं है, वह माता पिताके मरेबाद, छोटे पुत्रका होता है, यदि माता पिताका दिल दुसरे पुत्रोंको, या और किसीकों, देणा धारे देसकते है, पुत्रोंको रोकणेका अधिकार नहीं है, मातापिताके पास कुछ होय नहीं तो, पुत्र हिस्से मुजब, उन्होंका गुजरान चलावे, इसमें एक धनवंत कमाणेवाला होय तो वोही माता पिताके निर्वाहका जुम्मेवार होता है, सिरपर ऋण, कुटुम्ब खरचका होंय तो, सब पुत्र हिस्से मुजब देणेमें जुम्मेवार है, कोई भाई बड़ा व छोटा अङ्गहीण कमाई रहित होय तो, बाकी भाई मिलके, या समर्थ एकही, रोटी कपड़ा देणेका जुम्मेवार हों, राजाओंके वडा पुत्र राज्यपती होता है इत्यादि कायदेसें विचार भवानी सिंहकी माता अपणे पतीकी बहुत भक्ति करणे लगी, राजाके भोजन करे पीछै भोजन करै, प्रभात समय मुख देखे विना मुंहमें पाणी नहीं डाले, पतीको निंद्रा आये पीछै आप सोवे, विना हुक्म कोई भी काम नहीं करै, इसतरह पतिव्रता धर्म, पालती हुई, रहै एकदिन राजा परिक्षाके वास्ते राज्यकार्य करता रहा, जब रातको च्यार वजे राजा रणवासमें गया तो राणी खडी हुई सामनें आई राजाने पूछा, क्यों आज सोई नहीं, तब राणी बोली, हुजूरनें शयन नहीं फरमाया, मेरा तो क्या, तब राजा सत्कार कर बाहिर आया, और नाजरकों पूछ निश्चय किया, राणी बिल्कुल रातभर खड़ी रही, तब राजाने राणीके पास जाकर प्रसन्नतासे बोला, तुम्हारे सत्वपरमें प्रशन्न हूं जो मागणा होय सो मागो, राणी बोली हुजूरकी महरबानी, राजा बोला, महरबानी तो वनी ही है, लेकिन कुछ मागो (यतः) सकृद् जल्पान्ति राजानः सकृद् जल्पन्ति साधवः) सकृद् कन्या प्रदीयन्ते, त्रीण्येतानि सकृद् २

(अर्थ) राजाकी आग्या एक, साधु वाक्य एक, कन्या एक वेर दी जाती है, ये तीनों एक ही होते है ? पुनः ऐसा भी कहा है, अमोघ वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जन, अमोघ साधुवाक्यच, अमोघ देवदर्शन ? (अर्थ) दिनकी चमकी वीजली, रातका गाजना, यथार्थ साधु हो उसके वचन, और देवताका प्रत्यक्ष दर्शन व्यर्थ नहीं होता ? इस लिये वर याच. तव राणीनें कहा, स्वामी आपका अग जात भवानी सिह ठाकुर होगा के राजा, राजा समझ गया के राणी पुत्रको राज्य मागती हैं, राजा बोला, जा तेरे पुत्रको राज्य दिया, भूपतिको जागीर दूगा राजाने कई अर्मे पीछै वडे पुत्रको जागीर तीसेर हिस्सेका दिया, भूपतिनें कवूल करा, राजा परलोक पहुचा, पिताके तख्त भवानी सिंह वैठा, भूपति सिंहने अपणे वलसे पिता जितना राज्य वढालिया, अनेक राजा पायना भी हुए, तव भवानी सिहनें, ईर्ष्यासे दूत भेजा, तू मेरी सेवा कर, राज्यपती मै हू, तूं सामन्त है, भूपतिने गिनारा नहीं, तव लडणेको फौज भेजी, तव भूपति सिंहने भाईको, अन्याइ जाणकर, फौजको मार भगाई. और आप आके पाटणके वाहिर कर डेरा दिया, दोनोके घोर युद्ध हुआ, तव इस भूपति सिहका मामा, वृद्ध भोजराजा समझाणे आया, लेकिन दोनो भाई माने नहीं. इतनेमे मान तुंगाचार्य भक्तामरस्तोत्रके कर्त्ता, उस वनमे समवसरे, मामा भाणजेकों ले, वन्दनको गया, और गुरुसे धर्म देशनासुनी, चित्तमे धर्मकी वासना हुई, तव गुरुसे बोला, हे गुरु हूवड हूं और भवानी लघु है, इस वातकों आप, न्यायसें फरमा दो, कसूर किसका है, । गुरुने वृत्तांत सुण कहा तू सच्चा है, और भवानीका पक्ष अहकारपूरित है, तव राजा भोजने, अपना मनुष्य भेजके भवानीको बुझाके चरणोंमें लगाया, तव प्रसन्न होकर भूपतिने सव राज्य अपना भी भाईको देदिया, और अपने पुत्रोंयुक्त जैन महाजन श्रावक हुआ; सत्रुजयका सघ निकाला, गुरुके सामने कहा था के, हूं वड हूं, तव गुरुने जातीका नाम हूवड धरा, पीछे परिवार वहुत वढा कुमुद चन्द भट्टारकने, कई घर दिगाम्बर धर्ममें किए, कई घर विष्णु होगये

थे, उन्होको अठारह हजार वावड देशमें रहनेवाले, जो वावडी वजते थे, उन्होको खरतरा चार्य, वल्लभ सूरि.नें, प्रतिबोध दे खरतर किये, वुंवुंकानगरीमे जिह्नागर हूवड़नें, अपना पुत्र, वल्लभसूरि को वहि राया, वो दादा श्रीजिनदत्तसूरिः भये, इस तरह मालवा, मेवाड, गुजरात, वगैरह देशोंमें, हुवड़ दिगाम्बर स्वेताम्बर, दोनों वसते हैं, ।

(गोत्र १८)

स	गोत्र	वश.	स	गोत्र	वंश	सं.	गोत्र	वंश
१	खेरजा	गहाया	७	भद्रेश्वर	भाटी	१३	सोमेश्वर	कछावा
२	कमलेश्वर	परमार	८	विश्वेश्वर	सोनगरा	१४	जियाण	हाडा
३	काकडेश्वर	सोल्खी	९	सखेश्वर	झाला	१५	ललितेश्वर	गहोढिया
४	उत्रेश्वर	चौहाण	१०	गंगेश्वर	जादव	१६	शृंगेश्वर	पडिहार
५	मात्रेश्वर	राठोड	११	अम्वेश्वर	नेहरा	१७	फाल्ग-पेश्वर	चुवाल
६	भीमेश्वर	देवड़ा	१२	मामनेश्वर	सीसोदिया	१८	वुवेश्वर	चन्द्रावत

(चौराशी गछोंके नाम)

२३ में श्रीपार्श्व प्रभुके शिष्य वर्गोका, उपकेश गच्छ वजता था, केशी कुमारके नामसें, वह आचार्य मठाचारी चैत्यवाशी होगये, पीछे उद्योतन सूरिके पास ८३ थविरोंके, और भी शिष्य जो त्यागी वैरागी महाव्रती वजते थे, उसमें पार्श्वप्रभुके शतानीभी, एक थविरके शिष्य पढते थे. महावीरस्वामीके ११ गणधरोंके नव गच्छमेंसें एक सुधर्मा स्वामिकाही गच्छ, कायम रहा, वाकी गणधरोके-शिष्य मुक्ति गये, इस गच्छका नाम तो यथार्थमें सौधर्म, निग्रन्थ गच्छ हुआ, वाद क्रमर से आचर्योके शिष्यवर्गोंसे, गच्छ कुलशाखा अनेकानेक चली, जोकि श्रीकल्प सूत्रमें दरज है, काल दोपसें, सब गच्छ प्राय थोडे रहैं सम्वत् ९०० सें विक्रमकेमें शंकर स्वामीने राजोंके वलसे अत्याचार करा जिस कारण कोटिक गच्छ चन्द्रकुल वज्र शाखाधर आचार्य वृहद्गच्छी श्री नेमिचन्द्र-सूरिःके पट्ट प्रभाकरश्री उद्योत्तनसूरिः महागीतार्थ प्रभावीक, त्याग वैराग्य

विराजित, महाव्रती, एक आचार्यही सं. १००० में विचरते रहें, बाकी सब थविर नामसे विख्यात थे, आज्ञा सबपर उद्योतनसूरिः हींकी थी, तब गुरूमहाराज जैन धर्मके उद्योतका समय अर्द्ध रात्रिकों, नक्षत्रोंका स्वरूप देख, बुद्धिभावसें, प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरिकों सूरि मंत्र दिया, फिर ८३ विद्यार्थियोंको भी सूरिः मत्र दिया, वह सब चौरासीही पालीताणेके सिद्ध बडके नीचेसें ही गुरूके हुक्मसे अलग २ विचरे, उन्होंने ज्ञानयुक्त कियासें, अपणे २ गच्छ प्रगट करे, साधु साधवी आत्मार्थी बणाये उन्होंके नाम ८४ प्रथम निज शिष्य वर्द्धमान सूरि.के शिष्य जिनेश्वर सूरि कों खरतर विरुद मिला वह १ खरतर गच्छ २ सर्व देव सूरिका बड गच्छ पूनमिया ३ चित्रावाल गच्छ विच्छेद जाकर तपा-गच्छ प्रसिद्ध हुआ ४ उपकेश गच्छी ओसियामें जाके शिष्य वर्ग वधाया, इस करके ओसवाल गच्छ कहलाया, ये अभी चारो विद्यमान है, ५ जीरा-वला गच्छ ६ गंगेसरा ७ केरंडिया ८ आणपुरी ९ भरुअच्छा १० उढ-विया ११ गुसउवा १२ डका उवा १३ भीनमाला १४ मुंहडसिया १५ दासरुवा १६ गच्छपाल १७ घोषपाल १८ मग उडिया १९ ब्रह्माणिया २० जालोरी २१ बोकडिया २२ मुझाहडा २३ चीतडिया २४ साचोरा २५ कुचडिया २६ सिद्धान्तिया २७ मसेणिया २८ आगम २९ मलधार ३० भावराजिया ३१ पल्लीवाल ३२ कोरटवाल ३३ नाकदिक ३४ धर्म घोषा ३५ नागपुरा ३६ उस्तवाल ३७ तोपावला ३८ साडेरवाल ३९ मडोवरा ४० सूराणा ४१ खभायती ४२ वडउढिया ४३ सोपारिया ४४ नाडिया ४५ कोछीपुरा ४६ जागला ४७ छापरिया ४८ बोरसडा ४९ दो चंदणका ५० बेगडा ५१ बायड ५२ विजहरा ५३ कुतपुरा ५४ कोच-लिया ५५ सदोलिया ५६ महुकरा ५७ कपूरसिया ५८ पूर्णतल्ल ५९ रेव-इया ६० धू धूं घा ६१ थभणिया ६२ पंचवलदिया ६३ पालणपुरा ६४ गधारा ६५ गुवेलिया ६६ सार्द्ध पूनमिया ६७ नगरकोटा ६८ हिंसारिया ६९ भटनेरा ७० जीतहरा ७१ जगायन ७२ भामसेणा ७३ तागडार्या

७४ कंवेंना ७५ सेवनागच्छ ७६ वाघेरा ७७ वाहड़िया ७८ सिद्धपुरा ७९ घोघरा ८० नेगमिया ८१ सनमा ८२ वरडेवाल ८३ वाड़ा ८४ नागउल्ल, ।

ये सब गच्छ कोई नग्रके नाम कोई क्रियासें कोई विरुद्पानेकें कारणसे नाम भये ।

(अथ जैनी श्रावगी गोत्र ८४ खंडेलवाल)

प्रथम आदीश्वर भगवानसें लेकर महावीर स्वामीतक जैन धर्मके पालने वाले श्रावक कहात्तेथे महावीर स्वामीके मुक्ति गये पीछै चारसय तेइस वर्ष जब बीते, तब पीछे उज्जैण नगरमें, विक्रमे सम्वत् सूर्य वंसी पमार राजा विक्रमादित्यने चलाया, विक्रम सम्वत् १ एककी सालमें, अपराजित मुनिः के सिघाड़ामेंसे, जिन सेना चार्य ५०० सौ मुनिराजको साथ लेकर विहार करते २ सम्वत् १ एककी मिती माह सुदी ५ को खण्डेला नगरमे आये, (खण्डेला नगर जोकि जयपुर राज्यके इलाकेमें है, इसवक्त) खडेलाका राजा खडेलगिरी सूर्य वन्सी चौहाण राज्य करता है अतराप खडेलाके ८३ गाम लगे उस राजधानीमें कई दिनोसे महामारी विपूचिका रोग फैल रहा था हजारो मनुष्य मर रहे थे, तब राजा रय्यतका फिकर करता, ब्राम्हनोंको पूछने लगा हे भूदेव, ये उपद्रव कैसे मिटै, तब ब्राम्हणोंने कहा, हे राजा, नरमेध यज्ञकर, उससे शान्ति होगी, तब राजाने यज्ञ प्रारम्भ करा और ब्राम्हणोकी आज्ञा मुजब बत्तीस लक्षणवन्त पुरुष लाणेकी आज्ञा दी, अपने नोकरोंकों, उसवक्त एक मुनिश्मशान भूमिमें ध्यान लगाकर खडे थे, उन्होंकों राजाके नोकरोने पकडके, यज्ञशालामें ले आये, उन्होंको स्नान कराकर गहणा वस्त्र पहराकर राजाके हाथसें तिलक कराकर हाथमें ब्राम्हणोंनि साकल्य देकर बेदमत्र बोलते, वेदी कुण्डमें स्वाहाकर पुरोडासा बाटते भये, ब्राम्हणोंनें, राजासे, कैसा अनर्थ करा था उस पापसें, मुल्कमे, असंख्या गुणा

---

१ कोई जमाना ऐसा मिथ्या हिंसा धर्म ब्राह्मणोंने फैलाया था घोडे गऊ बकरे हिरण आदि ६०९ तरहके नाना जीव यज्ञमे होमे हुए ब्राह्मणोंके भक्ष होते थे लेकिन हाय-

क्लेश, और उपद्रव होता हुआ, सच्चा मिसला लोक कहते है, (नीमे हकीम खतरे ज्यान, । नीमे मुल्ला खतरे ईमान, ॥ ऐसे दुर्बुद्धियोंके उपदेशसें, भलाई क्या होनी थी, महा भयङ्कर समय आन पहुचा, अग्निदाह, प्रचण्ड अन्धकार, अनावृष्टि, नाना तरहके उपद्रवसें, प्रजा पीडित हाहाकार मचगया, तब राजा मूर्छा खाकर, अचेत होगया, उस मूर्छामें, जो वह मुनिः होमे गये थे, वह दीखणे लगे, राजा उहासें उठके, अपने उमरावोंको, सगले जंगलमें डोलने लगा, हाय मृत्युका वक्त आया, ऐसा विचारता उस वनमें पांचसय दिगाम्बर मुनी ध्यानमें खडे है देखके चरणोंमें जागिरा, और रोता हुआ प्रार्थना करणे लगा, तब मुनि बोले, धर्मवृद्धि, राजा देशके उपद्रवकी शान्ति पूछता हुआ, तब आचार्य बोले हे राजा पापसें तो रोग दुकालदुःख सन्ताप होता है, और फिर तेंने नरमेध यज्ञ कर, मुनियोंको, होमडाला, इस समय फल तो ये मिला है, बाकी तो कराणेवाले और तू नरकका दुख पावेगा, जैसै खूनका भींजा कपड़ा खूनमें धोणेसें साफ नहीं होता, इस द्रष्टान्तानुसार वेदका यज्ञ है तेरा जीव जैसा तुझे प्यारा लगता है, वैसाही सर्व प्राणियोंका समझ, राजा बोला हे प्रभु, जो कुछ कसूर हुआ, सोतो हुआ, अब किसतरह शान्ति होय, वह विधी बतलाओ, गुरू बोले दयामूल जिनधर्म धारण करो, जगह २ चैत्यालय कराके, श्री जिनप्रतिमा धराके शान्तिक पूजन कराओ, धर्मका प्रभाव ऐसा है कि, दुष्ट पापकी शान्ति होगी, राजा खडेलगिरीके खडेलाके सर्व राजपूत, ८२ गाम, और २ गाम सुनारोंके, एव ८४ गामके सब मिलकर राजा खडेलगिरि श्रावक धर्म

जुल्म मनुष्योंकों मारणेमें भी नहीं चूकते थे पतीके पिछाडी मोहाकुल स्त्रियोंको पती मिलापका, लालच दिखाकर उसका अर जेवर ले स्त्रियोंको अग्निमें जलाते थे, और अजाणलोक सती होणा अच्छा ब्राह्मणोंके वहकाये मानते चले आए, पुरुषोंका माल छीनकर कासीकर वतवणा मनुष्योंके प्राण लेते थे, बादशाह अकबरने जिनचन्द्रसूरि के उपदेशसें, करवात लेणा बन्द करा रायपुर छत्तीसगढ जिले महरिया पूजामें परदेशी मनुष्यका बलिदान होता था विसनोई ब्राह्मणोंके सखा जामेका साढ मनुष्य वणाकर मारते थे अंग्रेजोंने सत्ती वगैरह बन्धकरा बाहर ब्राह्मणो बलिहारी है ।

धारता हुआ, जिन चैत्यालय ८४ गामोंमें करा २ कर, पूजन होने ही. सर्व उपद्रव शान्त हुआ, वर्षात होके सुकाल हुआ, तब ८४ जात स्थापन हुई, सोठीलाकेतोसाह कहलाये, बाकी सर्वोंके गाम जात राजपूत कुल-देवी सब नीचे मुजब ।

संख्या	गोत	वंश	गांम	कुलदेवी
१	साह गोत	चौहाण	खंडेला	चक्रेश्वरी
२	पाटणी गोत	तंवर	पाटणी	आमा देवी
३	पापडी वाल	चौहाण	पापडी	चक्रेश्वरी देवी
४	दोसा गोत	राठौड़	दौसागाम	जमाण देवी
५	सेठी गोत	सोमवंसी	घोठाणिया	चक्रेश्वरी देवी
६	भौसा गोत	चौहाण	भोसाणी	नादणी देवी
७	गोधा गोत	गोधडवंस	गोधाणी	मातणी देवी
८	चादूवाड गोत	चद्रेलावस	चंदूवाड	मातण देवी
९	मोठ्या गोत	ठीमरवंस	मोठ्या	औरल देवी
१०	अजमेरा गोत	गोडवंस	अजमेऱ्या	नादणी देवी
११	दरडोद्या गोत	चौहाणवंस	दरजेद गांम	चक्रेश्वरी देवी
१२	गदव्या गोत	चौहाणवस	गदयो गाम	चक्रेश्वरी देवी
१३	पहाड्या गोत	चौहाणवस	पहाड़ी गाम	चक्रेश्वरी देवी
१४	भूच गोत्र	सूर्यवस	भूंछड गाम	आमण देवी
१५	वज गोत्र	हेमवंस	वजाणी गाम	आमण देवी
१६	वज्जमहाराया	हेमवंस	वजमासी	मोहणी देवी
१७	राऊका गोत्र	सोमवंस	रालोली	औरल देवी
१८	पाटोद्या गोत्र	तवरवस	पाटोदी	पद्मावती देवी
१९	पाथडा गोत्र	चौहाणवंस	पादणी	चक्रेश्वरी देवी
२०	सोनी गोत्र	सोलंखीवंस	सोहनी	आमण देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
२१	विलाला गोत्र	ठीमरसोमवंस	विलाला	औरल देवी
२२	विरलाला गोत्र	कुरूवसी	छोटीविलाली	सौतल देवी
२३	गगवाल गोत्र	कछावावंस	गगवाणी	जमवाय देवी
२४	विनायक्यागोत्र	गहलोतवंस	विनायकी	वेथी देवी
२५	वाकली वाल	मोहिलवंस	वाकली	जीणी देवी
२६	कासला वाल	मोहिलवंस	कोसली	जीणी देवी
२७	पापल्या गोत्र	सोढावंस	पापली	आमण देवी
२८	सौगाणी गोत्र	सूर्यवंस	सौगाणी	कल्हाडी देवी
२९	जाझन्या गोत्र	कछावावंस	जाझरी	जमवाय देवी
३०	कटान्या गोत्र	कछावावंस	कटान्यो	जमवाय देवी
३१	वैद गोत्र	सोरडीवंस	वडवासा	आमणी देवी
३२	टोग्या गोत्र	पमारवंस	टौगाणी	पावडी देवी
३३	बोहरा गोत्र	सोढावंस	बोहरी गाम	सौतली देवी
३४	काला गोत्र	कुरुवंस	कुलवाडी गाम	सौहणी देवी
३५	छावडा गोत्र	चौहाण	छावडा गाम	औरल देवी
३६	लौग्या गोत्र	सर्यवंश	लगाणी गाम	आमणी देवी
३७	लुहाड्या गोत्र	मौरठ्यावंश	लुहाड्या गाम	लौसल देवी
३८	मंडसाली गोत्र	सोलखीवंश	मंडशाली गाम	आमणी देवी
३९	दगडावत गोत्र	सोलखीवंश	दरडोदवंश	आमणी देवी
४०	चोधरी गोत्र	तवर वंश	चोधऱ्या गाम	पद्मावती देवी
४१	पोटल्या गोत्र	गहलोतवंश	पोटला गाम	पद्मावती देवी
४२	गींदोड्या गोत्र	सोढावंश	गिन्होडी गाम	श्री देवी
४३	साखूण्या गोत्र	सोढावंश	साखूणी गाम	सिखराय देवी
४४	अनोपड्यागोत्र	चंदेलवंश	अनोपडी गाम	मातणी देवी
४५	निगोत्या गोत्र	गौडवंश	नागोती गाम	नादणी देवी
४६	पागुल्या गोत्र	चौहाणवंश	पागुल्या गाम	चक्रेश्वरी देवी
४७	मूलाण्या गोत्र	चौहाणवंश	मूलाणी गाम	चक्रेश्वरी देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
४८	पीतल्या गोत्र	चौहाणवंश	पीतल्यो गाम	चक्रेश्वरी
४९	वनमाली गोत्र	चौहाण	वनमाल गाम	चक्रेश्वरी
५०	अरडक गोत्र	चौहाण	अरडक गाम	चक्रेश्वरी
५१	रावत्या गोत्र	ठीमरसोमवंश	रावत्यो गाम	औटल देवी
५२	मौदी गोत्र	ठीमर सोमवंश	मौदहसी गांम	औरल देवी
५३	कौकण राज्या	कुलवंशी	कौकणज्यागाम	सौनल देवी
५४	जुगराज्या गोत्र	कुरवंशी	जुगराज्या गाम	सौनल देवी
५५	मुलराज्या गोत्र	कुलवसी	मूलराज्या गाम	सौनल देवी
५६	छहड्या गोत्र	कुलवसी	छाहड्या गाम	सौनल देवी
५७	टुकडा गोत्र	दुलालवंस	टुकडा गाम	हेमा देवी
५८	गौती गोत्र	दुलालवंस	गौतडा गाम	हेमा देवी
५९	कुलाभण्या	दुलालवंश	कुलभाणी गांम	हेमा देवी
६०	वौरखड्या गोत्र	दुलालवंश	वौरखडी गाम	हेमा देवी
६१	सरपत्या गोत्र	मोहिलवंश	सरवती गाम	जीण देवी
६२	चिरडक्या गोत्र	चौहाणवंश	चिरडकी गाम	चक्रेश्वरी देवी
६३	निगर्द्या गोत्र	गौडवंश	निरगद गाम	नादणी देवी
६४	निरपोल्या गोत्र	गौडवंश	निरपाल गाम	नादणी देवी
६५	सवड्या गोत्र	गौडवंश	सरवड्या गाम	नादणी देवी
६६	कडवडा गोत्र	गौडवंश	कडवगरी गाम	नादणी देवी
६७	सांभरपा गोत्र	चौहाणवंश	साम्भ्यो गाम	चक्रेश्वरी भीयाडी
६८	हलद्या गोत्र	मोहिलवंश	हरलोद गाम	जाणिधीयाडी देवी
६९	सौमगसा गोत्र	गहलोतवंश	सौमद गाम	चौथी देवी
७०	वंवा गोत्र	सोढावंश	वंबाली गाम	सिखराय देवी
७१	चौवाण्या गोत्र	चौहाणवंश	चौवरत्या गाम	चक्रेश्वरी देवी
७२	राजहश गोत्र	सोढावंश	राणहंश गाम	सिखराय देवी
७३	अहंकाऱ्यागोत्र	सोढावंश	अहकर गाम	सिखराय देवी
७४	भूसावड्या गोत्र	कुलवंशी	भसवड्या गाम	सौनल देवी

संख्या	गोत्र	वंश	गांम	कुलदेवी
७५	मौल्सरा गोत्र	सोढावंश	मौलसर गाम	सिखराय देवी
७६	भागडा गोत्र	तींमरवंश	भागड़ गाम	औरल देवी
७७	लोहड्या गोत्र	मौरठावंश	लोहट गांम	लौसल धीयाडी
७८	खेत्रपाल्या गोत्र	दुल्हाल्वंश	खेत्रपाल्या गांम	हेमा देवी
७९	राजभद्रा गोत्र	साखलावंश	राजभद्रा गाम	सरस्वती देवी
८०	भुवाल्या गोत्र	कछावावंश	भूवाल गाम	जमवाय देवी
८१	जलवाण्या गोत्र	कछावा वंश	जलवाणी गाम	जमवाय देवी
८२	वैद्राल्या गोत्र	ठींमर वंश	वनवौडा गाम	औरल देवी
८३	लठीवाल गोत्र	सोडा वंश	लठवाडा गाम	श्री देवी
८४	निरपाल्या गोत्र	मौरटा वंश	निरपती गाम	अमाणी देवी

जैन धर्म पालनेवाले इस समय लाड परवाल पल्लीवाल वगैरह वणिक् जाती वहुत है मगर उन्होंकी उत्पत्ती गोत्रादिकका पत्ता मिल्णेसें किसी वक्त जरूर लिखा जायगा ये वात वहुत जाननें योग्य है आर्य देश २५॥ देशमें जितने वणिये व्यापारी दया धर्म पाल्ते हैं वे सव राजपूत या ब्राह्मन वंश वालोंको हिंसा धर्म वैद यज्ञ तथा मास मदिरा खाणापीणा छुडाकर व्यापारी वणाणेवाले जैनके आचार्योंका उपकार है उन्होंमेंसे कइयक स्वामी शङ्कराचार्यके पीछे कोई वणिया शैव कोई विष्णु पीछे हो भी गये हैं, तथापि दया धर्म पाल्णा मास मदिराका त्याग तो उन वाणियोंकी जातीमें प्रचलित है, वह जैन धर्मके आचार्योंका ही उपकार प्रथमका समझणा, क्योंकि स्वामी शङ्कराचार्यजी श्री चक्रकों माननेवाले थे, उन्होंके च्यार शिष्योंके नामसे चारों ही हिन्दुस्थानकी दिशाओंमें जो शृंगेरी १ द्वारिका वगैरह मठ है, उसमें श्री चक्रकी थापना है, और श्री चक्र है सो वाममार्गी कूंडा पन्थी शाक्तोंका निजपरम इष्ट है इसलिये वाम मार्गी मदिरा पीणा मास खाणा पवित्र धर्म समझते हैं, मास १ मदिरा २ मच्छी ३ मैथुन ४ और मुद्रा ५ ये पांच वातोंके करणेवाले, मुक्ति जाते हैं, ऐसा वाम मार्गका सिद्धान्त है, चंडालणीसें भोग करणा पुष्कर तीर्थ मानते है, रजस्वला २

धोवण ३ इसतरह अधम जातीसे गमन करणा, ये वाम मार्ग वालेंके मतमें तीर्थयात्रा स्नान दानका फल मिलता है, इत्यादि मतके उपदेशकोंके, उपासक दया धर्म किस तरह पाल सके है खुद स्वामी शङ्कराचार्यके शिष्य, १० नामके गुसाई बकरा भैसामींढा मारकर मास खाणा, मदिरा पीणा, दक्षिण हैदराबादमें हमनें, सईकडों गिरी पुरीयोंको आखोसे देखा है, जब उन्होंके धर्माचार्य इस तरह काम करते थे और करते है तो उन्होंके उपासकोंके दिलमें दया धर्म किसनें डाला है, ये बदौल्त जैनाचार्योंकी है, जहा एक ब्रह्म, ऽह ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, ऐसा श्रद्धा रखणेवालोंके वास्ते न तो कोई ब्राह्मण है, न कोई चाण्डाल है, स्वामी शङ्करने काशीमें, ब्रह्मपणे जाति भिन्नता कुछ नहीं समझी, ऐसा ब्रह्म समाजी बंगाली कहते भी है कि, जातिका झगडा ऽहं ब्रह्मवाले अभी करते है सो बडी भूल है, हा अलबत्ते जैनी वैष्णव करें तो न्याय है, सो तो फक्त देखणे मात्र है जिसनें अंग्रेजी दवा सेवन करा अर्क वगैरह पिया, वह मास मदिरा वेशक खाचुका, चाहै वैष्णव हो, चाहै जैन, बिलायतके व्यापारियोंका ढग रमणक दिखाणा है, मगर अभ्यन्तरी परिणाम तो, दया धर्म पालणेवाले विचार करे तो, निभाव होय, स्वामी शङ्कराचार्यजीनें, सब जातीको एकाकार करणेको, जैनियोंका तीर्थ, जीरावला पार्श्वनाथका जो अब जगन्नाथजीके नामसे प्रसिद्ध है, उसको बलात्कार अपने कब्जेमें करा मूर्त्तिपर लकडका हाथ पाव कटा चोला पधराके, पार्श्व प्रभूकी मूर्ती अन्दर कायम रखके, भैरवी चक्र बिठलाया कि, यहा जातीकी भिन्नता नहीं रखणी, ऐसा दयानन्दजो सत्यार्थ प्रकाशमें लिखते है, मतलब उन्होका ऐसा था कि यहा चारों वर्ण सामिल खालेंगे तो फेर आपसमें, नौ पूरबिया, तेरह चौका नहीं करेंगे, सो दोनो पार नहीं पडी, दोनो खोई रेजोगिया, मुद्रा अरु आदेश, सो हाल बणगया, उहा जाके सब ब्राह्मण वैष्णव सामिल झूटन खाके जात भी खो बैठते है, और पुरीके बाहिर निकले फिर तो वही छूआ मौजूद है, ये जगनाथ पार्श्व प्रभुका मन्दिर उडिया देशके राजा जो परम जैन थे, उन्होंने कराया था, जो कि

अत्र कलकत्तेमे मलक कहलाते है बंगालियोंमें, इसवास्ते मात्र दयाधर्मी वणिक् जाती जैनधर्मी थे दक्षिण कर्णाटक महाराष्ट्र तैलंग इसमें जो लिंगायत वणिये सेठी कहलाते है, ये जैन थे, हिमाद्रि राजाका प्रधान, बसप्पेनें, जैन धर्म छोड शैव मत सन्यासी जंगम नामका भेष खडा किया शैवधर्म चलाया, आखिरको जैना चार्योसे हिमाद्रि राजानें सभा कराई बसप्पा हार गया, ये वार्ता सेठी लोक सब जाणते है, बसप्पेके पुराणमें उसके ११ में अध्यायकों अभी भी जंगम गुरू लिङ्गायत वणिये नहीं पढते है, नहीं सुणते हैं, उसमें जैनियोंसे हारा प्रश्नोत्तर लिखा है, इस लिये बसप्पेनें लाखों जैन दिगांबर मुनियोकों कतल करा लिङ्गायत वणियेंके शिरपर शिखा नहीं, गलेंमें लिङ्ग, मुरदा घरमें मरे तो, उसकों थम्भेसें बांध कर, रसोई माल बणाकर, मुरदेके सामने जंगमोंकों बिठलाकर भोजन कराते है, वह जंगम मुरदेको ग्रास (कवा) दिखाता जावै, और खाता जावै पीछे मुर्देकों बैठा निकाले, सन्मुख शंख बजावै, गाडकर आवै, लेकिन् स्नान नहीं करते ऐसा स्वरूप शिव धर्म धारण कर करते है, तैलङ्ग देशमें कूमटी वणिये सर्व जैन थे, अब शैव, मांस मदिरा त्याग है।

(अथ बघेर वाल ५२ गोत्र) महाजन जैन)

बघेरवाल महाजनोंकी आदि उत्पत्ति गाम बघेरामें हुई राजा व्याघ्र सिंह इन्होंका इतिहास भी यज्ञमें हिंसा हिंसाका फल नर्क ऐसा उपदेश श्री जिन वल्लभसूरि आचार्यादिकोंसे सुणके, जैन श्रावक महाजन होते हुए दिगाम्बर श्वेताम्बर दोनो धर्म मानते है, व्याघ्र सिंहमें बाघडी कहलाये, बाकी गामके नामसें, बघेरवाल बजगे लो, ।

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१	खटवड गोत्र	६	बावन्या गोत्र	११	कौटेया गोत्र
२	लावावास गोत्र	७	सोधडमोड गो	१२	भाडाप्या गोत्र
३	मालूण्या गोत्र	८	बागड्या गोत्र	१३	कटान्या गोत्र
४	घनोत्या गोत्र	९	हरसोरा गोत्र	१४	वलवाड्या गोत्र
५	सवधरा गोत्र	१०	साहूला गोत्र	१५	धौल्या गोत्र

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१६	पगाऱ्या गोत्र	३०	अनेपुरा गोत्र	४४	चमाऱ्या गोत्र
१७	वैरखड्या गोत्र	३१	नेगोत्या गोत्र	४५	सुरलाया गोत्र
१८	दीवड्या गोत्र	३२	कानरिया गोत्र	४६	सौराया गोत्र
१९	वडमूंछ्या गोत्र	३३	ठाइया गोत्र	४७	सीलौस गोत्र
२०	तातहडचागोत्र	३४	कुचील्या गोत्र	४८	स वूण्या गोत्र
२१	मंडाया गोत्र	३५	मादुलिया गोत्र	४९	जंवाल गोत्र
२२	वालदत्तट गोत्र	३६	सेठ्या गोत्र	५०	केलग्या गोत्र
२३	पीतल्या गोत्र	३७	मुड़वाल गोत्र	५१	खरड्या गोत्र
२४	दगोऱ्या गोत्र	३८	सामऱ्या गोत्र	५२	
२५	भूऱ्या गोत्र	३९	सरवड्या गोत्र		
२६	देहतोड़ा गोत्र	४०	पापल्या गोत्र		
२७	निठाणीवाल	४१	भूंगरवाल गोत्र		
२८	मथूऱ्या गोत्र	४२	ठग गोत्र		
२९	जोगिया गोत्र	४३	वहरिया गोत्र		

इन महाजनोंका वश व देवीका पत्ता लगा नहीं इस वास्ते लिखा नहीं है और जादा इतिहास लिखणेसें ग्रंथ भी वध जाता है लोक गुणके तरफ खयाल रखणे वाले कम वस यह कह उठेंगे दाम ज्यादह लगाये है इस लिये ।

(अथ नरसिंघपुरे महाजन जैनी गोत्र २८)

नरसिंघपुर नगर झव्वलपुर दक्षण मध्यदेशमें है दिगाम्बराचार्य भट्टारकजी रामसेनजीके उपदेशसें वेद यज्ञ नानाजीव वध घातरूप मिथ्यात्व धर्मत्यागके अष्टद्रव्य पूजा चैत्यालयमें श्री २४ तीर्थंकरके मूर्त्तिकी सम्यक्त युक्त नरसिंघपुरका राजा प्रजाके साथ जैनधर्म आदर करा इन्होकी वस्ती मालवा मेवाड़ तथा धूलेवगढ़ केशरिया नाथ तीर्थपर है ।

संख्या	गोत्र	देवी	संख्या	गोत्र	देवी
१	खडनर	वारणी देवी	१५	तेलियागोत्र	कान्तश्वरी देवी
२	पुलपगार	पावडै देवी	१६	बल्लोलागोत्र	अम्बा देवी
३	मीलण होडा	अंबाई देवी	१७	खेलणगोत्र	कन्टेश्वरी देवी
४	रयणपारखा	रयणी देवी	१८	खामी गोत्र	वरवासनी देवी
५	अभथिया	रोहणी देवी	१९	हरसोलगोत्र	चक्रेश्वरी देवी
६	भुद्रपसार	भवानी देवी	२०	नागर गोत्र	नीणेश्वरी देवी
७	चिभड़िया	धरू देवी	२१	जसोहरगोत्र	झाझणी देवी
८	पवलमया	पायई देवी	२२	झडपडागोत्र	पिशाची
९	पदमह	पलवी देवी	२३	बारोड	पिपला
१०	सुमनोहर	सोहणी देवी	२४	कयौटिया	पीरण
११	कलशधर	मौरिण देवी	२५	पचलोल	मौरटा
१२	कक्लो	चक्रेश्वरी देवी	२६	मोकरवाडा	
१३	वारठेच	बहुरूपणी देवी	२७	वसोहरा	सीवाणी
१४	सापड़िया	पद्मावती देवी	२८		

(अथ गौरारा महाजन जैनी गोत्र २२)

गौरारे श्रावक तीन प्रकारके है गौरारारे २ गौल सिंघारे ३ गौला पूरब इन सबोंका जैन धर्म है रहना इन्होंका ग्वालियर इटावा, आगरा, इलाकेमें है इन्होंकी उत्पत्ति कहापर कैसे हुई सो तोपाई नहीं परन्तु गोत्र मिले सो लिख दिया है किसीको मालूम होय तो लिख भेजणेसे दुसरी बेर छपया जायगा।

संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र	संख्या	गोत्र
१	पावई कैसे गेई	९	जमसरिया	१७	चौधरी आन्तरिक
२	गयेली कैसे गेई	१०	चौधरी जासूढ	१८	चौधरी कूकल्या
३	पैरिया	११	चौधरी कैलमे	१९	डघा गोत्र
४	वेद गोत्र	१२	वरइया गोत्र	२०	तसटिया गोत्र
५	नखेदखुखेद	१३	ढन सइया गोत्र	२१	वडसइया गोत्र
६	सिमरइया	१४	अदवइया गोत्र	२२	तत गुरिया
७	कौमाडिया	१५	सराफ गोत्र		
८	मौहानें	१६	चौधरी वरादकें		

अथ अग्रवाल जैन वैश्य उत्पत्ति गोत्र १७॥

ये वात जगत् विख्यात है कि चारवर्णोमें सबसें पहले वैश्यवर्णका काम करणेवाले इस आर्यावर्तमें उग्र कुलवाले ये जैनियोंके आवश्यक सूत्रकी टीकामे युगादि देशनामें भरतेश्वर वाहुबली वृत्तीमें तेसठ शलाका पुरुष चरित्रमे आदिनाथ (ऋषभ चरित्रमे) वडी मनुस्मृतीमें इत्यादि श्वेताम्बर सप्रदाई ग्रंथोंमे तथा इस तरह दिगाम्बराचार्य रचित आदिनाथ पुराण उत्तरपुराणादि धर्म कथानुयोगमे, इस तरहसे लिखा हैं, जब भगवान ऋषभ देव तेतीस सागरका आयु सर्वार्थ सिद्ध विमानसें पूर्ण कर, निर्मल तीन ज्ञानयुक्त इक्ष्वाकु भूमीं जो कश्मीरके पास परे है, जिसके चारों दिशामे चार पहाड आये हुए है सुर शैल्य १ हिम शैल्य २ महा शैल्य ३ और अष्टापद (कैलाश) ४ इसकी वीच भूमीमें ऋषभ देवके वडेरे सात कुलकर (मनु) विमल वाहन वगैरह युगलिक लोकोंमे कसूर करणे वालोंपर वचन दण्ड करणेवाले हुए प्रथम हकार फिर मकार और फिर धिक् (धिकार) इस तरह कइयक उस जमानेके लायक कायदे बाधणे वाले हुए, लोक ऐसे ऋजु थे, सो जुबानसे धमकाणेसेंही डर मानते थे, काल जैसै वीतता गया, तैसे २ कल्पवृक्षहीन फल देणे लगे, तब उन युगलिक लोकोंके अन्यायका अकुर वढणे लगा, विमल वाहनके सातमें मनु नाभिराजा उनके मरुदेवी राणीके, ऋषभ देवका जन्म हुआ, उहा नगरी वगैरह कुछ नहीं थी, जो वस्तु उन युगलिक लोकोंको चाहिये थी, वह १० जातके कल्पवृक्ष उन्होंको देते थे, पूर्वजन्मके तपके प्रभावसें युगलिक पुन्यवन्त पैदा होते है, ४५ लक्ष योजनमें जो अढाई द्वीपमे मनुष्योंकी वस्ती उसमे कर्माभूमि १५ मसे सुकृत करके युगलिक लोक अकर्मा भूमीमे कालधर्मसे, उत्पन्न होते थे, प्रजा इक्ष्वाकु भूमींमें कुल दोयसय ऊपर कुछ संख्या प्रमाण औरत मर्दोके जोडे रहते थे, बाकी पाचसय छब्बीस योजन छकला ऊपर सब भरतभूमी मनुष्य क्षेत्रकी जिसमै वेताढ्य (हिमालय) इधर दक्षिण भरत आधा दोयसय १२ योजन तीन कला प्रमाणक्षेत्र, सब खाली मनुष्य विगरका था वैताढ्यके पहिले तरफ उत्तरमें म्लेच्छ खण्ड गुण

पचास नगर उस वक्त वस्तीवाले थे, उन लोकोंका खान पान मास मछ्लीका था क्यौं के जैन ग्रथोमें लिखा है भरत पहिला चक्रवर्त छ खण्ड भरत क्षेत्र साधने लगा तब हिमालयकी तिमिश्रा गुफाके बाहर फौजका पड़ाव डाला जिसकों अभी खन्धार कहते है, यहासे ४९ नगरवाले म्लेच्छ राजाकों, अपणी आना मनाने दूत भेजा, ऐसा लेख जम्बूद्वीप पन्नती मूलसूत्रमे लिखा है, इसलिए सिद्ध होता है के, ऋषभदेवके वडेरोंके वखतसेंही, म्लेच्छ खण्डकी वस्ती कायम थी, आधे भरतमें कालधर्म पहिला दूसरा तीसरा आरा आदि वरतणा सिद्ध होता है, सर्व भरत क्षेत्रमें सिद्ध नहीं होता, ऋषभ देवनें तो म्लेच्छ खण्ड वसाया नहीं, केवल सौ पुत्रोंके नामका सौराज्य जिसमें निन्याणवें इधर १ एक हिमालयपार वहुली देश, का बल, जों बाहुबलकू वसा कर दिया, भरत चक्री ४९ नग्र म्लेच्छोपर आज्ञा मनाकर फिर अयोध्या आकर बहुली देशकी लडाई तो, पीछे करी है, जैन लोकोंनें इस वातकों विचारणा कोई बुद्धिमान इस वातकों न्यायसें असत्य ठहरा देगा सिद्धान्तकी साक्षीसें तो दुसरी वेर वह वात लिखी जायगी, हमनें तो सूत्रकी साक्षीसें, ये वात लिखी है, हा खास तौर पर जैनधर्म वाले ये बात मानते है के भरत एरवतमें कालचक्र फिरता रहता है ऋषभ देवका होणा, तीसरे अरेका अतका भाग अवसर्प्पणी कालका था, अग्रेज लोकभी हिमालय (वैताढ्यके दक्षिण मुल्क तीन खण्डकोही भारत भूमि कहते है क्या मालुम, ये नाम कौरव पाण्डवोंके युद्धके होणेसे भारत कहलाता था, इस-लिए धरा है या भरत चक्री पहला जब होता है, तब भरतही नामका होता है इसलिए इस भूमीकों भारत क्षेत्र कहते हैं (भरतोद्भवा भारता) लेकिन जैनधर्म वाले तो, जहांतक भरत पहले चक्रवर्तका राज्य शासन चले, ऋषभ कूट पर्वततक, जिसपर अपणा नाम लिखता है, उहा तक भरत क्षेत्र मानते है, पैरिसतक, उसके पहले वर जैनियोंका लिखा चुल्लहिमवंत्तपहाड जिसकों आजकल्कोकाफ कहते है, और उसके ऊपर, परियोंकी वस्ती मानते है, उसके पहिलेवर कोई मनुष्य नहीं जासक्ता, वह उदयाचल पहाड कहलाना है, जहांसें सूर्यकी किरणें इस भारत भूमीपर प्रकाश कर

'प्रभात समय दिखाई देती है, भारत भूमींमें फकत् म्लेच्छ भील वगैरह 'पहाडोंके पास अण पढ लोक रहते थे, और वस्ती नही थी, उन्होंको -ग्रीक लोकोंनें पेस्तर आकर, इल्म सिखाकर हुशियार करा, इस लेखका परमार्थ तो हमारी समझसें तो ऐसा निकलता है कि ये वार्ता दक्षिण भरतकी नहीं है हिमालियेके पहले तरफ जो उत्तर भरत है उसमें ४९ नग्र वालोंको ग्रीक-लोकोंने कोई जमानेमें अपणे सागिर्द वणाये होंगे, खैर -रहणे देते हैं ॥ जब ऋषभ देवनें बाल्यावस्थात्यागी नाभी मनुके हुक्मसें, युगलिक लोकोंने, युगलियेंमें अन्याय फैलता हुआ देखके, ऋषभकों राजा बनाया, उस वक्त लोक जुबानकी सजाकों कुछ नहीं गिंणारने लगे, अव्वल तो कल्पवृक्ष फलहीन हुए, देव प्रथम तो चावल पकाकर सबोंको रसोई करके खाणा सिखाया, फेर वस्त्र बुननेवाले नाई चित्तेरे वगैरेह ५ कर्मके सो कर्म करणेवालोंकों कारीगरी सिखलाई प्रजाकों वढाणे संगमें जन्मी कन्याका विवाह बन्दकर दूसरेकों बेटी देणा और दुसरे गोत्रीकी लाणा सिखाकर युगला धर्म मिटाया तब रसायणिक प्रयोग पास होकर, प्रजा बढी, गढ, कोट, किला, अस्त्र, शस्त्र, हाथी घोडे, गऊ, ऊंठ सब मनुष्योंके काम लायक करे नोकरी लिखत पठित प्रमुख ७२ कला प्रगटकर प्रजाकों सिखलाई ६४ कला स्त्रियोंको, ब्रह्माचार सिखोकर, नवनारू, नवकारू, ऐसे अठारह श्रेणीके १८ प्रश्रेणीके ३६ कुलक्षत्री वशमेसे प्रगट करे

सीसगर १ दरजी २ तंबोली ३ रगारे ४ गवाल ५ बढई ६ संग्रास ७ तेली ८ धोबी ९ धुनियापिनारा १० कन्दोई ११ कहार १२ काछी १३ कुम्भार १४ कलाल अर्कअतरवाले १५ माली १६ कुंदीगर १७ कागजी १८। कृपाण १९ वस्त्रकार २० चितेरा २१ बंधेरा २२ रेवारी २३ लखारा २४ ठंठारा २५ राजपटवा २६ छप्परबंध २७ नाई २८ भडभूजा २९ सोनार ३० लोहार ३१ सिकलीगर ३२ धीवर पालखीवाले ३३ चमार ३४ गिर ३५ सुथार ३६ इन्होंमें फर कई २ तरहकी भिन्नता भई, जैसै छींपादरजी १ मारूदरजी टोर नियानाई १ मसालचीनाई २ मारू कुंभार १ बांडा -कुभार २ इसतरह जिन्होंने ये कृत्य किया वोही जाति होगई ब्राह्मणिया

सुनार १ भेद सुनारादि समझना, इनोंका कृत्य समयसे पलटा अब भगवानने, प्रजामें ४ वर्ण स्थापन किये, उग्रकुल १ इन्होंकों दण्डपासक यानें कोट कचहरी दिवान मुसद्दी कोटवाल प्रमुख राजकार्य करणा न्यायाधीस वणाया १, भोगकुल २ प्रजाके वास्ते भगवान आप जिन्होंकों गुरू करके माना २ राजन्यकुल ३ जो भगवान इक्ष्वाकुका कुल, जिसमे सूर्य यश पोतेका सूर्य वंश १ चन्द्रयश पोतेका चन्द्र वंश २ चन्द्र सूर्यके जितने कोशोंमें पर्याय वाचक नाम है वह सब नाम इन वशवालोंका समझणा, जैसै आदित्य वश १ तो सूर्यही का नाम है, इस तरह सोमवश २ वो चन्द्रहीका नाम है, कुरु पुत्रसे कुरु वश, इत्यादि सौ पुत्रोंका परिवार सन्तान राजन्यवश कहलाया, ३ बाकी युगलिक लोक प्रजा उन्होंका काश्यप गोत्र और क्षत्रीवश स्थापन करा जिसमें छत्तीस कर्मकर निकले, जिसके पीछे असंक्षा काल वीतणेसें उन चारोंका पर्याय वाचक नाम हो गया, उग्रकुल वाले गुप्त कहलाये, देखिये वाग्भट्ट नामका जैन गुप्त (वणिक्) नें वाग्भट्ट वैद्यक ग्रथनेम निर्वाण महाकाव्य वाग्भट्टालङ्कार काव्य अनेकानेक गुप्त ज्ञातीके बनाये हुये है ये वाग्भट्ट जैनधर्मी थे उनके ग्रंथही धर्मकी सबूती देता है, भोगकुलको शर्म्मा संज्ञा हुई, राजन्य वंशीयोंको वर्मा संज्ञा हुई, इस तरह ही चारोंका पर्याय नाम धरा पीछैसें विप्र संज्ञा वेद पाठीकों, विगर संस्कार शूद्र संज्ञा, सस्कार किये पीछै द्विज सज्ञा, जब जीव अजीव पुन्य पाप इत्यादि नव तत्व जाणे, क्षमा १ मार्दव २ आर्जव ३ निर्लोभता ४ तप ५ सत्य ६ सौच अभ्यतर और वाह्य ७ (सजम ८ इन्द्रियदमन) और जिन पूजादिक षट् कर्म ९ इतने करनेवालोंके गलेमें यज्ञोपवीत डाली गई, जिसका अपर नाम है, नोगुणी, उसको प्राकृत व्याकरणके शब्दसें, माहण भरत चक्रीनें कहा था उसका संस्कृत व्याकरणसें (ब्रह्म वेत्ति स ब्राह्मणः) याने ब्रह्म जो अविनाशी आत्माका स्वरूप जाणे, सो ब्राह्मण कहलाये, शर्म्मापद देव पूजकोंको मिला, वर्मा नाम धराणेवाल राजन्य वंशीयोंको क्षत्री कहने लगे, वह जो राज्य कार्य कर्ता उग्रवंशी जो गुप्त नांम धराया था वो वैश्य कहलाये, छत्तीस श्रेणीके प्रश्रेणीक क्षत्री वशवाले जो थे वह

कर्म्मा नाम धराते थे वह शूद्र कहलाए ये संज्ञा चार ब्राह्मण १ वैश्य २ क्षत्री ३ और शूद्र ४ श्रीकृष्ण चन्द्रके राज्यमें कृष्ण द्वैपायन व्यासने गीता बनाई उस वक्त यह नाम, पूर्व नाम पल्टाके धरे गये, गीतामें कर्मके अनुसार चार वर्ण बधे है, व्यापार, खेती करणा, गऊओंको गोकुलमे रखणे वालेकों, वैश्य कहा है, इस न्यायसें तो जाट, कुणबी, सीरवी, अहीर वगैरह भी, ऐसा कृत्य करणेसें गीताके हिसाबसें वैश्य होणा चाहिये, पुराणोंमें छ कर्म करणेवाले ब्राह्मनोंकों अधम लिखा है (यतः) असीजीव मषीजीव, देवलो ग्रामयाचकः। धावकः पाचकश्चैव, षडेते ब्राह्मणाधमाः ॥ १ ॥ अर्थ) तलवार बाधके फौजोंमें सिपाही है नोकरी करै, मसीयानें लिखणा नामाठामा व्यापार करे, देवलों यानें मन्दिरोकी नोकरी कर बलि भक्षिणादि करे, ग्राम याचक यानें ब्रती, यजमान वणाके, दापा, वट, परणे मरणे आदिका लेवे, धावक, यानें, नोकरीमें इधर उधर जावै, सन्देशा करे कासीदी करे, ऐसे ब्राह्मणोंको, पुराणोंमें, अधम लिखा है, अरे कलियुग ऐसा कोई काम नही है, सो इस पेटके लिए ब्राह्मण लोक नहीं करते होय, केवल नाम मात्र ऋषियोंकी सन्तान है, दातारकी भक्ति, दान देणा गृहस्थका धर्म है, गृही दानेन शुद्ध्यति, इस वचनसे, बाकी नौकरी हाजरी भराके जो ब्राह्मणोंको पुन्य समझ दान देते है, वो देणेवाले, बडे मूर्ख है, पुन्य उसका नाम है, जिसका बदला नहीं लिया जावै, इस बातको समेट, उग्र कुलका इतिहास लिखते हैं, ।

उग्रकुल दुनियाका कार्य चलतेही स्थापन हुआ, वह क्रमसें राजकार्य करते २ कोई भुजबली राजाधिराज भी बन गये, ऐसा जमाना नहीं गुजरणा बाकी रहा होगा कि, चारों वर्णोंवाले राजा न हुए होय, यानें जमानेके फेरसें अंत्यजभी राजा हो चुके, और राजा अन्नसें मोहताज हो गये, ये सब पुन्यपापके योगसे, कर्मोंने जीवोंको अनेक नाच नचाये है, और नचाता है, और नचावेगा, जमानेके फेरफारसें कभी धर्म जैन प्रबल रहा, इसवक्त नाना धर्मका शिक्का अपणा वक्त दिखा रहा है, मिथ्यात्व जीवके संग अनादि कालसें लग रहा है, ससारमें रुलणेवाले जीवोंकों, जिस तरफ शरीरके

पांचो इन्द्रियोंके, सुख मिले, अपने लिए चाहै कितना द्रव्य खरच हो जावै; परमार्थमें पैसो कम खर्च पडे, वह धर्म, कलियुगी जीवोंको, संसारसे तारणे वाला मालुम देता है, जिधर जिसका जी मानता है, उधरही धर्म कबूल करता है, लेकिन जिधर पाचोइन्द्रियोंको मजामिले उस धर्मकी तरफ ज्यादह, रजू होते दीखते है, उग्रकुलवाले वैश्य वजणे लगे, और आपसमें वली होकर, राज्य भी करणे लगे राजा उग्रकुली धनपाल धनपुरी नगरी पचाल देशको कबजे करके, बसाई, इन्होंके कई पुस्तान तक, राज्य रहा, राजा रंग पुत्र विशोक, विशोकके मधु, इस वक्तमें वैताढ्य पर्वतपर, इन्द्रनाम-विद्याधरोंमें बडा बलवन्त राजा उत्पन्न हुआ, इस मधुका वर्णन, जैनरामायणमे नारदजीको रावणनें हिंसक यज्ञ क्यों कर चला, इस प्रश्न करनेंसे उत्तर दिया हैं, उसमें राजा मधुका और सगरका वृत्तान्त चला है, उहां देखणा,-मधुका महीधर, इस वक्त राजा इन्द्रने रावणके वडेरोंको, युद्धमें हटाकर, लङ्का छीनली, रावणके वडेरे पाताललङ्का (अमेरिका) में, जा रहे, महीधर रावणके वडेरोंका, आज्ञाकारी था, इस वास्ते इन्द्रनें इसका भी राज्य छीन लिया, महीधर फिर और राजाओंकी नौकरी करणे लगा, पीछै रावण पैदा हुआ, और इन्द्रसे युद्धकर, वैताढ्य पर्वतका राज्य छीनलिया, महीधरकों रावणनें बुलाकर सेनापती बणाया, जब रावणपर रामचन्द्रजी आए, तब विभीषणके सङ्ग, महीधर भी रामचन्द्रजीके पास आगया, फिर अयोध्यामें, महीधर काम कर्त्ता हुआ, फिर कई लाख वर्ष वीतणेसे फिर महीधरके वंशवाले राजा होगये, यों कई पुस्तोन, इस वंशवाले जैनधर्म छोडके ब्राम्हणोंका, वैदधर्म मांनने लगे, आग्रायण (अग्रसेन) नांम राजा हांसी हिसार जो अब वस्ती है यहापर अपने नामसें अग्रोहानगर वसाया, उग्रकुली लोक तथा अन्य लोकोंकी वस्ती यहां बहुत वसी, ये जमाना करीब विक्रम राजाके कुछ पहिलेका है। राजानें दिल्ली मंडल कुल कबजें कर लिया, इस वक्त वैताढ्य पहाडपर, इन्द्रके वंसवाला, सुरेन्द्र नामका राजा, राज्य तिव्वत राजधानीमें करता था, इस समय दक्षिण देशमें कोल्हापुर नगरमें, नाग वंशी राजा, अमंगसेनकी पुत्रीको, सुरेन्द्रनें मागी,

अभंग सेननें, दोनो कन्या, माधवी १ और चन्द्रिका, २ अग्रसेनको देदी, ऐसा कहला भेजा, तब सुरेन्द्र अग्रसेनसें युद्ध करणे आया अग्रसेन ये सुण कर, भग गया, कासीमें जाकर महालक्ष्मीका मंत्रसाधन करा लक्ष्मीनें प्रशन्न होंके कहा मॉग इसनें कहा लक्ष्मी मेरे घरमें अतूट रहै, और शत्रु मेरे कोई नहीं हो सके, लक्ष्मी बोली, तथास्तु, फिर अलोप हो गई, उहा इसकों भूमिमे असंख्य निधान प्राप्त हुआ कोलापुर जाकर दोनो कन्याका व्याहकर, स्वसुरका दातव्य लेकर, अग्ररोहा नगर पीछा लेलिया, उन कन्याओंके गर्भाधान रहा, तब ब्राह्मणोंने कहा, हे राजा, तेरेको लक्ष्मी प्रशन्न है. तू पुत्रोंके कल्याणार्थ यज्ञ कर. तब राजानें यज्ञ शुरू करा, इस तरह अनेक यज्ञ अश्वमेध गऊमेध अगमेधादिक करते सतरह पुत्र होते रहै, यज्ञ करता रहा. अठारमां पुत्र गर्भमे था, यज्ञके लिए नाना पशु गण जमा किये हुए, त्रास पा रहे थे, इस समय महालक्ष्मी देवी चित्तमे व्याकुल हुई विचारणे लगी, जो मैने मुक्ततार्य करणे, इसकों प्रशन्न होकर द्रव्य दिया था, उसको इसने महा अघोर पापका हेतु नरक जाणेका मार्ग, जीव वधघात, कसाइयोंका कर्म, ब्राम्हणोंके वचनोंसे कर रहा है, इस पापकी क्रिया

माहेश्वर कल्पद्रुम वालेंने अग्रवालोंकी उत्पत्तिमे लिखा है अठारमा यज्ञ आधा हुआ किसी कारणसे ग्लानि हुई ऐसा लिखा है वह ग्लानिके कारणकों प्रगट नहीं किया फक्त अपणे वेदधर्मकी वे अदवी छिपाणेकों आदि उत्पत्ति त्रेता युगके प्रथम चर्णवार तक लिखके मजूती दिखाते हैं कोई पूछै किस वेदमे या स्मृतिमे या पुराणमें लिखा है तो मौन करणाही जवाब है और हमनें कुलका होणा असंख्य वर्षके पहिले दुनियाकी रीत रसम चलते ही पहले लिखे शास्त्रोंसे प्रमाण देकर लिखा है उस जमानेको वीते असंख्य चौकडी सतयुग द्वापर त्रेता कलियुग वीत गये है आगे चलकर लिखा है अग्रायणके कई पीढी बाद जैनधर्म अग्रवालोने धरा है इतना नहीं विचारा कि यज्ञमे ग्लानि प्राप्त होणा ही जैनधर्मका कायदा था इस वास्ते खुद अग्रायण बेद यज्ञ छोड जैनी हुए थे जिसमें १७॥ गोत्र हुए थे लिखते शर्म आगई स्वामी शङ्कराचार्यजीके चेले आनन्द गिरी शङ्कर दिग्विजयमें लिखते है (वैदिक हिंसा हिंसा न भवति) अर्थात् वेदकी राहसे जो जानवरका मास खाया जावै उसमें हिंसा नहीं होती तब विचारो वेदधर्मियोंकों ग्लानि कैसे आवेगी, बल्के ऐसे वचनोंसे तो हिंसा कर्म वेदधर्मी वेधडक कमर बाधके करेंगे, वाहरे धर्मोपदेशक जगद्गुरु बजणे वालोंके चेलेजी, ऐसे न्यायके वचनोसे ही दिग्विजय हुआ होगा, धन्य दिग्विजय धन्य, फिर माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें आग्रायणके कुलको ब्राह्मण ठहराया है।

मुझकों भी लगेगी, और मेरा भी पराभव होणेसें, दुखकी भागनी होउंगी तब रातकों देवी, इस राजाकों उठाकर, नरकमें लेगई, प्रथम तो उधर वह जीव फरसी लेलेकर राजाकों मारणे दौडे, जिन २ जीवोंको इसनें अग्निकुण्डमें हवन किया था, और महा दुर्गंध महा विकराल मनुष्यसें वर्णन नहीं किया जावै, ऐसे नरककों देख राजा रोता पीटता भागणे लगा, तब लक्ष्मीदेवी मृत्युलोकमें लाकर बोली, अरे राजा इस यज्ञसें तूं मरकर, नर्क जायगा, और तैंनें जो पाप किये है और तेंनें जो मारे है वह जीव अग्निकुण्डमें, तेरसे बदला लेंगे, तब राजा बोला, हे माता, अब इस पापसें कैसे छूटूं मेरा उद्धार कर (ऐसाही हाल प्राचीन वर्ही राजाका नारदजीनें यज्ञके पापके बदलेंमें नरक दिखाकर छुडाया है, देखो भागवत पुराण विष्णुओंका, उसमें लिखा है) तब महालक्ष्मी देवी बोली हे राजा प्रभात समय, भगवान महावीरके शन्तानी लोहाचार्य महाराज, यहा आवेंगे, उन्होंकी वाणी, सर्व जीवहितकारिणी, भव समुद्र तारणी सुणकर, पापारम्भ छोड, दया सत्य बोलणादि धर्मग्रहण करणा, तेरा उद्धार होगा, प्रभात समय, लोहाचार्य (गर्गाचार्य) अपर नांम, पधारे, राजा सपरिवार गया, दया क्षमाकों सुनकर, जैसें सांप कञ्चुकी त्यागता है, तैसें मिथ्यात्व धर्म त्याग, सम्यक्त युक्त श्रावक व्रत लिया,

---

ऋपि लिखा है भिक्षुक कर्म करनेवाले छत्तीसही पूणमे दानादिक प्रति ग्रहीयोंकी शन्तान लिखा है जो उग्रवंश राजपूतोंमेंसे प्रगट हुए हैं वह भिक्षुक जाति जैनधर्मवालोंको नहीं मानना अग्रवाले बडे दानी बडे शूर बडे व्यापारी प्रत्यक्ष दीखते है ये बात ब्राह्मणोंसे कभी नहीं होसके दान लेनेवालोंकी जाति कभी ऐसा दान नहीं कर सकती इसवास्ते अग्रवाल अव्वल राजन्य वंशी वैश्य है बीजकी तासीर, कभी मिटे नहीं जैनधर्मवालोंके इतिहासको उल्टा सुल्टा करके माहेश्वर कल्पद्रुम वालेनें जब विष्णु धर्मी प्रथमसे सिद्ध करणे का कल्पित बात लिखी है वैष्णवमती अग्रवमी निरपेक्षीपणेसें कसोटी लगाकर बुद्धिसे परिक्षा करले इतिहास कौनसा सच्चा है अल विस्तरेण, सत्तरेराणियोंके तो १७ पुत्र किसी जगह लिखा है अठारवा पुत्र राजाकी पासवान ब्राह्मणी पदायत्त थी उसका नाम गोण था इस वास्ते आधा गोत्र ठहराया, और बहुत लेख ऐसा है कि उसकुलवाले जो राजाके गोत्री वैश्य थे, उन्होंका आधा गोत्र ठहराया; मतलब आधेमें तो सत्रह पुत्र राजा होनेसें, और आधेमें सब गोत्री भाई, ऐसा एक अग्रवाल कुल व्याह करणा आपसमें ठहराया नाता अलग २ होनेसे, फक्त दूध डाल दिया जैसें मुसलमान लोक डालते है, आगे हिन्दूमें ये

जगह २ चैत्यालय कराये, बाकी सर्व अग्र वंशियोंका गोण गोत्र किया, सतरह पुत्रोंका सतरह गोत्र हुए, इनके कुल प्रोहित, हिंसक यज्ञ छोड कर, दया धर्म धारण करा जो गौड ब्राह्मण कहलाते हैं, त्यागी गुरु, मुनि जती, राजाने कबूल करा, देवी महालक्ष्मी उपदेश देकर दया धर्म धराने वाली, लक्ष्मी पुत्र अग्रवाल लक्ष्मीके ही पात्र रहते है, पीछे नौकरी व्यापार, राजाके मुसद्दीपणा करते रहै, एक पुत्रकी शन्तान अग्रोहाका राजा रहा मुसल्मीन सहाबुद्दीननें, राज्य छीनलिया, फिर हेमचन्द्र अग्रवालनें कोई लिखते है हे मूडसर वनिया था हुमायू बादशाहको विक्रम सम्वत् -१६७६ में युद्ध कर भगादिया, दिल्ली तख्तका बादशाह हो गया तब पीछे अकब्बरनें फिर युद्ध कर, छीन लिया, हेमचन्द्रकों अकब्बर अपने पास रखणा चाहता था, मगर दिवाननें उसकों मार डाला इस बातसें अकब्बरनें नाराज होकर उसकों मक्के निकाल दिया देखो बङ्गवासी छापेमें छपा अकब्बर चरित्र, अग्रवाले राजाओकी नौकरी करणेसें संगलका असर जैनधर्मके कायदे कठिन लगामदार घोडा जैसे कुछ खासकेन पसिंकै, इसलिए मालखाणा, मुक्तिजाणा, दिनरात दिल चाहै सो खाणा, ग्राम छोड वैलगामी सातसय वर्ष हुए बहुतसे लोक, कोई शैव, कोई गोकुली, उधर लक्ष्मण गढके महानन्द रामजीके लडके पूरणमलजी दक्षिण

रसम जारी थी के, गोत्र पुत्रोंका अलग २ मान लेते थे, दायमे सब दधीचके, पारीक सब पाराशरके, खण्डेलवाल सखारडीके, एककी सब शन्तान लेकिन ब्याह आपसमे करते है सिरफ माता अलग २ मे अलग गोत्र समझा जाता था। कृष्णकी भूआ कुन्ति उसके पुत्र अर्जुनकों कृष्णकी बहन सहोदरा ब्याही एसा वैष्णव कहते है, जैनोंके अधक वृष्णी १ भोजक वृष्णी २ दोनों एक बापके बेटे यादव अन्धक वृष्णीका उग्रसेन भोजक वृष्णीका समुद्र विजयका पुत्र अरिष्ट नेमि (नेमनाथ) उग्र सेनकी पुत्री राजमतीसें ब्याह होणे लगा, पडदादा एक था, इसवास्ते अग्रसेननें कुछ नई वार्ता नहीं करी, दक्षिणमे अभी भी मामाकी बेटी भाणजेसें शादी होती है राजपूतानेके सब राजा भी ऐसा करते है, कोई टालता नहीं, कोई टाल देता है, लेकिन ऐब नहीं गिनते है, माहेश्वर कल्पद्रुमवालेने अग्रवाल वृगवालोकी तारीफ तो लम्बी चौडी मनमानी लिखी है मगर अठारमा गोत्र गोल्हण ठहराया और लिखाये गोत्र कल-युगमे बहुत बढेगा मतलब गोलोंको अग्रवाल ठहराया है, आपसमें सगपण ठहराया है पूज्य पुरुषकी भक्ती तो करी मगर पूज्य पुरुषके नाक पर मक्खी बैठी जूतीसे उडाणा, ये मिसल

हैदरावादमें कोटयाधिपती वनके, चक्राकित् रामानुजधर्मी, श्री वैष्णव हो गये, द्रव्यकी सहायता देकर हजारों छन्यातिब्राह्मणोंको, महेश्वरी अग्रवालोंको, श्री वैष्णव वनादिया, और तोताद्री जो जीर स्वामीका काम था लाञ्छित करणेका, वह नई गद्दी वणाकर पुष्करजीमें स्थापित कर दिया, लाखों रुपये सीतारामवागकों लगाया एक तर्फ दक्षिणी आचार्य एक तरफ अपने गौड ब्राह्मणोंकी गुरू गद्दी लगादी इस तरह कोई शैव, कोई विष्णुधर्मी हुए, और वहुतसे दिल्लीके गर्दनवाह, सनातन धर्म जैनही पालते हैं, ढिगाम्बर ज्यादह श्वेताम्वरी अग्रवालोमें कम हैं, सतरह पुत्रोंके नाम १ गर २ गोयल ३ मंगल ४ सगल ५ कासल ६ वासल ७ ऐरण ८ ठेरण ९ विंठल १० जिंदल ११ जिंगल १२ किन्दल १३ कुछल १४ निछल १५ वुद्दल १६ मिंतल १७ सिंतल और आधे गोत्र गोंणमें सव उग्रकुल गिना गया इसतरह १७॥ गोत्र कहलाते है ॥

(इस समय प्रसिद्ध नांम गोत्र)

१ गरगोत्र २ गोयलगोत्र ३ सिंगलगोत्र ४ मगलगोत्र ५ तायलगोत्र ६ तरलेगोत्र ७ कासलगोत्र ८ वासलगोत्र ९ ऐरणगोत्र १० ढेरणगोत्र ११ सिन्तल १२ मिन्तल १३ झिंघल १४ किंघल १५ कच्छिल १६ हरहरगोत्र १७ वच्छिलगोत्र ॥ गरसूं गण ॥

कर दिखाया है वीकानेरमें नाथी पातर मोहता महेश्वरी देश दीवान राजा सूरत सिंहजीके राज्यमे घरमे रक्खी थी उसकी शन्तान महेश्वरीयोमें मिलाई गई गडवड चलाते है मगर महेश्वरियोंकी वेटियोंसे व्याह तो होते चार, पुस्तान वीतगये असलमें पिता तो मोहताजी महेश्वरी होनेसे महेश्वरी नाथीके मोहताही वजते हैं इन्साफसें तो कोई नुकसान नहीं दीखता क्योंके ब्राम्हणोंकी शन्तान भी तो इस तरह ही भारतमे लिखी है कोई धीवरणीके पेटसें कोई कीरर्णाके पेटसे देखो विश्वामित्रका पाराशर उसका पुत्र कृष्ण द्वैपायन व्यासके शुकदेव इन सवोंकी माता अधम जातिवाली थी मगर ब्रह्मकर्मसें ब्राह्मण मानें गये इस न्यायसे रक्खी हुई स्त्रीकी शन्तान पिताके वीर्यसे है इस न्यायसे वैष्णवोंको दलील नहीं उठाणी चाहिये. जैन लोकोंमे ये व्यवहार नहीं माळुम देता, अग्रसेनके भी वेद धर्मी थे, तभी अठार मा पुत्र निज शन्तानकों जैन धर्मके कायदेसें वारेवाद जो हुआ भी है तो, आधा गोत्र, ठहराया है, जैनधर्मवाले तो सव उग्रकुल १७॥ में मानते हैं, ।

(श्री बीकानेर गद्दीनसीन महाराजा)

१ रावश्री बीकाजी
२ रावश्री नेराजी
३ रावश्री लूणकर्णजी
४ रावश्री जैत सिहजी
५ रावश्री कल्याण सिहजी
६ महाराजा श्रीराय सिंहजी
७ महाराजा श्रीदलपत सिहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी
९ महाराजा श्रीकरण सिहजी
१० महाराजा श्रीअनोप सिंहजी
११ महाराजा श्रीसरूप सिहजी
१२ महाराजा श्रीसुजाण सिंहजी
१३ महाराजा श्रीजोरावर सिंहजी
१४ महाराजा श्रीगज सिंहजी,
१५ महाराजा श्रीराज सिंहजी
१६ महाराजा श्रीप्रताप सिंहजी
१७ महाराजा श्रीसूरत सिंहजी
१८ महाराजा श्रीरत्न सिंहजी
१९ महाराजा श्रीसरदार सिंहजी
२० महाराजा श्री डूंगर सिंहजी
२१ महाराजाधिराज श्रीगङ्गा सिंहजी बहादुर विजयराज्ये ॥
महाराज कुमार सादूल सिंहजी

जैसा लिख पाया वैसा सब राजवियोंकी पीढी लिखी है विद्यमान् महाराज श्रीगङ्गासिहजी बहादुर बडे भाग्यशाली बडे बुद्धिशाली बडे न्याय-नीतिमे अग्रेश्वरी प्रजा पालनेमें साक्षात् राजा रामचन्द्रजी जैसे जिन्होंकी कीर्ति सब बादशाहीयोंमे रोशन है । अंग्रेज सरकार पंचमजार्ज सम्राट् तथा गवर्नर जनरल साहबोंके माननीय चन्द्रसूर्य ध्रुवकी तरह राज्य करते हुए. आप हुजूर साहब चिरंजीव रहे । यह ग्रंथ करताका आशीर्वाद है ।

राष्ट्रकूट यानें राष्ट्रमायने भारत वर्ष रूपराज्य जनपद देश उसके राज-वियोंमें कूट यानें शिखर समान उसका नाम (राठौड) कन्नोजकी बादशाही टूटी, तब सीहाराव आसथानजी खरतर गच्छ यती आचार्य श्रीजिनदत्त सूरिःके उपकारसे आभारी हुए स विक्रम १२०० सेके उतारमें पाली नगरमें खरतर गुरु जात राठोड मानगे एसी प्रतिज्ञा करी इसका विस्तार विवरण बीकानेरके बडे उपासरेके ज्ञान भण्डारमें सर्व चमत्कार उपकारका विस्तार वर्णन है आगे चुंडाजी पडिहारोंके मंडोवरमें सादी करी, (दोहा) चूंडा

चॅवरी चाढ, दीवी मंडोवर दायजे, इदातणो उपकार 'कम धज कदियन वीसरे, पीछे सुनाहै के चूडेजीके १४ जाये १४ रावकहा ये प्रथम योधपुर १ बीकानेर २ क्रिशनगढ ३ रतलाम ४ झबुआ ५ ईडर ६ अहमदनगर ७ इत्यादिक १४ ही राजा हुए।

(अथ योधपुर तख्तनसीन महाराज)

१ रावश्री योधाजी
२ रावश्री सातलजी
३ रावश्री सूजाजी
४ रावश्री गागोजी
५ रावश्री मालदेवजी
६ रावश्री चन्द्रसेनजी
७ महाराजा श्रीउदय सिंहजी
८ महाराजा श्रीसूर सिंहजी
९ महाराजा श्रीगज सिंहजी
१० रावश्री अमर सिंहजी नागोर तख्त विराजे
११ महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
१२ महाराजा श्रीअजीत सिंहजी
१३ महाराजा श्रीअभय सिंहजी
१४ महाराजा श्रीराम सिंहजी
१५ महाराजा श्रीवखत् सिंहजी
१६ महाराजा श्रीविजय सिंहजी
१७ महाराजा श्रीभीम सिंहजी
१८ महाराजा श्रीमान सिंहजी
१९ महाराजा श्रीतख्त सिंहजी
२० महाराजा श्रीजसवन्त सिंहजी
२१ सिरदार० सुमेरु० उम्मेद सिंहजी चिरञ्जीवी विजयराज्यै

(जेसलमेररावलराजा)

सात कुलगर विमल वाहन वगैरह सातमानामि १ ऋषभ ब्रम्हा २ आत्रेय प्रथम वैद्य ३ असंक्षा पाटवीते सोम ४ असंक्षा पाटवीते बुद्ध ५ असंक्षा पाटवीते पुरूरवा ६ असंक्षा पाटवीते आई ७ असंक्षापाटवीते लघु ८ फिर असक्षा राजाहुए ९ असंक्षा पाटवीते, नयात्र १० असक्षा पाटवीते चन्द्र कीर्ति ११ इसके पुत्र नहीं तब युगलक दूसरे क्षेत्रसे लाकर देवता तख्त विठलाया हरि राजा यहासे हरि वश कुल प्रसिद्ध हुआ चम्पा नगरीमें जो दक्षिण मुगलाईमें बीडनामसे प्रसिद्ध है १२ इसके असक्षा वर्ष पर दृष्टाद १३ असख्या पीछे अजोन १४ असक्षा वर्ष वीते अधिपती १५ असंक्षा वर्ष वीते थाई १६ सरमेन्द्र १७ उमेकर १८ चित्र १९ चित्ररथ २० चक्रधन २१ अष्ट कर २२ चन्द्र कुमार २३ अत्रेय २४ सह-

न्रार्जुन २५ मार २६ उद्धरण २७ बलिमित्र २८ प्रल्हाद २९ मृग भत्त ३० हरि विश्रम ३१ भवण ३२ दूसल ३३ भूझक ३४ अन्न मान मात ३५ भूमिपाल ३६ नवरथ ३७ दसरथ ३८ शक्त कुमार ३९ पृथ्वी भार ४० समर्थ ४१ श्रेष्ठपती ४२ यहिवपत्र ४३ जादू ४४ इसके परिवार बहुत जादव कह लाये इस का सूर ४५ सूरके दो पुत्र सोरी ४६ दुसरा सुवीर सोरीका अन्धक वृश्नी ४७ सुवीरका भोजक वृश्नी इनके उग्रसेन मथुराका राजा हुआ अन्धक वृश्नीके समुद्र विजय बडा सोरी पुरका राजा छोटाही छोटा वसुदेव ४८ ये १० भांई दशारण वजंतये वसुदेवके कृष्ण ४९ प्रद्युम्न ५० अनिरुद्ध ५१ वज्र ५२ प्रतिबाहू ५३ बाहू ५४ सुबाहू ५५ भाटी ५६ इसका परिवार भाटी बजणे लगा जगसेन ५७ सालिवाहन ५८ भुवन पति ५९ भोपराज ६० मंगलराव ६१ वुद्ध ६२ वच्छराज ६३ देहल ६४ केशर ६५ तणा ६६ विजयराव ६७ देवराज सिद्धी ६८ तणु ६९ मधु ७० राववाछ ७१ दुसाज ७२ जेसलजी जेसल मेर गड़ डाला विक्रम सम्वत् १२१२ सावण सुदी १२ रविवार ७३ सालिवाहन ७४ गवत्रीजलपिता श्रेणक रिट ७५ राव कल्याण ७६ राव चोनावड़ो ७७ राव कर्ण ७८ राव लखण ७९ राव पुन्यपाल ८० रावजैतसी ८१ राव मूलराज ८२ राव दूदल ८३ राव घडसी ८४ राव केहर ८५ राव लखमण ८६ राव वैरसी ८७ रावचाचो ८८ राव देवीदास ८९ राव जैतसी ९० राव लूण करण ९१ रावमालदे ९२ राव हरदास ९३ राव भीमजी ९४ राव कल्याणदास ९५ रावमानसिंह ९६ रावरामचन्द्र ९७ रावसवलराज ९८ राव अमरसिंह ९९ राव जसवन्तसिंह १०० राव जगत सिंह १०१ राव अखयसिंह १०२ राव मूलराजजी १०३ राव गजसि-हजी १०४ राव रणजीत सिहजी १०५ वैरीसालजी १०६ शालिवाहनजी विजय राज्ये

* डेरावर बसाई पमारो पास लेद्रवालिया ।

(अथ ओसवंश नाम)

श्रीमाल १ श्रीश्रीमाल १३५ गोत्र २ श्रीपना ३ श्रीपति ४

(अ).

आदित्य १ आसुपुरा २ आसाणी ३ अचल ४ अमरावत ५ अघोंडा-६ आभाणी ७ आकोल्या ८ आमड़ ९ अशुभ १० अमोचिया ११ अमी १२ आइ चणाग- १३ आकाशमार्गी १४ आंचलिया १५ आछा १६ आयरिया १७ आमदेव १८ आली झाड १९ आलावत २० अंवड़ २१ आवगोत २२ आसी २३ आभू २४ आखां २५ अछड २६ आमड रहा

(ई)

इलडिया १ ईंग २

(उ)

उत्कण्ठ १ उर २ ऊरण ३ ऊनवाल ४ ऊदावत ५ ओसतवाल ६ ओरडिया ७

(क)

काउक १ कठारिया २ कठियार ३ कणोर ४ कनियार ५ कनोजा ६ करणारी ७ करहेडी ८ कडिया ९ कठोतिया १० कठफोड ११ कहा १२ कसाण १३ कठ १४ कठाल १५ कनक १६ ककड १७ कवा-ड़िया १८ कांकलिया काकरेचा १९ कावसा २० काग २१ काकरिया २२ कासतवाल २३ काजल २४ कजलोत २५- काठोलड़ा २६ कावे-डिया २७ काघल २८ कातल २९ कावड़ ३० कांचिया ३१ करणावट ३२ कुगचिया ३३ कासेरिया ३४ केल ३५ काना ३६ कछावा ३७ कुंमटिया ३८ कोरा ३९ कागसिया ४० कसुंभा ४१ केशरिया ४२ कान्धा ४३ कोचर ४४ कानूगा ४५ कोटारी कंई तरहका-४६ कोचेटा ४७ कातेला ४८ कातरेला ४९ कुदाल कई तरहका ५० कुहाड़ ५१ करमदिया ५२ करोंदिया ५३ कान्हउड़ा ५४ कुबेरिया ५५ कुचेरिया ५६ कुरकुचिया ५७ कछरोही ५८ कोकड़ा ५९ कर्णाट ६० कुलहट ६१ कूकड ६२ कुलमाण ६३ क्यावर ६४ किरणाल ६५ कूंकूरोल

६६ काछवा ६७ कुदण ६८ कोट ६९ कोटेका ७० कैहड़ा ७१ कलिया ७२ कंकर ७३ कावड़िया ७४ काचलिया ७५ कुकुम ७६ कड़े ७७ कूकड़ा ७८ कूहड़ ७९ कौवर ८० कोंठेचा ८१ करहडा ८२ कलपाणा ८३ कोटलिया ८४ कोठी फोड़ा ८५

(ख)

खटवड १ खाटोडा २ खोटड़ ३ खान्या ४ खींमसरा ५ गुड़धा ६ खेमासस्या ७ खेमानदी ८ खेतसी ९ क्षेत्रपाल्या १० खडभण्डारी ११ खड़भणसाली १२ खजानची १३ खूतड़ा १४ खरधरा १५ खरहत्थ १६ खोखा १७

(ग)

गणधर १ गणधर चोपडा २ गिडीया ३ गैलडा ४ गडवाणी ५ गादहिया ६ गाय ७ गावडिया ८ गांग ९ गाधी १० गधिया ११ गूगल्या १२ गुल्गुलिया १३ गेवरिया १४ गोरा १५ गोखरू १६ गोंदचा १७ गेलेछा १८ गोढवाडचा १९ गोव २० गोठी २१ गांगड़ २२ गटा २३ गर २४ गोंय २५ गोसल २६ गहलोत २७ गल्लाणी २८

(घ)

घुल्ल १ घोरवाड़ २ घोडावत ३ घोंपा ४ घटेलिया ५ घीया ६

(च)

चौहाण २४ सोई जातवाले अश्वपति हुए १ चतुर २ चौपट ३ चौपड़ ४ चोरवेड़िया ५ चौपड़ा ६ चौधरी ७ चंडाल्या ८ चन ९ चिड़चिड़ १० चींचड ११ चम्म १२ चामड़ १३ चीलमोहता १४ चोदू १५ चंद्रावत १६

(छ)

छजलाणी १ छाजहड़ कानलोत २ छाजेड़ ३ छोह्या ४ छापरिया ५ छैत ६ छंदवाल ७ छापरवाल ८

(ज)

जणिया १ जालेरा २ जैणावत ३ जिन्नाणी ४ जुट्टल ५ जुजाणम

६ जुनर्हा ७ जोइया ८ जावड़ ९ जागड़ा १० जडिया ११ जाइलवाल १२ जोधा १३ जलवाणी १४ जिन्द १५ जादव १६ जोहा १७

(झ)

झंबक १ झावक २ झावड ३ झवरी ४ झोटा ५ झालाई ६

(ट)

टाटिया १ टूकलिया २ टोडरवाल ३ टिकोरा ४ टेका ५ टीकायत ६ टाटया ७

(ठ)

ठाकर १ ठठवाल २ ठकि ३ ठीकरिया ४

(ड)

डहत्थ १ डफरिया २ डफ ३ डागा ४ डाकलिया ५ डाकूपालिया ६ डागी ७ डूंगरवाल ८ डीडू ९ डौंडिया १० डिडुता ११ डोसी १२ डूंगरचा १३

(ढ)

ढड्ढा १ ढावरिया २ ढिल्लीवाल ४ ढेढीया ५ ढेलडाया ६ ढींक ७ ढोर ८ टल्डिया ९

(त)

तलेरा १ तातहड २ तातेड़ ३ तिलहरा ४ तेलिया ५ तेलिया बोहरा ६ त्रिपंकिया ७ तेल्या ८ तोडरवाल ९ तिलाणा १० तेजाणी ११ तोमालिया १२

(थ)

थरावत १ थररावत २ थाहर ३ थोरिया ४

(द)

दरगड़ १ दक २ दरडा ३ दीपक ४ दूणीवाल ५ दूघेड़िया ६ दूदवेड़िया ७ दूगड़ ८ देसरला ९ देहरा १० देवानन्दी ११ दोसी १२ दुढवाल १३ दस्साणी १४ दुड़िया १५ दूघोड़ा १६ दफतरी १७ दइया १८ ढवड़ा १९ दसोरा २० द्रवरी २१ देल वाडिया २२ दाना २३ देशवाल

(ध)

धनचार १ धडवाई २ धाडीवाल ३ धाडेवा ४ धाकड ५ धीया ६ धूर ७ धूंध्या ८ धूप्या ९ धेनडाया १० धौन्या ११ धग १२ धत्तूरिया १३ धन्नाणी १४ धेनावत १५ धाधल १६ धोका १७

(न)

नवलखा १ नपावल्या २ नडुलाया ३ नक्षत्रगोत्र ४ नाहर ५ नाहटा ६ नानगाणी ७ नावरिया ८ नानावट ९ नागपरा १० नावेडा ११ नावे-डार १२ नाडूल्या १३ नादेचा १४ नेणेसर १५ नेणवाल १६ नाग १७ नीनहडा १८ नारण १९ नारेला २० निरखी २१ नवकुद्दाल २२ नीमाणी २३ नाहउसरा २४ नीवाणिया २५ नाणी २६ नवाव २७ नागोरी भणसाली ओर भी कई तरहका २८ नागपुरिया २९

(प)

परमार १ पंवार २ पडिहार ३ पचोली ४ पचायणेचा ५ पसला ६ पटवा ७ पटवारी ८ पटविद्या ९ पगारिया १० पगान्या ११ परधाल्या १२ पारख तीन तरहका १३ पापडिया १४ पामेचा १५ पालावत १६ पीपाड़ा १७ पींपलिया १८ पंचोली वावेल १९ पूनमिया २ तरहका २० पूनम्या २१ पूगलिया २ जातका २२ पोकरणा २३ पीचा २४ पचकुद्दाल २५ पोपाणी २६ पोमाणी २७ पीतलिया २८ पीथलिया २९ पोरवाल ३० पैतीसा ३१ पचीसा ३२ पाचा ३३ पूण ३४

(फ)

फतह पुरिया १ फूमडा २ फूसला ३ फूल फगर ४ फोकटिया ५ फोफ-लिया ६ फलेधिया ७ फाकरिया ८ फलसा ९ ।

(ब)

बरढ़िया १ बरहडिया २ बिछायत ३ बछावत ४ बराड ५ बडलोया ६ बड़गोता ७ बलाही ८ बलदोटा ९ बणभट १० बबाला ११ बावेल १२ बडोल १३ बरड १४ बोरड १५ बोंकडाया १६ बोकड़ा १७ बोहरा अनेक जातका १८ बोहरिया १९ बौल्या २० बौरधा २१ बंब २२ बबोढ़

२३ बंश २४ बंका २५ बाका २६ बंठिया २७ बाटिया २८ बाट्या २९ बाफणा ३० बहुफणा ३१ बापना ३२ बूबकिया ३३ बैदकई जातका ३४ बैताल्यिा ३५ ब्रह्मेचा ३६ बडेर ३७ बद्धाणी ३८ बिरहट ३९ बीर ४० बलहरा ४१ बसाह ४२ बाहतिया ४३ बोक ४४ बोथरा ४५ बागाणी ४६ बाघचार ४७ बाघमार ४८ बाकरमार ४९ बेगाणी ५० बीराणी ५१ बीरी बत ५२ बाभी ५३ बुचा ५४ बूंबा ५५ बरा-हुन्या ५६ बगड़िया ५७ बायड़ा ५८-बाघडी ५९ बालिया ६० बरण ६१ बिलस ६२ बाल ६३ बावल ६४ बाहबल ६५ बट ६६ बिनाय-किया ६७ ।

(भ)

भल्लड़िया १ भडारा २ भद्रा ३ भडकतिया ४ भक्कड ५ भटेवरा ६ भादाणी ७ श्राद्रगोत ८ भाभू ९ भाभूपारख १० भीलमार ११ भरट्ट १२ भौरडिया १३ भौर १४ भगलिया १५ भडसाली १६ भणशाली-राय और खड १७ भडगोत्र १८ भाडावत १९ भण्डारीराय तथा कं० २० भूरा २१ भर २२ भेला २३ भूतेड़िया २४ भल्ल २५ भुगडी २६ भडसूरा २७ भूतोडचा २८ भटाकिया २९ भट्टारकिया ३० भेलडा ३१ भाटिया ३२ माटी ३३ भूआत्ता ३४ भूप ३५ भवरा ३६ भला-णिया ३७ भैसा ३८ भट्ट-३९ भींडा ४० भगत ४१

(म)

मटा १ मरड्या सोनी २ मणहाडिया ३ मसरा ४ मम्मइया ५ मण-हड़िया ६ मक्वाण ७ महाभद्र ८ मगदिया ९ माल्ू २ तरहका १० माघो-टिया ११ मुंहणायी १२ मुहणो १३ मुहणोत १४ मेंडतवाल १५ मोही-वाल १६ मौहीवाला १७ मौहबना १८ मडोवरा १९ मंडोचित २० मग-लिया २१ मेर २२ मोहड़ा २३ मेघा २४ मोदी २५ मल्ल २६ मुहाला २७ मुहियड़ २८ महेचा २९ मुकीम ३० मरोठी ३१ मरराणा ३२ मारू ३३ मोराक्ष ३४ मोलाणी ३५ मदारिया-३६ मरोठिया ३७ मकलवाल ३८ मगदिया ३९ मीठड़िया ४० मुगरवाल ४१ महाजनिया ४२ मूग-

-रेचा ४३ माल्हण ४४ मुसरफ बेगाणी ४५ मीन्नी ४६ मड़िया ४७ महा-वत बाठिया ४८ महावत ४९ मालविया ५० माखवाणी ५१ महति-याण ५२ मूंघडा ५३ मोर ५४ माचोदिया ५५ मेनाला ५६ महीपाल ५७॥

(य)

यक्षगोत्र १ यौगड़ २ यादव ३ येगेसरा ४

(र)

रतन पुरा १ रतन सूरा २ रतनावत ३ रत्ताणी बोथरा ४ रातडिया ५ राखेचा ६ रावल ७ राणाजी ८ राय भण्डारी ९ राका १० रीहड ११ रोटा गण १२ रूप १३ रूपधरा १४ रूणवाल १५ रायजादा १६ रावत १७ राठोड़ १८ रूणिया १९ रामपुरिया २ तरहका २० रेणू २१ राखडिया २२ रामसेन्या २३ रणधीरोत कोठारी २४ रोव २५।

(ल)

लक्कड १ ललवाणी २ लींगा ३ लुंबक ४ लूंकड ५ लूणावत ६ लालण ७ लालाणी ८ लूणिया ९ लेला १० लेवा ११ लोढ़ाराय १२ लोढ़ा कट्ठ १३ लोटा १४ लोलग १५ लूटकण १६ लवा १७ ललित १८।

(स)

सचिन्ती १ सचिन्ती ढिल्लीवाल २ सखला ३ समुद्रिया ४ सवरला ५ सालेचा ६ साहेल ७ सियार ८ सीखाणा ९ सीसोदिया १० सिरोहिया ११ सियाल दो तरहका १२ सुदेवा १३ सूगणा १४ सराफ १५ सुन्दर १६ सूरपुऱ्या १७ सूरपुरा १८ सुकलेचा १९ सेठिया २० सेठीपावरा २१ सोनगरा २२ सोलंखी २३ सोनी २ तरहका २४ साड २ तरहका २५ सववी कईतरहका २६ संड २७ सखला २८ सुघड २९ संबल ३० संखवालेचा ३१ संचती ३२ साखला पमारामाह सुवाज्या ३३ साखला निजराजपूत हुआ ३४ समदड़िया ३५ साम सुका ३६ सावण सुका दोनों एक ३७ सेठिया वेद बीकानेर महाराव प्रमुख ३८ लघुसेठी सोनावत ३९ साह बाठिया ४० साह बोथरा साह पद बहु जाती ४१ सिंघल ४२ सींप ४३ सीपाणी ४४ सुत ४५ सघरा ४६ सोमतवाल ४७ सिंघा-

डिया ४८ सेखाणी ४९ सुखाणी ५० सेठ ५१ सुथड ५२ सोमलिया ५३ ममूलिया ५४ साहला ५५ सोनीवापना ५६ मापड़ाह ५७ सामरिया ५८ सारंगाणी ५९ सूर ६० सींवड ६१ सिन्दुरीया ६२ सचोपा ६३ मेल्होत ६४ सेवडिया ६५ साचोरा ६६ मोझातिया ६७ सभुआन ६८ सरला ६९ सुवेचा ७०

(ह)

हगुडिया १ हींगड २ हेमपुरा ३ हुडिया ४ हाहा ५ हाथाला ६ हाला ७ हीरावत ८ हिरण ९ हरखावत त्राठिया १० हिड़ाऊ ११ हेम १२ हठीला १३ हमीर १४ हसारिया १५ हस १६

इसी तरह हमनें ६८० इतनें नाम पाए सो लिख दिये है बाकी अश्वपनी जात रत्नाकर सागर है, इसमें गोत्र नख मुक्तावलीका पार कौन पासक्ता है अन धन सपदा पुत्र कलत्रादि परिवारमें गुरु देव सदा इन्होंकी मनाई वाजी रख, वड़ शाखा ज्यों, विस्तार पाओ.

(गृहस्थाश्रमव्यवहार)

अव्वल तो सोल्ह संस्कार जैनधर्मके (आर्य वेद) के प्रमाण मंत्र युक्त विधिमें जैनधर्मी श्रावकोंको जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त केहे सो आगे तो जैनधर्मी ब्राह्मण थे वह कराते थे और अब श्रावकोंको चाहिए की जो काल धर्मको विचार कर जैन जती पडितोंसे कर वाणा दुरस्त है जो किसी जगह जती पडित नहीं मिले तो सोल्ह संस्कार की पुस्तक जैनधर्म आर्य वेद मन्त्रोंकी विधी समेत बीकानेरमे हमारे इहां मिलती है पडित महात्मा जैनी भोजकसे विधीसें करवाने मगर मिथ्यात्वियोंके सस्कार विधीसे दूरही रहना दुरस्त है, गुजरातमे प्रथा शुरू होगई है १ व्रत पच्च खान अपनी कायाकी शक्ती मुजिब नवकारसीसें आदिलेनिभेजेसाधारणा १ धन - पैदा करके इसभव परभव दोनों सुधरे और दुनिया तारीफ धर्म वन्तकी दातारकी हमेशा करे वैसाही करणा २ शास्त्र पड़े हुए विचक्षण उपदेशी जैनधर्ममें तत्पर निष्कपट महापुरुपकी सगत और द्रव्य भाव भक्ति करणी ३ लेण देण साफ रखणा ४ करजदार जहां तक वणे वे कारण होना नहीं ५ विश्वास पैठ प्रतिती पूरे वाकिफ

ज्यार हुए विगर हर किसीका करणा नहीं ६ स्त्रियोंको कुलवन्ती सुलक्षणी चतुरा सिवाय हर किसीकी सगत नहीं करणे देणा ७ अपनी तासीरको नुकशान करे ऐसा पदार्थ ऋतुके विरुद्ध व कुलके विरुद्ध व प्रकृतीके विरुद्ध कभी खाना नहीं या पूर्ण विद्यावान् देशी वैद्यकी आज्ञा उपदेश हमेशा धारण करणा ९ कोई तरह कामी व्यसन सौखसे सीखणा नहीं १० रोग कारण और विचारणा ११ कठिन शब्द किसीको बे कारण कहना नहीं १४ घरका भेद कुमित्रोंको कभी देणा नहीं १५ धर्मी पुरुषको वणे जहा तक सहाय देणा १६ परमेश्वर और मौत अपने पर किया हुआ उपकार इन तीनोको हर दम याद करते रहना १७ किसीके घर पर जाणा तो बाहिरसे पुकार कर अन्दर घुमणा १८ मुल्कगिरी करते वक्त हाथकी सचाई १ जुबान की सचाई २ लैन दैनकी सचाई, लंगोटकी सचाई रखणा १९ और बे खबर गफलत सोणा नहीं २० वणे जहां तक इकेलेने मुसाफिरी नही करणी २१ फाटका करणेवाला तथा जुवारीको गुमास्ता रखणा नहीं रुपया उधार देणा नहीं २२ मत्र पढ़कर या किमिया गिरीसें जो पुरुष द्रव्य चाहते हैं, उन्हों पर देवका कोप हुआ समझणा, २३ अपने लडका लडकियोंको हर एक तरहका हुन्नर सिखलाणा, इल्म सिखाणा, अखूट धन देना है २४ सरकारके कायदेके वर खिलाफ पांव नहीं धरना, २५ धन पाकर गरीबोंको सताणा नहीं, २६ अभिमान करणा नहीं २७ तनमन और वस्त्र हमेस साफ रखणा, २८ जैनधर्मके मुकाबले दूसरा धर्म नही २९ क्योंके अहिंसा परमो धर्म. इस वर्तावसें इस धर्मका सारा व्यवहार है, पक्का इतकात रक्खो ३० जीव अपने पूर्वके किये हुए पुन्य पापसे सुख दुख पाता है ईश्वर किसीका भला बुरा नहीं करता. ३१ दुनिया न तो किसीने बनाई है और न कोई नाश कर सक्ता है, पांच समवायके मेलसें सारा काम घटन बढ़त हो रहा है काल १ स्वभाव २ भवितव्यता ३ जीवोंके कर्म ४ जीवोंका उद्यम ५ सब इन्होंकाही फेरफार

---

१ खानपानादि आहार विहारादि आरोग्यताके लिए हमारा लिखा वैद्य दीपक ग्रथ छपा हुआ पढ़ो, न्योछावर ५)

कुदरत दिखाता है ३२ कर्मके नचाये देव पशु मनुष्य सब स्वाग नाच रहे है, ब्रम्हाको कुम्भारका कर्म करणा पडा विष्णुको दश अवतार धारण कर महा सकट उठाणा पडा, रुद्रको ठीकरा हाथमें लेकर भीख मागणी पडी, सूर्यको हमेश चक्र लगाना पडा, वस कर्मकी गतिको जिसनें पह-चाणा वही जन्म मरणसे छूट गया वह सर्वज्ञ ईश्वर ज्ञानानन्द मई अरूपी आत्मा है ३४ जैसे ईश्वर और जीव दोनों किसीके बनाये हुए नहीं वैसेही दुनिया किसीकी बनाई हुई नहीं ३५ दुनिया ईश्वरकी कर्त्ताकी दलील करती है, मगर इन्साफसें पेश नहीं आते ३६ आकाशमें सूर्य चन्द्र तारे जो तुम देखते हो यह ईश्वरके बनाये- हुए नहीं है ज्योतिषी देवताओंके विमान है, इन्होंको देवता चलाते है ३७ कई लोग जमीनकों नारगीकी तरह गोल कहते है लेकिन जमीन थालीकी तरह गोल है और सपाट है ३८ जमीन नहीं फिरती, अचल है चन्द्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ और तारे ५ अपने कायदे मुजिब फिरते है ३९ आत्मा एक अविनाशी शरीर तापसें जुदा पदार्थ है मगर कर्म तापके वस मोह अज्ञान जडनें घेरा हुआ है ४० मास खाणेसें वैद्यक विद्याके हिसाब बडाही नुकशान करणे वाला और धर्मके कायदेसें नरक जानेका कारण, और जिसें जीवकों मार-कर मांस लिया जाता है वह पिछला बदला लिए विगर हरगिज छोडेगा नहीं ४१ पेस्तर रावण कृष्ण रामचन्द्र तथा लक्ष्मणादिक विमानके जरिये हजारो कोसोंकी मुसाफरी करते थे ४२ जिसके पुन्य प्रबल हैं उसका बुरा कोई नहीं कर सक्ता ४३ देव गुरूके दर्शन करे विगर भोजन करना श्रावकों-को उचित नहीं ४४ दौलत धर्मकी दासी है ४५ जैसा दुश्मनका कोप रखते हो ऐसा १८ पाप स्थानकोंका रक्खा करो ४६ बाप माका दिल, वदगी कर खुश रक्खा करो माका फरज वापसें भी आला दरजेका है तुम वह करजा कभी नहीं फेट सकोगे, जहा तक धर्म प्रासिका सलूक नहीं करोगे उहा तक ४७ जलमें मत घुसो ४८ विगर- छाणा जल मत पीओ ४९ विगर गुण दोष जांणे विगर नजरके वे दरियाफ्त कोई चीज मत खाओ पीओ ५० वासी भोजन मत करो ५१ सरकारी एनके कायदेसें

वाकिफ रहो ९२ राजद्रोह मत करो ९३ देशी उन्नतिका ढग हुन्नर इल्म सप और मदत देणाही मुख्य है ९४ व्यापार सब मुल्ककी आब दानीका बीज है ९५ शराबसें खराब होणा है ९६ सभामें गुरूके पास और दरबारमें जाते सका मत लाओ पूछेका जबाब विचारके दो सभामें बैठणा बोलणा लायकीसे करो ९७ राजकी कचहरीमें हाकिम धमकावे तो या फुसलावे तो डरो भी मत और न फुसलाने पर कायदेके बर खिलाफ बात करो हाकिमोंका दस्तूर है कि मुद्दई और मुद्दयिलहके दिलको कमजोर कर बात पूछणा जिससें वह हड़बड़ाके कुछका कुछ कह उठे अब वह जमाना नहीं है जोकी न्यायकी गहरी खोजसें सचका सच झूठका झूंठ और अब तो चालाकी सफाई और गवाहीसे मिसलका पेटा भरा, बस झूंठा भी सच्चा बन जाता है ९८ जैनधर्मियोंकी रिवाज है कि, प्रात समय उठके, परमेष्ठी ध्यान मन गत करे, पीछे फिर शुच होके वस्त्र बदलके सामायक प्रतिक्रमण करे उहासे उठ कर स्नान तिलक कर उत्तम श्रेष्ठ अष्ट द्रव्य लेकर जिन मन्दिरोंमें, या घर देरासरमें, पूजा करे, नैवेद्य बली चढाकर, वस्त्र पहन कर, गुरूकू यथा योग्य वन्दन कर, व्याख्यान सुणे, पच्चखाणकाया शक्ति मुजब, छछंडी चार आगार मोकला रक्खे, फिर घर पर सुपात्र तथा क्षुल्लक सिद्ध पुत्र, अनुकम्पावगैरह दान यथाशक्ति करके ऋतु पथ्य, प्रकृति पथ्य, कुलाचार मुजब भोजन दो भाग, एक भाग जल, एक भाग खाली पेट रक्खे, सराब ब्राडी मिली तथा जीवोंके मास चरबीसें बणा पदार्थ खाणा तो दूर रहा, लेकिन हाथसें भी स्पर्श, न करे वस्त्र उजले धोये हुए साफ पहरणा, आगे ऐसा रिवाज भारत वर्षमें था कि, शूद्र जातीके लोक, नख, बाल साफ कराए हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, शुद्ध ताईसें, भोजन रसवती तैय्यार करते, तब राजपूत वैश्य और ब्राह्मण भोजन करलेते स्वामी दया नन्दजी, सत्यार्थ प्रकाशमे लिखते हैं ऐसा वेदोंमें लिखा है, कौन जाने इसी रिवाजकों, हमारी जैन जगति ' कबूल करके चलते होंगे मारवाडके, क्योंके आगे ब्राह्मण लोक भट्ट झोकणेका काम, शूद्रोंका समझ, नहीं करते थे, और वनोवासी ऋषि थे वह तो, मध्यान्हकों, एकही

समय भोजन अपने हाथकी बनाई हुई खाते थे, वह स्वयपाकी बजते थे, अब तो चारोंकामको, ब्राह्मण मुस्तैद हैं पीर १ बवरची २ भिस्ती ३ खर ४ तो बहुतही अच्छा हैं मास मदिराके त्यागी जो मारवाड़ गुजरात कच्छके ब्राम्हण है, उन्होंसे चारों काम कराणा जैनधर्मियोंके लिए, वे जा तो नहीं है लेकिन जल दिनमें दोवक्त छाणना, चूलेमें लकड़ीमें, सीधे सरजाममें, साग, पात, फल, फूलके जीवोंकों, तपासणा, जैन धर्मकी स्त्रियोंको, अथवा मर्दोंकों करणा वाजिब है ब्राह्मण तो फरमाते है हम तो अग्निके मुख है, जो होय सो सब स्वाहा लेकिन दया धर्मियोंको, इस बातका विवेक रखणा, एकका झूठा, तथा बहुत मनुष्योंनें सामिल बैठके जीमना, ये उभय लोक विरुद्ध है डाक्टर लोक कहते हैं गरमी सुजाक कोढ़ खुजली आख दुखणा वगैरह कई किस्मकी बिमारी, ऐसी तरहकी है, जो झूंठ खाणेवालोंकों, लग जाती है, जिस वरतणसें मुंह लगा कर, पाणी पीणा, वह वरतण पाणीके मटकेमें नहीं डालणा, कारण, उस पाणीसें रसोई, बणनेमें आवे तो, साधू सन्त, अभ्यागतकों देणा, उन्होंको अपणी झूठ न खिलाना है, वह अपना रोग लगाना है, वह महा पाप है, धर्म ध्यानके कपडोंसें, गृह कार्य नहीं करणा, स्त्रियोंको तीन दिन ऋतुधर्म आनेपर, घरका अनाज चुगाणा, कोरा कपडा सीणा, वगैरह रिवाजोंको बन्ध करणा, ठाणाग सूत्रपाठके, दशमें ठाणें, खूनकी असिझाई भगवाननें फरमाई है, स्नान २४ पहर पीछे करणा, २ दिनसें करणा वाजिब नहीं है, सूतक जन्म पुत्रका १० दिन, लडकीके ११ दिन, मरणका सूतक १२ दिन; जादह सूतक अभक्ष विचार देखणा हो तो रत्न समुच्चय हमारा छपाया हुआ पुस्तक देखना जहा तक भक्षाभक्षका विवेक नहीं, उहापर्यंत पूरा व्रतधारी श्रावक नहीं हो सकता, रोगादिक कारण यत्न करे, श्रावकको तन दुरस्त रखणा, जिससे समझ वान, धर्म १ अर्थ २ काम ३ और मोक्ष ४ चारों साध सकता है, अन्य दर्शनियोंकी संगत पाकर श्रावक धर्मकों छोडणा नहीं चाहिये, राज दडे, लौकिक भडे ऐसा रुजगार खान पान, धन प्राप्ति कभी नहीं करणा चाहिये, रात्रि भोजन करणेसें हैजा,

जलन्धर, अजीर्णादिक रोग होणा इसभव विरुद्ध है और नाना तरहका -रात्रि भोजनसे जीवघात होणेसें, नरक तिर्यंच गति होती है यह परभव विरुद्ध है, मकान. चौका, और वरतण, और लड़का लड़कियें ये सब साफ सुथड रखणा-चाहिये, जहा पवित्रता है वहा ही लक्ष्मी निवास करती हैं, श्रावक कुलाचारमें मास मदिराका तो विल्कुल अभाव ही है तथापि सर्वज्ञ फर्माते हैं जहा तक तुम आत्माकी देवकी और गुरुकी साक्षीसें सौगन नहीं करोगे, उहा तक निश्चय नयसे तुम्हें उन चीजोंकी मुमानियत नहीं मानी जायगी, हरी वनस्पति बिल्कुल छोडणेका रिवाज आज कल मारवाड़के जैनोंमें ज्यादह प्रचलित है, इससे मुंहमें मसूड़े पककर खून गिरणा जोड़ोंमें दर्द खूनकी खराबीनाताकत बहुत आदमी देखणेमें आते है, और गुजराती कच्छी जैन कोम ज्यादह सागपात तरकारी खाणेसे, बदहजमी, मेदवृद्धिदस्त वेटम, इत्यादि रोगोंसे पीड़ित देखणेमें आते है, इस लिये कलकत्ते मकसूदाबादवाले जैन कोमका रिवाज हरी वनस्पतिका मध्यवृत्तिका मालूम दिया है, जो कि ताजी वनस्पति आम, कैरी, अनार, सन्तरा, मीठे नींबू, नेचू, -गुलाबजामुन, परवलतूंबी (कदू) आदिक बढिया फलोंका, और गिणती मुजब सागोंका, तनदुरस्तीका, वर्त्ताव देखणेमें आया, न तो अव्रतपणा रखते है, न ऊठोंकी तरह हर वनस्पतिको खाकर, दोनों जन्म बिगाड़ते हैं, गिणती माफिक पच्च खाण करते है, जैसे उपासगदशासूत्रमें आनन्द श्रावकनें कहा है वैसा इच्छारोधन शक्त्यानुसार करते हैं, श्रावकोंको, सड़ाफल चलितरस, गिलपिला हुआ, आपसें ही छेद हुआ, ऐसे फल तथा तुच्छ फल, बेर, पीलू वगैरह कमकीमती जिसमें, कृमि, अन्दर पड़ जाती है, ऐसोंसे, हमेश, बचणा चाहिये, पत्तोंके साग, बरसातके ४ महिनें, हरगिज नहीं खाणा चाहिये, और मोलका आटा, विगर तपासामया, घी, साबत सुपारी खानेसें, जैन धर्मशास्त्र मास खाणेका, दोष फरमाते हैं, मगर मुसाफिरी करनेवाले, गरीब श्रावकोंसें मोलका आटा और घीका व्रत पालणा मुशकिल मालूम देता है, रेलके मुसाफिरोंको, मोलकी पूड़ी ही. मयस्सर होती है, विचार कर सौगन लेणा चाहिये, सौगन दिलाणेवाला पूरे जाण-

कार १ लेणेवाला पूरा जाणकार, दोनोंमेंसे एक जाणकार, ३ यहातक तो सौगन यानें पच्चखाण शुद्ध माना गया, और करणेवाला, कराणेवाला, दोनों पच्चखाणके स्वरूपके अजाण ये पच्चखाण तदन अशुद्ध है, सागपत्तोंके जीव तपासे विगर हरगिज वरताव नहीं करणा चाहिये जो जो पदार्थ वैद्यक शास्त्र-वालोंने रोग कर्त्ता निरूपण किया है सो प्रायः तीर्थकरोंने अभक्ष फरमाया है देखो हमारा बनाया वैद्य दीपक ग्रन्थ, झूठे वरतणरातवासी नहीं रखणे चाहिये पत्तलोंमें भोजन करणेसें श्रावकोंको बडा पाप लगता है कारण उस पतलो पर भोजनका अंस लगा रहता है वह एक पर एक गिरणेसें प्रत्यक्ष कीडे पैदा होकर हिंसा होती है, पात्र चादीका सोनेका, गरीबोंको उमदा कासीके थाली कटोरे रखणा दुरस्त है आजकल टैन एलियो मिनीम वगैरहके घर २ में चल रहे है धातु वह अच्छा समझणा चाहिये कि जिसके पर-माणु पेटमें जाणेसें कोई किस्मकी पीछे तकलीफ न पैदा करे ताबा पीतल जरूर हानि करते है हमेशके मावरेमें ये पात्र बिल्कुल अच्छे नहीं कारण भोजनमे षट्रस आता है और खट्टा रस लोंण वगैरह जिस धातुके संग दुश्मन दावा रखता है ऐसा पात्र अच्छा नहीं श्रावककी करणी खरतर गच्छी जिन हर्षजीने चौपई रूप २१ गाथाकी बनाई है सो श्रावकोंके लिए नसियत है जरूर उसको अमलमें लाणाफर्ज है बचपनेमें व्याह करणा उनोंका समागम कराणा जिन्दगानीको धक्का लगाणा है स्त्री तेरह पुरुष १८ यह कल्युगी रिवाजसे तदन हटना नहीं चाहिये बच्चोंको पढ़ाणा जरूर है मगर याद रक्खो पहले दया धर्मकी शिक्षा दिला कर पीछे अंग्रेजी पढाणा मुनासिब है अगर न दी जायगी दयाधर्म शिक्षा तो अंग्रेजी पढ कर जरूर होटलोंके महमान बणेंगे कोरे घडेमें पहले घी डालकर पीछे आप चाहै सो वस्तु डालो खारखटाई विना हरगिज ठीकरी चिकणापन घीका नहीं छोडेगी खार खटाई शिक्षामें क्या चीज है स्त्रीका लालच धनका लालच समझणा चाहिये, कारण धर्मशिक्षा पाये हुए भी इन दोनोंकी आसामें निज धर्म बहुतसे खो बैठते है मगर थोडे प्राय. नहीं छोडते है, इल्म पढाणेमें गणितकला; लिखतकला, शास्त्री अक्षर, अंग्रेजी अक्षरादिकोंकी, पठतकला,

सिखाणा जमानेके अनुसारही चाहिये. व्यापार हरकिस्मके करके, धन उत्पन्न करणा गृहस्थोंका मुख्य कृत्य है, तथापि तिल वगैरह अनाज फागुण महिने उपरान्त रखणेमें. महाजीवोंकी हिंसा होती है, सब कार्योंमें विवेकही रखणा मुख्य धर्म है, (विचार) जैसें गीतामें लिखा है (स्वधर्मे निधनं श्रेय. परधर्मो भयावह) इसका अर्थ निर विवेकी कुछका कुछ करते है, लेकिन कृष्ण द्वैपायन व्यास आगामी चोवीसीमें तीर्थंकर होणेवालेकी बनाई गीता कर्मयोग ग्रंथ है, इसके वचन प्राय विरुद्ध होय नहीं इस-वास्ते इसपदका सीधा अर्थ ज्ञानियोंके मान्य करणे योग्य विवेकी ऐसा समझते है. स्वधर्म क्या वस्तु, आत्माका ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ रूपधर्म. इस धर्ममें निधनयाने इस शरीरके त्यागणेसें, श्रेय याने मोक्ष होता है, परधर्म. याने कर्म जड पदार्थका. जो मोह अज्ञान, मिथ्यात्व, अव्रत रूपधर्म है, सो भयका देनेवाला है, ऐसा अर्थ विवेकी करते है. इत्यादिक हर पदार्थपर. विचारणा, उसका नाम विवेक है.

(स्त्रियोंके लिये शिक्षा)

पवित्रता रखणा, शील व्रत धारणा, स्त्रियोंका मुख्य शृङ्गार है, पतिकी भक्ति करणा, आज्ञानुसार वरतणा. घरका काम देखणा. रसोई बनाना, चुगणा. बीनना फटकणा कूटणा. पीसणा. छाणना. सब कामोंमें जीवोंका यत्न करणा. पापडवडी दाल बनाना सुकाना बिगडनेवाले पदार्थोंमें फूलण कीडे न पडने पावे धूपमें फैलाकर हवा देणा. ऋतू रेशमी वस्त्रोंको चातुरमासमें जीव नहीं पडने पावे इस तरकीबको ध्यानमें लाणा चाहिये. आचार मुरब्बा, बनाकर बिगडने, नहीं देना, वस्त्र धोए रंगे सुगन्धित रखणा, बच्चोंको स्नान, मज्जन खान पान पोसाक गहणोंमें अलंकृत कर, पढाने भेजना, लडकियोंको लिखन पठन सीवन गुंथण, कसीदा. चर्खा, अभ्यास, गोखरू वगैरह औरतोंकी चोसठकला, जैसें श्री ऋषभ प्रभु-ने अपनी लडकियें, ब्राह्मी सुन्दरीको सिखलाई, उसमेंका बने जहांतक सिखलाणा, क्योंकि स्त्रियोंको जगह २ पुरुषोंकी अर्द्धांगा फरमाई है, और सच है भी ऐसा. मनुष्य धन कमाणा इतनेही मात्रका मजूर है लेकिन

घर वणियाणी स्त्रीही कहलाती है, अगर वह अणपढ कलाहीण होगी तो, पुरुषका आधा अङ्ग वेकाम होजाता है, जैसें पक्षाघात (लकवा) में होता हैं ये भी एक जन्मभरका रोगही लगा समझा जाता है (दोहा) पुत्र मूर्ख चपलाति या, पुत्री विधवा जात, धनहीना शठ मित्रतें विना अग्नि जर जात, १ ये पाच योग जब वण आते है, तबविना अगारके मनुष्य जल जाता है, जिन स्वार्थ तत्परोंने ऐसें २ वहम हिन्दुस्थानमें डाल रखे है कि, लडकियोंको हरगिज नहीं पढणा, वह व्यभिचारिणी वा विधवा हो जाती है उन धर्माध्यक्षोंने ये विचार करा के, जो घर धणियाणी ज्यादह पढी हुई होशियार होगी तो, हम गपौड पुराण सुना-कर धर्म राजके ईश्वरके, तथा नवग्रहोंके अङ्क, या आडतिये, वणकर, माल उतारणेका, ठगजमावेंगेतो, हरगिज नहीं ठगायगी, सच्च है इस अण पढताके कारण घरमें किसीको विमारी होती है तो, झाडा फूका कराणे जोगी फक्कड काजी मुल्लोंके हाथ हजारोंका माल ठगवाती है, या किसी मनमानें भूत पलीतका वोलवाकर मूर्ख अणपढ कुमार्गी कुपात्रोंको भोजन वस्त्र रुपया वगैरह जो वह मागे, सो देती है, लेकिन रोगकी परिक्षा करा-कर, विद्वान वगैरह वैद्य डाक्टरोंसे; किसी तरहसें पेश नहीं आने देती जो कभी भाग्य योग. घरमेंका स्याणा आदमी किसी वैद्यको लावेगा तो प्रथम तो उसकी कही वात पर अमल न होणे देगी, या रोगीको मनमाने कुपथ्य खिलावेगी, और मनमें समझेगी, वैद्य तो पथ्य कराकर, मारही डालते है, जब अच्छी मनमानी चीजें खायगा तो, ताकत आकर झट आराम आ जायगा दवाइयोंसें क्या होणा है, या तो अङ्गमें, भैरू पितर, मावडिया, देविया नचायगी, ये सब काम अणपढी स्त्रियोंके साथ, सम्बन्ध रखते हैं, वानै २ अणपढ, स्त्री भक्त, मोह ग्रसित मनुष्य भी काठके उल्लु ऐसे २ होते हैं, विधवा होना पूर्व जन्मका संस्कार हैं, प्रथम तो लडकेकी आयुरेखा समझ वारोंसें मालुम कराणी ज्योतिषी पूरे विद्वानसें ग्रहाचार आयुरेखा निश्चय करा कर, पीछे लग्न करणा चाहिये, वरके तरफ खयाल नहीं करती, घरके तरफ खयाल करती हैं, गहना

ज्योंवा डाले सो घर होना, कारण कोई पूछे तो, फरमाती है, जमाई मर जाय तो, मेरी बेटी क्या खायगी ऐसा मागलिक शब्द सुनाती है, जो इल्मदार कला कौशल्य सीखी हुई कन्या होगी तो, ऐसे मोकेपर अपनी कारीगरीसे चारोंका पेट भरसक्ती हैं. अपनी तो विशायत ही क्या है, वाजे स्त्रियें इल्महीन पती मरे पीछे गुजरान चलाणे, पर पुरुषका आसरा लाचारीमे लेती हैं, लडकपनेमें व्याह करणेमे, जब पतीका वियोग होनेमे होश सम्हाले पीछे कुलकलंकित करना सूझता है, या, जब हमलरहजाताहैतो, विरादरीके कोपसें गिराती है, वाजे अपघात करती है, मुल्क छोडती है, सरकारमें सजा पाती है, जाति बहिष्कृत हो जाती है, इस वास्ते शूद्रमज़ाके लोकोंमे, पुनर्विवाहकी रस्म जारी है, ऐसे २ बाबतोंको देख गवर्मेन्ट पुनर्विवाहको पूरा अमलमें लाया चाहती है, क्योंके प्रजा वृद्धि और पचेन्द्री जीवोंकी हिंसाका बचाव और स्वामी दयानन्दजी भी यही तूती बजागये, समाजी लोक बजाते फिरते हैं जैन निग्रन्थका हुक्म है, तपस्या करके इन्द्रियोंको दमन कर धर्म तत्परता होणा विधवाओंने. या दुनियात्याग, सो प्रायः जैन कोमकी स्त्रियें बेलातेला अठाई, पक्ष, मासादिकोंकी, तपस्या करती हैं, कई रोज पीछे हाड मास सुकाकर मृत्यूको प्राप्त होती है, ऐसा व्यवहार करणे वालियोंके लिए, ये शिक्षा, निग्रन्थ प्रवचनकी, बहुत लायक नारीकके है, लेकिन सबोंका दिल, और बदन, और आदत, एकसा होता नहीं, उन्होंके लिए, अपनी २ कोमके पचोंने, सुलभ निर्वाह मुजब कायदेके प्रबन्ध, सोचनेकी जरूरी है, राजपूतोंमें पडदेका रिवाज शील व्रत कायम रखणेको ही जारी किया गया है यह जबराईमे शील व्रतका, कायदा रखणा है, सच है जो स्त्री स्वेच्छा चारिणीया होकर, इधर उधर भटकेगी, जरूर लाञ्छित हो जायगी, पुरुषोंका संग. दुराचारी स्त्रियोंका सहवास, मनुष्योंकी प्रार्थना और धनका लालच, एकान्त पाकर भी, जो अपना व्रत कायम रखती है वही सती जगतमें धन्य है, स्त्रियोंका स्वभाव है, जब रूपवन्त युवानको देखे तब, मदन बाणसें मदको अधोभागमें छोड देती है भगवान महावीर भगवती सूत्रमें फरमा गये है जो स्त्री मनमें कुशीलकी

वाञ्छा रखती है, और लजसें, या डरसे कायासें, दुराचार नहीं करती, वह मरके वैमानकवासी पहले दूजे देव लोकमें, ५५ पल्य (असंक्षा) वर्षोंकी ऊमरवाली अपरि गृहीता, (वैश्या) देवागना होकर, सुख भोगती है, इतना पुन्य मन विगर शील पालनेका है, पछी आकाशमें उडते हैं मनुष्योंमें भी कुदरत है, उडकर चलकर, ऐसा काम कर सक्ता है, विद्याधर, रेल, वाइस कल मोटरमें वैठे ऐसी चाल प्रत्यक्ष चल रहे है, पहाडको भी मनुष्य उठा सक्ता है, यानें नवोंई नारायण, कोडमणकी शिला उठाई हजारों पहाड अंग्रेजोंने फोड डाले, सापकों सिंहको आदमी पकड सक्ता है, दरियावमें प्रवेश कर रत्न निकाल सक्ता है, अग्निमें कूद जाता है, तरवारोंके प्रहार सह सक्ता है, ऐसे कठिन काम मनुष्य करते है, लेकिन हाय जुल्म इस अनङ्ग काम देवको नहीं जीत सकते है, अठयासी हजार ऋषी ब्राह्मण वडे २ तपेश्वरी पुराणोंमे लिखे हो गये है, तपस्या करते २ स्त्रियोंके दास वन गये है, ब्रह्मा विष्णु महादेव स्त्रियोंके नचाये नाचे, इस वास्ते काम देव जीतने वाला है वही परमेश्वर है, वीर्य पात नहीं करे तव, विषय कई किस्मके है, हस्त, पशु पडग, स्त्री, इन सबोको छोडणे वालेकों, भगवान वीर फरमा गये हे गौतम, ब्रह्म व्रत धारी, मेरे अर्द्ध सिंहासण वैठणेवाला है, यानें परमेश्वर है, इस वास्ते पडदेकी रीत अच्छी है, मनोमती फिरणा वाजिव नहीं, लेकिन एक २ तरह पडदा कई २ मुल्कोंमें वडी २ कोमोंमें जारी है उसमे कहार पहाडिये चाकर वगैरह जा सकते हैं, क्या उत्तम कोमके आदमियोंके लिए पडदा है वह क्या नाजर है, पडदा नाम राजपूतों काही सचा है, वाकी तो गुड खाना गुलगुलेका परहेज करे जैसा है, हर तरह पतिव्रता धर्म रखणा, श्रेष्ठ है, दिलमें पडदा तो होणा दुरस्त है, सो भी मन्दिर धर्मशालमें नहीं होणा, यह रिवाज गुजरातका, अच्छा मालूम देता है, धन लेकर अपणी लडकियोंको, साठ २ वर्षके वुड्ढोंके सग व्याहे जाती है, यह चाल उत्तम कोम वालोंके लिए तदन बुरा है साठ वर्ष वाद वुड्ढेको हरगिज व्याह नहीं करणा चाहिये, वेटीको वेच रुपये लेनेसे वरकत कभी नहीं होती अगर पुत्र नहीं होय मातापिताके पास धन नहीं होय अशक्त होय

बेटी धन वानके घर व्याही होय, मावापोंका, खरच चलाणा इन्साफ है, बेटा जैसी बेटी, लेकिन यह मर्यादा आपतकालकी है. किसी कविने कहा है कि (आपत्तिकाले मर्यादा नास्ति) व्याहोंमें ज्यादह खरच करणा जमाईके धनसे दुरस्त नहीं, कच्छ देश मारवाड देशके गामोंमें थोडेधन वाले, कंवारे रह जाते है, कारण इसका यही है कि, रीत नहीं सकते है, रुपया दस हजार होय तो पात्र छोकरीके मावाप भाडकों, पात्रका दागीना ऐसा जुल्म गार रिवाज यातो न्यायी राजा वन्द कर सक्ता है, या विरादरीमे इकलास होय तो वन्द कर सके है, वहुत जोगियोंकी भगत भी इकेली स्त्रियोंकों नहीं करणा, सतीयोंके चरित्र सुन न या पढ़णा

अर्हन्नीति मुजब हकदारी कानून

खयाल रक्खो जो सख्स अन्तकाल भये उसके मालमिल्कियत पर किसका हक्क है और पेस्तर किसका दोयम दर्जे है वाद फिर किस २ को पहुचता है ।

दाय भाग कानून अर्हन्नीति

श्लोक) पत्नी पुत्रश्च भ्रातृन्या सपिंडश्च दुहितृज. वन्धुजो गोत्रजश्चेव स्वामी स्यादुत्तरोत्तरं १ तदभावेत्र ज्ञातीया, स्तदभावे महीभुज, तद्धनं सफल कार्य, धर्ममार्गे प्रदायच. २

अर्थ) स्वामीके मरणे वाद उसके कुल जायदादकी मालकिन उसकी औरत है, बेटेका कोई हक नहीं कि, आप मालिक वन सके, औरत पेस्तर आई थी, तिस पीछे लड़का हुआ, तो फेर उसहीका हक्क पेस्तर है, वाद औरतके दुसरे दरजे बेटा, मालिक है, जिसके औरत बेटा, दोनों नहीं है, उस मिल्कियतके मालिक, भतीजे, उनके नहोने पर, सात भी पीढीतकका भाई, मालिक हो सकता है, वह भी कोई नहीं होय तो. बेटीका बेटा (दोहिता) मालिक है, और वह भी नहीं होय तो, चौदह पीढ़ीतकका भाई मालिक है, वह भी नहीं होय तो, गोत्रके लोक मालिक है, गोत्र भी नहीं होय तो. उसकी जातिके लोक मालिक है, अगर जाति भी नहीं

होय तो, राजा उस धनकों, धर्मकाममें लगा सकता है, अगर खजानेमें डाले तो, गैर इन्साफ है। खाविन्दके मरणे वाद, उसकी औरतकों कुल अख्तियार है, सव जायदादकों, अपने अधिकारमें रक्खे, वेटेको अख्तियार नहीं के विना माके हुक्म कुछ खरच करसके, चाहै जात पुत्र हो, चाहै गोदका, स्थावर, (थिराहणेवाली) जगम (फिरणे दुरणेवाली) मिल्कियतका देणा या वेचणा किसीका हक नहीं सिवाय धणियाणीके, इसमें इतनी शर्त्त जरूर है कि उसकी चाल चलननाकिस नही मिल्कियतकी मालकिन सदाचारिणी हो सकती है, गैर चलण होणे पर वेटेको अख्तियार इन्साफी पंच तथा सरकारके इन्साफसें हो सक्ता है, क्योंके धनके लालचसें झूठा मी वलवा पुत्र उठादेवे वद चलण सबूत होनेसें वेटा मिल्कियतका मालिक होकर कपडारोटी वगैरह खरचा पर्चोके राह मुजव वाघणा माताके लिए इन्साफसे है गैर चलण हो तो भी, नेक चणल माता होय तो भी पुत्रके जायदाद पर कोई हक नहीं है हुक्म मातामें सत्र कांमकर सक्ता है.

अगर कोई शख्स विना शन्तान अपने मरणेके वक्त अपने घरका वन्दोवस्त करना चाहै तो इस तरह वसीहत नामी लिख सक्ता है जो दत्त पुत्र अपनी औरतके हुक्मकी तामील करनेवाला हो, खाविन्दके मरणे वाद अगर दत्तपुत्र वसीहत नामेवाला सखस वदनियत हो जाय तो, स्त्रीकों अख्तियार है उस वसीहतनामेको खारिज करके, दुसरेके नाम पर वसीहतनामा लिखा सक्ती है, धर्म कामके लिए या जाति व्यवहारके लिए खाविन्दकी मिलकियतकों रेण व्यय करणा स्त्रीकों अख्तियार है, मावापकों अपने जात पुत्र पर भी इतना अख्तियार है अगर हुक्मके वर खिलाफ चले, या धर्म भ्रष्ट हो जाय, याने कुल मर्यादा विपरीत खानपान करणे लगे तो घरसें निकाल देवै, इसी तरह गोद लियेको भी निकाल सक्ता है चाहै उसका व्याह भी कर दिया चाहै कुल अख्तियार दे दिया होय, मातापिताकी मौजूदगीमें जात पुत्रकों अख्तियार नहीं है जायदाद मावापकीकों रेण वा व्यय करसके अलग होके कमाया होय, उस पर उसका अख्तियार है रेण वा वेचणेका।

जिसकी औरत वदचलन होय तो, पतिकों अख्तियार है, अपने घरसें निकाल दे, वद चलन औरत, पती पर रोटी कपडेका दावा नहीं कर सक्ती है, कोई सख्सकी औरतनें पती मरे वाद लडका गोद लिया, और वह कुंवारा ही मरगया तो, दूसरा वेटा फिर अपने नामपर गोद ले सक्ती है, मरे लडकेके नामपर नहीं ले सक्ती है सासूकी मौजूदगीमें मरे हुए वेटेकी वहूकों सुसरेके धनमें रोटी कपडेके सिवाय दुसरा कुछ भी अख्तियार नहीं है, वेटा गोद लेणा वगैरह सर्व काम सासूकी आज्ञा मुजब करणा चाहिये, सासूका अन्तकाल हुए वाद फिर वहूका अख्तियार चल सक्ता है, माता-पिताके मरे वाद वेटे अपने हिस्से अलग करणा चाहै तो, सवके हिस्मे वरावर होणे चाहिये, पिताके जीते हिस्सा चाहे तो, मुताविक मरजी पिताके होगा, पिताने जीतेकराव सियतनामा सही है मरे पीछै भी अगर कोई भाई कंवारा होय, और हिस्से करणेका मौका आ जाय तो, मुनासिव है, उसके व्याहका खेर्चा अलग रखकर, वा व्याह करके, वाकी दौलतका हिस्सा वरावर वाट लेना, अगर वहिन कंवारी हो तो, सवी भाई मिलकर पिताके धनसें सवोंको चौथा हिस्सा दूर कर व्याह कर देणा, कोई भाई ऐसा होय कि, अपने वापका धन नहीं खरच कर, नौकरीसें या किसी इल्मसें, या फौजमें वहादुरी वताकर धन हासिल करै, उस दौलतमें दुसरे भाइयोंका हक्क नहीं है, विवाहसें सुसरालसे, जो कुछ धन मिले या दोस्तसें इनाम पावै, उसमें भी भाइयोंका हक नहीं पहुचता, अपने कुलका दवा हुआ धन, वापभाईन निकाल सके, उसको अपनी ताकतसें, विना भाइयोंकी सहायताके, निकाल लावे तो उस धनमें किसी भाईका हिस्सा नहीं हो सक्ता.

विवाहके वख्त या पीछे जिस औरतकों, उसके मातापितानें गहने कपडे गाम नगर जमीन जहागीरी जो कुछ दिया हो, उसको कोई पीछा नहीं ले सक्ता, वह सव औरतका है चाचा, वडी वहन भूआ, मासी, भाई, सुसरा, सासू, या उसके खाविन्दनें जो कुछ दिया हो वह सव औरतका

है खाविन्द उस हालतमें माग सक्ता है दुकाल बडी मुसीवत पडी हो, वाकी नहीं ले सक्ता, यह सब कायदे जैनी आमलोकोंके लिए, अर्हन्नितिसें, लिखा गया है, ॥

(अथ सूतक निर्णय,)

जिसके घर मृत्यु होय उसके घर १२ दिनका सूतक, एक बापके दो बेटे अलग सूतकके घर खान पान नहीं करे तो उसके घर सूतक नहीं सूतकवाले घरमें ९० रहवासी अन्य जाती रहती होय तो वह सब सूतकवाले गिने जाते है चोक १ दरवज्जा २ होय तो बारह दिन तक उस घरके लोक जिन मूर्तिकी पूजा नहीं कर सक्ते साधू तथा साधर्मी उस घरका खान पान फल सुपारी तक नहीं खाते २ मन्दिरमें दूर खडे दर्शन कर सक्ते है मुखसें धर्म शास्त्र प्रगट नहीं बोले मुर्देको कांध देनेवाला २४ पहर सूतकी है, न पूजा करे, न किसी, खान पानकों चीजोंको छुवे, कपड़े धुलाणे मुर्देके सग जाणेवाला ८ पहरका सूतकी है, दास दासी अपने घरमें मर जाय तो ३ दिन उस घरका सूतक जिस रोज बालक जन्में उसी दिन मर जाय तो एक दिनका सूतक, जापेवाली स्त्रीकों ४० दिन सूतक जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने ही दिनका सूतक, आठ वर्ष तकके बालकके मरणेका ८ दिन तक सूतक, हाथी घोडा ऊठ गऊ भैंस कुत्ता बिल्ली घरमें मर जाय तो जब तक उठावे नहीं उहा तक सूतक गिना जाता है, ।

(सर्व धर्मसार शिक्षा)

मोह द्वेष अज्ञानता, तजे कर्म अरुनार । ऐसो शिवहरि ब्रह्मजिन, सबको करो जुहार । १ । सवैया) विद्यमान तीर्थंकरकों वन्दन जो पुन्य होत वैसोही पुन्यफल जिन मूर्ति वन्दनको । चारित्र व्रत पालवेको साधूकों फल कहा सो ही फल सूत्रोंमें प्रतिमा अभिनन्दनकों ॥ दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र आचाराग राय प्रश्नी तीनोंका पाठ एक हित सुख मोक्ष स्पन्दनको । ऐसी सूत्र आज्ञा देख शाका मत चित्त राखो जिन प्रतिमा पूजन फल पापके निकन्दनकों । २ साधू दर्शन पुन्य फल, तीरथ दुयमसाध, थावर तीर्थ देर

फल, तुरत मुनिः फल लाध । ३ । अन्नपान घर वस्त्रसैं, शय्यासनकर भक्त, सेवा शोभा वन्दना, नवविधि पुन्य प्रशक्त । ४ । पर अवगुण देखे नहीं, निज अवगुण मन त्याग । निज शोभा मुखनाक है, समकित धरवड भाग । ५ । परनिन्द्रा निज श्लाघता, कर्त्ता जगमें वहोत निज अव गुणको जानता, विरलेई नरहोत, ६ उत्तम नरका क्रोध क्षण मध्यम का दो पहर । अधम एक दिन रखत है, अधम नीच नित जहर, ७ । उत्तमसाधु पात्र है, अनुव्रत मध्यम पात्र, समकित दृष्टी जघन्य है, भक्ति करो शुभ गात्र ८ मिथ्यादृष्टि हजारतें, एक अनुव्रतीनीक, सहस अणुव्रतीत अधिक, सर्व व्रती तहतीक, ९ सर्व व्रतीतें लखगुणा, तत्व विवेकी जाण, तात्विक सम कोई पात्र नहिं, यों भाखे जिन भाण, १० सत्य अहिंसा शीलव्रत, तजचोरी पुनलोभ, सर्व धर्मका सार यह, स्वर्ग मुक्ति जगशोभ ११ गुजरात देशमें औदिच्य ब्राम्हनोकों हेमाचार्य उपदेशसें जैनधर्म धारण कराया, उन्होंको गुजरातमें भोजक कहते हैं, (मारवाडी जिन गुण गाणेसें गंद्रप कहते है) इन्होंके घर कुल तीनसौ है बहुत जगह इन्होंके सगे सोढरे विष्णुमती जोत्रिगाले वजते हैं, वो ५।५० जिन पद सीखके मारवाडादिक क्षेत्रमें गंद्रपोंके नामसे नाटकादिक कर माग खाते है, असली गंद्रप भोजक ओस वंश तथा श्रावकों विगर हाथ नहीं माडते, वो भोजक जिन मन्दिरके पुजारे गुजरातमें हैं, गंद्रप त्रिकाल्योंकी परिक्षा, जैन कान्फरेंस वारेगी तब होगी, न मालूम कौन तो जैन धर्मी है, और कौन वैष्णव है, परदेशअलोंकों क्या खबर होती है । लेकिन् नवकार पूछना ।

मारवाड़के भोजक शाक्त निर्णय गोत्र १६ ॥

ऋषिनाम	नख	गोत्र.	वेद	प्रवर	शाखा	क्षेत्र	वास.	माता	भेरू	गणेश
१ माथुर	मथुरिया	कश्यप	ऋग्	त्रि	कोथमी	जगनाथ	मथुरा	सच्चाय	रुरू	एकदत
२ भारत	भारताणी	भारद्वाज	,,	त्रि	,,	,,	शेरगढ	भ्रामरी	स्वर्णाकर्षण	गजानद
३ मालेश्व	आसीवाण	शौनक	,,	त्रि	,,	,,	आमकगढ	यक्षणी	समशनिश्वर	गणेश
४ हरिस्मति	हरिमोता	हरितस	,,	त्रि	,,	,,	मान्चल	महालक्ष्मी	रक्तपान	सुरोचित
५ योगहट	हटला	कौत्सव	यजु	त्रि	माध्वनी	द्वारिका	हस्थनापुर	पन्याथी	शल	गणवस
६ बलभद्र	वलिभद्र	सांडिल्य	,,	त्रि	,,	,,	कोटडा	पिपल्याद्	क्रोध	कपिल
७ छेभ्रक	छापरवाल	गौतम	,,	त्रि	,,	,,	छापरलाडणू	सच्चाय	उनमत्त	लम्बोदर
८ केशव	कूवेरा	गौतम	,,	त्रि	,,	,,	करमरी	चामूंडा	चड	गजकर्ण
९ ऋद्धि	रुक्र	उपमथ	साम	पच	कोथमी	वद्रिका	रंगपुर	खीमाज	आनद	गणधीश
१० देवव्रत	देवेरा	कुडलस	,,	पच	,,	,,	देरावर	सच्चाय	भीषण	विघ्ननाश
११ शोम	शावलेरा	चद्रास	,,	पच	,,	,,	माजनपुर	,,	कपाल	धूम्रकेतु
१२ मूर्द्धना	मुधवाडा	वत्सगोत्र	,,	पंच	,,	,,	ओसिया	मुंढार	असिताग	सुमुख
१३ जगदीशा	जांगला	कास्यप	अथर्वण	पंच	असतीनक्षन	स्वेतपुर	अडगपुर	ब्राह्मणी	भूतेश्वर	सुपनेश्वर
१४ माडव	मडतवाल	पारासर	,,	पच	,,	,,	मेडता	पुडरीक	त्रिपुर	वक्रतुड
१५ भाल	भीनमाल	भारद्वाज	,,	पच	,,	,,	भीनमाल	भीमा	शहर	भालचंद्र
१६ कटि	कटारल्या	कपींजल	,,	पच	,,	,,	कोडपुर	कालिका	वटुक	नीलवर्ण
॥ अचोटी	ये सब १६ ॥ गोत्रवाले जैनविश्वन रुद्रका मदिर पूजते हैं इन्होंमें कोइ जैनधर्म मानता है									

(दोहा) खण्ड खडेलामें मिली, साढी बारह जात, । खण्डग्रन्थ नृपकी समय, जी म्या दालरु भात । १ । बेटी अपनी जातमें, रोटी सामल होय, कची पक्की दूधकी, भिन्न भाव नहीं कोय । २ । श्रीमाल भीनमालसें १ ओसवाल ओसियासे २ मेड़तवाल मेड़तामें ३ जायल वाल जायल्सें ४ बघेरवाल बघेरासें ५ पल्लीवाल पालीसें ६ खण्डेलवाल खडेलासें ७ डीडू महेश्वरी डीड वाणेसें ८ पौकरा पौकरजीसें ९ टींटोडा टींटोड गढ़सें, १० कटडा खाटूसे, ११ राजपुरा राजपुरसें, १२ आधीजात बीजा वर्गी ।

(मध्य देश ८४ वणिक् जाति ।)

गौड़वाड़ देश पारेवा पद्मावती नगरमें वस्तुपाल तेजपाल जितनें दया धर्मी वणिक् जाती थी उन सबोंको मुल्क २ में खरच भेज इकट्ठे किये बड़ी भक्तिसे उतारा दिया भोजन पंक्ति जीमने लगी उस वक्त एक बुड्ढी पौरवालकी विधवा स्त्रीनें भर पञ्चोंमें आकर कहा अहो धर्म माइयो किसके घर जीमते होये वस्तुपाल तेजपालका नाना कौन है ये भी कुछ खबर है खबर करी तो मालुम हुआ बाप पोरवाल माता वाल विधवा दुसरे वैश्य कुलकी सबूत हुई तब जीम लिये सो १० । नहीं जीमे सो २० ये झगड़ा बहुत जगह २ फैल गया तब वस्तुपाल तेजपालने असख्य द्रव्य खर्च २ अपने २ पक्ष मन्तव्य गुरू आदि सबही अलग स्थापन करा उहा आये जिन्होंके नाम ।

श्रीमाल २ श्रीश्रीमाल ३ श्रीखण्ड ४ श्रीगुरू ५ श्रीगौड़ ६ अगरवाल ७ अजमेरा ८ अजोधिया ९ अड़ालिया १० अवकथवाल ११ औसवाल १२ कठाडा १३ कठनेरा १४ ककस्थन १५ कपौला १६ काकरिया १७ खरवा १८ खडायता १९ खेमवाल २० खंडेलवाल २१ गंगराडा २२ गोहिलवाल २३ गौलवाल २४ गौगवार २५ गींदोडिया २६ चकौड २७ चतुरथ २८ चीतोडा २९ चौरडिया ३० जायलवाल ३१ जालोरा ३२ जैसवाल ३३ जम्बूसरा ३४ टींटौडा ३५ टोरिया ३६ दूसर ३७ दसौरा ३८ धंवलकौष्टी ३९ धाकड ४० नारनगरेसा ४१ नागर ४२ नेमा ४३ नरसिंह पुरा ४४ नबांभरा ४५ नागिन्द्रा ४६ नाथचड्डा ४७ नाछेल्या ४८ नौटिया ४९ पल्लीवाल ५० पवार ५१ पञ्चम ५२ पौकरा ५३ पौरवाल

५४ पौसरा ५५ बघेरवाल ५६ वदनौरा ५७ बरमाका ५८ विंदियादा ५९ बौगार ६० भवनगे ६१ भूंगडवार ६२ महेश्वरी ६३ मेडतवाल ६४ माथुरिया ६५ मौडलिया ६७ राजपुरा ६८ राजिया ६९ लवेचू ७० लाड ७१ हरसोरा ७२ हूबड ७३ हल्द ७४ हाकरिया ७५ सांभरा ७६ सडौइया ७७ सरेडवाल ७८ सौरठवाल ७९ सेतवाल ८० सौहितवाल ८१ सुरद्रा ८२ सौनइया ८३ सोरडिया ८४ ।

इसतरह दक्षिणके ८४ जाती तथा गुजरातके ८४ जातिके वणिकोंमें कोई नाम इसमेंके नहीं दूसरे हैं ग्रथ वढणेके भयसें यहा दरज निरुपयोगी जाणके नहीं किया है ये वणिक् जाति दयाधर्म पालते हैं इससें प्रगट प्रमाणसें सिद्ध है प्रथम सबोंका धर्म जैन था राजपूतोंमेंसें जैनाचार्योंनेही प्रतिबोध देकर व्यापारी कौम वणाई है जमानेके फेरफारसें अन्य २ धर्म कोई वैश्य मानने लग गये हैं मगर मास मदिराका परित्यागपणा जो इन जातियोंमें है वह जैन धर्मकी छाप है जो धर्म जैन पालते है उन्होंको लौकिकवाले अभी महाजन नामसे पहचाणते हैं जिन्होंने जैन धर्म छोड दिया है वो वैश्य या वणिये वजते हैं वीसे दशे पाचे अढाइये पूण तथा पचीसे इस किस्म इन्होंकी शाखायें कारण योगसें फंटती चली गई है दुनियामें सबसें वडे राजन्य वंसी लेकिन् धर्म मूर्त्ति दीनहीन पट् दर्शनादिक सर्व जीवोंके प्रतिपाल गुणवन्त गुणीकी कदर करणेवाले महाजन, वैश्य, वणिक्, परमेश्वरके भक्त जयवन्त रहो ये जाति वडी उत्तम दरजेकी सत्य धर्म पर चिरंजीवी होकर वर्त्तो श्रीरस्तु. कल्याण मस्तुः ॥ आपका शुभेच्छक जैनधर्मी पडित । उपाध्याय रामलालगणिः ॥

(श्रीमद् वृहद्गच्छ खरतर पट्टावली)

१ भगवन्त श्रीवर्द्धमानस्वामी स्वय बुद्ध केवली २४ में तीर्थंकर ।
२ श्रीसुधर्मा स्वामी गणधर ५ में केवली सौधर्म गच्छ प्रगट ।
३ श्रीजम्बूस्वामी चरम केवली यहासें जिन कल्पादि १० वस्तु विच्छेद हुई ।
४ श्रीप्रभवस्वामी श्रुत केवली १४ पूर्व धर
५ श्रीशय्यंभव सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर

६ श्रीयशोभद्रसूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर
७ श्रीसभूतिविजय सूरिःश्रुत केवली १४ पूर्व धर
८ श्रीभद्रबाहुसूरिः अनेक सूत्र निर्युक्ती निमित्त ग्रन्थ रचे १४ पूर्वधर श्रुतकेवली कल्प सूत्रमें अशाढ़ चौमासेसें ५० दिनसें सवत्सरी पर्व करणा फरमाया जैन अभि वर्द्धन सवत्सरमें पोष असाढ सिवाय दुसरे महीनें बढते नहीं इसवास्ते सवत्सरी बाद ७० दिनसें काती चौमासा लगता है समवायाग सूत्र और कल्प सूत्रका पाठ समिलित है भद्र बाहुस्वामीनें कल्प सूत्रमें महावीरके ६ कल्याणक कहे। (पच हत्थुत्तरे होत्था साइणा परि निव्वुए) पाच कल्याणक उत्तरा फाल्गुणीमें स्वाती नक्षत्रमें निर्वाण पाये
९ श्रीस्थूल भद्रसूरिः १४ पूर्वधर श्रुतकेवली ८४ चोवीसी नाम चलेगा
१० श्रीआर्य महागिरी सूरिः दस पूर्वधर श्रुतकेवली
११ श्रीसुहस्तिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१२ श्रीसुस्थितिसूरिः इन्होंने कोटि सूरि मंत्रका जाप करा कोटिक गच्छकी थापना हुई १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१३ श्रीइन्द्र दिन्नसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१४ श्रीदिन्न सूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१५ श्रीसिंह गिरिसूरिः १० पूर्वधर श्रुतकेवली
१६ श्रीवज्रस्वामीसूरिः १० पूर्वधर चरम श्रुतकेवली वज्रशाखा नाम हुआ
१७ श्रीवज्रशेनसूरिः भगवानके ६०९ वर्षपर दिगाम्बर सम्प्रदाय निकली
१८ श्रीचन्द्रसूरिः इन्होंके नामसेंकोटिक गच्छ वज्रशाखा चन्द्रकुल प्रसिद्ध हुआ
१९ श्री समत भद्रसूरिः। २० श्रीवृद्धदेवसूरि। २१ श्री प्रद्योतनसूरिः
२२ श्री मानदेवसूरिः लघुशान्तिस्तोत्रके कर्त्ता
२३ श्रीमानतुङ्गसूरि. वृद्ध भोजराजा सन्मुख भक्तामरस्तोत्र कर्त्ता तथा भयहर स्तोत्र रचकर नागराजाकों वसकरा। २४ श्री वीरसूरिः।
२५ श्री जयदेवसूरिः
२६ श्री देवानन्दसूरिः भगवानके ८४५ पीछे वल्लभी नगरी टूटी।

२७ श्री विक्रमसूरि । २८ श्री नरसिंहसूरिः । २९ श्री समुद्रसूरिः ।
३० श्री मानदेवसूरि इन्होंके समय भगवानसें ८८५ हरिभद्रसूरि स्वर्ग गये और पूर्वोकी विद्या विच्छेद हुई
३१ श्री विवुध प्रभसूरिः इन्होके समय सूत्रोंके भाष्य कर्त्ता जिनभद्रगणिः आचार्य हुए। ३२ श्री जयानन्द सूरिः। ३३ श्री रविप्रभसूरि ।
३४ श्री यशोदेवसूरि. । ३५ श्री विमल चन्द्रसूरिः ।
३६ श्री देवसूरित्यागी वैरागी क्रिया उद्धारिसें सुविहित पक्ष हुआ ।
३७ श्री नेमिचन्द्रसूरि. प्रवचन सारोद्धार टीका ग्रथ वणाया, वरढिया वगैरह वहुत गोत्र स्थापन किए
३८ श्री उद्योतनसूरिः इन्होंके निजशिष्य चैत्य वास छोडके आए हुए वर्द्धमान सूरिः ८३ दूसरे २ थविरोंके शिष्य जिन्होंको सिद्ध वडनीचे शुभ मुहूर्त्तमें सूरि. मन्त्रका वास चूर्ण दिया वह ८३ अलग २ गच्छों की स्थापना करी इसवास्ते खरतर गच्छमें अभीभी ८४ नदी प्रचलित है ८४ गच्छ थापन हुआ
३९ श्री वर्द्धमानसूरिः १३ वादशाह आवूपर अम्बादेवीकों, वसकर वुलाकर विमल मत्री पचायणेचा पौरवाल गोत्रीकों, प्रतिवोध देकर आवू तीर्थपर १८ करोड तेपन लाख स्वर्ण द्रव्य लगाकर, मन्दिर विमल वसीकी प्रतिष्ठा करी, १३ वादशाहोंने गुरूको सन्मान दिया, हजारों सचिंती वगैरह महाजन वणाये, देवताको भेजके सीमधर जिनसे सूरिः मन्त्र शुद्ध कराया
४० श्री जिनेश्वरसूरिः अणहिल पुरपाटणमें चैत्यवासी शिथलाचारी उपकेश गच्छियोंसें राजाने सभा कराई राजा दुर्लभनें शास्त्र मर्यादसे, यथार्थ ज्ञान क्रिया देख, राजामे कहा तुमे खराछो शियलाचारी चैत्य द्रव्य भक्षकोंको कहा तुमें कुवला छो, यहासें खरतर विरुद सं. १०८० में मिला, कोटिक गच्छ वज्र शाखा चन्द्रकुल खरतर विरुद प्रसिद्ध हुआ, सुविहित पक्ष, ।
४१ श्री जिन चन्द्र सूरिः इन्होंने एक गरीवके अङ्गमें चिन्ह देखकर कहा, तूं शाहनशाह साम्राट होगा, आखिरकों मोजदीन दिल्लीका

बादशाह हुआ, गुरूको बडे उत्सवमें, धनपाल शिवधर्मी महतियान श्रीमालके घर विराजमान किया, उहा त्याग वैराग्न अतिशय विद्या उपदेशसें, श्रीमाल सर्व जैनधर्म धारण करा, महितियाण गोत्रियोंको श्री श्रीमालकी पदवी बादशाहने प्रदान की ऐसा भी एक जगह लिखा-देखा है दिल्ली लखनेऊ आगरा भियाणी झुझणूं जैपुर वगैरह सर्व श्रीमाल १३९ गोत्रके गुरूके श्रावक हो गये प्रथम श्रीमाल जैन थे वह शैव शङ्कराचार्यके हमलेमें हो गये थे, सबोंको पीछा जैन श्रावक करा जिन्होंकी वस्ती राजपूताना दिल्लीके अतराफ सबोंका गच्छ खरतर है, गुरूने संवेग रंग शाला ग्रंथ रचा, ।

-४२ श्री अभय देव सूरि बारह वर्ष आंबिल तप करणेमें, गलत कुष्ठ उत्पन्न हुआ. तब शासन देवीने प्रगट हो, नव कोकडी सूतकी सुल-झाणेका कहा, और कहा हे गुरू अणसण अभी नहीं करणा सेढी नदीके तटपर पार्श्व जिनेन्द्रकी स्तुति करणा, सर्व अच्छा होगा तब गुरू राजा टिकमंत्र युक्त जयति हुअण बत्तीसी बनाकर स्तुति करी थंभणा पार्श्व नाथकी मूर्त्ति धरणीतलसे प्रगट हुई, स्नान जल छाटते सोवन वर्ण काया हुई, इस वक्त जिन वल्लभ सूरि. चैत्यवासी, चित्रावाल गच्छकी विरुद्ध आचरणा देख, श्रीअभयदेव सूरिःके शिष्य हुए योग्य जाण, गुरूनें वाचनाचार्यका पद दिया, आप नव अंगोंकी टीका शासन देवीके आग्रहसे, गन्ध हस्ती कृत टीका, दुष्ट लोकोंनें गलादी, जलादी, शंकराचार्यने, तब जिनेन्द्र व्याकर्ण पूर्व कृत गुरुमुख, अर्थ धारणासें, टीका वृत्ति रची, १२ वर्ष विचरते रहे, अपने हाथसें सूरि मंत्र देके वल्लभ सूरि को आपने अनशण करा, तब गच्छमें केइयक साधु आचार्य पद वल्लभ सूरि.के क्रिया कठिनतासें, डरते नहीं देणा धारा, तब गुरूनें चामुण्डासच्चाय देवीको वस करके. सौ ग्रंथ सत्र पट्टा, पिंड निर्युक्ती स्तोत्रादि रचकर, ९२ गोत्र, राज-पूत मुहेश्वरी, बावड़ी, हुनडांको प्रतिबोध देकर महाजन किये तब सर्व संघ और बडे २ आचार्योंने मिल कर आचार्य पद दिया, चामु-

ण्डानें कहा आज पीछे आपके शन्तानको जिन संज्ञा होणी ९ जिन ठाणागमें कहे प्रभावीक पुरुपकों जिन सज्ञा है सर्व २९ व्रर्प वाच--नाचार्य पदमें रहै छ महिने आचार्य पद पाला, द्वेष बुद्धिसें एक ग्रथमें। अपनी कल्पित पट्टावली लिखणे वालेंनें मनमानी वात लिखी है जिने-श्वरसूरिः के पाटवल्लभ सूरिःको लिखा है और अपने ही हाथसे जैन कल्प वृक्षमें जिनेश्वर सूरिः चन्द्रसूरिः अभयदेवसूरिः के पट्टपर वल्लभ सूरिः कों लिखा है उस समय द्वेष नहीं जगा होगा बाद तो द्वेष बुद्धि प्रत्यक्ष दरसाई है कुछ तो पूर्वापर विचारणा था २ पाट दुसरे लेखमें उठाया जिनेश्वर सूरिः के ७० वर्ष वीतने बाद वल्लभसूरिः हुए है भगव-तीकी टीका तो देखी होगी उसमें अभय देवसूरिः खुद लिखते है जिने-श्वर सूरिके चन्द्र सूरिः उन्होंकामें अभय देव सूरिः नेये वृत्ती रची तो जिनेश्वर सूरिःके पट्ट पर वल्लभ सूरिःकैसै हुए प्रमाणीक ग्रंथ बनाकर उसमें कल्पित पट्टावलीमें असमंजस लिखणान्यायाभोनिधि पदकों अल--काया, मालुम देता है, चर्चाका वाद उदय करणेवाला जो लिखता है सो सब जाहिरा मालुम दिया है, फिर लिखा है कुर्च पुरी गच्छवासी वल्लभसूरिः छकल्याणकवरिके प्ररूपणा करी, न तो जिन वल्लभ सूरिःका कुर्च पूरी गच्छ था न षट् कल्याणक् इन्होंनें प्ररूपणा करीछ कल्याणक प्ररूपणेवाले श्रुतकेवली भद्र वाहु स्वामी है, नहीं माननेवाले आपलोकहो, पहलेका गच्छ अगर लिखणेका प्रवाह आप मन्जूर करते हो तब तो मेघ विजयका लोंका गच्छ पीछै क्यों नहीं लिखा अगर फिर ऐसा है तो लिखणेसें कोई द्वेषापत्ती तो नहीं होगी पंजावी ढूंढिया जीवण दासका शिष्य आत्मारामजीनें बुंटेरायजीका शिष्य हो अहमदाबादमें सोरठ देश सत्रुंजय तीर्थकों अनार्य देशकी प्ररूपणा करी, इस वातको विचार कर प्रमाणीक लेख प्रमाणीक पुरुष होकर यथार्थ ही लिखणा जरूर था वल्लभ सूरिःनें तुह्मारी तरे विरुद्ध आचरणा छोड दी थी फेर ऐसा आक्षेप द्वेष बुद्धिसें क्यों करा।

श्रीजिन वल्लभ सूरिः इन्होंके समय मधुकर खरतर गच्छ भेद। १।

४४ श्रीजिन दत्तसूरिःजीनें सवा क्रोड ह्रींकारका जप करा ५२ वीर ६४ योगणी पंच नदी पान्च पीरोंको वस किया १ लाख तीस हजार घर राजपूत महेश्वरी आदिकसें जैनधर्मी महाजन बणाये चित्तोड नगरके वज्र खम्भकी तथा उज्जैन नगरके वज्र खम्भकी साढा तीन कोटि सिद्ध विद्या निकाल कर जैन संघमें महाउपकार करावो पुस्तक अब जेसल्मेरमें विद्यमान बन्ध है बिजलीगिरी उसकों पात्रके नीचे दाब कर बिजलीसे वरदान लिया दादा श्रीजिन दत्तसूरिःजी ऐसा नाम जपणेवालेके घर नहीं गिरुगी मरी गउकूपर काय प्रवेशनि विद्यासें जिन मन्दिरके सामनेसे खत उठाई, मरे हुए नबाबके पुत्रकों, मरु अच्छ नगरमें, परकाय प्रवेशनि विद्यामें, छ महिना जिला दिया संघकी आपदा मिटाई, पुत्र धन रोग अनेक वाच्छार्थियोंकी कामना पूर्ण कर, ओस वंश बधाया, रत्न प्रभ सूरि.नें ओसियां नगरमें १८ गोत्र रूप अश्व पति गोत्रका बीज बोया था उसकों खरतर गच्छाचार्योंने साखा प्रशाखा पत्र फल फूलमें ओस वंश सुरतरुकों शक्तिरूप जल उपकार रूप छांहसे गह मह कर दिया, जिन्होंसें जैन दर्शन तथा अन्यमती भी निर्वाह करते हैं इन्होंके विद्यमान समय १२०४ में लोद्रव पट्टणमे रुद्रपल्ली खरतर दुसरा गच्छ भेद हुआ जिससें खरतर गच्छके द्वेषी वे प्रमाण लिखते है १२०४ में खरतर हुए, ये दूसरी शाखा फटी ऐसे तो ११ शाखा निकल चुकी है द्वेष बुद्धिवाला तो सत्यकों भी असत्य कहैगा लेकिन वे प्रमाण लिखणेसें अन्यायी ठहरते है।

४५ मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि इन्होंनें हजारों घर महाजन बणाये दिल्लीमे इन्होंकी रथी उठी नहीं तब कुतबुद्दीन बादशाहकी आज्ञासे सिर बाजार दाग हुआ खोडिया क्षेत्रपाल सेवित अनेकोंका मरणान्त कष्ट मिटाया मुसल्मीन भी जिन्होंको दादा पीर कहते थे इन्होंके समय पूर्ण तल्ल गच्छी देवचन्द्रसूरिःका शिष्य हेम चन्द्रसूरिः जिन्होंने शब्दानुशासन प्रकट करा कुमारपाल राजाकों जैनी करा छीपा भाव सारोंको जैनी

करा औदीच्य ब्राम्हणोंको उपदेश देकर जैनी करा जो गुजरातमें भोजक मारवाडमें (गद्रपके नांमसे पहचाणे जाते है) धर्म ३०० घर जैन पालते हैं जैनीसिवाय दान नहीं लेते है इन्होंके समय १२१३ में आंचल १२२६ में सार्ध पुनमिया १२५० आगमिया हुए

-४६ श्री जिन पति सूरिःजी इन्होंके समय चित्रावाल गच्छी चैत्यवासी जग चन्द्रसूरि.नें वस्तुपाल तेजपालकी भक्तीसें क्रिया उद्धार करा तप करणेसें चित्तोडके राणेजीनें १२८५ में तपा विरुद दिया वस्तुपाल तेजपाल लहुडीन्यात ओसवाल पोरवाल श्रीमालियोंमें करनेवाला, मायाका अखूट भण्डारीने इन्होंका नन्दिमहोत्सव करा जिसनें जगत् चन्द्रसूरिःकी सामाचारी कबूल करी, उस गरीबकों श्रीमन्त बणाते गया,जगत् चन्द्रसूरि ने श्रावककों पोसह व्रत पच्चखाण करे पीछे पोसहमें भोजन एकाशन करणेकी प्ररूपणा करी और आबिलमें ६ विगय टालके सींधा निमक काली मिर्चे पोतीके वेसणके चिलडे वगैरह अनेक द्रव्य खाणेकी प्ररूपणा करी सो अभी गुजरातमें प्रथा चलती है बड गच्छके आचार्य जब अपने समुदायकों आज्ञा कारी नहीं देखा तब हनुमान गढ़ बीकानेरके इलाकेमें आय रहे पिछाडी फिर जती श्रावक मिलके आचार्य मुकरर किया उन्होंके पाटानुपाट विद्यमान स. विक्रम १९६६ कार्तिकमें मुम्बईमें वडगच्छके आचार्य हमसें मिले थे लेकिन तपागच्छके वस्तुपालतेजपालकी सहायतासें वडगच्छ निर्बल होता गया जतीभी कइयक तपागच्छमें मिलगये श्रावक भी मिलते गये तथापि पट्टधर आचार्य वडगच्छ विद्यमान है ।

-४७ श्री जिनेश्वर सूरिः इन्होंके समयमें १३३१ मे सिंहसूरिः सें लघुखरतर शाखा निकली २ गच्छ भेद हुआ इनमें जिन प्रभसूरिः चमत्कारी हुए । ४८ श्री जिन प्रबोधसूरिः

-४९ श्री जिनचन्द्रसूरिः दिल्लीके बादशाह चित्तोडका राणा जेसलमेरकारावल मंडोवरके राठौडराव राजा ऐसे ४ राजा गुरूके भक्त हुए इस

आर्यावर्त्तमें जगह २ जीव दया और जैन धर्मकी उन्नती खरतरा-चार्योंकी महिमा विस्तारपाई बादशाहनें कई २ बन्दोवस्तके फुरमाण लिखे तबसें राज्यगुरू खरतर राज गच्छ कहलाया अनेक प्रतिवादी-योंकों जीता तब बादशाहने भट्टारक श्री जिनचन्द्रसूरि. ऐसा खास रुक्केमें लिखा भट्टारक नाम हेम अमरादि कोशोंमें पूजनीक पुरुषोंका है अथवा अनेक भट्टोंकों न्यायसें हराणेवाले भट्टारक सर्व गच्छके लोक खरतर भट्टारक गच्छ कहने लगे ।

श्री जिन कुशलसूरिः ५२ वीर ६४ योगनी पंचनदी पंचपीर वस करके सघका बहुत उपकार करा, ५० सहस्र श्रावककरे निर्धन श्रावकर्कों धन अपुत्रियेकों पुत्र दिया, पाटण सहरमें गुरूव्याख्यान बाचते थे उस समय गूजर मलबोथरेकी जिहाज रतनाकरमें डूबने लगी उसने गुरूकी स्तुति शुरू करी कैसें २ अवसरमें गुरू रखी लाज हमारी उस समय गुरू पक्षी रूप हो उडकर गूजरमलकी जहाजकों किनारे लगा दर्शन दे पीछे आकर व्याख्यान करा तब सघनेयेस्वरूपदेख आश्चर्य किया, १ महिनेसें गूजरमलनें पाटणमें आकर संघसें सर्व वात कही इसतरह स्वर्ग पाये पीछे समय सुन्दर उपाध्यायकी तथा सुखसूरिः की डूबती-हुई जहाजकों पार लगाई मुसल्मान लोकोंका बहुत उपकार कर दादा पीरकहलाये फाल्गुण वदी अमावस देरा उरमें धामपाकर पूनमकों अपने भक्तोंको जगह २ दर्शन दिया फुरमाया भुवन पती निकायका आयुष्य मेरा पहली बध गया था सम्यक्तवाद गुरूमहाराजसें पाया जो याद करोगे, तो होणेवाले कामको शीघ्र कर दूगा बडे दादा साहिब सौधर्म देवलोक टकल विमान ४ पल्यकी स्थितिपर विमाना-धिपति हुए है उन धर्मदाता गुरूका ध्यान पूजन भक्ती कारककोंमें सहाय करूंगा भक्तोंके आधीन रहूंगा अन्तर्ध्यान हुए तबसें लोक नगर २ में चरण पूजने लगे ।

१ श्री पद्मसूरिः कुशलसूरिः के शतानी उपाध्यायश्री क्षेमकीर्तिगणीनें सत्रि-बाण गढमें राजपूतोंकी जान प्रतिबोध ५०० कों दिक्षादी कुशलसूरिः

प्रगट हो ५०० सेका उप गरण राजासें दिलाया क्षेम धाड शाखा प्रगट हुई ये प्रथम भट्टारक गणशाखा १ तीन शाखा और एव ४ है।

५२ श्री जिनलब्धिसूरिः। ५३ श्री जिनचन्द्रसूरिः।

५४ श्री जिनउदयसूरिः यावज्जीव एकान्तरोपवास नव कल्पी विहार एक लाहारी, स. १४२२ में जेसल्मेरमें वेगड खरतर गच्छ भेद ४ था।

५५ श्री जिनराज सूरिजी न्याय मार्तण्ड कहलाये।

५६ श्री जिनभद्र सूरि. इन्होंने दोनों भैरवों की आराधना करी काला भैरूंकों गच्छाधिष्टायक वणाया गद्दी घरकों मडोवर जाणा, आराधे तब साहाय कारी रहूंगा, बलि देणा अष्ट द्रव्यकी ऐसा वचन लिया वोहरा महाजन करे १४७४ में पीपलिया खरतर ५ मागच्छ भेद भट्टारक गच्छमें इन्होंसें भद्रसूरिः शाखा चली।

५७ श्री जिनचद्र सूरिः इन महाराजाके देव लोक हुए पीछे १५३१ में तपागच्छी दस्सा श्री माली वणियां लिखारी लूंकेनें जिन प्रतिमा निषेध रूपमत अहमदाबादमें चलाया उसमें ३ गुजराती २ नागोरी १ उत्तराधी इन्होंमें ५ सम्प्रदाई विद्वान होकर जिन प्रतिमा मन्तव्य करली।

५८ श्री जिनहन्स सूरिः इन्होंने गहलडा गोत्र थापा बहुत महाजन वनाये आचाराग सूत्रपर दीपिका वनाई देव सानिद्धसें ५०० से कैदी वादशाहसें छुडाये मुल्कोंमे अमारी डूडी पिटवाई इन्होंके समयमें १५६४ में आचार्य खरतर गच्छभेद ६ जो पाली नग्रमें है १५६२ कडवा मती १५७० मेंलूंकेकामतत्याग वीजे वैश्यने वींजा मत निकाल जिन प्रतिमामानी १५७२ में तपागच्छमें से पार्श्व चन्द्रजीनें ५ की सवत्सरी प्रमुख सम्प्रदाय निकाली।

६० श्री जिनमाणिक्य सूरि· इन्होंके समय हुमायू वादशाहके जुल्मसे (अत्याचारसें) त्यागियोंने अणसण किया कई लगोट वद्ध महात्मा पोसा लिया होगये बाकी वहुत गच्छके जती घर वारी होगये तब लोक मति हीन कहणे लगे (मथेण) यथार्थ नाम घरधारी मथेणका, मिथुन होगा, स्त्रीपुरुषके सहवास जोडेको मिथुन सस्कृतमें कहते है

तब आचार्य शिथलाचार बहुत फैला देखकर जैसलमेरमें रहे बाद बछावत संग्राम सिंहने गच्छभावसें महाराजकों बीकानेर बुलाया तब कुशलसूरिःजीका दर्शन करणेकों संघके साथ देराउर जाते दिनकों जल नहीं मिला रातको जल मिला यावज्जीव चोविहार तब अणसण कर शिष्यको क्रिया उद्धार करणेकी आज्ञा दे देवता हुए, जेसलमेरमें श्रीजिनचन्द्रसूरिःको दर्शन देकर सहायकारी हुए, कहा. भस्म ग्रह उतरा है उदयका वख्त है जो विचारेगा सो सब काम होता रहेगा।

६१ श्री जिनचन्द्रसूरिः इन्होंने लाहोर नगरमें अकबर बादशाहको धर्मोपदेश देकर जैनश्रद्धा कराई अनेक दुःख प्रजाका दूर कराया जैन तीर्थ श्रावकोंकी रक्षा कराई पारसीके मोहरछाप फुरमाण बादशाहके करे हुए बीकानेर बडे उपासरेमें भेज दिये महात्यागी पत्र महाव्रतधारी प्रतिमा निंदकोंको परास्त करते गुजरातमें लूपकमती तपेको प्रतिबोध देकर श्रावक बणाया गुरूनें विचारा गुजरातमे मतांतरी बहुत होगये है उन जीवों-पर करुणा लाकर गुजरातमे विचरकर मत कदाग्रह तोड़ा जगह २ खरतर गच्छ दीपाया और मतान्तरियोंको शुद्ध श्रद्धाकी पहचान कराई तपा गच्छी विजयदांन सूरिः के शिष्य धर्म सागरजीनें कुमति कुद्दाल कल्पित ग्रंथमें लिखा था कि अभय देवसूरिः नव अङ्गटीका कार खरतर गच्छमें नहीं हुए इसका निर्धार करणेको पाटणमें सब गच्छके प्रमाणीक आचार्य उपाध्याय वगैरहको एकट्ठ किये तब सबोंने धर्म सागरजीकों ८४ गच्छ बाहिर कराये बात गीतार्थ विजयदानसूरिः मेडतामें सुनकर कुमति कुद्दाल ग्रंथकी जो प्रति मिली सो सब जल शरण करी और खरतर गच्छमें विरोध करना बंध करा इन्होके पट्ट हीरविजयसूरिः थे उन्होंने तपा गच्छके सबमें सात हुक्म जाहिर करे परपक्षीको निंदव नहीं कहणा, परपक्षी प्रतिष्ठित मन्दिर प्रतिमा मानवा योग, पर पक्षिनीं धर्म करणी सर्व अनुमोद्द वा योग इस तरह ७ है सो लेख बड़े उपासरे बीकानेर ज्ञानभण्डारमें विद्यमांन है, इन दोनोंनें बड़ा संप रक्खा प्रभावीक हो गये इस वख्त बालोतरेमें भाव हर्ष उपाध्यायनें

७ गच्छभेद किया भाव हर्ष नामसें, इन्होंने अपने हाथसें सिंहसूरिःकों आचार्य पदवी दी बादशाहने चमर छत्रादि राजचिन्ह सग कर दिये।

६२ श्रीजिनसिंहसूरिः सागर चन्द्रसूरिः १ कीर्ति रत्नसूरिः २ शाखा हुई

६३ श्रीजिनराजसूरिः इन्होंके समय १६८६ में मण्डलाचार्य सागरसूरिःसे आचार्य खरतर शाखा निकली ८ मां गच्छभेद गुरूमहाराजनें सूरिः मन्त्र देकर जिन रत्नसूरि'कों आचार्य पदमें स्थापन करा।

६४ श्रीजिन रत्न सूरि' इन्होंके समय सं. १७०० में रंग विजय गणिसें रग विजय खरतर शाखा ९ मागच्छ भेद इस गच्छमेंसें जिन हर्ष गणिके चेले श्रीसारनें श्रीसारखरतर शाखा निकाली ये १० मा गच्छान्तर हुआ।

६५ श्रीजिन चन्द्र सूरिः इन्होंके समय १७०९ में ढुढकमत प्रकटा धर्म दास छींपा वगैरह २२ पुरुषोंने बधा मत निकाला, हाजी फकीरकी दवासें मत चलाया। इन २२ मेंसे निकले वे वंदन करनेवालेको वेहाजी भाई कहा करते है

६६ श्रीजिन सुख सूरिः इन्होंकी गोगा बन्दरसें खंभात जाते दरियावमें जहाज फटी पाणीसे भरगई कुशल सूरिः का स्मरण किया दादा साहबने नई जहाज वणाके खभात पहुंचाई वह जहाज अलोपकरी।

६७ श्रीजिन भक्ति सूरिः सादडी ग्राममें पर पक्षी तपोकों निरुत्तर, करा पूनामें सिवाजी पेशवाकी सभामें, वेदान्त मती ब्राम्हणोंको जीता।

६८ श्रीजिन लाभ सूरिः।

६९ श्रीजिन चन्द्र सूरि. इन्होंने लखनेऊमें प्रतिमा उत्थापक जो मत फैला था, उन्होंको परास्तकर राजा वच्छ राज नाहटेको चमत्कार दे, नवाबसे राजा वणवादिया,।

७० श्रीजिन हर्ष सूरिः इन्होंके पाच शिष्य निजथे छठा शिष्य नागोरके जती माणक चन्दजी का रूपवंत देखकर माग कर लेलिया निज शिष्य सूरत रामजी, वो मांगकर लेलिया उन्होंका नाम मनरूपजी था इन्होंके समय खरतर भट्टारक गच्छमें, १८०० जतियोंकी शंक्षा थी।

७१ श्रीजिन सौभाग्य सूरिः इन्होंके समयमें १८९२ में मडोवरमें महेन्द्र सूरिः सें ११ मागच्छ भेद हुआ सौभाग्य सूरिः यावज्जीव एक ल्ठाणा प्यादल विहार साढे १२ हजार सूरिः मन्त्रका हमेश जाप सचितके त्यागी कंवर पदेमें हनुमन्त वीरका मंत्र साधा था सो सिद्ध हो गया था रामगढमें पोतेदारकी लडकीके वचपणसें पथरी हो रही थी गुरूके पास लाया गुरूनें तीन चलू पाणी पिलाया उसी समय २) रुपये भरकी पथरी निकल पडी मुरसिदा वादमें प्रताप सिंह दूगड़ कों वृद्ध पणमें नव पद आम्नायदिया लक्ष्मीपती धनपति दो पुत्र धर्मोद्योतक हुए। बीकानेरमे महेश्वरी माणक चन्द वाघडीकों वृद्धपणे में पुत्र दिया राजा राठोडुकों अनेक चमत्कारसे बीकानेरमें सिरदार सिंहजीको परम भक्त वना कर अनेक कष्ट आपदा जीवोकी दूर की इत्यादि वहुत है ग्रंथ वढणेके भयसें नहीं लिखते हैं महाराजासिरदार सिंहजीने ४ गाम भेंट करणेकी वहुत विनती करी गुरूने कहा सन्यासियोंको भृष्ट करणेको जागीर होती है सो सर्वथा इन्कार किया ऐसे दीर्घ दृष्टि त्याग बुद्धिः परम उपकारी हुए।

७२ श्रीजिन हंससूरिः इन्होके समय श्रीजिन महेन्द्र सूरिःके पटोधर श्रीजिन मुक्ति सूरि वडे शास्त्र वेत्ता चमत्कारी प्रकटे जेसलमेरसें फलोधी पधारते पोकरणके ठाकुरके कंवर हिरण मारणेको वन्दूक उठाई गुरूनें मना किया गुरूने कहा छोड तो देखता हू तीन वक्त कारतूस दिया वन्दूक काठकी तरह हो गई यह चमत्कार देख चरणोंमें गिरपड़ा सहरमे पधराकर भक्तिकरी ऊंठ फेरता फतह सिंह चम्पावतकों फरमाया १ वर्षमें तेरे राज्ययोग होणा है वैसाही हुआ जैपुरनरेश सवाई रामसिंहजीके सामने कुल कांम कर्त्ता मुसाहिव हुआ गुरू जैपुर पधारे तव फतह सिहने राजासें सर्व वृत्तान्त कहा राजा वोला मेरे मनकी वात कहेंगे तो जरूर भक्ती करूंगा दोनों गुरूके पास आए गुरूने कहा विलायतसें जो आज्ञा चाहते होसो एकही मुहूर्त्तसे सिद्ध काम होणेवाला है वस बैठे २ ही तार आगया वैसाही तव राजाने भक्तिसें

५) रुपये हमेशाके गाम भेटकर जैपुर रहणेकी प्रतिज्ञा कराई ऐसै प्रभावीक खरतराचार्य विद्यमान हमनें देखा है। खरतर साधु १। रिद्धिसागरजी २। श्रीसुगन चन्दजी बड़े प्रभावीक निकले श्रीक्षमा कल्याण गणिःके पौत्र थे ऋद्धि सागरजी वलिबाकल प्रतिष्ठामें दश दिग्पालोंको देते नारेल उछालते गोटा ऊपर आकाशमें अलोप टोपसियां फक्त नीचे गिरती दुसाले पर आरती कपूर सिल्गाकै धर कर श्रावकोंसे जिन प्रतिमाके सामने उतरवाते दुसालाके दाग नहीं लग सकता। मारवाड़में जिन मन्दिरकों बंध कर बिना पानी बिना आदमी धोकर, साफ करवाया, हजार घड़े पानी ढुला पाया। मंदिर खोला तो सब मलीनता साफ और जलसें गीला मालूम दिया इत्यादि अनेक विद्याओंसे सम्पन्न फलौधी लोहावट पोकरणके श्रावक देखनेवाले मौजूद हैं ३। श्रीसुगन चन्दजीने बीकानेर नरेश महाराजा डूगर सिंहजीको अनेक मन चिंताकी होनेवाली बात आगे कह दी। तब राजासे शिवबाड़ीमें मदिरके वास्ते भूमिका पट्टा करवाया। अभी आचार्य खरतर पडित तन सुखजीने मेघ वर्षाका बिकानेरमें बिल्कुल अभाव भया तब दरबार महाराज श्रीगंगासिंहजीनें हजारों रुपये खर्च कर ब्राह्मणोसे अनुष्ठान कराया बूंद भी नहीं गिरी तब इनको बुलवाया। इन्होंने कहा यदि गुरुदेव करेगा तो भादवा वदी दशमीसे वर्षा शुरू होगी और सच्च ही उस दिनसें ही मेघनें जय जयकार कर दिया। यह बात १९६३ सम्वत्‌की है। ऐसे २ प्रभावशाली मन्त्रवादी सर्व शास्त्रवेत्ता यती अभी विद्यमान हैं खरतर गच्छमें।

७४ श्री जिन चंद्रसूरिः इनकी अवज्ञा करनेवालोंको महाराजने स्फुर माया तूं कोढिया होगा, सो सच्च होगया। प. अनोपचन्द जतीको, शैतान लगा था, सो विना पढे अनेक भाषा बोलता था। बहुत लोगोंने इलाज किये परंतु अच्छा नहीं हुआ गुरूने एक तमाचा मारा सो उसी वख्त छोड़कर बोला जाता हूं। उसी वक्त वह होशमें आया। वह

यती विद्यमान बीकानेरमें है । ऐसें प्रभावीक गुरु होगये ।

७४ श्रीजिनकीर्तिसूरिःतत्पद

७५ जंगमयुग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीजिन चारित्र सूरीश्वर विजयते, क्षेमधाड़ शाखामें उपाध्याय श्रीनेममूर्ति जीगणिः । वाचक विनय भद्रजीगणिः उपाध्यायक्षेम माणिक्यजीगणिः तथा पंडित राजसिंहजी गणिः इन्होकों दादा साहिब अर्स पर्स थे जिन्होंने छत्रपती थारे पायनमें इत्यादि दरपूनम एक स्तवन सीरणी गुरुकी करते एकाशन हमेश करते वदन कमलवाणी विमल इत्यादि अनेक छन्द महाकवी षट् शास्त्र वेत्ता हुए उन दोनोके शिष्य पडित लब्धि हर्षजी सवियाण गाममे ठाकुरके पूजनीय हुए उन्होंकेशिष्यछठेमासलोचपंच तिथी उपवास उभय कालप्रतिक्रमणबालब्रम्हचारी सर्व आरम्भके त्यागी सवाकोड परमेष्ठी मत्रके स्मारक प्रसिद्ध नाम श्रीसाधुजी दीक्षानाम धर्मशीलगणिः उन्होके बड़े शिष्य हेमप्रिय गणिः लघुपडित श्रीकुशल निधान मुनिके शिष्य उपाध्याय श्रीरामलाल (ऋद्धिसार गणिः) ने इस ग्रथका सग्रह करा जो कुछ जादह कम लिखणेमे आया होय तो मिथ्यादुस्कृत, ये ग्रथ सर्व विवेकी भव्य जीवोंको आनन्द मगल सुख वृद्धि करो श्रीरस्तुकल्याण मस्तु लेखकपाठकयोशुभ (दोहा) विक्रम सवत् उगण शत, छासठ ऊपर मान, श्रीविक्रमपुर नग्रमें गंग-सिह राजान। १ । खरतर भट्टारकपती, श्रीजिन कीर्तिसूरिन्द। पट्ट प्रभाकर जय रहो, काटो कुमति फद । २ । गुण अनेक जगमें अचल, मत्र विसारद पुरि, जापजपे उपगारपर श्री जिनचारित्रसूरिः ३ धर्मशील गुरूराजके मुनिवर कुशल निधान । युक्ति वारिधिः गुण प्रगट, उपाध्याय पदथान । ४ । सग्रह कीनो ग्रंथको रामगणिः ऋद्धिसार । चार वर्णकी ख्यातको, समझोसवनरनार ५ विद्याशालासे सदा जैनधर्म उद्योत, । पढसुणकर श्रीसघके, नित २ मगल जोत । ६ । इतिश्रीओसवसमुक्तावलि श्रावकाचार कुलदर्पण संम्पूर्णम ॥